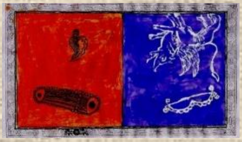
ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३७४ म अंक १५ जुलाई २०२३ (वर्ष १६ मास १८७ अंक ३७४)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a

Videha e-Journal: Issue No. 374 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *विप्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनूमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्॥

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु किन्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मात्र आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ उल्लेखन (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ई त्रिभुवनरूपी क्षेत्रम ओकर कीर्तिरूपी लत्ती कोना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (मात्र सवर्णकेँ)। मुदा ई वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ बाला रहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

𑓐 𑒠𑓂𑒨𑒾𑓁 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 Ẇ 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑓁

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३१३ पर टिप्पणी

२.गद्य खण्ड

२.१.डॉ दीपक कुमार ठाकुर- मिथिलाक इतिहासक वैज्ञानिक अध्ययन एवं डाकन समीक्षात्मक विश्लेषण

३. मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन Maithili Audios-Videos

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

५.विदेह स्त्री कोना

६. विदेह ई-लर्निंग

७.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

8.Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

९.विदेह मिथिलाक खोज

१०.विदेह मिथिला नक्शा



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি ৰনস্পতয: শান্তির্বিশ্বে দেৰা: শান্তির্ব্ৰহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্ৰহ্মণসঁ প্ৰাৰ্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, ৰনস্পতিমে, ৰিশ্বমে, সভ দেৰতাগণমে আ ব্ৰহ্মমে শাংতি হুঅয।

ওঁ-ব্ৰহ্মণ, দ্যৌ-সূৰ্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যূলোকক ৰীচ, আপ:-জল, ৰিশ্বেদেৰা- সভ দেৰতা, ব্ৰহ্ম- সৰ্জক।

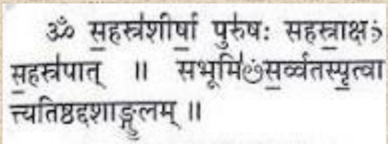
ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

𑓇, 𑒮↓ 𑒯𑒮𑓂𑒩↑ 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒰↓ 𑒣𑒳𑒩𑒳↑ 𑒭𑓁। 𑒮↓ 𑒯↓ 𑒮𑓂𑒩𑒰↓ 𑒏𑓂𑒭𑓁
𑒮↓ 𑒯𑒮𑓂𑒩↑ 𑒣𑒰𑒞𑓂।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

𑒮 𑒦𑒴𑒧𑒱𑓀↑ Ẇ 𑒫𑒱↓ 𑒬𑓂𑒫𑒞𑒼↑ 𑒫𑒵↓ 𑒞𑓂𑒫𑒰। 𑒁𑒞𑓂𑒨↑ 𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒠𑓂 𑒠𑒬𑒰𑒓𑓂𑒑𑒳↓ 𑒪𑒧𑓂॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।


ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः स॒हस्रा॒क्षः
स॒हस्र॑पात् ॥ सभूमि॑ᳫं स॒र्व्वत॑स्पृ॒त्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥

प॒द्भ्यागँ् शू॒द्रो अंजायत॥

𑒣↓ 𑒠𑓂𑒦𑓂𑒨𑒰𑒑𑓂◌ँ↑ 𑒬𑒴↓ 𑒠𑓂𑒩𑒼 𑒁↑ 𑒖𑒰𑒨𑒞॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्राँत्।

প↓ ড্ুয়াঁ হ্ভূমি↓ দিঁশঃ↓ শ্রোত্রা↑ ↑ ৯।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

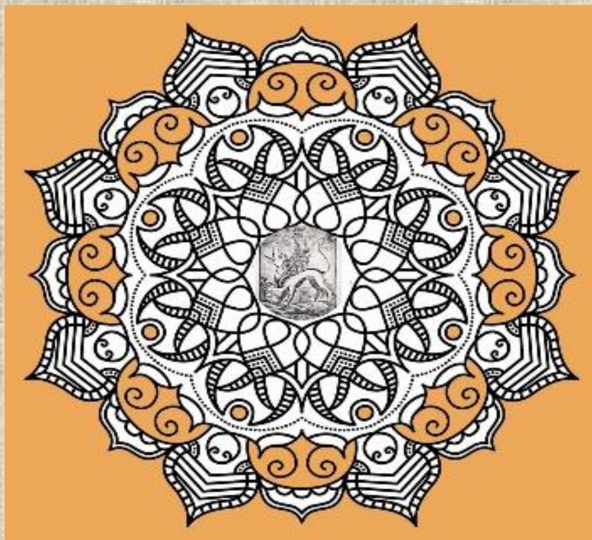
卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम प्रिक्षिৰস্তু, প্রিক্ষম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७३ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

AI4BHARAT (MAITHILI)

AI4BHARAT [Maithili Version 2 translation IndicTrans2 launched on May 26,2023; Nilekani Centre at AI4Bharat launched on July 28, 2022]

https://ai4bharat.iitmac.in/ (AI4BHARAT IIT MADRAS)

https://models.ai4bharat.org/#/nmt/v2 (Maithili Translation Version 2)

https://github.com/AI4Bharat/IndicTrans2

https://arxiv.org/abs/2305.16307

https://github.com/AI4Bharat (GitHub AI4Bharat)

https://ai4bharat.iitmac.in/models (AI4Bharat Models)

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfEOrRdR4SxFbzFD9CSR1scrrEUMdbsg7wsbZ6Vfxn6FQoq8A/viewform?pli=1 Audio Transcriber Maithili Apply)

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in-send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३१३ पर टिप्पणी

आशीष अनचिन्हार

मिथिलाक्षरमे परमानन्द लाल कर्ण जीक गीता माहात्म्य नीक जकाँ आगाँ बढि रहल अछि। विदेह पटाल क संकलन (आर्काइव) अद्भुत अछि। दीपक कुमार ठाकुर जीक स्वागत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.गद्य खण्ड

२.१.डॉ दीपक कुमार ठाकुर- मिथिलाक ऐतिहासिक वैज्ञानिक अध्ययन एवं डाकन समीक्षात्मक विश्लेषण

२.२.धनमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.३.कुमार मनोज कश्यप-सम्मान क

२.४.आचार्य रामानन्द मण्डल-गजल/ रामेश्वरम लिंग स्थापना

२.५.उमेश मण्डल- मूढ़ा सुधार नहियेँ

२.६.लालदेव कामत-डॉ उमेश मंडल: एक मैथिली अरियानी / जाना: सुभाष चन्द्र यादव/ शम्भु बाबुक आत्मकथा/ मिथिलाक संग्राम सेनानी : सलहेस - गुनमेन/ लघुकथा- हथौन

२.७.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२३)

२.१.डॉ दीपक कुमार ठाकुर- मिथिलाक इतिहासक वैज्ञानिक अध्ययन एवं ओकर समीक्षात्मक विश्लेषण



डॉ दीपक कुमार ठाकुर

मिथिलाक इतिहासक वैज्ञानिक अध्ययन एवं ओकर समीक्षात्मक विश्लेषण

शोध-पत्रक शीर्षक:

मिथिलाक इतिहासक वैज्ञानिक अध्ययन एवं ओकर समीक्षात्मक विश्लेषण

लेखकक नाम आ संबद्धता: **डॉ दीपक कुमार ठाकुर,**

शिक्षाविद, प्राध्यापक (अंग्रेजी) मानविकी

डीआईटी विश्वविद्यालय, मसूरी रोड, देहरादून, भारत

deepesh1november@gmail.com +91-8527740419

शोध सारांश:

मिथिला जकरा तिरहुत आ तिरभुक्ति कऽ नामसँ सेहो जानल जाइत अछि, भारतक विहार आ नेपालक दक्षिणपूर्वी भागमे अवस्थित एक भौगोलिक आ सांस्कृतिक क्षेत्र छी। ई क्षेत्र पूर्वमे महानन्दा नदी, दक्षिणमे गङ्गा नदी, पश्चिममे गण्डकी नदी आ उत्तरमे हिमालयक तलसँ घेरल अछि। मिथिला क्षेत्रक मुख्य भाषा मैथिली छी आ ई भाषा बाजनिहार लोकसभकेँ मैथिल कहल जाइत अछि। मिथिला नाम सामान्यतया विदेह साम्राज्यकेँ उल्लेख करबाक लेल प्रयोग कएल जाइत अछि आ सङ्ग आधुनिक-कालक क्षेत्रसभ सेहो विदेहक प्राचीन सीमासभक भीतर अबैत अछि। हम शताब्दीमे, जखन मिथिला क्षेत्रकेँ दरिभङ्गा राजघराना शासित कएल गेल छल, ब्रिटिस राज एकरा एक रियासत राज्यक रूपमे पहचान नै दऽ ई क्षेत्रमे कब्जा कऽ लेनए छल। हिन्दू धार्मिक ग्रन्थसभमे सबसँ पहिने एकर उल्लेख रामायणमे भेटैत अछि। मिथिलाक उल्लेख महाभारत, रामायण, पुराण तथा जैन आ बौद्ध ग्रन्थसभमे सेहो अछि। मान्यता अछि जे मिथिला नाम पौराणिक राजा 'मिथि' कऽ नामसँ कएल गेल। ओ अपन पिता राजा निमी कऽ शरीरसँ बनायल गेल मानल जाइत अछि। किछु

गऽ हुनकर उत्पत्ति अपन पिताक देहसँ मन्थन उपरान्त भेल छल, एहि कारण सँ ओ मिथि कहाएल। पौराणिक परम्परामे राजाक शासकीय क्षेत्रक नाम राजाक नामपर राखल जाइत छल। तहि लेल मिथि कऽ नामपर ई क्षेत्रक नाम मिथिला पड़ल। मिथिला जनकपुरीक राजधानी छल आ राजा मिथि जनकसँ उत्पन्न भेल छल तहि कारणसँ स्वयं मिथि आ हुनक बादक शासक सेहो जनक कहाएल। एकर बाद मिथिलाक राजासभकेँ जनक कहल जाए लागल। सीताक पिता सीरध्वज जनक छथि जे वाल्मीकि रामायणक हिसाबसँ जनकपुरीक पचीसम राजा भेल छल। देवी भागवतसँ ज्ञात होइत अछि जे निमिक उन्नैसम पीढ़ीमे राजर्षि जनक सीरध्वज भेल छलाह। हिनक विद्वताक चर्च देवी भागवत, श्रीमद्भगवद्गीता, विष्णु पुराण, वृहद् विष्णुपुराण आ अन्य पौराणिक ग्रन्थमे भेटैत अछि।

कौशिकी, गङ्गा आ गण्डकीधरि एकर सीमा छल तहि कारणसँ ई क्षेत्र तीरभुक्ति कहाओल।
बागमती, सुवर्ण एवं गयाननसँ युक्त होयबाक कारण ई तीरभुक्ति कहाओल।
ऋक, यजु आ साम तीनहुँ वेदसँ आहुति दै बला ब्राह्मणक निवास छल तहि लेल ई तीरभुक्ति कहाओल।

इक्ष्वाकुवंशक निमिक अधिनायकत्वमे, ब्रह्मर्षि गौतमक मार्गदर्शनमे एवं सत्यान्वेषी अग्नि-वैज्ञानिक वैश्वानरक सिद्धान्तक प्रतिफलमे आर्य सत्ताक एक प्रवाह सिन्धुक कछारसँ स्थानांतरित भऽ सुदूर पूर्वमे

आबि एकटा भौगोलिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक इकाइ कँ रूपमे प्रस्तुत स्थापित कएलक, जकर नामकरण "विदेह" भेलैक। कालान्तरमे जखन जनक-राजवंशक उत्तराधिकारी जनक कराल भेला, ओ सुप्रतिष्ठित सामाजिक मान्यता आ परम्पराक अतिक्रमण कएलन्हि। तखन कराल जनक क जनता द्वारा हत्या कऽ देल गेल आ मिथिलामे एकटा सर्वथा नूतन शासन-प्रणाली (गणतंत्र प्रणाली) अस्तित्वमे आएल। विदेह गणतंत्र बनल आ एवम प्रकारे विदेह वृज्जिक संग गणतंत्र प्रणालीक प्रणेता बनल। एक समय जखन तुर्क अफगान युगमे भारतक उत्तरी भू-भाग पर मुगलक आक्रमण भऽ रहल छल ओहि समय मिथिला हिन्दू प्रशासकक अधीन अपन स्वतंत्र अस्तित्वक सुरक्षित रखबामे सफल रहल। एहि भू-खण्ड पर कर्णाट राजवंशक शासन 1097 ई० मे प्रारम्भ भेल तदुपरान्त ओइनवार वंशक शासन आएल। पहिलबेर सन् 1324 ईस्वीमे तिरहुत/मिथिला, तुगलक साम्राज्यक अधीन भेल आ दरिभंगाक नाम तुगलकपुर कऽ देल गेल। बंगाल विजय अभियानक दौरान फिरोज तुगलक जखन तिरहुत पहुँचल, ओ कामेश्वर ठाकुरक अनुज भोगीश्वर क शासक नियुक्त कएलक, मुदा एहि समयक शासन व्यवस्था स्थिर नहि छल।

मुगल शासन आ महेश ठाकुर:

मुगल शहंशाह जलालुद्दीन अकबर द्वारा महेश ठाकुर कँ मिथिलाक राज सौंपल गेल, तखन सँ प्रारम्भ भेल खंडवाल राजवंश। एतय एकटा ऐतिहासिक दृष्टिकोण अछि जे अकबर अपन कूटनीति सँ

मिथिलाक ई पूर्वहिसँ अपन राजनैतिक आ भौगोलिक अक्षुण्णता बनाकऽ राखने छल, तकरा विनष्ट कऽ देलक। दरभंगामे शाही फौजदारक नियुक्ति भेल, आर तिरहुतकेँ सूबा बिहारक भाग घोषित कऽ देल गेल। एहिसँ पूर्व मिथिला आ बिहार भिन्न छल। अकबरक कूटनीतिसँ मिथिलाक भूमि जकर अपन प्राकृतिक, भौगोलिक आ राजनैतिक स्वतंत्र स्वरूप छल तकरा छोड़ि लेल गेल एकर प्रतिकार कोनो रूप नहि देखयमे आयल। अद्यावधि मिथिला बिहारक अंशमात्र बनि कऽ रहि गेल। एम्हरसँ मिथिलाक अधोगति प्रारंभ भऽ गेल, तथापि मिथिला एखनहुँ अपना केँ एकटा सांस्कृतिक इकाइ क रूपमे जीवंत राखने अछि। जखन शेरशाह अकबर कालमे एक लाख मालदह आमक गाछ लगाओल गेल जकर नाम देल गेल लक्खा ई कालांतरमे लौकहा नाममे परिवर्तित भऽ गेल, तहिना एक लाख बम्बइ आमक गाछक बगीचा लक्खी लगाओल गेल जकर नाम कलांतरमे लौकही पड़ल।

मिथिला पर अंग्रेजी शासनक प्रभाव:

सन् 1764 ईस्वीक बक्सर युद्धक पश्चाति बंगाल प्रांतक संगहि-संग मिथिला, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनीक अधीन आबि गेल, मुदा ध्यातव्य ई आंग्ल प्रशासनक अधिनस्थतामे मिथिला अपन सांस्कृतिक क्षमता केँ अक्षुण्ण राखबामे सफल रहल। 1815 ईस्वीक आंग्ल-नेपाल युद्धक उपरांत भेल सुगौली संधि जाहिसँ मिथिलाक राजनैतिक

बङ्गाक भारत आ नेपाल क बीच विभाजित कऽ देल गेल, महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंहक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आ स्वतंत्रता आंदोलनमे योगदान, विलुप्त होइत मिथिलाक्षर_लिपिक महत्ता आ मिथिलाक दयनीय स्थिति संगहि विकासक नव-दिशा सेहो देखौलन्हि अछि। लेखक कहैत छथि जे कोनहु क्षेत्रक स्वतंत्र अस्मिताक हेतु ओतुक्का भाषा आ संस्कृति जीवित राखब परम आवश्यक अछि। जँ ई जीवित अछि तऽ जनता कँ जाग्रत होइतें आ अपन आर्थिक आ राजनीतिक अस्मिता पुनः प्राप्त कऽ लेत, मुदा सांस्कृतिक उपलब्धि शृंखला टूटि गेलाक उपरांत ओकरा पुनः हासिल नहि कएल जा सकैत अछि। वर्तमानमे मिथिला भौगोलिक रूपेँ विखंडित अछि, आर्थिक रूपेँ जर्जर अछि आ राजनैतिक दृष्टिएँ अस्त-व्यस्त अछि, मुदा एतय सरस्वती कँ उपासक निवास करैत छथि, एतुका धरती उर्वरा सम्पन्न अछि, एहि क्षेत्रमे जलक प्रचुरता अछि जाहिसँ कृषिगत उद्योगकँ लेल एतय अपार संभावना विद्यमान छैक। मिथिलाक स्वर्णिम भविष्यक प्रति लेखक आशान्वित छथि जे इतिहास अपनाकेँ दोहरावैत छैक आ एकर अनुपालनमे मिथिलामे नवयुगक निर्माण होयत आ महाकवि कोकिलक पंचम पुनः गुंजायमान होयत।

मार्गनक पहिल खण्डक मुगलिया शासन सँ शुरू भेल, लेखक मानैत छथि जे मिथिला प्रशासन पर खंडवाल राजाधिराजक मिथिलाक सूर्यास्त थिक, एहि कृपसँ अकबर मिथिलाक सूबा-ए-बिहारक हिस्सा घोषित कऽ देलक। मार्गनक अगिला खण्डक पाश्चात्य प्रणालीक सामन्तवादी इतिहासकारक आलेखक माध्यमे मिथिलाक देल गेल। अंग्रेज इतिहासकार वी. स्मिथ लिखि देलनि जे प्रजातंत्रक जनक-

स्थल वैशाली अछि मुदा ऐतिहासिक रूपेँ ई अनर्गल आ मिथ्या ठीक, लेखक कहैत छथि जे उत्तर वैदिक कालीन संस्कृति, पाणिनीक ग्रंथ अष्टाध्यायी, कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ अश्वघोषक बुद्धचरित आदि बौद्धसाहित्यमे एकर स्पष्ट उल्लेख अछि जे प्रथम_गणतंत्र_विदेह_अछि। भारतक अगिला भागक मिथिला के आंग्ल-नेपाल युद्धक पश्चात सुगौली संधिक माध्यमसँ देल गेल। मिथिलाक अस्मिताक नष्ट करैक प्रयास एक बेर फेर भेल, मिथिलाक भारतक अगिला भागक भेटल आ ई भागक छल बंगाल राजप्रशासनक वर्नाकुलर भाषा नीति संबंधी सर्कुलर जारिकय मैथिली भाषाक स्थान पर हिंदी भाषाक स्थान देल गेल। एकर कृषिनिर्धाम ई भेल जे स्वाधीनता प्राप्तिक पश्चात जखन राज्य पुनर्गठन आयोग बनल तऽ सब किछु बिहारक मिथिला प्रान्त नहि बनि सकल, जकर मूल कारण रहैक भाषाक अभाव। मिथिला कृषिप्रधान क्षेत्र छल, मुदा स्वाधीनता प्राप्तिक बाद भारत सरकार अपन प्रथम प्रहार मिथिलाक कृषिवर्ग पर कएलक। जमींदारी उन्मूलन अधिनियम के नाम पर प्रथम यांत्रिक कृषक वर्गक तबाह गति देल गेल। जखन सन् 1951 ई सुप्रीम सर्वोच्च न्यायालय मैथिलक पक्षम (महाराजा कामेश्वर सिंह) निर्णय देल एहि अधिनियम के गैरसंवैधानिक घोषित करैत एकरा निरस्त करैक आदेश पारित कएलक। तखन दिल्लीक कार्यपालिका अपन बात पर अडिग रहैक लेल संविधानमे प्रथम संशोधन तक कऽ देलक।

डॉ ग्रियर्सन आ मैथिली भाषा:

भाषाक अपन विषद अध्ययन सँ डॉ. ग्रियर्सन अपन लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडियामे स्थापित कऽ चुकल छथि आ जाहि भाषा के संवैधानिक अष्टम अनुसूचिमे जगह देल गेल छैक, ओ नेपालक द्वितीय राजभाषा अछि, ओ झारखंडक द्वितीय राजभाषा अछि एकर जन्मस्थलक हिंदी भाषी उग्र मानल जाइत अछि, कारण बिहारक हिंदी भाषी उग्र मानल जाइत अछि। एतुका वासिन्दाक मातृभाषा हिंदी नहि थिकैक परंच गणना हिन्दी भाषी उग्रमे कएल जाइछ। सबकियो जनैत छी ओ बिहारक जनसमुदायक मातृभाषा अछि मैथिली, भोजपुरी आ मगही। हिंदी एतुका राजकीय भाषा होय ई एक राजनैतिक फैसला छैक। लेखक कहैत छथि ओ "लम्हों ने खता की सदियों ने सजा पाई" मैथिली भाषाक संग ई यथार्थ अछि, एकरेहि लागि गेल मैथिली के अष्टम_अनुसूचीमे स्थान पाबैमे। साहित्यकार लोकनि साहित्य अकादमीक पुरस्कारमे लटपटाएल छथि। मैथिली, कार्यालयक भाषा नहिं बनि सकल अछि जाहि सँ आमजनक सरोकार छैह, संवैधानिक प्रावधान नहियोँ हम सब एहि दिशामे कुनू ठोस कदम एखनधरि नहि उठा सकलहुँ अछि। लेखक, कहैत छथि ओ वर्तमानमे ग्राम पंचायत, राजनीतिक सभाक प्रमुख काज बनि कऽ उभैर रहल अछि। अतः एतय कार्यालयमे मैथिलीक उपयोग अधिक सँ अधिक होयबाक चाही। जनता के अपन जनभाषामे अभिव्यक्ति के अधिकार छैक।

एकटा कहबी छैक ओ प्रत्येक चारि कोसक दूरी पर भाषामे लघुआंशिक परिवर्तन होइत छैक, जाहि ग्रियर्सन सेहो एहि संदर्भ के जिक्र कएने छथि, मुदा मैथिलीक संग राजनीति भऽ रहल

अछि, मैथिलीक बाँटल जा रहल अछि आ ओकर आन्तरिक कमजोर कएल जा रहल अछि। वर्तमानमे मैथिलीक पश्चिमी मिथिलामे वज्जिका, पूर्वी मिथिलामे अंगिका आ दक्षिण भागमे खोरठा क नाम सँ दुष्प्रचारित कएल जा रहल अछि। मुदा ई पूर्ण सत्य अछि जे ई सब मैथिली भाषाक अनुप/अंग अछि आ एकर उत्पत्ति वाली अछि। लेखक एहि विषयमे एकटा व्यापक दृष्टिकोण रखलाह अछि, हिनक कहब छन्हि जे एहि उत्तरक साहित्यक मैथिली साहित्यमे स्थान भेटबाक चाही। एतुका प्रकाशित रचना पर साहित्य अकादमी पुरस्कार, यात्री पुरस्कार, चेतना पुरस्कार आदि लेल विचार कएल जाए। निःसंदेह एहि सँ एहि दिशा मे प्रतियोगिता कठिन भऽ जायत, मुदा एहि सँ मैथिली भाषाक सामर्थ्य बढ़त, शक्तिक वृद्धि होयत। लेखक, मिथिला उत्तरक विगड़ैत पर्यावरणक स्थिति सँ सेहो चिन्तित छथि, मिथिला पानिक मामलामे धनी रहल अछि। पानि विशेषरूप बाढ़ि इंगलिश बानि दशकधरि एहि उत्तरमे रहिकऽ विशिष्ट अध्ययन कएलन्हि आ अपन अध्ययनक सार "जनरल □रु बंगलीक नचूरल हिस्ट्री" प्रकाशित कएलनि जाहिमे ओ कमसँ कम तीन सौय तरासी प्रजातिक चिड़ैक उपस्थिति दर्शौने छथि। मुदा वर्तमानमे कतेको प्रजाति विलुप्त भऽ चुकल अछि वा भऽ रहल अछि। लेखक एहि दिशामे हनायून पानी अभयारण्य जकाँ मिथिला उत्तरमे अभयारण्य विकसित करैक बात कऽ रहलाह अछि।

मिथिलासँ बौद्धिक पलायन:

भाषाक महत्ता, हिनक निज भाषाक प्रति गान-उदगान देखि लगैत

अछि जे मैथिली आ मिथिला हिनक धमनीमे सदिखन प्रवाहित होइत छन्हि। लेखक महोदय, आरक्षण/मंडल कमीशनक विरोधिका के बात कएलन्हि अछि। लेखक, एकरा मिथिलासँ बौद्धिक पलायन के कारण मानैत छथि। लेखक कहैत छथि जे एहि आरक्षण नीतिसँ मैथिल ब्राह्मण युवा के एकटा टूटलै आ ओ शहर दिस पलायन कएलक आ अपन पाण्डित्यक अनुरूप रोजगार कऽ रहल अछि मुदा मिथिला पर एकर कुप्रभाव जबरदस्त रहल छैक, अधिकांश युवा मिथिलासँ कटि जवायन आगुन छथि। लेखक कहैत छथि जे मातृभाषा मैथिलीक माध्यम एहि दिशामे संगठित होएबाक प्रयास कएल जा सकैत अछि। मानव-संसाधनक सबसँ पैघ निर्यातक मिथिला अछि। एहिसँ अशिक्षित, अर्धशिक्षित, शिक्षित, सुशिक्षित आ प्रशिक्षित मैथिल सब भागा नहि सम्पूर्ण विश्वमे पसरल छथि। लेखक आशावादी छथि, ताहिँ विश्वास छैन्ह जे एक-नै-एक दिन मिथिलाक दिन सेहो घुरत।

स्वतंत्रता आंदोलनमे मिथिलाक योगदान:

स्वतंत्रता आंदोलन मे मिथिलाक भूमिका पर चर्चा करैत, स्वतंत्रता आंदोलनमे महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंहक योगदान अविस्मरणीय अछि। एक समय छल जे महाराज काँग्रेस के सबसँ पैघ चन्दा प्रदाता रहथि। एहि संदर्भमे लेखक एकटा घटना केँ जिक्र कएलन्हि अछि जे जखन इण्डियन नेशनल काँग्रेसक चतुर्थ अधिवेशन 1888 ईस्वीक 26 सँ 29 दिसम्बर धरि इलाहाबादमे

होएबाक निर्णय लेलक, अंग्रेज सरकार सँ खुला बागमे अधिवेशन अनुमति मांगल गेल छल, मुदा ओहि समयमे अंग्रेज सरकार मुकरि गेल। अधिवेशनक मार्गमे ई एकटा विचित्र समस्या उत्पन्न भऽ गेल रहैक। काँग्रेसक दूटा पदाधिकारी एहि समस्याक लऽ कऽ #महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह लग एलखिन्ह। महाराज तुरंत एकरा संज्ञान लैत प्रयास केलखिन्ह जे काँग्रेसक अधिवेशन पूर्वनिर्धारित समयसँ होयत आ एहि लेल तुरंत इलाहाबादक नवाबसँ बात कऽ "लॉदर कैसल" लीज पर लऽ अधिवेशनक लेल उपलब्ध करा देलखिन। ओहि समयक तत्कालीन अखबार हिन्दू पैट्रियॉट अपन 31 दिसम्बर 1888 क संपादकीयमे महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंहक भूरि-भूरि प्रशंसा कएलक।

मिथिलाक पाग, मानव जीवनक सामाजिक आ सांस्कृतिक जाहि आयाम पर नजरि देबैक ओतहि अहाँक अपन मिथिला-संस्कृतिक विशिष्टता स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित होएत। मिथिलाक पाग क संबंध मे अति महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक आ तर्कसंगत अछि, जे संस्कृतक वत्स शब्दक मैथिलीमे तद्भव शब्द बनल छैक बाछा, जखन सरकार-ए-तिरहुतक गठन भेलैक तँ एकगोट परगनाक नाम देल गेलैक "बछौर" संरचनाः पहिलबेर ई विशेष नाम जाहि उत्तम नस्ल वला पशु जातिक नस्लीय नामपर देल रहैक, दिल्ली सल्तनतक धनिक ध्यान एहि ठाम आकर्षित देल छल। वर्तमान मे ई क्षेत्र सीतामढ़ी जिलाक पुपरी अनुमंडलक बाजपट्टी-नानपुर आ एकर पार्श्ववर्ती गाम सब अछि, जे ई वएह नानपुर थिक जकरा कर्णाट वंशक राजा नान्यदेव, मिथिलाक राजधानी बनौने छलाह। ई वैज्ञानिक तथ्य छैक

जे मानव हेतु जे कोनो खाद्य पदार्थ अछि ताहिमे मात्र गोदुग्ध अछि जे एक पूर्ण आ संतुलित भोजन थिक। नंदनी संगति गायक दुग्ध मनुष्यक शरीरक लेल सब आवश्यक तत्व भेट जाइत अछि। एतय गाय कँ मायक दर्जा देल गेल अछि। 1857 ईस्वीक गदरक पश्चात् अंग्रेजी शासन प्रत्यक्ष रूप सँ स्थापित भऽ गेल। एतुका गायक उपयोगिता कँ देखैत सन् 1858 सँ 1906 ईस्वीक बीच भारत सँ 266 साँढ़ आ 22 गोट गाय संयुक्त राज्य अमेरिका भेजल गेल छल आ एहि सँ गायक एकटा उत्तम प्रजाति विकसित कएल गेल जकरा नाम "ब्राह्मण गाय" राखल गेल। द्वितीय विश्वयुद्ध क बाद संयुक्त राष्ट्र संघक प्रादुर्भाव भेल आ एकर एकटा शाखा स्थापित कएल गेल जकर नाम अछि "फूड एण्ड एग्रिकल्चरल □ऑर्गेनाइजेशन", जे अपन पहिल बैसारमे भारतीय धेनु-वंशक अनुवांशिक गुणक सर्वेक्षण आ अध्ययनक फैसला लेलक। 1953 ईस्वीमे प्रकाशित डब्लू. फिलिप्स आ एन. आर. जोशीक पोथीमे पृष्ठ संख्या 256-276 पर बछौर प्रजातिक पूर्ण विवरण भेटैत अछि। भारत सरकारक "एनिमल हसबैंड्री विभागक कौनक्रार्स एण्ड पनहार्मंसज □फ बछौर कैटल" प्रकाशित कएलक अछि जाहिमे स्पष्ट लिखल अछि जे ई प्रजाति मात्र मिथिल मे पाओल जाइत अछि। लेखक कहैत छथि जे ई कतेक विडम्बना अछि जे, जखन सम्पूर्ण विश्व मिथिलाक गायक प्रजाति पर अध्ययन आ शोध कऽ गायक नस्लीय सुधारमे लागल छल तखन हम सब अनभिज्ञ भऽ बसी दुग्धक उत्पादनक मारफत जर्सी आ फ्रिजियन नस्लीय गाय आनि रहल छलहुँ। सोना कँ पित्तर सँ प्रतिस्थापित करैक प्रयास मे लागल

𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿।

𑒠𑒯𑒹𑒖 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰: 𑒠𑒯𑒹𑒖 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬 𑒂 𑒯𑒼𑒥𑓂𑒮-𑒃𑒑𑒼𑒃𑒖𑓂𑒧 𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒠𑒯𑒹𑒖 𑒥𑒜𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒞𑓂𑒨𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒥𑒰𑒞, 𑒖𑒹 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒏 𑒠𑒳𑒃 𑒑𑒼𑒙 𑒑𑒞𑒱 𑒕𑒻𑒏, 𑒫𑒰𑒩𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒂 𑒠𑒻𑒢𑒱𑒏। 𑒮𑒞𑓂𑒨𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒣𑒴𑒖𑒰𑒏𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒞𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒄 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰 𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒞𑒳𑒪𑒮𑒲𑒧𑒹 𑒖𑒪 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒣𑒰𑒙𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒁𑒞𑒲𑒞 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒼𑒞𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒋𑒏𑒰𑒠𑒬𑒲 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒰𑒪𑒏 𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓀𑒦 𑒏𑒩𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒣𑒰𑒚 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒂𑓀𑒑𑒢𑒧𑒹 𑒩𑓀𑒑-𑒥𑒱𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒁𑒩𑒱𑒣𑒢 𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒮𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒕𑒚𑒱 𑒣𑒴𑒖𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒹 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒄 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒯𑒱𑓀𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒪𑒱𑒧 𑒮𑒧𑒳𑒠𑒰𑒨 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒴𑒖𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒮𑒯𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒞𑒰 𑒏 𑒄 𑒣𑒩𑒰𑒏𑒰𑒭𑓂𑒚𑒰 𑒂𑒥 𑒦𑒹𑒙𑒥 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒪𑒦।

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒫𑓂𑒨𑓀𑒖𑒢 𑒧𑒰𑒕: 𑒖𑒐𑒢 𑒂𑓀𑒑𑓂𑒪-𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪 𑒨𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒣𑒩𑒰𑓀𑒞 𑒮𑒳𑒑𑒾𑒪𑒲 𑒮𑓀𑒡𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒞𑒐𑒢 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒍𑒞𑒳𑒏𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒏𑒹𑒿 ‘𑒧𑒰𑒑𑒪𑒰𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪’ 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒏 𑒧𑒞𑓂𑒮𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧, 𑒖𑒹 𑒧𑒞𑓂𑒮𑓂𑒨-𑒧𑒰𑓀𑒮, 𑒂𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒏𑒬𑓂𑒧𑒲𑒩𑒲 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒥𑓀𑒑𑒰𑒪𑒲 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒰𑒿, 𑒋𑒞𑒨 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒖 𑒂 𑒪𑒯𑒮𑒳𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒖𑒱𑒞 𑒕𑒪। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒏 𑒧𑒰𑒕𑒏

चिसियौ कए विशिष्ट अछि एहन सनिसा आ आमिलक प्रयोग मसाला जकाँ कएल जाइछ, हींगक छौंक आ गाछि यन जमीनी नवाक मजन, बड़ा अछि।

मैथिली भाषाक विलक्षण मौलिकता - संस्मरणात्मक उल्लेख, लेखन, डॉ. उमेश मिश्र, मिथिला रिसर्च इन्स्टीच्यूटक प्रथम निदेशक नियुक्त भऽ प्रयागसँ दरभंगा अयलाह। एहन हुनक पहिल छात्र छलथिन अनन्तलाल ठाकुर। ठाकुर जी तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तानसँ विस्थापित भऽ मिथिला आएल छलाह। श्री मिश्र जीक साहित्य संग्रहमे 300 सँ अधिक संस्कृत भाषाक ग्रंथ छल जकर लिपि मिथिलाक्षर छलैक। ठाकुर जी एहि पर एकटा पोथी 'कैटलॉग ऑफ संस्कृत मैन्यूस्क्रिप्ट इन मिथिला' लिखलैन्हि, एहिक्रममे ई ज्ञात भेलाह जे इन्स्टीच्यूट मे उपलब्ध मनुस्मृति आ मिश्रजी लग उपलब्ध मनुस्मृतिक स्क्रिप्ट जे मिथिलाक्षरमे लिखल रहैन ताहि मे ई बात नहि लिखल छल जे 'शूद्रक कानमे जँ शास्त्रक वचन ता प्रवेश करए जाय तँ ओकर कानमे शीशा पिघलाकऽ ढ़ारल जाय'। एहि संदर्भमे ठाकुर जी कहैत रहथिन जे अंग्रेजी-शासन, अपन सत्ता सुरक्षित रखबाक लेल अपन एजेंटक माध्यमसँ पंडित लोकनि सँ सम्पर्क कऽ मैनुस्क्रिप्ट इकट्ठा करैत छल आ ओकरा अपन सुविधानुसार दुरुपयोग करैत छल। मनुस्मृतिक ई पुरान स्क्रिप्ट एकर प्रत्यक्ष प्रमाण छल। ई कहैत काल अतिशयोक्ति नहि जे अपन शासन अक्षुण्ण रखबाक कोशिशमे अंग्रेज लोकनि मनुस्मृतिक मूल केँ नष्ट कऽ एकर जाली प्रति जारी करबए लाग। लेखक कहैत छथि जे स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद सम्पूर्ण देशमे अकारण ब्राह्मण केँ दुश्मन घोषित कऽ देल गेल आ

एकर नाम देल गेल मनुवाद, मुदा एकर असली कारण छल जे सुविधा, कर्त्तव्यपरायणता, त्याग, मनोबल आ बौद्धिक मार्ग पर ब्राह्मणसँ मुकाबला करबाक क्षमता एहि वर्गक नहि रहैक। बस खाली पाँच हजार वर्षक कयल कल्पित अध्यायक नाम पर एक अंग्रेजक गढ़ल असत्य के आधार बना मनुवाद कहि ब्राह्मण अर्थात विशिष्ट बुद्धिक स्रोत के कटिया देल गेल।

लक्ष्मण संवत -मध्यकालीन युगमे जखन सम्पूर्ण भारतवर्ष पर मुसलमानी आधिपत्य छल ताहि युगमे मिथिला, तिरहुतक नाम राजनैतिक आ सांस्कृतिक अस्मिता सुरक्षित रखबामे सफल रहल, मिथिलामे संस्कृत भाषामे विभिन्न विषयमे ग्रन्थ लिखल गेल आ एहि लेख सभमे पत्र-पत्र लक्ष्मण संवतक प्रयोग दृष्टिगोचर होइत अछि। महाकवि विद्यापति सेहो अपन लेखनीमे बार-बार एकर प्रयोग कएलन्हि अछि। एहि संदर्भमे ऐतिहासिक तथ्य बहुत बारिकी सँ रखलाह अछि। मुदा लक्ष्मण संवत बसी समयधरि प्रचलन नहि रहल, कारण मिथिला पर मुगलिया आधिपत्य के बाद नव संवत प्रचलनमे आयल। भारतमे शक संवत, विक्रम संवत आ हिजरी सनक चलनसारि तँ अछिए मुदा विशाल भारत देशमे नववर्षक लेल भिन्न-भिन्न तिथि अछि। मिथिलाक पंचांगक अनुसार सालक प्रथम दिन अछि साओन मासक कृष्ण पक्षक प्रतिपदा। एकर कारण अछि मुगल सल्तनत शासक बादशाह अकबर द्वारा महेश ठाकुर के मिथिलाक कर-प्रशासन साओन मासमे देल गेल रहैइ। एकर ऐतिहासिकता केँ दर्शाबैत लेखक कहैत छथि जे भनहि अनजानहिमे, मिथिला-पंचांगक संबंध पैगंबर मोहम्मदक मक्कासँ मदीना जएबाक साल आ अकबर के

नाद्यानारम्भक साल सँ प्रचल अछि।

मैथिली भाषा आ मिथिलाक्षर:

बचपन सँ जल आ अछिंजल दु पृथक बस्तु बुझैत आयलहुँ अछि। ई मिथिलाक संस्कृति केँ विशिष्टता अछि। तहिना लेखक मिथिला आ मिथिलाक्षरक विशिष्टताक बात कएलाह अछि। लेखक कहैत छथि जे भाषा ओकर लिपि संस्कृतिक एकटा विशिष्ट अंग होइछ। मुदा समयक साथ मिथिलाक्षर कमजोर होइत गेल। लेखक कहैत छथि जे स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् धरि मिथिलाक्षरक प्रयोग स्वजनक निमंत्रण-आमंत्रण पत्रमे होइत छल, बाबा लोकनिक कालमे आपसी पत्राचार मिथिलाक्षरमे होइत छल, जे शनैः शनैः विलुप्त भऽ गेल। लेखक कहैत छथि जखन ओ विद्यार्थी छलाह तखन स्नातक पाठ्यक्रममे 50 नम्बर के प्रश्नपत्र मिथिलाक्षर सँ संबंधित रहैत छल। लेखक मिथिलाक्षर मिथिला मिहिरक अन्तिम पृष्ठ पर देल गेल मिथिलाक्षर वर्णमाला सँ सीखलाह। हुनक मिथिलाक्षर सीखब व्यर्थ नहिं गेलन्हि, मिथिलाक्षर ज्ञान होयबाक कारणे बांग्ला साहित्य पढ़ैमे काफी दिक्कत नहि भेलैन्हि। मैथिलीक स्वतंत्र अस्मिताक रक्षार्थ परम आवश्यक जे एकर विशिष्टता के संरक्षण करी। लेखक कहैत छथि जे आँजीक प्रयोग मैथिली आ मिथिलाक्षर के अन्य भाषा-लिपिसँ विशिष्ट बनबैत अछि।

निष्कर्ष:

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒡𑒢𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒐𑒼𑒖 𑒏𑒩𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒋𑒏𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒁𑒫𑒱𑒔𑓂𑒕𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯 𑒫𑒻𑒠𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒁𑒠𑓂𑒨𑒰𑒫𑒡𑒱 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒡𑒢𑒏 𑒫𑒻𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢 𑒋𑒫𑓀 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒪𑒹𑒭𑒝 𑒁𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒦𑒴𑒧𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒞𑒟𑒰 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞𑓁 𑒣𑒾𑒩𑒰𑒝𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑓂𑒨𑒳𑒪𑒱𑒨𑒮 𑒋𑒑𑓂𑒪𑒱𑓀𑒑𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢𑒏𑒰𑒪 𑒧𑒹 𑒄 𑒦𑒴-𑒦𑒰𑒑 𑒂𑒩𑓂𑒨𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒁𑒞𑒱𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒧𑒹 𑒕𑒪। 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒅𑒏𑓂𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒹𑒬 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒞𑒲𑒩𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒞 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒒 𑒧𑒰𑒟𑒫 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒰𑒡𑒫 𑒮𑒿 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻𑒏। 𑒬𑒞𑒣𑒟 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒒 𑒧𑒰𑒟𑒫 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒳𑒩𑒼𑒯𑒱𑒞 𑒑𑒾𑒞𑒧 𑒩𑒯𑒴𑒑𑒝𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲𑒏 𑒞𑒙𑒮𑒿 𑒮𑒠𑒰𑒢𑒲𑒩𑒰𑒏 (𑒑𑒝𑓂𑒛𑒏𑒲𑒏) 𑒞𑒙𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒖𑓂𑒫𑒪𑒱𑒞 𑒏' 𑒋𑒯𑒱 𑒦𑒴𑒧𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱। 𑒄 𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒟𑒫𑒏 𑒂𑒑𑒧𑒢𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒋𑒞𑒨 𑒁𑒨𑒪𑒰𑒯। 𑒤𑒪𑒞𑓁 𑒋𑒯𑒱 𑒦𑒴𑒧𑒱 𑒣𑒩 𑒏𑒵𑒭𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓀𑒦 𑒦𑒹𑒪 𑒞𑒟𑒰 𑒨𑒖𑓂𑒘 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒳𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒰𑒫𑓂𑒨 𑒞𑒟𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝𑒮𑒦𑒏 𑒫𑓀𑒬𑒰𑒫𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒞𑒲𑒨 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒑𑒝𑒱𑒞 𑒧𑒱𑒟𑒱 𑒫𑒻𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒰𑒟𑒫 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒒𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒪𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒟𑒱𑒏। 𑒣𑒾𑒩𑒰𑒝𑒱𑒏 𑒫𑓀𑒬𑒰𑒫𑒪𑒲𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒁𑒨𑒼𑒡𑓂𑒨𑒰𑒡𑒱𑒣𑒞𑒱 𑒧𑒢𑒳𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒱𑒧𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒨𑒖𑓂𑒘-𑒦𑒴𑒧𑒱𑒧𑒹 𑒁𑒨𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒱𑒟𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒰𑒧𑒣𑒩 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱। 𑒢𑒑𑒩 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒧𑒞𑒰 𑒩𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹𑒿 𑒍 𑒖𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒄𑒯𑒼 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕 𑒖𑒹 𑒧𑒢𑓂𑒟𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒯𑒼𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒤𑒪𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒧𑒱𑒟𑒱 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒁𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹𑒿 𑒍 𑒖𑒢𑒏 𑒏𑒯𑒍𑒪𑒢𑒱 𑒞𑒟𑒰 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒁𑒬𑒩𑒲𑒩𑒲 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯। 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒏

आधानयन अछि प्रदर्शक नाम मिथिला यथेला।

संदर्भ:

1. Jha, M (1997). "Hindu Kingdoms at contextual level". Anthropology of Ancient Hindu Kingdoms: A Study in Civilizational Perspective. New Delhi: M.D. Publications Pvt. Ltd. pp. 27-42.
2. Mishra, V. (1979). Cultural Heritage of Mithila. Allahabad: Mithila Prakasana. pp. 13. अन्तिम यहूँच तिथि: 28 December 2016.
3. shii, H. (१९९३), "Seasons, Rituals and Society: the culture and society of Mithila, the Parbate Hindus and the Newars as seen through a comparison of their annual rites", Senri Ethnological Studies 36: 35-84।
4. Radhakrishna Choudhary, "A Survey of Maithili Literature", अन्तिम यहूँच २२ दिसम्बर २०१६।
5. "Cultural Heritage of

Mithila", पृ: 13, अन्तिम पहुँच २८ दिसम्बर २०१६।

6. Jha, Arun Kumar (2005) (en में). Some Aspects of the Cultural History of Mithila: The Janaka Dynasty, the Karnaatas & the Oinwaaras. University Department of History and A.I.H.C. & Archaeology, T.M Bhagalpur University.
7. Thakur, Upendra (1956) (en में). History of Mithila: (circa 3000 B.C.-1556 A.D.). Mithila Institute.
8. Jha, Pankaj Kumar (2010). Sushasan Ke Aaine Mein Naya Bihar. Bihar (India): Prabhat Prakashan. मूल से 28 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 जनवरी 2019.
9. मिथिला का इतिहास, डॉ० रामप्रकाश शर्मा, कामेश्वर सिंह संस्कृत वि.वि.दरभंगा, तृतीय संस्करण-2016, पृ०-9.
10. Cust, R.N. (1901). "The Indian Hero". Linguistic and oriental essays: written from the year 1840 to 1903. London: Trubner & Co. pp. 144-158. अन्तिम पहुँच तिथि: 12 January 2017.

अस्तु।

डॉ दीपेश कुमार ठाकुर,

शिक्षाविद, प्राध्यापक (अंग्रेजी) मानविकी

डीआईएमटी विश्वविद्यालय, मसूरी रोड, देहरादून, भारत

deepesh1november@gmail.com +91-8527740419

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

Scan 05 Jun 23 11·12·27
Monday, 5 June 2023 12:19 AM

६



(नाम- परमानन्द लाल कर्ण, 30.01.60 पिता- स्व० परशुराम लाल कर्ण
गाँव- घोघसम, पो०- विरौल, दरभंगा, बिहार, शिक्षा- स्नातकोत्तर
पी० जी० [illegible], सेवानिवृत्त- प्रबन्धक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया)

गीता माहात्म्य
(पद्म पुराण उत्तर खण्ड)
छठम अध्याय

श्री भगवान कहलथिन- हे सुमुखि आब हम छठम अध्यायक माहात्म्य बतबैत छी। जकरा सुनला सँ मनुष्यक लेल मुक्ति हाथ मे आबि जाइत अछि। गोदावरी नदीक तट पर प्रतिष्ठान पुर नाम सँ एकटा पैघ नगर अछि। ओहि ठाम हम पिप्पलेश नाम सँ विख्यात भऽ रहैत छलहुँ। ओहि नगर मे जानश्रुति नाम सँ एकटा राजा रहैत छलाह जे समस्त प्रजा कें बड़ प्रिय छलथिन। हुनकर प्रताप मार्तण्ड मण्डलक प्रचण्ड तेज जकाँ बुझि पड़ैत छल। सब दिन हुनका यज्ञक धुआँ सँ नन्दनवनक कल्पवृक्ष पतन कारी भऽ गेल छल जे मानू राजाक असाधारण दानशीलता देखि ओ लज्जित भऽ गेल छथि। हुनका यज्ञ सँ प्राप्त पुरोडाशक रसास्वादन मे सदिखन आसक्त रहबाक कारणे देवता लोकनि कखनहु प्रतिष्ठान पुर छोड़ि बाहर नहि जाइत छलाह। हुनका सँ दान काल मे छोड़ल गेल जलक धार, प्रताप रूपी तेज आ यज्ञक धुआँ सँ आच्छादित भऽ मेघ सेहो समय पर बरसैत छल। ओहि राजाक शासनकाल मे ईतीक लेल कतहुँ स्थान नहि भेटैत छल। हुनकर नीक नीतीक सब जगह प्रसार होयत छल। ओ बावली, इनार पोखरि खुदबेने रहथिन आर सबदिन पृथ्वीक अन्तर्निहित निधिक अवलोकन करैत छलाह। एक दिन राजाक दान, तप, यज्ञ आ प्रजापालन सँ सन्तुष्ट भऽ स्वर्गक देवलोकनि हुनका वर देबाक लेल एलथिन। ओ कमलनाल सन उज्जर हंसक रूप धारण कऽ अपन पाँखि हिलाबैत आकाश मार्ग सँ गमन करइत गेलाह। बड़ उतावली सँ उड़ैत ओ सब हंस अपना मे बातचीत सेहो करैत छलथि। ओहि मे सँ भद्राश्व आदि दू-तीन टा हंस तेजी सँ उड़ि कें आगू चलि गेलथिन। तखन पाछू भेल हंस हुनका सँ कहलथिन- भाय भद्राश्व अहाँ सब तेजी सँ उड़ि कें किए आगू भऽ रहल छी। ई रास्ता दुर्गम अछि तें हमरा सब कें संगे संग मिल कें चलबाक चाही। अहाँ कें नहि देखि पड़ैत अछि जे सोझा मे पुण्यमूर्ति महाराज जानश्रुतिक तेज पुंज स्पष्ट रूप सँ प्रकाशित भऽ रहल अछि।

हंसक ई वचन सुनि आगू जे हंस छलथिन ओ बिहुँसि कें कहलथिन- की भाइजी, राजा जानश्रुतिक तेज ब्रह्मवादी महात्मा रैक्वक तेज सँ बेसी तेज अछि की?

हंसक ई बात सुनि राजा जानश्रुति अपना महलक छत सँ नीचा उतरि गेलाह आ सुखपूर्वक आसन पर विराजमान भऽ अपना सारथी कें कहलथिन- अहाँ महात्मा रैक्व कें एहि ठाम लऽ आउ। राजाक ई अमृत तुल्य वचन सुनि मह नाम सँ एकटा सारथी

প্রসন্নতা প্রকট করৈত নগর সঁ বাহর গেলাহ। সব সঁ পহিনে
মুক্তিদায়িনী কাশীপুরীক যাত্রা কেলনি জাহি ঠাম জগতক
স্বামী ভগবান বিশ্বনাথ সব লোকনি কেঁ উপদেশ দৈত ছলথিন।
তকর বাদ ও গয়াক্ষেত্র পহুঁচলথি জাহি ঠাম প্রসন্ন নেত্রযুক্ত ভগবা-
ন্ গদাধর সমস্ত লোকক উদ্ধার করবাক লেল নিবাস করৈত ছথি
তদনন্তর কতেকো তীর্থ স্থলক ভ্রমণ করৈত ও পাপনাশিনী
মথুরাপুরী গেলাহ জে ভগবান শ্রীবিষ্ণুক আদি স্থান অছি আ জে
পরম মহান্ ব মোক্ষ প্রদাতা অছি। বেদ আ শাস্ত্র মে ও তীর্থ
ত্রিভুবনপতি ভগবান গোবিন্দক অবতার স্থানক নাম সঁ
প্রসিদ্ধ অছি। কতেকো দেবতা আ ঋষি লোকনি হুনকর
সেবন করৈত ছথিন মথুরা নগর কালিন্দীক তট পর শোভা-
যমান অছি। ওকর আকৃতি অর্দ্ধচন্দ্র সন প্রতীত হোয়ত অছি।
ও সব তীর্থক নিবাস সঁ পরিপূর্ণ অছি। গোবর্দ্ধন পর্বত ভেলা
সঁ মথুরা মণ্ডলক শোভা বেসী বঢ়ি গেল অছি। ও পবিত্র গাছ-বৃক্ষ
আ লতা সঁ আবৃত অছি। জাহি মে বারহ টা বন অছি। ও পরম
পুণ্যময় আ সবহক বিশ্রামদাতা শ্রুতীক সারভূত ভগবান
শ্রী কৃষ্ণক আধার ভূমি অছি।

তত্পশ্চাত মথুরা সঁ পশ্চিম আ উত্তর দিশা থোড়েক দূর
গেলা পর সারথী কেঁ কাশ্মীর নাম সঁ এক নগর দেখি পড়লনি
জাহি ঠাম শংখ সন উজ্জর গগনচুম্বী মহলক পাঁতি ভগবান শংকর-
ক অট্টহাস সন শোভায়মান ছল। জাহি ঠাম ব্রাহ্মণক শাস্ত্রীয়
গানক ধুন সুনি শুক মানস সেহো নীক বাণী আ পদক
উচ্চারণ করৈত দেবতা সন ভঽ জায়ত অছি। জাহি ঠাম নির-
ন্তর যজ্ঞক ধুআঁ ছোপি বহলাক বাদহু আকাশ মণ্ডল মেঘ সঁ
ঘেরৈত রহলা পর অপন কালিমা নহি ছোড়ৈত অছি। জাহি ঠাম
অধ্যাপক লগ আবি ছাত্র জন্মকালীন অভ্যাস সঁ সব কলা
স্বত: পঢ়ি লৈত ছথি। জাহি ঠাম মাণিক্যেশ্বর নাম সঁ প্রসিদ্ধ ভগবান
চন্দ্রশেখর দেহধারী লোকনি কেঁ বরদান দেবাক লেল নিত্য নিবাস
করৈত ছথিন। কাশ্মীরক রাজা মাণিক্যেশ দিগ্বিজয় মে সমস্ত
রাজা কেঁ জীত কঽ ভগবান শিবক পূজন কেনে ছলাহ তখনহি
সঁ হুনকর নাম মাণিক্যেশ্বর ভঽ গেল ছল। হুনকহি মন্দিরক
দরবাজা পর মহাযোগী বৈকু একটা ছোট গাড়ী পর বৈসল অপনা
অংগ কেঁ খুজলাবৈত গাছক ছাঁহক সেবন করৈত ছলাহ। ওহি অবস্থা
মে সারথী হুনকা দেখলথিন। রাজা সঁ বতাওল গেল চিন্হাসি
সঁ ও ঝবতহি বৈকু কেঁ পহচানি লেলথিন আ হুনকর চরণ স্পর্শ
করৈত কহলথিন - ব্রাহ্মণ, অহাঁ কোন ঠাম রহৈত ছী? অহাঁক
পূরা নাম কী অছি? অহাঁ তঽ সদিখন স্বচ্ছন্দ বিচরণ করঽবালা
ছী যেবি অহাঁ এহি ঠাম কিএক ঠহরল ছী? অখন অপনেক
কী করবাক বিচার অছি? সারথীক ই বচন সুনি পরম আন-
ন্দ মে রমল মহাযোগী বৈকু কিছু সোচি হুনকা সঁ কহলথিন-
'যদ্যপি হম পূর্ণ ছী, হমরা কোনো বস্তুক আবশ্যকতা নহি অছি
তথাপি হমর মনোবৃত্তিক অনুসার কেও পরিচর্যা কঽ সকৈত ছী'
বৈকুক হার্দিক অভিপ্রায় কেঁ আদরপূর্বক গ্রহণ কঽ সারথী
রাজা লগ চলি গেলাহ। ওহি ঠাম পহুঁচি রাজা কেঁ প্রণাম কঽ
কর জোড়ি সমস্ত সমাচার কহলথিন। তখন স্বামীক দর্শন সঁ
হুনকা মন মে বড় প্রসন্নতা ঝলকি রহল ছল। সারথীক বচন
সুনি রাজা আশ্চর্যচকিত ভঽ গেলাহ। হুনকা হৃদয় মে বৈকুক
সকোর করবাক শ্রদ্ধা জাগৃত ভেলনি। ও দূটা খচর সঁ
জুতল একটা গাড়ী লঽ কে যাত্রা প্রারম্ভ কেলথিন। সংগ
মে মোতীক হার, নীক বস্ত্র আ এক হজার গো সেহো লেলথিন।

কাশ্মীর মণ্ডল মে জাহি ঠাম মহাত্মা রৈক্ক রহৈত ছলাহ ওহি
ঠাম পহুঁচি রাজা সমস্ত বস্তু হুনকা আগাঁ রাখি নিবেদন কয়
সাষ্টাংগ প্রণাম কেলথিন। মহাত্মা রৈক্ক ভক্তি সঁ চরণাগত
ভেল রাজা জানশ্রুতি পর লক্ষিত ভয় কহলথিন - যৌ ক্ষুদ্র
অহাঁ দুষ্ট রাজা ছী। অহাঁ হমর বৃত্তান্ত নহি জানৈত ছী কী ?
ভা খচ্চর সঁ জুতল অপন গাড়ী লয় জাউ। ভা বস্ত্র মোতীক হার
আ দুধারু গাও সেহো অহাঁ লয় জাউ। রৈক্ক কেঁ এনা কহলাপর
রাজাক মন মে ভয় উৎপন্ন ভয় গেল। তহন রাজা শাপক ভয়
সঁ মহাত্মা রৈক্কক চরণ পকড়ি লেলথিন আ ভক্তি পূর্বক কহলনি
ব্রাহ্মণ হমরা পর প্রসন্ন হোউ। ভগবন অহাঁ মে ভা অদ্ভুত মাহা-
ত্ম্য কোনা আয়ল? প্রসন্ন ভয় কে হমরা বতাউ। রৈক্ক কহলথিন
রাজন! হম সব দিন গীতাক ছঠম অধ্যায়ক পাঠ করৈত
ছী জাহি সঁ হমর তেজ দেবতাক লেল সেহো দুঃসহ অছি।

তদনন্তর পরম বুদ্ধিমান রাজা জনশ্রুতি যত্নপূর্বক
মহাত্মা রৈক্ক সঁ গীতাক ছঠম অধ্যায়ক অভ্যাস কেলনি জাহি
সঁ হুনকা মোক্ষক প্রাপ্তি ভেলনি। ওম্হর রৈক্ক সেহো ভগবান
মাণিক্যেশ্বর লগ মোক্ষদায়ক গীতাক ছঠম অধ্যায়ক জপ
করৈত সুখ সঁ রহয় লগলাহ। হংস রূপধারী বরদান দেবাক লেল
আয়ল দেবতা লোকনি বিস্মিত ভয় স্বেচ্ছানুসার চলি গেলাহ

জে কেও সদিখন এহি একটি অধ্যায়ক জপ করৈত
ছথি ও সেহো ভগবান বিষ্ণুক স্বরূপ পাবি লৈত ছথি। তাহি
মে কোনো সংদেহ নহি।



সাতম অধ্যায়

ভগবান শিব কহলথিন - পার্বতী, আব হম সাতম অধ্যায়ক
মহাত্ম্য বতাবৈত ছী। জেকরা সুনি কান মে অমৃত রাশি
ভরি জায়ত অছি। পাটলিপুত্র নাম সঁ একটা দুর্গম নগর
অছি জেকর দ্বার বেসী উঁচ অছি। ওহি নগর মে শংকুকর্ণ
নাম সঁ একটা ব্রাহ্মণ রহৈত ছলাহ। ও বৈশ্য বৃত্তিক আশ্রয়
লয় কে ধনার্জন কেলথি মুদা ও নহি ত পিতরক কখনহুঁ
তর্পণ কেলথি আওর নহি দেবতাক পূজন। ও ধনোপা-
র্জন মে তৎপর ভয় রাজা লোকনি কেঁ ভোজ ভাত
দেত ছলথিন। এক সময়ক বাত অছি জে ও ব্রাহ্মণ অপন
চারীম বিবাহ করবাক লেল পুত্র আ বন্ধু-বান্ধব সংগ যাত্রা কেলনি
রাস্তা মে অর্ধরাত্রী মে জখন সব সুতল ছল একটা সাঁপ কতহুঁ
সঁ আবি কেঁ হুনকা বাঁহি মে কাটি লেলকনি। ওকরা কাটৈতাহিঁ
এহন অবস্থা ভয় গেলনি জে মণিমন্ত্র আ ঔষধিক কোনো
প্রভাব নহি পড়ল আওর হুনকর শরীরক রক্ষা অসাধ্য
ভয় গেল। তৎপশ্চাত কিছু ক্ষণ মে হুনক প্রাণ পখেরু
উড়ি গেল। কিছু সময় পশ্চাত ও প্রেত সর্প যোনি মে জন্ম লেল-

ণ। হুনকৰ চিত্ত ধনক বাসনা মে বান্হল ছল। ও পূর্ব জন্মক ধন-
নু কেঁ স্মৰণ কৰৈত সোচৈত ছলাহ - 'হম ঘৰক বাহৰ কতেকো
কৰোড় অপন ধন গাড়ি কেঁ ৰখনে ছী জেকৰা সঁ পুত্র কেঁ বঞ্চিত
কঽ স্বয়ং ওকৰ ৰক্ষা কৰব।' এক দিন সাঁপক যোনি সঁ পীড়িত
ভঽ পিতা সপনা মে অপন পুত্র কেঁ সোঝা মে আবি অপন
মনোভাব ৰতেলথিন। তহন হুনকৰ নিৰ্বলাশা পুত্র সব সবেৰে
উঠি বিস্ময় সঁ একদোসৰ কেঁ সপনাক বাত কহলথিন।
মাঝিল পুত্র হাথ মে কোদাৰি লঽ ঘৰ সঁ নিকললা আ জাহি
ঠাম হুনকৰ পিতা সর্প যোনি ধাৰণ কঽ ৰহৈত ছলথিন ওহি
ঠাম গেলথিন। যদ্যপি হুনকা ধনক সুধনক ঠীক ঠীক পতা
নহি ছলেন তেঁয়ো ও সপনা মে ৰতাওল গেল চিন্হ সঁ সুধন
নিশ্চয় কঽ লোভবুদ্ধি সঁ ওহি ঠাম পহুঁচি বাবী খোদনাই
শুরু কেলনি। তহন ওহি বাবী সঁ একটা ভয়ানক সাঁপ প্রকট
ভেল আ হুনকা কহলথিন - মূঢ় মানুষ অহাঁ কে ছী? এহি
ঠাম কিএ অয়লহুঁ অছি? অহাঁ বিনা কিএ খোদি ৰহল ছী?
অহাঁ কেঁ কে ভেজলক অছি? ঈ সব বাত হমৰা ৰতাউ।

পুত্র কহলথিন- হম অপনেক পুত্র ছী। হমৰ নাম ধিৰ
অছি। হম ৰাতি মে সপনা দেখলহুঁ অছি জাহি সঁ বিস্মিত
ভঽ এহি ঠামক সোনা লেবক লেল কোদাৰি সঁ আয়ল ছী।

পুত্রক লোকনিন্দিত বাত সুনি ও সাঁপ হঁসৈত উচ্চ স্বৰ মে
হুনকা কহলথিন- জোঁ অহাঁ হমৰ পুত্র ছী তঽ হমৰা এহি বন্ধন
সঁ মুক্ত কৰু। পূর্বজন্মক গাড়ল ধনক লেল সর্প যোনি মে
হমৰ জন্ম ভেল অছি। পুত্র পুছলথিন - পিতাজী অপনেক
মুক্তি কোনা হোয়ত তকৰ উপায় হমৰা ৰতাউ কিএক তঽ
এতেক ৰাতি মে সব লোকনি কেঁ ছোড়ি অহাঁ লগ অএলহুঁ অছি।

পিতা কহলথিন - পুত্র গীতাক অমৃত ময় সাতম
অধ্যায় কেঁ ছোড়ি দোসৰ কোনো তীর্থ, দান, তপ আ যজ্ঞ
হমৰা মুক্ত কৰবা মে সমর্থ নহি অছি। কেৱল গীতাক সাতম
অধ্যায় প্রাণীক বুঢ়াপা আ মৃত্যু আদি দুঃখ কেঁ দূৰ কৰ ঽ
ৰালা অছি। পুত্র হমৰা শ্রাদ্ধক দিন সাতম অধ্যায়ক পাঠ
কৰইবালা ব্রাহ্মণ কেঁ ভোজন কৰায়ব জাহি সঁ নিঃসন্দেহ
হমৰ মুক্তি ভঽ জায়ত। পুত্র অহাঁ যথাশক্তি পূর্ণ শ্রদ্ধা সঁ
বেদ বিদ্যা মে প্রবীণ দোসৰ ব্রাহ্মণ কেঁ ভোজন সেহো কৰায়ব।

সর্পযোনি মে পড়ল পিতাক ঈ বচন সুনি সব পুত্র হুনকা
আজ্ঞানুসাৰ আ ওহু সঁ বেসী কাম কেলথিন। তহন শঙ্কুকর্ণ
অপন সর্প শৰীৰ ত্যাগি দিব্য দেহ ধাৰণ কেলনি আ সব
ধন পুত্রক অধীন কঽ দেলথিন। পিতাজী জে ধন বাঁটি কে
দেলথিন জাহি সঁ ও সদাচাৰী পুত্র বড় খুশ ভেলাহ। হুনকৰ
বুদ্ধি ধর্ম মে লাগল ৰহৈত ছলনি তেঁ ও বাৱলী, তলাব, পোখৰি
যজ্ঞশালা আ দেৱ মন্দিৰ মে ওহি ধনক উপযোগ কেলনি।
সংগহি সংগ অন্নশালা সেহো বনেলথি। তত্পশ্চাত সাতম
অধ্যায়ক সদিখন জপ কৰৈত মোক্ষ প্রাপ্ত কেলাহ।

পার্বতী ঈ অহাঁ কে সাতম অধ্যায়ক মাহাত্ম্য ৰতে-
লহুঁ অছি জেকৰা সুনলা মাত্র সঁ মনুষ্য সব পাপ সঁ
মুক্ত ভঽ জায়ত অছি।

——o——

পৰমানন্দ লাল কর্ণ

यएाडा

२.३.कुमान मनाज कथय-सम्मा क



कुमान मनाज कथय

लघुकथा

सम्मा क

गाम जेल नही। रान म टरलो-टरलो वाध दिस चलि गलहुँ। दुःख रल जजाणि सरर क दशा दखि....... अननूआ जका...... किछु खा ाs उरिना यनी य७ल....... वीनान! घुनी काल दलान यन दागमनि कs कs कुनु७ कनो कनिया कक्का रटला। गान लगलियनि..... हाल-चाल यूछला। गाम-घन, खनी-वाडी क दशा यन रम अयन चिंा प्रकट कलहुँ आ ाकना वाद ज कक्का क प्रवचन शुनु रल स अंानाष्ट्रीय, नाष्ट्रीय समया क समाहिा कनो यानिवानिक स्थिाि यन आवि गला समाजक याानामुख दशा आ दिशा सs खिन्न वूमला कनिया कक्का। खास कs गाम-यनिवान सs लुफ हाळ्ीा

आभियता, सहयोग, सेवा सन सऽ। कहैत नहलाह - यहिन गाम म ककना ठामऽ काना काज-प्रयोजन होऽ्ऽी गऽ यूना गाम ठाकना अयन काज बूमि शानीनिक, आर्थिक सन नुयँ कन-कमाना। ककना ठामऽ काना याहून-यनख आवि जाऽ्ऽी गऽ सन अयन-अयन घन सऽ गाक न नाहल गीमन-गनकानी सन विनू माँगन दऽ जाऽ्ऽी ज घनवैया क काना गनदचूग नहिं। खाऽ्ऽी लै वैसह गऽ सन घन सऽ ओहिना गीमन-गनकानी आवि जाऽ्ऽी। जलखै-स्गजन क वन होऽ्ऽी गऽ जकान ठामऽ छौ सैह आग्रह कऽ कऽ खाआ दै। क अयन क आन विझव माश्किल! आव ठीक गकन ठन्ना छै.....ककना ककना सऽ मगलव नहिं। सन आन.. सन अनविझान! काना काज-गिहान म वाहन सऽ स्नसिया, यनसैवला सन क स्गठा यन आनि ऽ' स्गज कानह। आन गऽ आन स्गजा खाऽ्ऽी लै अवै लै कया गैयान नहिं। लाज-यञ्च सै घन ओक जन मूँह-छ्नैयल लै आवि जगह सैह वसी! कक्का वजैग नहलाह; हम विच-विच म सहमगि म मूठी ठालवैग 'हँ हूँ' कनैग नहलहूँ। ओहि वीच कैक-वन मिञु कॉल आवि गेला। मूचा कक्का क ध्यान स्ंग स्लनि गखन जखन स्ञ्जैनाली आवि विकठ कऽ वाजल - 'आँगन जऽ्ऽयौ न वौआ। गिनहथनी कखनी सऽ वालवैग हथिन जलखै खागिना।'

कनिया कक्का घठी दखैग हठवठला - 'ह दखहक गथ्य-गथ्य म कखन दस सऽ ठयन घठी क काँठा चलि गेलै वूसवा न कलियै। जाह गाँहू जठ-जलयान कनह गऽ; हमहूँ जाऽ्ऽी छी स्नान-यूजा लला। आऽ्ऽी गां स्ट गेलऽ गऽ ओग वगिया ललहूँ; नहिं गऽ ककना सऽ दु शह्न वगियैव! मानक वाग मान म ठैनाऽ्ऽग नहि जाऽ्ऽीग अछि।

आब्ली मानक वाग गाना सs कहि मsन प्रसन्न रुल आ हल्लुका। यलखगि हूअs गs अविहs रूना।' हम 'हुँ' कहि क' अयन आँगन विदा रुलहुँ।

माय कानटा s'ग 0।८ वाट गको छल- 'ओह आधा यहन वीगि (गलै; ओखन गक ओका (0ाय जला न यीलह अछि। गाम अविगा गां सर किछु विसना जाब्लीगा छह। रैया क गय्य म की उासउा (गलह। उा आव ननरसा (गल छथिन। ओहिना वाट चलैगा लाक सर क यकाउ-यकाउ कs सूनवैगा नहैगा छथिन खउहा। लाक गs ओहि उsन आव ब्ली वाटा याागि रून छै।'

हम प्रकटगः किछु वाजि गs नहिं सकलहुँ; मुदा साचैगा नहलहुँ उा सगा उाय हाब्लगा मानवीय मूल्य, ८हैगा संस्कान, छिउियाब्लीगा यनम्यना आ गलैगा संवदना यन अयन ववाक निवान प्रकट कनव आ 0हिंय0हिं वाउव यदि मानसिक निकानक द्याोतक छै; गखन आब्ली सम्भगा क?

-कुमान मनाज कथय, सम्प्रगि: रानगा सनकान क उाय-सचिव, **संयर्क:** सी-11, टावन-4, टाब्लय-5, किदनब्ली नगन यूर्व (दिल्ली हाट क सामन), नब्ली दिल्ली-110023 मा. 9810811850 / 8178216239 ब्ली-मल : writetokmanoj@gmail.com

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन य0ाउ।

२.४.आचार्य रामानन्द मण्डल-गलत/ रामेश्वरम लिंग स्थापना



आचार्य रामानंद मंडल- गलत/ रामेश्वरम लिंग स्थापना

१

गोलर

प्रतापगढ़ क सम्पन्न किसान रामनारायण क बड़ लड़का सन्तोष नारायण सीतामढ़ी क एल क कालेज मे बीए राजनीति आनर्स क छात्र छल। ओही कालेज मे रायपुर क सम्पन्न किसान शिव प्रताप क बड़की लड़की सुजाता सेहो बीए राजनीति आनर्स मे पढ़ैत छल। संयोग स दुनू एक सेक्शन मे छल। परीक्षा क तैयारी मे नोट्स क लेन देन मे दुनू क प्रेम सेहो बढ़ैत चल गेल। दुनू गोटे कालेज क वाचनालय मे राजनीति पर चर्चा सेहो करए। कालेज क वाद विवाद मे भाग सेहो लथि। सन्तोष जहाँ पढ़ मे बाल रहाँ सुजाता नियम मे बाल। कहियो जीत हार बाउस ताकना प्रेम पर कहियो प्रभाव न पड़ा। आ दिनानुदिन प्रेम बढ़ैत जाइत रहँ। फाइनल परीक्षा मे दुनू फर्स्ट क्लास मे पास कैलक।
सुजाता आ सन्तोष अब बीपीएससी क तैयारी करए लागल। दू साल बाद सन्तोष बीपीएससी क्लियर कऽ क एसडीओ पद पर बेगूसराय अनुमंडल मे ज्वाइन कऽ लेलक। सुजाता सेहो बड़ खुश रहँ। सन्तोष क बधाइ आ शुभकामना देलक। ताकना अपना निजल पर कहियो पछतावा न रहै।
अब सुजाता क बाबू शिवप्रताप क सुजाता क शादी क लेल चिंता सताबऽ लागल। अब लड़का क लेल पता लगाबऽ लागल। शिव प्रताप क हुनकर दोस्त शास्त्री जी बतैलथिन-शिवप्रताप बाबू। अपना जाति मे प्रतापगढ़ क रामनारायण बाबू क बड़ लड़का सन्तोष प्रताप

बीपीएससी कम्पीट क क बेगुसराय अनुमंडल में एसडीओ पद ज्वाइन कैलक। एक दिन शिवप्रताप कहलन-शास्त्री जी कहू प्रताप गढ़ चलू। शास्त्री जी कहलन-हं। नेक काज में देरी न होय क चाही। सर्विसवाला लड़का क लेल अगुआ सब लुबधल रहै छैय। कहीं दोसर न बाजी मार ले। अइल हम सब पहिल पहुंचू।

कहू सबेर साते बजे स्कार्पियो स शिवप्रताप, शास्त्री जी, सुजाता क छोट भाई अमरेन्द्र प्रताप,, बाबा कृष्ण प्रताप आ ड्राइवर क साथ प्रतापगढ़ क लेल चललन। दो घंटे में प्रतापगढ़ पहुंच गेलन। संयोग स सत्येन्द्र भी घर पर ही रहे।

रामनारायण बाबू, शिव प्रताप बाबू साथे सब लोग क खूब आदरभाव कैलन। आदरभाव स शिव प्रताप खूब खुश भेलं। आपस में बातचीत होय लागल। अइ बीच में सत्येन्द्र भी आयल सब स परनामा पाती भेल। बातचीत में शिव प्रताप क मालूम भेल की सुजाता आ सत्येन्द्र कालेज में बैचमेट रहे। शिवप्रताप आ रामनारायण प्रताप आ बात जान क आश्चर्यचकित आ खुश भेल। रामनारायण बाबू कहलन-शिवप्रताप बाबू शादी की तैयारी करू। सत्येन्द्र कँ मां हमरा सब बात सुजाता आ सत्येन्द्र क बारे में बता देलन छैय।

तय समय पर सुजाता आ सत्येन्द्र क शादी सम्पन्न भ गेल।

सुजाता क छोट भाई अमरेन्द्र प्रताप क आना जाना बेगुसराय आ प्रतापगढ़ होय लागल। प्रतापगढ़ में सत्येन्द्र क छोटकी बहिन अनिता स अमरेन्द्र क आंखि चार भेल। आ पता लागल कि अनिता सीतामढ़ी क गोयनका कालेज में बी० मनोविज्ञान आनर्स में पढ़ैत

हैय। संयोग स अमरेन्द्र वही कालेज में इतिहास आनर्स क छात्र रहए। अब त दुनू वाचनालय में मिलै लागल। प्रेम परवान चढ़ै लागल।

दुनू गोटे बीए आनर्स फर्स्ट क्लास में आयल। दू वर्ष बाद अमरेन्द्र बीपीएससी कम्पीट क क डीएसपी पोस्ट पर मधूबनी अनूमंडल में ज्वाइन कैलक। अनिता भी खुश रहं। अपना लेल कोई मलाल न रहए। अमरेन्द्र क बधाई आ शुभकामना देलक।

अब रामनारायण बाबू क अनिता क शादी क चिंता होय लागल। ओ अपना दोस्त रामफल बाबू क कहलन। रामफल बाबू कहलन-ठीक हम पता लगबै छी। लेकिन ई सब सुजाता क भाई अमरेन्द्र पर कोई विचार न करै रहए। ओन लड़का क पता न चलै।

रामनारायण बाबू चिंतीत रहं। अनिता ई सब बात धीरे धीरे जान लागल कि अमरेन्द्र पर कोना विचार न हो रहल हैय जबकि ओ डीएसपी हैय। लेकिन रिश्ता क जंजाल में फसल हैय। कारण कि ओ हमरा भाभी क भाई आ हमरा भैया क साला हैय। परंच हम त अमरेन्द्र स प्रेम करै छी। अमरेन्द्र भी हमरा स प्रेम करै छी।

। अनिता पहिल मोबाइल अमरेन्द्र क मोबाइल रिंग कैलक। अमरेन्द्र कहलन-हलो! अनिता। की बात हैय।

अनिता बाजल-हलो। बाबू जी हमर शादी कर चाहैत हैय। परंच तोरा पर कोई विचार न करत हैय। जेकि तू डीएसपी छा। तू हमरा भाई क साला छा तै लेल विचार न करै हैय। कि जरुर निआह करा होतौ। परंच हम त तोरा स प्रेम करै छी। तू हु हमरा स प्रेम

कनै छा।

अमनेन्द्र वालल-हमला। अनिता हम गाना स वडा प्रेम कनै छी। लकिन हमना गाना यनिवान क निश्चा झ७ल दे। सावधानी स डील कना। दखा हम इतिहास में म यढ लं छी कि नाजा महानाजा क ७क दासन क वहिन स शादी हायग नह लै हैया। वाकना (गालट शादी कहं छैया। वाम्म दहा देही नागा नहे छैया। हम वाह वाग हे नाह्म ७य क देय छिया। ई सह वाग माय क वगावा। वा वावू जी क वगैथुन।

आइ सांस में अनिता,अयना माय क सह वाग वगैलक। नाग में अनिता नामनानायण वावू स कहलन-दखु। अनिता अयन हानी क हाडी अमनेन्द्र जी स प्रेम कनैग हैया। अमनेन्द्र जी डी७सयी छथिन स अंहा जनवै कनै छी। अनिता वगैलक कि नाजा महानाजा क शादी ७क दासन क वहिन स हाइग नहलै हैया। विआह हाय में काडी दिक्कग न हायग।

नामनानायण वावू वाललन-वाग ग ठीक हैया। ई सह नाजा महानाजा में ७हन विआह हाइ हैया। लकिन हम ग डीनकिसान छी।

अनिता क माय वाललन-ग हम सह कान कम छी। हमना यनिवान में ७सतीडा हैय ग समधी क यनिवान में डी७सयी हैया। अइ समय में ७सतीडा आ डी७सयी नाजा महानाजा हाइ छैया।

नामनानायण वावू कहलन-ठीक हैय कह नाहुल वावू स वाग कनव। कह हाक नाहुल वावू स नामनानायण वावू स निस्पान स वाग कैलन। नाहुल वावू कहलन की ठीक वागकहे छी। कह नायपून चलूं। कह सवन स्कार्पियो स नामनानायण वावू, नाहुल वावू,दु (गा दयाद

मे क रानीजी आ ब्राह्मन क साथ नायपुर पहुँचलन। शिवप्रसाद बाबू खुब आनन्दित कैलन।
सब बात विस्तार स रामनारायण बाबू शिवप्रसाद बाबू क बतौलन।
शिवप्रसाद बाबू कहलन-ठीक हैय। जौं अमरेन्द्र आ अनिता एक दोसर क प्रेम करैत हैय। आ जब राजा महाराजा एक दोसर क बहिन स विआह करैत रहल हैय।
जकरा गोलट विआह करै हैय त अमरेन्द्र आ अनिता क गोलट विआह होतै। अंहा तैयारी करू।
तय समय पर सीतामढ़ी क गोशाला पार्टी हॉल में अनिता अमरेन्द्र क गोलट विआह समाज क उपस्थिति में सम्पन्न भ गेल। दुनू परिवार खुब खुश रहैं।

२

रामेश्वरम लिंग स्थापना

वाल्मीकि रामायण में शिव लिंग स्थापना आ रामचरितमानस मे लिंग स्थापना वर्णन मे भिन्नता हय।
वाल्मीकि रामायण में रावण वध क बाद अयोध्या लौटत वक्त श्री राम पुष्पक विमान में सीता का लिंग स्थापना क स्थान क दिखवैत वर्णन कैल हतन -

एतत् कुक्षौ समुद्रस्य स्कन्धावारनिवेशनम्।।१९।
अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद् विभुः।।

यह समुद्र क उत्तर में ही विशाल टापू है, जहां मैंने सना का पडाव डाला था। यहीं पूर्व काल में भगवान महादव ने मुझ पर कृपा की थी-सतु बांधन स पहल मेर द्वारा स्थापित हाकर व यहां विराजमान हुए थ।

अत्र तु दृश्यते तीर्थं सागरस्य महात्मनः।।२०।।
सतुबंध इति ख्यातं त्रैलाक्यन च पूजितम ।।

इस पृष्ठस्थल में विशालकाय समुद्र का तीर्थ दिखाई दता है,जा सतु निर्माण का मूल प्रदश हान क कारण सतु बंध नाम स विख्यात तथा तीनां लाकां द्वारा पूजित हागा।

रामचरितमानस क आधार पर समुद्र पर सतु बंध निर्माण क बाद श्री राम शिव लिंग स्थापना क क सतु बंध पर चलक समुद्र पार करत हुए।

दखि सतु अति सुंदर रचना। बिहसि कृपानिधि बाल बचना।।

सतु की अत्यंत सुंदर रचना दखकर कृपा सिंधु श्री राम जी हंसकर वचन बाल -

परम रम्य उत्तम यह धरनी। महिमा अमित जाइ नहिं बरनी।।

करिहउँ इहाँ संभु थापना। मोरे हृदयं परम कलपना।।

यह (यहांकी) भूमि परम रमणीय और उत्तम है। इसकी असीम महिमा वर्णन नहीं की जा सकती है। मैं यहां शिवजी की स्थापना करूंगा। मेरे हृदय में यह महान संकल्प है।

सुनि कपीस बहु दूत पठाए। मुनिवर सकल बोलि लै आए।।
लिंग थापि विधिवत् करि पूजा। सिव समान प्रिय मोहि न दूजा।।

श्री राम जी के वचन सुनकर वानरराज सुग्रीव ने बहुत से दूत भेजे,जो सब श्रेष्ठ मुनियों को बुलाकर ले आये। शिवलिंग की स्थापना करके विधिपूर्वक उसका पूजन किया। फिर भगवान बोले- शिवजी के समान मुझको दूसरा कोई प्रिय नहीं है।

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं।
जो गंगाजल आनि चढाइहिं। सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहिं।।

जो मनुष्य (मेरे स्थापित किये हुए इन) रामेश्वर जी का दर्शन करेंगे, वे शरीर छोड़कर मेरे लोक को जायेंगे। और जो गंगाजल लाकर इन पर चढावेगा,वह मनुष्य सायुज्य मुक्ति पावेगा। (अर्थात मेरे साथ एक हो जायगा)।

लाल दास कृत मिथिला रामायण म सेतु बंध आ शिव लिंग स्थापना

क निर्माण स वर्णन कैल गेल हय।
कथा क अनुसार राजा सगर सागर खनैत काल मं प्राप्ति लिंग क खन क पिता रहल नहथिन। कहल गेल हय कि रतनिष्ठ मं हिनकर वंशज शिव लिंग क स्थापना करथिन।
कयल प्रतिष्ठा विधिसौं राम। रामेश्वर लिंगक रखल नाम।।
--

ज गंगाजल दए चढ़ाय। आवागमन छूटए समुदाय।।

लाल दास वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस आ अन्य ग्रंथ क आधार पर वर्णन कैल छथन।

अन्य ग्रंथ मं लंका विजय क बाद अयोध्या लौटन स पहिल शिव स्थापना क चर्चा कैल गेल हय।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार सीतामढ़ी।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमिला*

दनी, जन्म तिथि-01 जनवनी १९६0 याश्यता- एम-एससी (नसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। नुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लखन आ आलख। प्रकाशित पाथी - मैथिली कविता संग्रह हासा क न वांटिया। २०२२ प्रकाशित नचना - समिया कविता संग्रह पाथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाना। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घन -वाहन आ अपूर्वा (मैसाम)। अखवान -दैनिक मैथिल पुनर्जागनण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमना, सीतामढी। स्थायी पता- ग्राम-पिपना विशनपुन थाना-पनिहान जिला-सीतामढी। वर्तमान पता- पिपना सदन,मुनलियाचक वार्ड-04 सीतामढी पास्ट-चकमहिला जिला- सीतामढी नाज्य-विहान पिन-843302 मा नं-9973641075 ईमेल- ramanandmandal001@gmail.com

ऐ नचनापन अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पन पठाउ।**

२.७.उमेश मण्डल- मुदा सुधार नहियेँ



उमेश मण्डल

मुदा सुधार नहियेँ भेल

गौरयागंजसँ आएल रही। गरमी केहन अछि से तँ बुझिते छिऐ, सबहक अनुभवमे अछिए। कहाँदन सैंतालीस डिग्री सेल्सियस तापमान आबि गेल छल। मुदा ई लोकक मुँहक बाजल बात कहलौं। ओना, आइ पनरह-बीस दिनसँ गरमी तँ अछिए भीषण। सभ अपन-अपन मोबाइल देखि-देखि बजैए। किया 47 डिग्री, किया 44 डिग्री, किया 45 डिग्री बजैए। अपन मोबाइलिक हिसाब बात जँ करी तँ से 42 डिग्री तक हमर आँखिक देखल अछि। एना अन्तर किएक? ई सवाल अपना मनमे चलिये रहल अछि। मुदा एकर जवाबक थाह अखन कथील पउला। आगू बढ़ी।
घाम-पसीने नहाएल रहब करी। से रही जखन गुमटी चौकसँ घर दिस विदा भेलौं, एकर बादसँ। मात्र टम्पुसँ lS kS जाकाल येदल चललौं, मात्र पाँच कालमे। बसमे तँ 0वीए जकाँ रहइ।
एक तँ गरमीक प्रकोप भिन्न छल आ पैदल चलबक गरमी

सदा छऽल, मन व्याकुल करा न होइत। घरमे प्रवेश करैत पत्नीकेँ देखलथिन मोबाइलमे व्यस्त। खाएब गेल नहि कोनो बात, मुदा पहिने जकाँ एक गिलास पानिक तँ बात छोड़ू जे लगमे आबि हाल-चाल न पूछलैन, ई थोड़क खटकल। ओना, बन-बन खटकैत रहल नहि, किएक तँ नीक जकाँ बुझि रहल छी जे मोबाइल आबि लोककेँ व्यस्त कलक। जहियासँ हिनका हाथमे मोबाइल एलैन तहियासँ ईहो ओहिना व्यस्त रहए लगली अछि। समय तँ सभकेँ प्रभावित करैत अछि। एसँ बेसी हुनका-द किछु नहि कहब। आ से जँ किछु कहबो करब, तँ पट-द अहीं कहब जे एहन सोचमे सुधार करि लिअ, किएक तँ सबहक अपन-अपन जीवन छैन, अपना मन किया विचरण करब करैथ किने। हाय, सबहक हाथमे मोबाइल अछि, सभकेँ न दुनियाँ देखैक अधिकार छइ। ठीक बात, मुदा ईहो तँ विचारए पड़त किने जे एक दिस एक्कीसम सदीमे अपनाकेँ बुझि घर-बैसल दुनियाँमे विचरण करै छी आ दोसर दिस हुग-यत सदा घर कइय रहल अछि.!

परिवर्तित स्वरूपपर विचार करए पड़त। आ जँ से नहि करब तखन पएल जाएब। हँ, ईहो बात सत्य अछि जे जकरा हम हुलसि कऽ अपना रहल छी, मान सिरोधार्य करि रहल छी, ओकर नीक-बेजाए अपनहि सोचए पड़त। मानि लिअ अहाँ दु घण्टा मोबाइलमे समय लगबै छी, ई कोनो बेजाए नहि, चारि घण्टा लगाउ। मुदा ओइ दु-घण्टा आकि चारि-घण्टाक उपयोग सम्बन्धित नीक-बेजाए केर विचार तँ करहि पड़त किने। आ से जखन करब तखन प्रश्न उठब करत जे ओइ दु घण्टामे अहाँ करै की छी? किछु काज करै छी

आकि बौआइ छी? खाउन पहुसँ काना मगलव अपना नहि अछि। किया करत आय ल माउ ल न वाय ल।
घन आवि कयउ वदैल, येन-हाथ (धाइकऽ जखन बैसलौं कि लगम आवि यनी पूछलैन- 'किछु खाउव आकि चाहटा यीव?''
वजलौं- 'कनी-मनी खवा कनव आ चाह यीव।'
सउह रहला। जलखै कउ चाहक संग जखन मोबाइल हाथम ललौं गँ लाकल ब्यूजवला ग्रूपक डाइ मैसैजयन नजैन चलि गेल, जइम समाचान छल ज डॉ. दिनवन्धु अपन जीवन यात्राकँ पूर्ण कलैन, अखन दस मिनट पूर्व।
दिनवन्धु कक्काक समचानसँ स्तब्ध रहलौं। मूदा लगल मन कहलक ज काना साधारण यात्रा शेष कलैन दिनवन्धु काका। लगभग साउ वर्ष गँ रहइय गेल हैन। अपना उठामक गँ सहसँ सिनियन डॉक्टन वउह रहथि। अपन सम्वन्ध हुनका संग नित्य उँट-घाँटक संग धन्या-दु-घन्याक वान-विचाक रहल अछि। उमहन आवि कऽ शेषक यगना जकाँ गेल अछि। गकन आन काना कानण नहि, कानण वस उगव ज इलाजक दुआन डा वसी काल वाहन नहउ लगला। डाना, हुनकन दुनु वटा सहा डॉक्टन छथिन। मूदा लगम उकाटा न नहै छलैन। जउका नालन्दाम आ छाटका खनसियाँनम नीक घन-दुआन वनाकऽ नहै छैथ। हँ, इ्ी वान सत्य अछिउ ज अपना स्थिति यहिन जकाँ नहि नहल, काजक धूमसाही यहिनसँ वहुन वढि गेन अपनौं उमहन आवि कऽ किछु व्यस्त नहउ लागल छी।
खाउन ज किछु, मूदा अपन मनम पून: डाO गेल ज अन्तिम समयम दिनवन्धु काकासँ उँट नहि कऽ सकलयैन..! मूदा गेवीच

थ्युजक ऊगला याउानयन नङोन चलि गेल। 'डॉ. दिनवन्धु अपन अन्दिम साँस र्लोन अस्पतालम लर्लेन'।

उक्त समाचारसँ मन थोउक ढल्लुक र्ल। मन ढल्लुक र्हाळ्ग ढुनक अनका वाग मान यउउ लगल, ढुनक स्वराव सर जना □खिक सामम आवउ लगल। प्रतिक्रियावादी लाकसँ ढुनका वउ चिढ नढैन।

उारुन लाकक, मान निउक्कनी लाकक खिस्सा सुनवैग दिनवन्धु काका वजैथ- "गळ्ळ दिनम अपना ऊठाम जंगल-जंगल नहळ्ळ। यानि-सा‍उक ळ्ळलाका नरुन ऊठाम सँयकडी वसी र्हाळ्ळ। स्थितिकँ दखि-सुनि नाजा अपना नाजम कानून वना घाषणा कलक, 'नातिम ज किया निकलउ उा र्हाथम लालटन लऽ कऽ निकलउ।'

वउवढिया.., लाक मानलक, मानलक नहि मानलक। उरुन माहोल वनि गेल। उारुन लाक लालटन लऽ कऽ गँ निकलउ मुदा वउैग लालटन नहि, मुसाउल लालटन लऽ कऽ.!

नाजाकँ यना लगलैन ज उरुन किनदानी चलि नरल अछि। वउैग लालटन नहि, मुसाउल लालटन लऽ कऽ निकलैउ.! गखन कानूनम सुधान कउ पुन: घाषणा र्ल, 'नातिम ज किया कगो निकलग गँ उा वउैग लालटनक संग निकलग।'

पुन: उारुन लाक सर उकटा नास्ता निकालि कानूनकँ धज्जी उउवाक नागानिनक्क गैयान कउ लिलक जळ्ळम लाक अपन-अपन र्हाथम लालटन गँ वउैग लऽ कऽ निकलउ मुदा लालटन उागव वउैग नहै जळ्ळसँ ळ्ळजाग नहि र्हाळ्ळ।

नाजाकँ रुन यना लगलैन ज उना रऽ नरुल अछि। गखन जा कऽ रुन कानूनम सुधान कनैग नाजम घाषणा र्ल, 'नाग्निम रूल रौलुमम

जनैत लालटेनक संग लोक बाहर निकलल।'
संशोधित कानूनकेँ लोक लागू नैँ करलक, मात्र स्कूल लौटैत जनैत लालटेन नैँ हाथमे नखलक, मुदा शिक्षायुत कागज लगाकऽ घरसँ निकलल।
एतय प्रकाशित 22 बर्ख कानून बना-बना लागू करबाक प्रयास भेल, मुदा सुधार नहियेँ भेल।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.लालदेव कामत-ठाँ उमेश मंडल: एक मैथिली अभियानी / ज्ञाना: सुभाष चन्द्र यादव/ शम्भु बाबूक आत्मकथा/ मिथिलाक स्वतंत्रता सेनानी : सत्येन्द्र - गुनौत/ लघुकथा- बौंधन



लालदेव कामत- डॉ उमेश मंडल: एक मैथिली अरिस्यानी / रचना: सुरेश चन्द्र यादव/ शम्भु बाबूक आत्मकथा/ मिथिलाक स्वतंत्रता सेनानी : सलहेसा - गुनमेरा/ लघुकथा- हेंथन

१

डॉ उमेश मंडल: एक मैथिली अरिस्यानी

बिहार 'क मधुबनी जिला अन्तर्गत लखनौर प्रखंड क बनमा गामम श्री जगदीश प्रसाद मंडल आ श्रीमती रामसखी देवीक घर एक बालकक ३१ दिसंबर १९८० कँ जन्म भेलैक। ओ कुसाग्र बुद्धिक बालक किया आन नै - छैथ डॉ ० उमेश मंडल जी । उमेश जी मिथिला मैथिली लेल एक अरिस्यानी छथि। हिनक आरम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौलम भेल अछि। सन् २००१ ई० म ल० ना० जनता महाविद्यालय झंझारपुर सँ स्नातक (प्रतिष्ठा) आ २०१२ मँ एम ए० कलनि। २०१७ म राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा शिक्षक बनय लेल नेट उत्तीर्ण कयलाह। २०२१ मँ आविकय मुजफ्फरपुर अम्बेडकर युनिवर्सिटी सँ पी.एच.डी. कयलाह, शोधक विषय रहय -: मैथिली साहित्यम जगदीश प्रसाद मंडलक रचनाम परिवर्तनक स्वर। तात्कान

मंडल जी'क मैथिली साहित्य आन्दोलन मेँ अपनां कम योगदान नै छै। हिनक पद्य रचना निश्छुकी मैथिली भाषा मेँ पोथी -२००९,आ विदेह मैथिली पद्य संग्रह - २०२२ बहुचर्चित अछि। संस्कार गीत (संकलन) - २०१० ई0मे पोथी छपल छैन। मिथिला 'क जीव-जंतु, मिथिला 'क वनस्पति आ मिथिला 'क जिनगी (डिजिटल सचित्र आनलाइन संस्करण - २०२१) प्रकाशित छैक। विदेह मैथिली लघुकथा संग्रह,विदेह मैथिली वीहनि कथा संग्रह,विदेह मैथिली प्रबंध निबंध समालोचना आ विदेह मैथिली नाट्य उत्सव एवं विदेह मैथिली उत्सव (संग सम्पादन कार्य - २०२२) सेहो प्रकाशित भेल छै। ठूठेग मनक डुआब (कथा संग्रह -२०१८), पंचदल - १०० खंड ग्रन्थ - श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीक वीहनि कथाक संकलन - २०१८ मेँ छपल छैन। भारतीय मूसलमान आ भारतीयता (हिन्दी सँ मैथिली अनुवाद - २०१८ ,मूल लेखक - श्री गीतेश शर्मा), दुध पानि रत्नाक - रत्नाक (कथा पाण्डुलिपि - छाया, संस्करण - २०१८), रत्नाश्रम (३७खंड -ग्रन्थ , विचारात्मक पम्पलेट संकलन - २०१९), मूक पूरुष (शोध आलेखक संग्रह - २०२१), ईंटा वृक्ष सँ रस वृक्ष धरि - २०२१), समस्या सँ समाधान धरि - २०२२, निर्विकल्प - २०२२, अरण्यक्रन्दन -२०२२, जगय न जाउ कनि - डगउ जाउ अनुरक्ती (२०२२) आ पल्लवी प्रकाशन निर्मली सँ सद्यप्रकाशित ' किया करय आय ल - माउ ल न वाय ल' _२०२३ विचारात्मक गद्यांश संकलन अछि। अन्तर्ध्वनि (कथा संचयन - २०२३), जगदीश प्रसाद मंडलक काव्य सं दासान (अनुसंधान विश्लेषण - २०२२) प्रमुख नूयँ हिनक पहिचानक चानि चान लागल देखाइछै।

डॉ. उमेश जी पहिने प्रकाशनक संस्थापक छथि,श्री हिनक योगदान प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मंडलक नओ दर्जन सँ अधिक पोथीक मुद्रण एवं प्रकाशनक अतिरिक्त आन सेहो दर्जन पोथी मैथिली साहित्यकारक ओतेक संयोजन अलौकिक रूपेँ करैत रहलाह अछि। सगर राति दीप जरय'क ८०म् , ८८ म् , १००म् आ १०१म् गोष्ठीक संयोजन आ दर्जनो पत्रिका - संगोष्ठीक आयोजन ओ ठाम- ठाम दर्जनो मैथिली पोथी प्रदर्शनी आयोजनक काज देखि हिनका नाम बहुत पुरस्कार अर्जित या। यथा-: विदेह युवा सम्मान - २०१३ ई० म निश्छल पद्य संग्रह लेल भेटल छैन। सहयोग सम्मान - २०२१ ई०म शकुन्तला गुनानन्द मैथिली संस्कृत सम्बर्द्धन न्यास हैदराबाद सँ आ लोकविभूति विशिष्ट सम्मान - २०२२ प्राप्त भेल छलनि। आब आउ आकर्षक कहनम १०१ पृष्ठक एहि पोथीम पछिला गप्प पर श्री उमेश मंडल जीक संगीत छनि आ प्रकाशनक लागल छयल छैक,जकर दाम १९९ टाका धनि रखल छै। आठ गोट पन्नाम भूमिका लिखैत डॉ. उमेश मंडल जी " क्रिया करैए आय ल - माए ल न वाय ल " पोथीक प्रासंगिकता बतबैत अपन दादी मुँहक सुनल दादी लोकोक्ति मादे विस्तार सँ बतबनि रखबाम समर्थ भेलाह अछि। ओना बहुत बात पोथी चर्चक अनुसार विन् भूमिका क सह नइय या। आओर अहिमत वा प्राक्कथन पोथीक आखिरम लागय तँ पोथीक संग पाठकक ज्ञान समीचीन होएत। पोथीक नइय नामम पुसवाक वादी ; एहि सँ पठनीयता विश्वस्त होइछ आ पोथीक संग पाठकक उत्साह सह होय छैक। अपन देखब जे पोथीम आठगोट पोथी सँ सब पाठ सँ मुख्य अंश उद्धृत

नूयँ दल गेल अछि , यथा -:

" यनिनानाक न दुःखा अछि, वौआ।

तुलसीफूल चाउनक भात आ आमिल दल

नास्तिक दालिक अ दुःखा नहल अछि

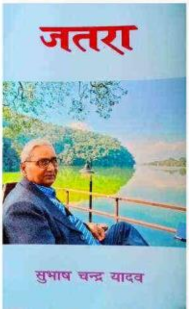
आ मनुआ नाटी पूजैत ।"

दुःखद बात जे पृष्ठ पढला पर अशुद्धि पाठकक पाठक सानांश जानवाक फनीछ तग हाछ्छी। स उमश मंतल जी ओ तनहुँ नव पाठक वर्ग मँ सहा मातृभाषा क' प्रति अभिरुचि जगावैत प्रकाश वनावैत छथि।

२

जतरा : सुभाष चन्द्र यादव

समीक्षक - लाल देव कामत



प्रकाशक - किसुन संकल्प लोक - सुपौल वर्ष २०२३म

९१ पृष्ठक यात्रा नृपांग मैथिली भाषा मँ निकालक,जकर दाम सय टाका निर्धारित कयल गेल छैक। सद्यप्रकाशित ओहि मैथिली साहित्य पोथी " जतरा" मँ कुल सात पाठक समावेश कयल छैक। लेखक

प्रोफेसर (डॉ.) सुभाष चंद्र यादव जी अपन यात्राक दौरान जे अनुभव भेलनि , ताहिके कलमबद्ध करबामे निष्णात प्रवीण भेलाह अछि । ताहि मध्य स्मृतिक सानुभूति वृत्ति समय - समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकामे सेहो प्रकाशित भऽ चुकलाह अछि।

सुभाष चन्द्र यादव कथाकार छथि, समीक्षक आ अनुवादक सेहो छथि। हिनक जन्म ७ मार्च १९४८ कँ भेलनि। मातृक छैन - दीनानगंज आ पैतृक स्थान - बलबा मनाही दुनू गाम सुपौल जिलान्तर्गत पड़ैत अछि। हिनक आरम्भिक शिक्षा दीनानगंज आ सुपौलमे भेलनि। बी.ए. पटना कालेज सँ आ एम ए. आओर पी.एचडी. जेएनयू नवदिल्ली सँ सम्पन्न भेलनि। सन् १९८२ सँ अध्यापन करैत प्रोफेसर बनि सेवा निवृत्त भेल छथि। ओ साहित्य अकादमी परामर्श मंडल, मैथिली अकादमी कार्य समिति, बिहार सरकारक सांस्कृतिक नीति-निर्धारण समिति आ जी आओ ए. भारतीय भाषा संस्थान मैसूरक सदस्य रहि चुकलाह अछि। मैथिली भाषा मेँ लगभग ८० छोट कथा लिख चुकल छथि। ३७ टा समीक्षा आ हिन्दी, अंग्रेजी, बांग्लाक अनुवाद सेहो करने छैथि। प्रबोध साहित्य सम्मान - २०१२ सँ सम्मानित छथि। ओ संस्कृत, उर्दू आ स्पेनिश एवम् फ्रेंच भाषाक सेहो जानकार छथि। हिनक रचना संसार सँ पाठक वाकिफ छथि -: घर दखिया (कथा संग्रह) मैथिली अकादमी पटना सँ १९८३, काली (अंग्रेजी) मैथिली अनुवाद साहित्य अकादमी नव दिल्ली - १९८८ मेँ , बीछल कथा (हरिमोहन झा) भूमिका सहित; साहित्य अकादमी नओ दिल्ली १९९९ आ बिहाड़ि आउ (बंगला) अनुवाद १९९७ , भारत विभाजन और

हिन्दी उपन्यास (आलोचना)- बिहार राजभाषा परिषद - पटना २००१, राजकमल चौधरी का सफर (हिन्दी जीवनी) सारांश प्रकाशन - नव दिल्ली २००१, बनैत - बिगड़ैत (मैथिली कथा संग्रह) श्रुति प्रकाशन दिल्ली २००९ आ बहुचर्चित उपन्यास ' गुलो ' वर्ष २०१३ किसुन संकल्प लोक - किसुन कुटीर सुपौल सँ प्रकाशित भल छन्हि। डा० सुभाष चन्द्र यादवक भाषा चयन मानक आधार ग्रामीण बोलचाल टोन रहैत छैक ज मैथिली विमर्शक आस्था एकटा बहसक हिस्सा थीक। हिनक मैथिली लखनम लाग- लपट नहिं रहैत छैन। मिथिला 'क रहवासी अनका लोकक बाजबक शुद्ध उच्चारण कँ ओ हू-ब-हू लिखैत रहलाह आ तकरा व्याकरणिक मान्यता हुअय लगलैक अछि; ताहिक मिशाल छी - श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीक उपन्यास "पंगु" ज ओहि शब्द विन्यास आ वाक्यावलीमँ लखन काज कँ साहित्य अकादमी धरि मान्यता कलक हन्।

समुद्रक' कछेर पर दु दिन "शीर्षक" सन् १९७८ मँ मिथिला मिहिरम छपल रहनि। स्थान आ स्मृति ' शीर्षक ' अंतिकाम २०००कँ छपलनि। सिंगापुर ' शीर्षक ' कानूम छपबाक संदर्भ नहिं दल छैक। मुदा यात्राक बानि (गोट ओतुका हुनक छनि आकर्षक ढंगं छपल छै। पूर्वोत्तर भ्रमण 'शीर्षक' मिथिला दर्शन -२०२१ मं छपल छैन। लानानाला 'शीर्षक' लहनि - २०२१ मँ छपलनि। भारत भ्रमण 'शीर्षक' दसिल बयना (गनरूम अर्घ) २०२२ मँ छपल रहनि। नपाल डायरी ' शीर्षक' आखरी पाठ छी। सम्पूर्ण पोथी पर्यटक आ पाठकक ध्यानम राखि छनि छापयवाला नीक मोटा कागतम तैयार कयल (गल छैक। एहिम सुन्दर छवि जानकी मंदिर - जनकपुर,अल्प्रा

लाम्पोट ब्लन , पोखरा, फेवा लेक- पोखरा, माउंट अन्नपूर्णा - नगर कोट काठमांडू, फेवा झील- पोखरा, बौद्ध मठ - पोखरा, बूढा नीलकंठ- काठमांडू , बूढानीलकंठ - काठमांडू (पुनः) ,नंगील छयल छैक, जे वर्ष जीवन्त बुझाएल। एहि छविक संग सुभाष बाबू क' ब्लॉगिक स्मरणीय क्षण कन अनुभूती जनाब छैन। .....आ एहि प्रसिद्धि कँ निष्पादन सँ पात्राक उल्लेख कयलनि अछि। पाठकक पर्यटन काल स्वयं स्वयं नयालक सहयात्री बना गेल हाय। प्रस्तुत पोथीमे प्रायः हुन पाठ कन बाद उद्दिष्टमक मनानम छैटा क दृश्य संलीन संलग्न कन छथि। जेनाकि नॉर्थ गार्डेन - दार्जिलिंग, जाकनी हॉल- गेंगटाक, ओलिन - गेंगटाक, दार्जिलिंग -१, दार्जिलिंग -२, हॉर्स राइडिंग - मालरोड दार्जिलिंग, चाय बगान - दार्जिलिंग , सिंगटॉम रिजॉर्ट - दार्जिलिंग, चिड़िया घर - दार्जिलिंग, नॉर्थ गार्डेन - दार्जिलिंग, नाइटिंगेल पार्क - दार्जिलिंग, जाकनी हॉल- गेंगटाक , जीरोमराड - गेंगटाक, लोना वाला - महाराष्ट्र, लोनावाला महाराष्ट्र -२, खासी हिल्स- मेघालय, लिविंग रूट ब्रिज - मेघालय, त्रिपुरा कैसल - शिलांग , खासी बनाज - श्रीनगर, आफिसर्स क्लब - बाघडोगरा - नई दिल्ली ,ईटानगर - अरुणाचल प्रदेश,टॉकी - बंगला देश बार्डर _ मेघालय।

एहि पोथी मादे स्वयं डॉ०(प्रो०) पारदर्शी पढ़िला करून पर अपन संक्षिप्त मुँह बोलन छथि-: ई हमर दासन सरूननामा अपा। पहिल ' नमामि गंगे छल । नमामि गंगे म बसी वृतान्त परदेश क नदी। जानाम दस बसी छै। हिनक सरूननामा काठ नहाँगि हाई छहि। मार्मिक अनुभूति जगबैत वाला प्राकृतिक सौंदर्य आ रचनात्मक

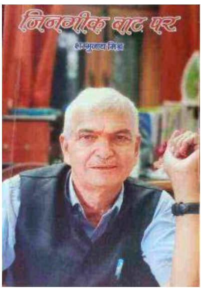
विश्वक संग उनयक जगत् आ लोकक आत्मास यैस कय णकन सूहना प्रकट कनै छैथ। ओ वागक सम्पूर्ण ननध्र साहित्यकान कदान कानन जी सहा कनय छथीन। मैथिली साहित्यम यात्रा वृत्तांत व८ कम (गारय लिखन छथि,यथा- वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' , डॉ० सुरेन्द्र मा , सूर्यनानायध चौधनी, निगुणि आनन्द आदि। ओहि निधाम लखन कार्य संम्पनध नूयम ; आत्म कथात्मक (शैलीम सहा (थाउ (गारय छिटयूट लिखन छथि। गैया ऱ्ही कल्व ज सवसँ कम अहो निधाम मैथिलीक काज रुल अछि। चर्चाम आयल ओ याथीम रानाक सुदुन दक्षिण स्थानक नगनीय प्रनवन आ उनुका लोकक नरुन - सहन , खाओन यीन , नीणि नवाज यन समाजशास्त्रीय अध्ययन कँ व८ मौलिकता 'क संग ऱलाऱ्ही १९९४ मँ नामयल्ली क' हैदनावाद यात्राक वृत्तांत आ मद्रास (चन्नऱ्ही) क अगस्त १९९४ कनलक कानलम समुद्री णटक अगस्त १९९४ उहि समय कन्याकुमानी क नयट जकन श्री धनमजी २000ऱ्ही0मँ मौगिकय अंगिकाम छआयलनऱ्ह,स व७ चिकन अखबाज म लिखल छै। चढ्ढान सँ टकनाऱ्ह २0-२१ फीट उँच वनरुसन यानिक ववंउन उ(0ण ज छिउिया जाऱ्ह स ज्ञानरारा सदृश छाप्रगध नर्गम अनथ्य यठन होथि। आँखिक दखल सन कमंद्री वृमाओण। टटका यात्रा कनैण ज नयाल उायनी या0म वृत्तांत दन दन छथि स मूम्बऱ्ही सँ यूप्र सम्राट आ यूगौद नदाक संग यात्रा यन निकलवाक याजना वनवैण कश्मीन 'क वर्द्धवानी दखराल छैन; मुदा उनय शीण दंश आ आणंकनादी घटनाक संरावना सँ रीगन रीगन सहमि जाऱ्ह छैक आ वृद्धा अवस्था'क नृशृणा मँ ज मानसिक स्थिणि हाऱ्हीछ,णाहिक कान(ऍ

श्रीलंका वा मालदीव जेबाक नियानराष करैत छल्हि। यछाणि क्रिसमस लगिवा (गेन उागय हाटल खाली नै नहन निनाश हाय जाल्हि छै। गँ धीनश्च प्रमर्षि क' कहव मान यत्गहि जे मौसमक लुरू उाOवाम नयालक यात्रा सुगम हाल्हि छैन। आउान वम्ल्हि सँ अनहाज घंटाम ल्हुतिगे। क्लैट सँ काOमांतु सव किया युं(गेण छै। नयालक' याखना क हाटल आ जीनीश सव काOमांतुज जकाँ वत महग वूसाल्हिग छैन। आना Oामक यात्राम श्री यादव जी वटा संजय आ यूत्रनधू जया ,याना सामांश संग खर्वीला त्रमण करैत आधूनिका 'क संग वौथायन वयक्रामम नीक जीवन जीयैत छथि। आनन्द गीर्थ व्रणम जाक नहिँ जाक यर्यटनम हाल्हिछ। कहल (गेल छै- ज्ञनन्द कँ रूनन्द! स नयालक विमान सना वदनाम नहिगा दु सीट वाला विमान आध घंटा लल जाहिम चालक सँगे शांणि स्यूग आ शिव मंतील घवनाहटम उयन सँ निहारैत छैथा। ओहि नामांवक आ Ȯता हना सँ मीलक उयन विमानक कनगव सँ कनजा वैसय लगनाल्हि सारानिक छै। गाहूम हाटक यसनू कँ गँ ओहि सँ वूक चाहियैन। सिंगायून यात्राम समैधजी संगम नहैग छैन। नल सँ यटना आ हना जहाग सँ कालकाता यहूँचैग छै। मधू अयन यिगाजी कँ (सहजानंद - म(धयूना) सूचिग कन छैन ज एक सफ्राह ल सिंगायून टून यन मलवार्न सँ क्लाल्हट लव आ सांमखन कँ यहूँचव। अहूँसव रीनसन धनि ज्ञमि जाजवा। याक हाटल वूक कनहिं छै । श्री यादव जीक वटा सौम्य आ यूत्रनधू मधूलिका कन सँगे उागुका चटख आ चमकदान,खुवगा८ नंगक मकान सव यन नजैन न टिक नहल हाल्हिक।

३

शम्भू बाबूक आत्मकथा

समीक्षक - लालदेव कामत



प्रो०नविन्द्र नारायण चौधरी कृत मैथिली काव्य १००टाका मूल्यक पोथीमे एहिवन अनकां नाम-पताम अपन नाम शम्भू नाथ मिश्र जीक नहिँ छैन,मुदा ओ अपन लेखनी सँ पाछू नहिँ छथि। नवारम्भ प्रकाशन -मधुबनी/पटना सँ सन् २०२३ वर्ष मेँ १२ पृष्ठक मैथिली पोथी "जिनगीक बाट पर" बहराएल अछि,जाहिक मूल्य २०० टाका तय भेल छैक। एहि आत्मकथा भूमिकामे वरिष्ठ साहित्यकार श्री अर्धनारीश्वर जी, श्री शम्भू नाथ मिश्र जीक बारे लिखैत छथि - ओ मिथिलांचल ग्रामीण विकास समितिक माध्यम सँ एखनो हटनी एवं उसक विकास लेल प्रयासरत छथि। हिनके कारण अछि जे हटनीमे सार्वजनिक पुस्तकालय'क निर्माण संगहि सम्पूर्ण उप स्वास्थ्य केन्द्रक निर्माण भ' सकल अछि। सद्यप्रकाशित एहि मैथिली भाषा पोथीमे शब्दक किछु वर्तनीमे संशोधनक आवश्यकता बुझैत अपन अनुभवक दिग्दर्शन करावैत कहैत छथि, पैघ सँ पैघ लेखक अपन पहिल शौकिया (सख) करैत छथि। हमरा पढ़ैत- पढ़ैत लेखनक सीख भेल

नहुय। लिखबाक इच्छुक लोक बढ़ैत - बढ़ैत हुनका सँ जखन ओ ,स लिखाए लेलक ! ई आश करैत छी जे शम्भु बाबूक लिखल ई लोल आउर बढ़नि आ ओ अपन जीवनानुभव केँ अधिक शब्दबद्ध करथि। हिनक एक मात्र समांग लखन उत्तम श्री अजीत आजाद मैथिली मेँ लिखैत आबि रहल छथि। ओना डा० वद्रएश्वर झा सहो मातृभाषाम 'कविता निकुंज'यार्थी लिखन छथि। काशी संदेश मैथिली त्रैमासिक पत्रिका'क प्रबन्ध सम्पादक श्री शम्भु नाथ मिश्र पाँति गढ़ैत रहलाह अछि। शब्दनुप शक्ति छन्हि ई अपन आत्मकथा ई लिखिए सकैत छथि। हनक व्यक्तित्व एक अन्तःकथा छुपल रहैत छैक जे उजागर ई रखन हायत, जौं ओहिक सार्वजनिक करबाक जीवटपन हाय। शंभुनाथ जी बालपन सँ आनुष्ठिक पढ़ाय- लिखाय आ स्नातक (प्रतिष्ठा) धनिक चर्चा एवं अपन वियाहक प्रकरण सहो कहलनि अछि। टमी दरभी पावनि सवर्ण समाजम (ब्राह्मण जाति) पतन्यता सँ हाइत आबि रहलैक आ ओ एहि विध सँ पत्नीक पतिस्थितिवश मुक्त नाखलनि। मधुश्रावणी आ कोजगरा पावैन मिथिलाम किछ विशेष जाति वर्गम हाइछ,तकर निमहणाम अपना वैरव अनुसार एक तरहक प्रतियोगिता मखाना राग वादन समाजम देख पडैछ। एहि पृष्ठिका केँ पढ़ि पाठकक ई जनतव हाइछ जे काशी गढवंधक रीगन वसल गाम घनक रहवासिक देश आजादी समयकालम पतिवश आ स्थिति कहन रहैक। एतुका भुगोल आ सामाजशास्त्रीय अध्ययन लेल शोध प्रबन्धक विद्यार्थी केँ स्व० कमलादत्त मिश्र'क (आदि निवासी कंसी- सिमरी) वानिसक अध्ययन सँ पूरा थाह हेतनि। कमलादत्त बाबू दुर्गाय सहादन आउन एक राय बमाप्त छलाह। कमलादत्त

बाबू केर बालक भेलाह बाबूलाल मिश्र जिनका छह पुत्र क्रमशः श्रीकृष्ण मिश्र , जयकृष्ण मिश्र, लालदत्त मिश्र, बालकृष्ण मिश्र, अच्युतकांत मिश्र आ राधाकांत मिश्र तथा दू बेटी रहैत जे एक नाँटी-मंगरौनी आ दोसर 08बिटिया बियाहल गेलीह। अच्युत कान्त मिश्रक एक बेटा- तपनेन्द्र मिश्र आ एक पुत्री दनानन्दी देवी रहथिन। अच्युत बाबूक ज्ञना नयक्रमम असमय निधन भेलासन्ता धर्मपत्नी पंचमुखी देवी तीन बर्खक नेना तपनन जीक मसामाति पनिस्थितिम भेनध - पोषध कनैत अपन प्राइमरी स्कूल धरि शिक्षा दियलथिन। कौथी अउनक जानकान तपनन बाबूक सनकानी नाह भेटलनि, पूना अनस्थाम नानिकक काज (अंशकालिक) कनैत पत्नी कर्पून देवी (नैहर - कछुनी) आ तीन पुत्री ओ दू बेटाक नीक शिक्षा-दीक्षा दिएवाम समर्थ भेलाह। अपन खेती - पशुपालन सहित कनैत पूर्वजक देल जमीन जे बलमाहन - महुलिया, हठनी मौजाम रहैन,तकन निमनजना सहित कनय पडैत छलैन । अनाज बूतातक ढ़ूपह सहायक आ चनखा सूत काटी सँ आमदनी होइत रहलैन। भेपंकन कासी नाढिक चयटम आयल एहि गामक बहुत लोक मानंग आ कलकत्ता खटि गुजन कनैत रहथि,पनंच तपनन्द्र मिश्र गामक तीह पन रहलाह। एखन चानुबिटा पक्का मकान आ बाटी फूलबानी आनन्द पूर्वक सब किछु छन्हि। हुनक पुत्र शम्भु नाथ मिश्र अपन जीवनक सहननामा पूर्ण मनोयाग सँ लिखलनि अछि। एहि आत्मकथाम ओ गामक स्व० मखसूदन बाबू आ मनमाहन बाबू दुनू लायक विनूदावली धरि लिखय सँ पाछु नहिँ रहलाह अछि। ओना गामक दूखन काका, लक्ष्मीकांत झागखि जी,प्रो० निशम्बन मा,सुधीन, कालिकांत आदिक संग-

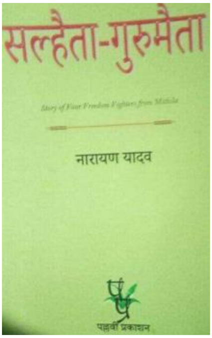
संग स्थानीक बौद्धीम ज गाम सब छैक ,ताय कए सहयोगी छात्रगणक चर्चा सहो बड़ सिद्दत सँ कयल छैक। अपन यहाँ लिखाइ समाप्तिक बाद कालकाता बाया बाधाम्नामी स्थान (पंजाब) आ दिल्ली स्थित पूर्व सांसद गुणानंद ठाकुर जीक सानिध्यक चर्चा विस्तार सँ कयल छथि। पूर्व प्रधानमंत्री स्व० इन्दिरा गांधी जीक कार्यकालमे सूचना विज्ञानक कायनरिव सोसायटी मे काज करैत,अनका केँ काज धनावैत सहल जीवन जीवैत सदा निवृत्त रहला। दिल्लीमे व्यवस्थित भ' गेल छथि आ यूनान मिथिला संघ तथा विद्यापति सहकारी थ्रिफ्ट एण्ड क्रेडिट सोसायटी सँ सम्बद्ध रहल छथि। मनुखक जीवनक असली रहस्य अपन विगत समयक तुलना करैतकाल बुझाइत छै। स संस्मरणीक सहो अपन जिनगीकेँ जखन पाछू देखैत य तँ बहुत रास बात सहि मान पड़ैत छैन जकर उल्लेख कानू बजाय नहिं कयल छैक। पनंव ग्रामीणक किछु उखयाति कए उद्धरण सँ बहुत गाटय उपरि अन्य जा बसलैक, यथा- स्व० बौआ बाबूक बउराय कमल नारायण झा- सिलीगुड़ी,कमलमा पसन खलानंद - मंगलसिहौल, रामचंद्र मिश्र; जगदीश मिश्रक राय - मलछाम, हनिश्चंद्र मिश्र- कर्णपुर, जाल झा - घाघनडीहा बजार, हमकन झाक राय यति जी- राजनगर, हनिश्चंद्र झा- उनरठ आ रामचन्द्र झा दनिरंगा। सुविधा कानछँ, शम्भू मिस्त्री कए काका बली झा - गोनधनपुर, सूरल मिश्रक राय कयलुजी- जलसैन , महावीन ठाकुर - सनायगढ़ (बर्नीनियां) , मल्लन कामति - सहानवा, रामचन्द्र कामति कलकत्ता, पनमश्वनी कामति - मैनही, राजेन्द्र कामत- सुड़ियाही,कलन कामत- बसुली,रामकिसुन कामैत- हीमनगन,रामसुन्नन कामत - नुद्रपुर,

जगननाथी कामत- दननाथयटी,अगहनु साह- नौआवाखन,उमश 0कुन - जलयाय(गौनी ,सुटु कामत- वागतजगना आ दिलवन कामत- जागवनी आदि गाहि प्रसंग आंकउा लिखव चूकि (गेलाह अछि। युर्नम एक आलखक द्वाना हटनीक नर्वमन्नादी संमृगि यन हिनक मनगव कासिकनहा सहित मृग्रगः दुन- दुन गकक लाक जानन छथिया १२ नर्षीय आश्वलनकानी यून्ष शम्भु वावू ब्यनहानिक एनम् मृदुलाषी छथि। अयन विद्वानकँ साग् यथाशक्ति हनि सहयाग कनैत छथीन। एक आदमी (ज्ञाऽऽीनन नधवीन - नाजस्थानी) हिनका सँ मठैत लौत १० हजान टाकाम किनल एम्बसतन गाउी यान कन दलकैक। गायव कयल घटनाक कवाट नहित हन वहुत वन 0गीक उामनाहटम यउलाह। जीनगिक वहुत नास दु:ख आ सुख'क नृगांग "जीनगिक वाट यन " ई मैथिली याथीम सकुवाऽऽग कलनि अछि। हिनका निषयम संग नहैत वहुत वाग मनावैज्ञानिक नुयँ नहिँ वूमल नहय,स एहि यूस्तिकाक यदि हिनक नगुता आ सूर्ग यउ वूसवाक अनसन हटल। याथी वन- वन याठकक यठवाक उक्कण्ठा हायत। श्री मिश्र जी साहित्य सनाम आव सन्नद्ध छथि।

४

मिथिलाक स्वांग्रा सनानी : सलहैत - गुनुमैत

याथीक समीजक -: लाल दन कामत



मैथिली रााषा मेँ "सलहैता - गुनुमैता " याथी यल्लवी प्रकाशन निर्मली सँ वहनाएल हनु। एहिम यृष्ठ सं०- ८१, एहिक मूल्य २०० टाका निर्धानित कयल गेल या। चानिगोट स्वाधीनता सनानीक व्यक्तित्व एवम् कृतित्व यन लिखल गेल या० अति महत्वयूर्ण अछि। यहिल या० सल्हैता यृष्ठ सं०-११ सँ ४८ कन वीच आ दासन या० गुनुमैता यृष्ठ ४० - ७१ यन मुद्रित छैक। गसन या० स्व० नामरूल मंडल ७२ सँ ७७ आउान आखनी या०. स्व० अनन्द लाल कामत यृष्ठ ७८ - ८३ धनि प्रमुखताक संग छयल छैक। एहि याथीक मादे गजलकान ललन सल्हैता (नहनी) आ डा॰० धनाकन ठाकुन जी सन् १९२० - ३० कन दशक गुलामी क जीस्तिन भाजय मेँ महात्मा गांधीक नतृत्व मेँ स्वतंत्रता संग्रामक गंरीन संघर्षम सँग यूर्णत उक्त चानु महानायकक यागदानक चर्चा याथी वानत कयलनि अछि। प्रसिद्ध साहित्यकान आ सना निवृत्त तिनिजनल कमान्डंट गज नानायण खजवान लिखलैन अछि " नन साच सँ रानतक गाम जागि गेल या। कासी कमला कन उप्र सँ अनकां लाक दशक आजादी ल खुव लजल छलाह। स्वयं अयन वागम जीवनी लखक श्री यादव जी

कएलनि अछि मिथिलांचल मध्य स्वाधीनता सेनानीक चर्चामे हुनकां लेखक वनि - चौठ कs लिखलनि, मुदा एहि बानु महानायकक योगदानक चर्चा पोथी मँ नहिं क बनाबनि कयल गेल छैक। एँ नव पिढिक लोक हिनका सत्कर्म कीर्ति सँ अनभिज्ञ रहि गेल छैक। सद्यप्रकाशित ई पोथीमे क्रांतिकारी बानु पद्धा कन विषयमे गंभीरता पूर्वक कलम चलौलनि अछि। आजादीक पचहत्तरम अमृत महोत्सव वर्षक समाप्ति पर गुमनाम स्वाधीनता सेनानीक संदर्भ मँ खोज करैत बनैत साहित्यकार श्री नारायण यादव जी अद्भुत लेखन कार्य कयलनि अछि। अपन पाठक कँ बताबी सर्वप्रथम श्री नारायण यादव जीक संबंधमे। श्री कवि लेखक नूतन कविता संग्रह - नारी द्रुतलक नारायणँ, कथा पोथी - बाबा नाम केवलम, समझौता, नवकी पुतोहु आ 'खाली घर' केर रचना कयने छथि। मैथिली विषय सँ एम.ए. पास कला पछाति हिनक हाई स्कूलमे शिक्षकक पद पर नियुक्ति भेलनि। उच्च विद्यालय जयनगर के प्रधानाध्यापक पद सँ सेवानिवृत्ति पाबि कनेक अस्वस्थ रहैत छैथि। एहना परिस्थितिमे श्री मैथिली अकादमी नहि अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषदक महासचिव छथि। श्री नारायण यादव जीक माता सेव महेश्वरी देवी स्वाधीनता सेनानी स्व नामलखन सहेताजी कँ पुत्री रहथिन। पिता स्व नाजश्वन यादव आ दादाक नाम स्व होला यादव रहनि । श्री यादव जीक जन्म स्थान छैन तुमना, प्रखंड अंधराठाढ़ी आ मातृक नहरी अंचल खुटौना जे आब मधुबनी जिलान्तर्गत अछि। हिनक साहित्यिक आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे विविध तिथिकँ प्रकाशित भेल छन्हि। पाठक कँ ' सहेता - गुनमेता ' पोथीक रसास्वादन एहन विलक्षण लगैत,जे एक बेर हाथ आयल

पोथीक बिनु पढ़ने छात्रक पास नहिं लगैत। बड़ मनोयोग सँ ओ तीन स्वाधीनता सेनानीक व्यक्तित्व केँ जानबाक आवश्यकता होयत। एहि पोथीमे पाठकक अनेक शाखा, यथा -: घोषित,कन्नौजमिया,गउती, मसता०,मसतौट, दहियात,बड़गुआत आ हरहनि आदि(कृष्णौट) छैक। ओ समाजक गोत्र अत्री अनेक पदवी विशेष कय घोषित पाठकक मूल ३११ संख्याँ मेँ उल्लेख रहल अछि। जाहिमे गोष्ठीत कर अन्य प्रसंग -: बड़कुलिया, खुना, निसनपूनिया, श्वासात, छजनौत, मछतिया आ सगहा थीक। सखैता आ गुनुमौता टाँड़ीटोल घोषित पाठकक छैत। आदरणीय नामलखन सखैता क पूर्वज सहरसा जिलाक सितारबनहा गामक रहथि। आभा सखैता आ पनमाभा सखैता दुनू हायम निमर्श उपनाम्द आभा सखैता १००-१२५ गाय बनाबय पछिम दिशामे हाँकलनि। जंगल आ परती जमीन ८७७ पतल रहल गोतान-बनबाह हुनका संग नामेक काज करय ल छलैक। जाहि गामक लग साँस पउँक,उगय बथनिया उता कायम करथि। तारम गोष्ठीक दुध-दही खाक्षत पियैत तस - तस १००-१२५ किमी० पछिमधनि तहती गाम हीउकय आबि गेलाह। एहि पिढ़ी सँ खतहा तानायक जी आतस्त करैत ,एतुका गुगोलक पुब समता आ पछिम सुगतब तदीक बहुत कलकल धारा सँ परिबीति करावै पा०कक स्व० कमल तानायक सखैताजीक हतबाजा पत अतस्थित परौक्षीक गढ़ी सँ उपतल शिवलिंग कर दर्शन करावैत छथि। तीक तिष्यास उा हात-हंगिमा कर संग सखैता परिवारक तिजी आ सार्वजनिक जीवत तथा हश आजाद करयम सताहनीय हूमिकाक सक्रिय इतिहास बताबाक पतियास अपता जतैत कयलाह

अछि। एहि वंशवृक्षक कुर्सीनामा देखा सँ पाठक पात्र लोकनिक खानदानी नाता वृत्तयम सहज सुगम आ स्पष्ट कयल गेल छैक। गाय ,बड़ा ,दुध घी बहुला सँ भरल उत्र मे खुब धनीक होयत गेला । अहीगाममे मित्र ठाकुर सेन हुनक निवास कयलनि ,जाहिमे नघू नामक संतान सुख रहलनि। गोपालन कार्य ज पूर्वेनी नहैत,एकरा आगु बढ़बैत नघूक निविरहायनान्द मृत्यु आ स्त्री दुर्गाट पुत्र होय छथि ज येघ रहलायन खुब जगह जमीन अनजैत छथि। दरभंगा महाराज सँ केस मोकदमा'क टकान कलकत्ता हाइकोर्ट मे होय छैन। बादमे हारि ए' जाय छैन। मृत्युसु जीक तीन पुत्र क्रमशः गुदन,बड़ा आ बाबूलाल सहैता धन सम्पत्ति देखभाल आ आगा अधिक बढ़बाक काज निमित्त निरोग बाँटिक सम्मिलित्य परिवारक नाम पनायछा मे बढ़बैत रहलाह। गुदन बाबूक छोट रायक पुत्र नामलखन सहैताजी खुब जानकार रहथि। रामनारायण गुप्तैता जीक मृत्यु क' बाद संगठन'क कर्त्ताकर्ता नामलखन सहैताजी बनलाह। स ठा हिन्दी राखी जैका बालबाल रखलनि। हुनका पुत्र मे दलनारायण गुप्तैता , सूर्यनारायण सिंह,सुबोध झा, गुलाबी सोनार , यमुना सिंह,जीलनी खरगढ़ु आ नामलखन जीक छोटराय नामकृष्ण सहैता , जयकृष्ण सहैता आह्वानमे एवं हुनक १० साथक देशभक्ता साथी खुब अभियान चलौलैक। देश आजाद करबायक हेतु ब्रिटिश सरकार हिनक लोहा मानैत छलैक। सन् १९४४ मे दियाबाती सँ एक दिन पूर्व नामलखन बाबूक दरवाजा पर नाम्रिक १० स्वतंत्रता सेनानी ठहर कयक सुतल रहैक , ५०० मीटर दूर सँ अंग्रेज सिपाहिक टार्चक रोशनी सँ

गाम मलकले। पहिना पन गुनमेला जी मुक्ति नहि सियाहीक ताँतन रहैक। किसान सँ जानवाक लेल उपनाक पाथी अनथ्थ पढि। एहिमे पूर्व जनाव गुनमेला क' वंशावलीक संगहि रामरूप मंडल आ अनन्द लाल कामत जीक संघर्ष आ जीवन गाथाक विवरणावली देल गेल अछि। विहानी गुनमेला क १० मौजम कामत छलनि आ नयालम सहित दिघरा आ रामपुराम कामैत रहनि। हिनका दू टा वेटा -: रामनारायण आ देवनारायण रहथिन। कलकत्ता सँ मिथिला'क प्रथम वा शासन ग्रामक रूल रहथि रामनारायण बाबू ,ज नताजी सुभाष चन्द्र बोस क संग नीक परिचय बनावैयम सफल छलाह। बादम महात्मा गांधी आ राजेन्द्र प्रसादजी सँ नीक संबंध बनल रहलनि। १०वर्षीय युवनथन गुनमेला कन हुलासपट्टी मध्य विद्यालय सँ नाम कटला पन मुजफ्फरपुनम नाम व७क10निना सँ लिखाउल गेल रहय। एक बेंकम उपाय मोनजन पद पन हुनक काका रहथिन। एक संस्थाम नाम नै लिखल गेलैक ताँ शासन विद्यालयम एम0 ए0 पास एव एम साहेब १०० अंकक सवाल देत परीक्षा लेलनि , शत-प्रतिशत जाँच परीक्षा मे खरा उतरलाह। उपाय उ संघ शाखाम आन एस एस क प्रचार-प्रसारम लागल रहलाह। देशक आजादी लेल अपन सर्वस्व न्यौछावर करयम ज योगदान हुनका लोकनिक रूल अछि,ताहिक रातनाक नव पिढिक वन्ना - वन्ना एहि पाथीक उपयोगिता बुझत। हम शुभकामना देत छीयैन ज हुनक पाथीक नव संस्करण शिघ्र हाय!

३

लघुकथा- सौंथनी

हमर गुलाब अपना जमीन खूब नीक सँ मनखय लल खाम खनही बाडग कल नहुय। गाछ जहन बानि यगिया हल गँ उ बन असमयक बनखा सँ आधा गाछ सूखि गेलैक। गेया हूलवाणि यतिग नसायनिक कीटनाशक औषधि आ गागाक दवाउ छिटैग दाहनौन नहुय। दलहन यौध सगन बाधम यीयन याण दखान नहैक आ छिमि सहा यिनौंछ। गेया डागनैग - समनैग मौसम अनुकूल हलायन हून जगजगाउ गेलैक। यहिल छाहैन अयन दुनू याखी गानलका। मौनही सीमाकाणक खग कयन एकटा यबगाबा मानम सहा हूअय लगलै। दखलक उफननानि रौगाक कनीहन सँ महिला जौन विन् अनहलह विन्न - विन्न कनैग। स गुलाबाक बासम सबटा हूलि गेलैका। कहलकै गनङ्ग यन गौलक आधाअधि यन छिमी गाउग छियै गिनहगाका। जखन समूचा कालाक जजाणि समटा गेलैक गँ सब मूसहन्नी अयना बालैन कँ हून सँ हनन आ अदहा छिटाक हून क दुOाम कूनी लगबैग हगयुरह क' दलकैका। कागबा कहल गेलै सौंथनीम जगक नखन छी , सयह द' दिअ आ दुनू रुनी अहीं सालहन्नी ल' जाऊ। मूदा नै न मानलकै। बनाबनी सबक ्ूयह ८O।।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउ।**

२.१.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खय-२३)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम. ए., नौकरी- खनाजयून,

दरभंगा, सासुर- गोढ़ियारी (बलहा), वर्तमान निवास- नाँची, मानखण्ड। मानखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभागम बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पदसँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

अग्नि शिखा (भाग- २३)

(मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण)

कथा अखन धरि:

अप्सरा उर्वशी के स्वर्ग सऽ पांच साल धरि स्वर्ग सँऽ निष्कासित कएल जाइत अछि। ओहो दण्ड राजा पुरुरवा के प्रेम संदेश देला के कारण इन्द्र के द्वारा देल जाइत छनि। एकर देवगुरु उ स्वर्ग छोड़ि राजा पुरुरवा के पृथ्वी लोक जेबाक निर्णय लैत छथि। हुनकर मित्र अप्सरा रम्भा एवं चित्रलेखा हुनु एकहि सलाह दैत हुनका नम आँखि आ ठोर पर मुस्कान राखि पुरुरवा सँऽ मिलन हेतु विदाइ देलनि।

आब आगु:

प्रतिष्ठानपुर क राज प्रासाद अतुल प्रताप! त्रिलोक क विपुल ऐश्वर्य! आ राजा पुरुरवा क कुशल व्यक्तित्व क यश ध्वज! पृथ्वी क नरु परन पैन राखि! विस्तृत आकाश धरि अपन मस्तक उन्नत कएने गौरव क यशोगान जयि रहल छल। मुदा उहि मं रहय बला राजा पुरुरवा ब्रह्मचर्य क महत्व क नकारैत उर्वशीक विरह मं व्याकुल जल बिन

मीन सन छटपटाइत छलाह। रत्न-माणिक्य-हीरा-सोना सँ बनल एकटा अद्वितीय पर्यंक पर ओ एम्हर सऽ ओम्हर करऽट बदलैत अपन हृदय मे अंकित उर्वशीक चित्र सँ प्रेमालाप करैत आ उद्विग्नता सँ व्यग्र भऽ मोन मोन हुनका स्मरण करैत छलाह।
ईर्ष्या सँ जरैत निद्रा देवी,ई सोचि राजाक आँखि मे प्रवेश सँ परहेज करैत अछि,जे उर्वशी! राजाक प्रेयसी!ओहि नेत्र मे निवास करैत छथि। हुनका समक्ष निद्रा देवी कोना कऽ जैतीह। ओ कोना कऽ ओहि मे निवास करतीह!निद्रा देवी उर्वशी के अपन सौतिन मानि राजा पुरूरवा सँ परहेज करऽ लगलथि।
जहिया सऽ राजा पुरूरवा अमरपुर सँ धरा धाम वापस आयल छथि तहिया सँ असामान्य बुझाइत छथि। विधवा क बिन्दुहीन कपार सन राजसिंहासन आइ-काल्हि अपन दुर्दशा पर सिसकैत बुझाइत अछि। परिवार-पुरोहित, पार्षद आ प्रजा सब क सब राजा पुरूरवा क राज्य कार्य क प्रति उदासीनता पर आश्चर्यचकित छथि।
राजपुरूषक विचार - ' राजा पुरूरवा सदिखन स्वर्ग लोक समेत भूलोक क शासन व्यवस्था मे संलग्न रहबाक कारणे थाकि गेल छथि,तेँहि लेल हुनका किछु दिनक विश्राम लेबय पड़ैत छनि।
ऋषि-मुनि केर मत अछि - 'आइ राजाक मनमे ब्रह्मचर्य आ घरलुपनक बीच द्वंद्व अछि'।
कुल पुरोहित लोकनि सोचैत छथि - आइ हमर सभक राजा के असगरुआ नीरस जीवन परेशान कऽ रहल अछि' - मुदा राजा विवाह किएक नहि करैत छथि?ई बात नहि बुझाइत छनि किनको। तथापि ओ सभ सोचैत छथि जे राजा पुरूरवा के अखन

किछु दिनक आराम करब नीक अछि। राज कार्य सुचारु रूप सँऽ चलि रहल अछि, तखन राजा किएक व्यर्थ मे अपन माथ खपाबथि। मुदा प्रजा वर्ग मात्र एकटा बात सोचैत अछि - 'लगैत अछि जेना राजाक आँखि मे कुनो अलग्य सौन्दर्य रमि गेल हुअय मुदा ओकरा पएब राजाक सामर्थ्य सँ बाहर अछि; ताहि लए हुनका लोकनिक राजा दिन-राति विरहाग्नी मे जरि रहल छथि।
मुदा युवा राज्ञी राजा के लए चिंतित अछि, सब किया अपन राजाक दु:ख मे दु:खी अछि, सब चाहैत अछि जे अपन राजा सुखी रहथि,राज्य के सुख के आनंद लेथि । जखन राजा सदिखन प्रजा के प्रसन्न रखबाक प्रयास करैत छथि,तखन प्रजा वर्ग हुनक दु:ख सँऽ दु:खी कोना नहि होथि!
आइ कतेक दिनक बाद राजा अपन सिंहासन सुशोभित कएने छथि,कोना आन समस्याक चिन्ता मे छी कहि सब सँऽ विनम्रक बात पूछए लगलनि। मु0-मु0 के सुखद मुस्कान हुनकर थाकल चेहरा सजा देलक। देह मे रमल आलस्य आ राज कार्य मे आयल उदासीनता के ओ पूछए लगलथि चंदन मे कपूर के अधिक अंश यएल कहि कऽ, एक मु0 काल्पनिक कारण बता।
मुदा तखनो बसी विरह पीड़ाक कारणेँ हुनका सँऽ अनकां बन किछु गलती रऽ रहल छल,जकर कारणेँ ओ कतबहु नुकौलथि मुदा हुनक पीड़ा मोनक अशान्ति ककरो सँऽ नुकायल नहि नहि सकल ।
"अहाँक मोन आ मस्तिष्क एखन अस्वस्थ बुझाइत अछि राजन,तैँ व्यर्थ कष्ट नहि करु,किछु काल वन भ्रमण कऽ लेल जाउ " - प्रधान आमात्य कहलथि ।

ई सुनैत राजा "वन भ्रमण लेल जाइत छी" ई कहैत महल सँ बाहर निकलि गेलाह।

हुनका मोनक शांति लेल एकांत स्थान पर जेबाक आवश्यकता बुझलनि,ँ ओ जंगल घूमबाक लेल निकलि गेलाह। अश्व पर सवार शहर भ्रमण करैत एकांत स्थानक आनंद लेबय लेल शहरक बाहर स्थित निकटस्थ वन दिस विदा भेलाह।

वन मे एक स्थान पर बैसल ओ ताल पत्र पर तूलिका सऽ तन्वंगी सौंदर्यमयी उर्वशी क चित्र बनाबय लगलाह। उर्वशी क चित्र बनबा मे एतेक डूबि गेलाह जे अपना क बिसरि गेलाह राजा ।

बहुत कालक अथक प्रयासक बाद नृत्य करैत उर्वशी ताल पत्र पर मुस्कुरा रहल छलीह। हुनक चित्र देखि पुरूरवा प्रेममग्न भऽ गेलाह। प्रेमक प्रवाह मे बहि भाव विह्वल पुरूरवा हुनक एक-एक अंग कँ चूम्बन लेबय लगलाह। ओ अपन सुधि-बुधि बिसारि कतेका काल धरि उर्वशी क अंग-प्रत्यंग क चूम्बन लैत रहलथि। मुदा जखन हुनका बुझायल जे ई चित्र अछि! हुनकर उर्वशी नहि! हुनकर उर्वशी कतय छथि एतय!तखन भून उदास भ' गेलाह!आँखि सँ नोर बहय लागल!ओ भून विरह मे विचलित भऽ गेलाह आ व्यथित हृदय सँ उर्वशी कँ मोन मे स्मरण करऽ लगलाह।

काजर सन क कारीअमावस्या क राति! कारी साड़ी मे लपटाल! साँझ सन धीरे-धीरे धरती पर सरकैत आबि रहल छल! प्रिया संग रहला पर मानव क मनोहर लगैत अछि, मुदा प्रिया विहीन मानव

क ऊँची नाति उछिना लगेत छल जना नागिन उसय लल जीह लय लयाॐन वढल आवि नरुल हाय। नजनी स्मयं कज्ञाल कालिमा क घान अंधकान नुयी वरेन धान म निनाहश्नि म जनि नरुल छलीह। हुनक प्रियनम वच्च हुनका सँs विछनि अथांन दुन रs (गल छलनि, ओहि लल उचिन-अनुचिन, न्याय-अन्यायक हुनका काना स्नान नहि छलनि। ओ काना कs ध्यान नखिनथि! आॐ हुनकान प्रिय चान हुनका संग नहि छलनि। अयन चानक नलाश मं शून्य आकाश मं अयन दृष्टि दहा दिस रहिना नरुल छलीह। अयन प्रियनम क नहि यावि नदना सs निद्श्र अश्रुयान कनेन अयन कानी आँचन लहनावेन,नानानदय म सिहनन उयन्न कनेन,ओ समक्ष जीनक हृदय म रय यसानि नरुल छलीह।

यूनुनना क स्थिनि नजनी क स्थिनि सs की कुना अलग छल? ओहा अयन का०ली म सिसकैन छल! अयन स्नर्ध ययँक यन अधलटल सन रल छन निहानेन उर्वशी क ध्यान मं निमग्न छलाह। ओ मान म की साचि नरुल छलाह,किनका स्नान नहि छल। रला ओ अयन यीडा कहिनथि ककना सँs! हुनक दुख, हृदयक यीडा नजनी क अनिनिक्त दखय आ जानय नाला दासन किया नहि अछि!नखन क वूसन ! किया नहि छल हुनक निकट ओहन सुहृद व्यक्ति जनिका सँs ओ प्रम यियासा सँs व्याकुल अयन हृदयक गप्प कs सकिनथि !

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.८.नन्द विलास राय-माटनसाँकिल



नन्द विलास राय

माटनसाँकिल

हमर मित्र छथि, नाओं छियन्हि श्याम ठाकुर। हम सभ हुनका श्यामजी कहै छियन्हि। छठा वर्गसँ बारहमा वर्ग धरि हम दुनू गोटा संगे पढ़लौं। श्यामजीक घर ननहिया बाजार आ हमर घर सखुआ। मैट्रिक उत्तीर्ण भेला पछाति श्यामजी आगाँक पढ़ाइक लेल पटना चलि गेला किएक त ओ अमीर बापक बेटा छथि आ हम निर्मली कॉलेजमे नाओं लिखेलौं। चूँकि हमर पिताजी एकटा छोट-छीन किसान छला तेँ मधुबनी, दरभंगा, पटना वा आन कोनो शहरमे राखि हमरा पढ़ेबासँ असमर्थ रहथि। असमर्थक माने भेल खर्चा देबामे समर्थ नहि हुअब। निर्मली कॉलेज हमरा घरसँ छओ-सात किलोमीटरक दूरीपर अछि तेँ साइकिलसँ वा पएरे घरासँ वर्ग कऽ सकै छी।
इन्टर कलाक पछाति श्यामजी इंजीनियरिंग करए पढ़ाइक लेल बंगलौर चलि गेला। ओतएसँ सिविल इंजीनियरिंगमे बी.टेक. करि बिहार सरकारमे नौकरी पकड़ला। पाइ कमा कऽ खूब टाल लगा देलखिन। हम निर्मली कॉलेजसँ बी.एस-सी. पास कऽ सरकारी नौकरीक लेल बड़ प्रयास कएलौं मुदा जेना कहब छै जे युगमे भगवान भेटब आसान अछि मुदा सरकारी नौकरी भेटब मुश्किल। थाकि-हारि खेती-गृहस्थी कऽ अपन गुजर करए लगलौं। माए-बाबू सेहो दिवंगत भऽ गेल रहथि।
श्यामजीक पिताजी सेहो पाइबला रहथिन आ ओहो मान श्यामजी पाइक पाइ कमला जे पटना शहरक पाटलीपुत्रा कालोनीमे तीन महला मकान बनौलेथि। मुदा हमरासँ सम्बन्ध बनल छैन। जहिया कहिया

गाम अबै छथि तँ समाद पठा कऽ हमरा बजा लैत छथि आ भेँट करै छथि। आब तँ सहज भावेँ भऽ गेल छनि तेँ फोन कऽ बजा लैत छथि।

काल्हि श्यामजीक पत्नीक जन्म दिन छलैन। श्यामजीक पुतोहु नरहिया उच्च विद्यालयमे शिक्षिका छथिन आ बेटा अमित उदयन कौलेज, घोघरडीहामे लेक्चरर। तेँ ओ सभ यानी श्यामजीक बेटा अमित अपन पत्नीक संग गाममे रहै छथि। बेटा-पुतोहु गाममे छथि तेँ पत्नीक जन्मदिन गाममे मनौलखिन।

हमरा नोत-हकार देने रहैथ। बस गाम-समाजसँ जन्म दिनक आयोजन छलैक। नहिवा किएक ने करता, भगवान श्यामजीकेँ कोन चीजक कमी देने छैन। अपना विद्वान सन्तानक पथ निर्माण विभागमे इंजीनियर, जेठका बेटा आ जेठकी पुतोहु डॉक्टर, छोटका बेटा (जिनकर पत्नीक जन्म दिन छलै) अंग्रेजी महाविद्यालयक लेक्चरर आ छोटकी पुतोहु उच्च विद्यालयक शिक्षिका। परिवार बस सुखी-सम्पन्न छैन। हँ तँ कहै छलौं श्यामजीक पत्नीक जन्म दिन छल।

साँझक छअ बजे हम साइकिलसँ कार्यक्रम स्थलपर पहुँचलौं। बीस-बाइसटा चरिचकिया गाड़ी, सए-सवा-सए मोटरसाइकिल आ दस-बारहटा स्कूटी लागल रहइ। हमहीं एकटा एहन रही जे साइकिलसँ गेल रही। श्यामजी आ एक गोटा आओर, जिनका नहि चिन्है छलिऐन, गेटपर अतिथि लोकनिकेँ स्वागत करैत रहथिन। हम साइकिल खड़ाकऽ गेट दिस बढ़लौं कि श्यामजीक नजैर हमरापर पड़लैन, ओ बजला-

“राइ, आबह! आबह!! तों घनतारी भऽ कऽ अखन एलह हन।“

ॐी कहैत ॐा हनियाँजम यकेउ हमना गलासँ लगा ललैथ। जना हगनान श्री कृष्ण सुदामाकँ लगौन नहथिन। श्यामजीक संगम ज सज्ञान छला, ॐा निव्रासँ ऊयन धनि हमना दखैथ। किउक गँ हमन अगे-वगे गहन सन नहउ। मामुली (धागीयन मामुली कुनगा। येनम यूनान खियलहा हनाॐ वयल, सनानीक नाउंयन यूनान साॐकिल। जखन कि श्यामजी आ हूनका संगे ज सज्ञान नहैथ, महगा सूट-वूट यहिनन नहैथ। धनमागगी यूछ्र ग हमना लाजा हूअउ।

श्यामजी अयना संगवकँ हमन यनिचय कनवैत कहलखिन-

"समेध, ॐी हमन मीग छैथ, लंगोटिया मीग नछजी। छOासँ मैंद्रिक धनि हमसर संगे यढलौं।"

लगल हाथ हमना दिस गकैत श्यामजी यून: वजला-

"हाय, ॐी ननका समेध हला, त्रिलाक वावू। हिनक वालकसँ नीधाक विआहक वाग यक्का हल हन। दुल्हा टाटाम ॐजीनियन छैथ आ त्रिलाक वावू नाँची विश्वविद्यालयम प्राहसन। सर वाग-विचान यटनसँ हल गँउ गाना नहि वूमल छह।"

हम वजलौं-

"सउह गँ। गामसँ ऊँ वाग-विचान हल नहैत गँ हमना जनून वूमल नहैत।"

श्यामजी वजला-

"उहना कहीं नॐ वूमल नहिगह।"

यूछलयैन-

"नीधा वूव्रीक उम.उ. हाॐनल गँ हS (गेल हउग किन?"

श्यामजी कहलैन-

"हँ-हँ!! बौआ हमरे क्लाससँ एम.ए. पास केलक हन। विआह पंचमीकेँ विआहक दिन तय अछि। गामसँ विआह करत।"

हमरा मुहसँ बजा गेल-

"वाह! अति उत्तम।"

त्रिलोक बाबू हमरा पुछलैथ-

"अपनकेँ बेटा नहि अछि की?"

हमरा हुनकर बातक कोनो अर्थे नइ लागल। हम हुनका मुँह दिस बकर-बकर ताकए लगलौं।

श्यामजी बजला-

"ई बात किएक पुछलयैन, सबैब। उनका, सायकेँ बेटा नहि छैन दुटा बेटीए टा छैन।"

त्रिलोक बाबू बजला-

"सुआइत अहाँक मोन साइकिलपर चढ़ै छैथ। ओ हम अपना गाममे देखै छी, जकरा ने बसऽ लल घराड़ी छै आ ने खाइ लल घरमे एक मासक बुतात छै, सेहो अपना बेटाक विआहमे बेटीवलासँ दहेजमे मोटरसाइकिल लइ छै। बेटा त दिल्ली, पंजाब, कलकत्ता खटै छै आ बाप मोटरसाइकिलपर चढ़िकऽ टीमटी करै छइ।"

हम सोचए लगलौं, हमरा गाममे तँ बेटावला सभ सएह करैए मुदा बजलौं किछु नहि, चुप्प रहलौं।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)



जगदीश प्रसाद मण्डल

सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

'सुचिता' धारावाहिक रूपेँ छपब प्रारम्भ भेल 'मिथिला दर्शन'मे, ओ पत्रिका प्रिंटमे छपब बन्द भेल आ मात्र पी.डी.एफ. मे ई-प्रकाशित होअए लागल आ फेर सेहो बन्द भऽ गेल। आ तेँ 'सुचिता'क सेहो छपब/ ई-प्रकाशित होएब बन्द भऽ गेल। एही आलोकमे ई उपन्यास धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित कएल जा रहल अछि। -सम्पादक।

छठम पाठ

हिम्मतलाल ठाकुरसँ भेलापर राधारमणक विवाह जहिना आगू-मूहेँ संचरित होअ लगलैन तहिना सुवासिनीक सेहो भेलैन। दुनूक विवाह संचरित होइक दु रंगक कारण छलैन। ओना, राधारमणक दृष्टिकोणमे दुनी सेहो छलैथ। मुदा अखन से नहि। सुवासिनी जहिना अपन परिवार, देखि रहल छली तहिना हिम्मतलालक सेहो देखि रहल छली। दुनू परिवारक सभ विकारकेँ हटबैत सुवासिनी हिम्मतलालक सम्पन्न परिवार देखि लुभावनामुख सेहो रहली। हवा कहा न कहिऔथ..! पति विहीन हिम्मतलालक माएकेँ सेहो देखली आ अपन पिता विहीन माएकेँ सेहो देखि रहल छली। तेसंग बाल-बच्चासँ लऽ कऽ बूढ़ धरिक जे परिवारक शान्तिप्रियता होइत तकरा हिम्मतलालक परिवारमे देखिये चुकल छली।

ओम्हर, राधारमणकेँ विवाहेक अनका कारणमे एकटा कारण ओहो छलैन जे अपना परिवारक इतिहास सामने अछि आ हिम्मतलालक सेहो अछि, मुदा इतिहासक क्रम एहन सन जे जहा दुनू परिवार दु धूरसँ यात्रा करैत होअए। यात्रा जे जाए करैत होअए मुदा हिम्मतलालक परिवार देखि राधारमणक मन अपन परिवारक प्रति ममुआ जरूर रहल छलैन। ममुएबा कहा न कहिऔन..! ठाम हिम्मलाल दुनू परानी अपना आ अपन परिवारा ल जना कमान रहे छैथ तहिना बच्चासँ बूढ़ धरि सेहो तीर-कमान रन तैयार रहित छैथि।

हुनकश्वर (उर्मिला) भेला राधारमणकँ छह मास बीत चुकल छलैन। वर्खक आधा। काज करैक अपन जे कला छैन, ओ धीरे-धीरे आब

ओहन बनि गेलैन अछि जे धानक महानगर चारि जना मानसरोवरसँ गंगासागर तक यात्रा करए लागल हाहिन। मनमे जे हाहित हानि मुदा छअ मासक बीच काना शिकाहित किछुनासँ, किछुनासँ मान रहल जे न जनमानस दिससँ आ न प्रशासन दिससँ, एकादिन रहलैन। तँए मनमे हिहि विचार घर करहि छौन जे अपन जिनगीक पहिल बहाली, मान पहिल कदम छी जकर अपन निसचित सीमा छहि। ओहि सीमाक उल्लंघन रहन न किया अपन अवधि (सीमा) पूरौनहि बिना ओहनसँ ओहन मान रन-रन हाहि छैथ, मुदा तहिम अपनाकेँ नहि देखि राधारमणक मनक बलम दिना-दिन बढ़ारी रहन मनावल सहा सकताए लगल छन्हि।

कार्यालयम तँ दूनू गोरे, मान राधारमण आ हिम्मतलाल बसीकाल संगे बितौता छैथ, तहिम कुनसीक जे दुरी अछि ओहिम खिंचाव रहल। छअ मासक बीच परिवारक संग राधारमण दु बेर आरो हिम्मतलाल ओहिमे पहुँच चुकल छला। तहिम एक दिन संजोग बनल आ महिल-जगतक विचार सबहक बीच ओहि गेल। जहिसँ दूनू गोरेक पत्नीम मान रुक्मिणी आ सुवासिनीक बीच बहिना-बहिनी शुरू रहs गेल। हिम्मतलालक पत्नी सुवासिनीकेँ कहि देन रहैन- 'दीदी, अपन परिवारक बात जँ किया हिमान रखि बाजैथ तँ ओ सरहसँ पवित्र गंगा असनान करब रहल।'

सुवासिनी अपन विचारम ओमना गेल छली। ओमना हिी गेल छली जे जमीनपरक गंगा आ आध्यात्मिक गंगाक मान बूझब न करै छली। तँए गंगा करा पवित्र रहैए आ करा ओहिम प्रदूषण बढ़ैए स बूझिय न पब रहल छली।

ओना, राधारमण सेहो मने-मन ओझराएल छला। ओझराएल ई छला जे रुक्मिणी (हिम्मतलालक पत्नी) जे बजली जे 'ईमान नहि बजनिहार', एकर मान की भेल? ईमानकेँ नहि जखन बाजब तखन ओ ईमानक भेल आकि ईमान नइ भेल? एक मनमे होनि जे ईमान सहित एकरा विचार भेल मुदा ईमान नहि बाजब ई की भेल..? भान लगल होनि जे ईमानकेँ मुर्तिरूप आगूमे नहि बाजब। दुनूमे सँ कोना भाँजपर ने चढ़लैन। मुदा छला तँ सबहक बीचमे। जइसँ आगूक कोनो बात नहि देखि समतम होइत बजला-

"मनुक्खसँ लऽ कऽ समाजो आ देशो-दुनियाँमे जते सजगता ओत ओ आगू बढ़ब करत।"

ओना, बजैक क्रममे राधारमण बाजि गेला मुदा जखन अपन बाजबपर अपन विचार करए लगला तखन मनमे उकटू हुअ लगलैन। उकटू ई हुअ लगलैन जे नीक काज करनिहार जहिना करैकाल सजग रहै छथि तहिना अधला काज करनिहार सेहो सजग नइ रहै छथि सेहो कोना नइ कएल जाए..? मुदा संयोग नीक रहलैन जे ने कियो हिम्मतलाल परिवार दिससँ बाजल आ ने सुहासिनीए किछु बजली। चूपा-चूपी देखि राधारमण सुरुआतकेँ कएलखिन-

"बाबी, छोट-छोट दिन अपना ओरापर आउ। पत्निया असगर रहै छथि आ अहूँ निचेन रहै छी। एना कोना दूर नहियेँ अछि। पएरा आबिए सकै छी। तहूमे अहाँ एतम जते सजग छी तते ओ नहियेँ छथि, मान सुहासिनी, तँए हुनका अबै-जाइमे कनी ध्यान लगब करौन। तहूमे सरकारक जिम्मामे सेहो भेलौं, तँए ओत तँ

वनाए यड़त।"

नाधानमधक विचानम प्रनाहित होइत सूरेन्द्र वजली-

"बौआ, हम तँ जहिना हिम्मतलालकँ वटा वूझै छी तहिना अहूँकँ वूझै छी। किए तँ हम किछु रहलौं तैया तँ पाँचटा पाता-पातीक दादी रव कलौं किने। दूनू पनानी हिम्मतलाल सन वटा-पुतहु सेहो अछिए। आ अहाँ अखन नव-नौतान छी, रगवान एकटा सन्तान देलेन अछि आगा देथि।"

सूरेन्द्राक पटक बात नाधानमध आँखि नहल छला। आँखि ऊ नहल छला जे जँ कानी तनहक मलीनता हुनका मनम नहिऐन तँ दुनियासँ निराश रल जकाँ दुनियाँकँ पा तँ तनियवेत वजितथि वा दुनियाँकँ छाड़ि वजितथि मूदा स तँ नहि छैन। हमरा पनिवान नीक जकाँ वढ़ह स तँ मनम छैन्ह।

जहिना छाटा-छीन पानिक प्रनाहकँ किया नक्शा वना प्रनाहित कनैत धाना वनवैत तहिना नाधानमध वजला-

"चाची, अपन किछु रहलिऐ तैया एक जिनगी तँ टपल रहलिऐ, जिनगी चाह जहन नहल हुअए मूदा जाव ऊ होइम जीवनांशु नहि अछि ताव ऊ जीवित कना अछि। चाह जीवनक ज पहलु जहन नहल हुअए मूदा रुन पऊ तँ ऊहन अछिए ज राव-गुनमम अखना ऊहन अछि जहन हवा चाही।"

नाधानमधक विचानकँ कान नुयँ सूरेन्द्रा वूझली स तँ ऊ जानैथ मूदा मूहसँ निकललैन-

"वच्चा, अहूँOाम (मान अपना ऊOाम) कि काना काज कनै छी, रनि दिन वच्चा सवहक संग हनाएल नही छी। टहलै-वूलैक अपना मन

होएत। काल्हि आएब।"

जहिना सुरेन्द्र दासक दिनक समय बनौलनि तहिना बनू घरमे मात्र तीन बच्चाक पढ़ाइ। एकटा बेटा, जे सात बर्खक अछि आ एकटा बेटी जे नओ बर्खक अछि, दुनूक संग पढ़ए-पढ़ए सुरेन्द्र नारायनमलक बेटा लग पहुँच नरायण ०।८ हेली। मालिकाइनियोक गोँ हाथ आबिये गेल अछि। जखन सुरेन्द्र घरसँ निकलली, बुझिधी हिम्मतलालकेँ सूचित क' देलखिन। हिम्मतलाल नारायनमलकेँ कहलकैन। नारायनमल सुहासिनीकेँ सूचित क' देलखिन। जहिसँ नारायनमलक सनकाही निराशम प्रवेश कर्तेम सुरेन्द्रकेँ किछु न बाधा हेलैन। ओना, नारायनमलोक मनम ओO गेलैन जे हाय दुनियाँ गोँ दुनियाँ छी। किया चाउनकेँ हाग टा बना खाइत किया नाटिया बना नइ खाइत सहा कना नइ कहल जाएत। हेलैँ लोक कहए जे गहमक नाटिय टा होइ छै, मुदा लोक हाग बना नइ खाइत सहा कना नइ कहल जाए। गोँए □हिसक काज नियटा सबन-सकाल निकैल जाएब। थाना नइ न छिऔ जे चौबीसो घन्टा चलत।

□हिसक काजकेँ नारायनमल होँइ-होँइ नियटाबए लगला। गही बीच हिम्मतलाल आबि कहलकैन-

"सन, छुट्टीक समय सहा लगिबाइय गेल अछि, गइ बीच कनी यहिन छाओ देऔं गोँ अपन काजक हान दासनकेँ समसा चलि जइऔं।"

ओना, नारायनमलक मनम ऐीहा नहैन जे अपन कार्यालयक गोँ अपन मालिक छी, मान बिना ककना कहन जा सकै छी। मुदा हिम्मतलाल गोँ स नहि अछि...। नारायनमल बजला-

"हिम्मत! छुट्टीक समय तँ खटियाएल सन अछि। दुनू लोग संगे चलब।"

नाथानमहक वात सुनि हिम्मतलालक मन पूर्ण सन्तुष्ट भेल। पूर्ण सन्तुष्टक मान भेल जे नाथानमह असगर जवाक छुट्टी दऽ दितथिन तँ ओ भेल सन्तुष्ट, मुदा जखन दुनू खियालसँ भेल, मान □हिसा आ ओनाक खियालसँ भेल तखन पूर्ण सन्तुष्ट भेल।

चानि वजेम मात्र आधा घन्टा शेष छल कि हिम्मतलाल □हिसम ताला लगा नाथानमहक संग निकैल गेल।

दुनू लोग मान नाथानमह आ हिम्मतलालकँ यहूँवेसँ यहिन सुनासिनी सुरङ्गाकँ काOनीम वैसा जहिना गप-सप्प करए लगली तहिना हिम्मतलालक नअ वर्खक वटी- सुनीत्राक संग सुचिता सेहो गप-सप्प करए लगल। सुचिता अठाऽऽ वर्खसँ टयि योन तीन वर्ख कनीवक राऽऽय गेल अछि। ओना, यनिनानक प्रनान सेहो उमनयन यतित अछि। उमनक मान सिर्फ दिन-महिनाटा सँ नहि राऽऽए, यनिनानक नातानवधानुकूल क्रिया नूपम आ रानतुप-निवानतुपम सेहो राऽऽत अछि। जऽऽसँ एक यनिनानक पाँच वर्खक वच्चा दासन यनिनानक तीन वर्खक वच्चाक वनवनि रऽ जाऽऽए आ दासन यनिनानक वच्चा सेहो ओहिना रऽ जाऽऽए। ओना, यनिनानम वच्चा नूपम सुचिता असगर छल तँए दासनक खगता खलित छलऽऽ। सुनीत्राकँ संग नन लगम आवि सुचिता सुनासिनीकँ कहलक-

"मम्मी, वहिना लगा दा।"

सुचिताक मनम एहन विवान नहि जागल छलै जे वहिना लाक अपना लगा लऽऽए, जकन काना उमना-(Oकान निर्धानित नहियँ

अछि। एही बीच बाधानमे हिम्मतलालक संग ओना पहुँचला। ओहिना बाधानमे अपन ▯हिसक नक्ष उगानि ओनाक नक्ष पहिलौन गहिना हिम्मतलाल सहा अपन पनिवान जकाँ अपन उगानेवला नक्ष उगानि बैसल।

बाबू गोपक बीच बाधानमे विचारलैन जे अखन हु डाहुन पनिवानजन बैसल छी जे हु खूनसँ संचालित होइछ। मान ओहो जे हिम्मतलाल आदिवासी पनिवानसँ अबै। जे जंगली नूपसँ किसानी नूपम नीक जकाँ पअन भायनौं न अछि, डाना, हिम्मतलालक पिता सहा सनकारी काजसँ झुठि गेल छला, मुदा बगल डाहुन पबै छला जे पठ आ दहुक नक्ष पूनबै-पूनबै सठि जाइछ छलैन। गठम नीक घन बना, नीक राजनक संग नीक जीवन जीब कना सकै छला। सुरुक्षाक बचपनक दहु आन बच्चासँ भिन्न छल मान सुहुना आ कटगना, मुदा बनसाय गँ आन गनीब बच्चा जकाँ छलै, गाछक सुखल लकडी गाठि अपना पनिवानक खर्च पूनबै छल आ किछु बचिकऽ पनिवानक नाना-गल चलबै नहइ। जखन कि सुवासिनी, एक प्राइसनक बटी नहि चुकल छैथ। कौलेज गकक शिक्षा सहा पब चुकल छैथ।

हिम्मतलाल बयनासीए किए न छी, मुदा बी.ए. पास गँ अछिए। बानि गोप जखन एकठाम बैसल छी गखन डाहुन गय-सम्य न समगम कना जइसँ बाबू गोप झुठल होइछ। ▯हिसक चर्च कनब गँ अनन महींसिक आगू बीध बजाएब हएत। हिम्मतलालक विचानकँ अखन माल कान छी। पिताक मृत्युक अनुशंसायन सुरीगम सनकानी

𑒩𑒰𑒏𑒩𑒲 𑒣𑒃𑒢 𑒪𑒑𑒪𑒻, 𑒍 𑒏𑒢𑒰 𑒥𑒴𑒗𑒞 𑒖𑒹 𑒩𑒰𑒏𑒩𑒲 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒱𑒔𑒰𑒢𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒅𑒾𑒢 𑒅𑒧𑒢𑒰 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒧 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒩𑒰𑒏𑒩𑒲 𑒧𑒢𑒧 𑒧𑒱𑒪𑒯𑒰𑒢𑒱 𑒐𑒪𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒁𑒮𑒪 𑒖𑒲𑒫𑒢, 𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒃 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒲𑒐 𑒩𑒙𑒻𑒋 𑒍 𑒞𑒿 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒧𑒰𑒋𑒧 𑒕𑒻𑒢, 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒁𑒐𑒢 𑒮𑒩𑒮𑒿 𑒅𑒧𑒢𑒠𑒰𑒩𑒰 𑒕𑒟𑒱𑒋 𑒞𑒿𑒋 𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒋𑒞 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒮𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒱𑒋 𑒢 𑒮𑒩𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒲। 𑒍𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒲𑒞𑒪 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑓂𑒡 𑒫𑒵𑒞𑒰𑒢𑓂𑒡 𑒮𑒯𑒼 𑒯𑒥 𑒏𑒰𑒞, 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒱 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏, 𑒧𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒿𑒏𑒲 𑒮𑒩 𑒏𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒁𑒐𑒢 𑒩𑒢𑒱𑒮 𑒠𑒱𑒮 𑒅𑒑 𑒅𑒚𑒥 𑒏𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱।

𑒍𑒢𑒰, 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒧𑒢𑒧 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒒𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒢, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒯𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒐𑒱 𑒣𑒥 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒍 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒯𑒰𑒃𑒋 𑒖𑒹 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧 𑒩𑒴𑒣𑒞𑒱 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒩𑒳-𑒫𑒱𑒯𑒲𑒢। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮 𑒧𑒯𑒰𑒖𑒢 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒩𑒱𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒯𑒼 𑒕𑒟𑒱𑒋। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮 𑒢𑒱𑒗𑓂𑒗𑒰𑒖𑒢 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒁𑒧𑒢𑒴𑒐 𑒮𑒯𑒼 𑒕𑒟𑒱𑒋। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒚𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖-𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒑𑒾𑒝 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒠𑒳 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒕𑒲। 𑒞𑒯𑒳𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒳 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒂𑒧𑒠𑒢𑒲𑒏 𑒮𑓂𑒩𑒰𑒞 𑒮𑒯𑒼 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒁𑒕𑒱, 𑒩𑒪𑒿 𑒍 𑒏𑒧-𑒥𑒮𑒲 𑒏𑒱𑒋 𑒢 𑒯𑒳𑒁𑒋। 𑒞𑒰𑒫 𑒢𑒯𑒱, 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒱𑒢 𑒅𑒑𑒼𑒞 □𑒯𑒱𑒮𑒏𑒿 𑒮𑒳𑒧𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒱𑒢𑒔𑒩𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒪𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒲 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒢 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒪𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒯𑒋𑒞। 𑒖𑒃 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒰𑒪𑒲-𑒢𑒰𑒝𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒞𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒳 𑒑𑒼𑒩𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒯𑒴𑒙𑒏𑒮𑒰𑒋 𑒩𑒃𑒨 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒲 𑒯𑒴𑒙𑒏𑒮𑒰𑒋𑒧 𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒳 𑒑𑒼𑒩𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒚𑒰𑒜 𑒩𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱...।
𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒧𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒋𑒏 𑒢𑒫 𑒮𑒲𑒧𑒰𑒏 𑒬𑒳𑒩𑒳𑒂𑒞 𑒏𑒩

बिना, मोन भेल जे बाजि दिअए जे हुअए, मुदा सभ किया मन-मन अपन जीवनक सीमा तँ बनब करै छैथ, भलेँ ओ जे हुअए, जेत हुअए, नइ हुअए कि हुअए, ओही दीगर भेल...। राधारमण बजला-

"चाची, अखन समाजक बीच ठाढ़ छी जे दस रंगक बात-विचार होएत। अखन तँ मात्र दू परिवारक लोक बैसल छी, तेँ नीक होएत जे अपन दूनू परिवारक गप-सप्प किए ने करी।"

राधारमणक बात सुनि सुभद्रा चातक जकाँ निराश होइत बजली-

"बाउ राधा, कबीराबाबा कहने छैथ जे 'कुलवाम कोइ-कोइ स्नानी..।' अहाँ सन सुपात्र पुरुखक जन्मसँ परिवार नहि, समाजो बौरछी पार होइए।"

जहियासँ परिवारक भार बेटा-पुतोहुपर सुभद्रा सौंपि देली तहियासँ अपन समय भक्ति-भजन दिस लगबए लगली, जइसँ गप-सप्प करैक ढंग बदलिय गेल छलैन। सुभद्राक विचारक निर्मलतासँ राधारमण निराश भऽ गेला। जइसँ धएहा विचार जकाँ विचार मनमे जगि गेलैन। बजला-

"चाची, जहियासँ अपन जिनगी मोन अछि तहियसँ करैत अबियौ।"

राधारमणक बात सुनि सुभद्राक मन पसीज गेलैन। बजली-

"बाउ, ब्रह्म विवाह भेल।"

'ब्रह्म विवाह' सुनित राधारमण विभ्रम बजला-

"कत वर्खक अवस्थामे?"

सुभद्रा-

"सात वर्खक अवस्थामे, जखन माएकँ जरैन गोति कऽ आनि देइ

छलिऐन ठठूसँ रानस रहऽ छल।"
ओना, नाथानन्दक मन पिनाकक उग्यादित पूँजी दिस वढ़ए लगलैन, मुदा एकना समटि वजला-
"वच्चम, माता-पिता विवाह किए कलैन। तावे ने आनठाम मान सासुर नहि-जाकन नहि रहल हएव?"
नाथानन्दक जिज्ञासाकेँ देखि सुरेन्द्र उत्तिना विह्वल रहऽ गेली जहिना किया इतिहासक पन्नाम अपन नाम सटल देखि रहऽए। वजली-
"वाउ, हमरा माए-वाप सन-सन अधिकांश पनिवान समाजम छल आ अछिया, जकना दैवी ताँगसँ वसी मानवीय ताँगक चाट पडैत नहऽ, गेठाम जिनगीक कमा ठकान छल, मुदा वाल-वच्चाकेँ वचइत वनला पढ़ाइय न छाएव नीक हएत। वटा-वटीक विवाह-दान सहि उाही वचइत वनवैक सीमाक रीतन न अवैए।"
शब्दक उनट-फेन आकि विवानक उनट-फेन रहलैन स ने नाथानन्द वूझता मुदा एतव वजला-
"चाची, कनी दाहना कऽ कहियौ।"
सुरेन्द्र वजली-
"वाउ, वाल-वच्चाकेँ विवाह-दान कनव माता-पिताक क्रियमान कर्म छी, एकना निमाहव सर माता-पिता अपन धर्म वूझै छैथ, जिनगीक अनिश्चितता देखि जल्दी-सँ-जल्दी ओ काजसँ निवृत्ति अपनाकेँ कनए चाहै छैथ तेँए वाल-विवाह रहऽत आवि नहल अछि।"
सुरेन्द्राक वात सुनि नाथानन्दक मन आगा आगू वढ़ि गेलैन, मुदा स अपना मुहेँ नहि वाजि सुरेन्द्राकेँ ऐतिहासिक पौनुष मानि, हुनक

मुहसँ बजबैत खियालसँ बजला-
"आगाँ किछु मनमे, मात्र माता-पिताक मनमे छलैन?"
ओना, सुरेन्द्र सदा अपन जीवनक पाछू उनटि देखि रहल छली, मुदा नमहर बातक दुनी रहल नीक जकाँ नहि देखा पड़ै छलैन, मुदा नाथानमक्षक बात सुनि जना धक-द मान पड़लैन गहिना धक-धकाइत बजली-
"बाउ, विवाह ते अनका मनमे छलैन, अनका कि जे ओकर ते मनमे छलैह जे अपन सखा-सन्तान अपनासँ सरस गनहुँ नीक रहए अपन जिनगी देखए, मुदा स ते मनक विवाह मनमे सपनौती बनि रहलैन।"
बजैत-बजैत सुरेन्द्र जना जीवनक बातमे हराइए लगली। मुदा लगल रहा गेली जे अपन जिनगीक बात न बाजब, आनक ते नीका अछि, अथवा अछि ओइ अपन ते सामूहिक ढंगसँ विवाह हुअए। ओइमे ते मात्र दुइए परिवारक लोक छी, तँए परिवारक जे उपयोगी विवाह अछि, ताब बाजब न बाजिब हुअए। विवाहक धनागलयन सुरेन्द्र पहुँचा बजली-
"बाउ, विवाह सिर्फ स्त्री-पुरुषक जीवनक बाइटा नहि छी, सामाजिक बाइ सदा छी। ओ छी जे विवाहक पछाइत जँ कोना पुरुष कोना औरतकँ कुदृष्टिसँ देखत वा कोना औरत पर-पुरुषक संग दुव्यवहार करत ते ओ दुनू समाजक बीच अन्यायी रहत।"
सुरेन्द्रक बात सुनि नाथानमक्षक मन बौला लगलैन। मुदा बौलायनकँ शान्त करैत, विवाहक शासन दिस मोड़ैत बजला-
"चाची, अपन जे अखन तकक जीवन छल मात्र अपन हाथ-पैरक बल जे जीबै छलौं, तेँइ रकि-रजनक पाछू नमि गेलौं, आ जना

माता-पिताक संग बेटा-पुतहुक व्यवहार देखै छी, तखन रोकि-टोकन नहि होइत?"

जहिना अदम साहस कऽ किया काना काजम कुदैत तहिना असीम विसवासक संग सुरेखा बजली-

"बाउ, जहिना सभ बेटा-बेटी माञ्ञा-बापक सन्तान छी तहिना माञ्ञा-बाप सबहक माए-बाप छथिए। मुदा जिनगीक जे धार बहैत तञ्ञम अनका धार प्रवाहित भऽ रहल अछि। तँए सगर जकाँ अनन्त किए समुद्र उपछै पाछू लागब, तञ्ञसँ नीक ने अपन जीवनक समुद्रकेँ उपछब हएत।"

सुरेखाक विचार सुनि राधारमणक विचार जना आगा स्तब्ध पानिसँ धुआ गेलैन। धुआञ्ञत बजला-

"चाची, दुनू परानी हिम्मतलालपर कते विसवास करै छी?"

सुरेखा बजली- "जहिना साङ्ञअना अपन बुझि हम कहलिऐ, तहिना ने ओहो करता। गैबीच अवस्था अछि जे परिवारक अनुकूल करता कि नहि, मुदा ञ्ञी निर्देष करैत जीवनक व्यवहारिक पढ़ाइन। स दुनू परानी हिम्मतलालमे छञ्ञ। अवस्था तँ हएता अछि, मुदा ञ्ञीहा तँ अछिए जे सभ माता-पिता बेट-पुतहुक आगाँयन जीबै छैथ सहा बाट नहियेँ अछि, खेलाञ्ञत-धुपाञ्ञत मनधक अनुभवध सहा करैत छैथ।"

राधारमण बजला-

"हिम्मत, बहुत समय भऽ गेल, अहिना आबा-जाही हाञ्ञत रहत तँ जीवनक अनका गुठी अपन-आय सुलझैत जाएत।"

अपन मनक बथा ब्यक्त करैत हिम्मतलाल बाजल-

"भाय साहेब, की कहब! कतादिन पत्नीक अनुचित काज देखि मन तामस जरैत रहैए मुदा माइयक मुँहसँ पत्नीक प्रशंसा सुनि अपन तामसकेँ मरबए पड़ैए। मरबो केना ने करब, ई माए परिवारक श्रेष्ठ छइक तात सरपन समान नजैर नखिहैथ से तँ अपन एकरेड्डु भऽ जाइ छैथ, तखन हमर बात के सुनत आ केकरा कहबै।"

हिम्मतलालक विचार सुनि राधारमणक मनमे भेलैन जे भरिसक हिम्मतलाल पुरुष-महिलाक विचारक समन्वयमे फँसिया रहल अछि तेँए किए ने उहन भायसँ नीक सुन-तानमे ब्यक्त करैल जाए। विहुँसि कऽ राधारमण बजला-

"हिम्मत, एहना तँ सम्भव अछिए जे चाचीकेँ तोहर पत्नी अपन माए जकाँ सेवा करैत होनि, जइसँ तोहर विचारक काज पछुआ जाइत हुअए, जकर तामस उठैत हुअए?"

एक तँ उहूना हिम्मतलाल राधारमणकेँ अपन उहन ई0 भाय बूझै छैन जे पिता सदृश होइ छैथ, मानितो छैन, तैपर बालि जकाँ (नाबालिक बालि जकाँ) अपन सिद्धान्तक संग अपन दिनचर्याक समिश्रण करैत बाजल होथि जइसँ निन्दन जकाँ सहज भइए गेल छल, मुदा कचहनिया होना तँ लगल छइ, तेँए अपन तामसकेँ एलायैथी दनाइ जकाँ देबैत, जिनगीक समझौता करैत हिम्मतलाल बाजल-

"भाय साहेब, काना कि आइये भेल हन आकि अदौसँ होइत आबि रहल अछि जे परिवारमे कनी-मनी खिच्चम-खीच होइत अछि। उ तँ महिनाक इजानिया-अह्लनिया पखक दुआर होइए, मुदा हन सरस एक्काठाम बैस खवा-पीबा करै छला आ हना-गव तँ

करैत आबि रहल छथि। परिवार छी, कुम्हारक आबा जकाँ माटिक दसटा बर्ख एकठाम अछि, कनी-मनी ठनमनब करत। मुदा एकोटा फूटत नहि से अन्दा-अन्द धरि कुम्हार करैत अछि।"

हिम्मतलालक बात सुनि राधारमण सनम-सनम चुप रहब नीक बुझलनि। बिचारकेँ आगू बढ़बैत राधारमण बजला-

"हिम्मत, परिवारक बीच लोक तेना सरल रहैत, मात्र काजसँ सरल रहैत, ओ सुख-दुखक महात्म्यकेँ तँ जनैत मुदा सुख-दुखक उपयोगक तँ अपन महात्म्य छइहे। ..हिम्मत, अहिना सभ किया एकठाम बैस गप-सप्प करैत परिवारकेँ आगू मुहेँ बढ़बैत चलब। अखन समया बेसी भऽ गेल, जइसँ परिवारक काजो सभ एकाएकी बढ़ब करत।"

सुरेन्द्राक बिचार राधारमणक मनकेँ तेना लीढ़ी-बीढ़ी कऽ देलकनि जे अपन आगम बसहान देखए लगला। मात्र पत्नीए अपन सासु आ सासुक परिवार। ओइ परिवारकेँ ठाढ़ करैमे अपनो योगदान अछि। सुवासिनी तँ सहजे ओही परिवारक छथि, तँए किए ने दुनू परानी ओकरा समीक्षा कइए ली। हिम्मतलालक परिवारकेँ अतियाइत सुवासिनी घूमली कि राधारमण टोकैत बजला-

"कने सूनू। पहिने मसगर चाह पिआउ, पछाइत अपन परिवारक सहो बिचार करब अछि। एकठाम तँ दुइए गोरे छी, तँए अपन दुनू गोरे ने एकठाम बैस परिवारक आगू-पाछूक बिचार करब।"

जहिना राजाक मंत्री सदिकाल राजाकेँ अपना अनुकूल रखैत चाहै छथि तहिना सुवासिनी बजली- "अपना मनमे उठैत रहै छल जे जखन नैहर बिसरि गेलौं तखन परिवारेजन काज छथि से कनी

ठकिया ली।"

बाप बनबए सुवासिनी एनसाधन भेली कि विक्रम सुचिता राधारमण लग पहुँचला। सुचिताकेँ देखि राधारमण मन-मन विचार करए लगला जे अखन जेहेन नूआँ बटीक सङ्ग कऽ रहल छथि आ मनमे आराधना सङ्ग करै छथि जे अपनासँ बीस पतिव्रता आ बीस गुणा-धर्म होएत, मुदा की हएत से कना करल जाए? ऐहेन समाजक जे पतिव्रत बनि गेल अछि ऐहेन गेँ वटी जाति यारेबला-हाथक खेलौना बनि गेल अछि। जकरा छै, ओ नाङ्गा-लुच्चकेँ अकास चढ़ा दैत आ जकरा नहि छै ओ साओन् सनसमयाकेँ रावणक खवासिनी सङ्ग बनाय रहल अछि...। एही बीच सुवासिनी चाह लेने पहुँचली।

सुवासिनीक हाथमे चाहक कप देखि राधारमणक मन, जहिना लंकासँ कूदि हनूमान सागर समुद्र टपि गेला तहिना गुजरातक नारकीसँ अपन विद्यार्थी जीवनमे पहुँच गेलैन। मान पएलैन गामिहु बापक विचारधाराक शाखा, जे पढ़बैक क्रमक छल। सिनेमाक रील जकाँ राधारमणक मनमे जिनगीक रील क्रमानुसार चलए लगलैन। जेहेसँ चाह कना सठि गेलैन से बूझब ने कलाह।

एबीच सुवासिनियो चाह पीब सुचिताकेँ आगुमे बैसबैत अपनो गप-सप्प करैक मन बनौलैन। ओना, राधारमणक मनमे अपन पैछला जिनगीक सर खेल देखि-बुझ कहैय रहल छलैन। जिनगीक उत्कृष्ट काज जहिना जिनगीक उत्कृष्ट खेल करल जाइत तहिना आवश्यकसँ आवश्यक काजकेँ सङ्ग लाक खेलौना बना हरकब करैत। अपना मनमे मस्त राधारमणकेँ देखि सुवासिनी बजली-

"एक गेँ गनल-गुथल दु पतानी छथि, बच्चाक कान हिसाब, ऐहेन ओँ

अपन-अपन मन मगन रहब एखन एक-दोसरक बीचक विचार विचारब करा करत?"

सुहासिनीक बात सुनि राधारमण अनचोकमे सुनल बात जकाँ चौंकैत बजला- "मन कनी नीक जकाँ भेल छल। ओना, चाह पीब कलौं मुदा नीक जकाँ एक्को नहि खुजल। आब नीक भऽ गेलौं।"

सुहासिनी-

"की भय-सत्य करैक बात कहने छलौं?"

सुहासिनीक मुँहसँ 'की भय-सत्य करैक बात' सुनि राधारमणक मन सुहासिनीक ओहि घड़ीक सुरती देखए लगलनि जहि घड़ीमे सुहासिनी पितृविहीन भेल छली। की मन भेनि कानि कऽ ओहि खाधिकेँ सुहासिनी भेनि सकै छली? ओहिमे आबि राधारमणक विचार ठमकलनि। विचारमे माए अबैत राधारमण बजला-

"कनी माताजीकेँ ध्यान लगा कुशल-क्षेम पुछियौन ने। तेहेन हमर नाम नहि कहबैन। ओ पुछैथ ने कहबैन जे ओ एखन दोसर काजमे लागल छैथ। ओ जेहि कहबैन जे ओ नहि छैथ आ तेहि बीचमे ओ उकासी-तुकासी होइत ने ओ पुछब करती।"

राधारमणक बात सुहासिनी बुझि गेली। सहेर करैक विचारसँ ध्यान लगा माएकेँ पुछली-

"माए, हम सुहासिनी बजै छी।"

माए-

"बुच्ची सुहासिनी?"

सुहासिनी-

"माए, कते सन मन किए बजै छँ?"

माज-

"की करबो बुच्ची! देनक ताँग गरुन लागल ज निधवा रलौं। घन रनि नहनिहानिसँ वारुन धनि नौजनिहानि, मूदा समाजा आ वटाक ज छिछा-विछा दखे छी, गच्छसँ वूमि यउेज ज जाव जीव, गाव अरिना यहाउगन यउल दवाच्छग नरुवा।"

उाना, सूनासिनीसँ कम यठल-लिखल माज छथिन, मूदा जिनगीक दौउम जगक समम गँ वनियँ (गलैन ज जिनगीक गीग-मी0 वूमज लगली। ज सूनासिनीम अखन नहि आजल छैन। मूदा नाधानमध सासूक सर वथा-कथा नीक जकाँ वूमि नहल छला गँज वजैसँ यनरुज सहा कनहि छला।

(जानी---)

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डल-चाननी दिल्ली (लघुकथा)



जगदीश प्रसाद मण्डल

चाननी दिल्ली

बच्चा, अहाँ पुछब जे एकटा दुनियाँमे, जहिना आकाश बिनु नायक अछि आ धनगीक नाथ भऽ गेल अछि, तहिना अहाँक कथाक नाओं शासन नहि भेटल जे 'चानकी पिल्ली' कथा लिखै छी? की करब, दुनियाँमे कते समुद्र अछि आ कते सागरमहासागर-, हमहुँ महासमुद्र नहि देखने छी आ अहूँ जनै छी आ अपना गाँ जनैत छी। तहिना देश कते अछि आ देशक जनसंख्या कते अछि, सेहो सभ जनैत छी, मुदा बानक गाछ जकाँ नहि अछि सेहो कना नहि कहल जाएत। जहिना गाछक गिनती, फूलफूलक नुयम अछि-, मानि जे पहचानमे आबि गेल अछि, तकरा गनब न असान भऽ गेल, मुदा जे अनठिया अछि, जकर पहचान नहि भेल छै, तकर गिनती कना होएत? एकर मानि छी नहि बूझब जे धनगीयन सात अनवक लगभग मनुक्ख अछि से गाँ अछि पहचानल, मुदा जकर गिनती नहि भेल अछि वा जकर पहचान नहि बनल छै, से कतेक अछि, से कना बूझब? खाएन जे अछि से अछि, सभ अपन राग-तकदीन जीवन -तकदीन लऽ कऽ जन्म नेने अछि अपना राग बिताएत।

ओना, अपना कते दिनसँ निआनै छलौं जे एकटा कथा लिखब। मुदा कथाक शीर्षक की राखब तहिना तीन मास समय बिति गेल। ने कथाक शीर्षक भेल आ ने कथामे हाथ लगेलौं। संयोग बनल जे हिनसन्नका बाद पीब भेनि दिनक समय गाँ बिता लेलौं मुदा सन्निकाल क बाद ल जे दुध नखन नहीं ओ पिल्ली आबि कऽ पीब ललक। साँझमे जखन बादक तृष्णा जागल आ बाद बनबैक विचार भेल आ कयसँ लऽ कऽ कतली तक धोइ कऽ आनि चूल्हि लग राखि, बाद

वनव७ वेसलौं आ दुधयन नजेन दलिउ आकि दखलिउ ज दुध अछि७ नहि। दुध एल की, हियास७ लगलौं। घनसुहवी विला॰॰ गँ ७काटा अछि नहि ज यीन ह७ग, गखन गँ एल ज विन् यासल यिल्ली जहाँगहाँ वेआ॰॰७-, द७ह यीन ह७ग। गमग कनेग मन - मानि (गल जयिल्ली७ दुध यीलक अछि। मूदा ककना दाख लगवेसँ यहिन उाकन ॰॰गिहासा न दखव, मान येछला चनिग्र।
कृग्धा गँ मनूक्षक उाहन संगी छी ज अदोसँ संगसंग आवि नहल - अछि, गेOाम ७ग नमहन ॰॰गिहासम कना उाकना आउय कनव ज द७ह चाना कs दुध यीव ललक अछि। चानियाक गँ अनका किस्म अछि। ७हन गँ जगहजगहक वृग्धि छी। ज जगह जहन अछि - गेOाम चानिक नुय सहा न गहन नहा। मानि लिअ, ककना गाछक आम कि लगाम चाना कs गा३व, ग॰॰ल सिनमाना आकि सीनकड्डा ऊजानक खगना कि७ ह७ग। सीनकड्डा आकि सिनमाना ऊजानक खगना गँ उा॰॰Oाम हा॰॰७ जेOाम घनक दनालकँ काटि लाकयेसा वनेल जा॰॰७, ज॰॰ दs कs येसि लाक, लाक न॰॰ नहि, चाना लाक एs जा॰॰७। उाना, लाक लाका छी आ चाना गँ छीह।
दखिग छी ज मूँहदूव्वन नीकनीक निद्यार्थीकँ मान वद्याकँ अन्धिम - यनीउाक काँयीक यन्ना निकालि मूँहगनहाक काँयीम जाउ उाकन कलहा अंक अयनाम घाँसिया कs सर कलहा यान क॰॰य॰ द॰॰७। ७कन मान ॰॰ी न॰॰ वूसव ज हम अनकन क७ल सम्यगिक लूटक वाग कहे छी। लाका गँ लाक छी, किया लाकवा कने७ आ किया हुंकवा गँ कनिग अछि, किया अयन अजेलकँ अंजलि द७ कs, मान जानियाँ कs आ अनजानम सहा, न॰॰ हुंको सहा वाग नहियँ

अछि, सेहो तँ अछिए। खाएत ई अछि, अपन ई सन्निकालक बालक दुख ई अनुआ क्रोधा पीलक तेँ सम्भ्रम करैत छी।

क्रोधा ठाढ़ पालतुआ आ बिनु पालतुआ मात अनुआ, चौक-चौबाहा पथक क्रोधा, छीहे ई त गाएमहींस जकाँ पाश मानल - जाइए आ त गदहनकँ जनीसँ बान्हि पाश। सेहो बनैल जाइए।

महींससँ-तेँ हिसाब सँ तँ क्रोधा गाएनीक अछिए ई गदहनम बिनु जनी लगौनहि एत तँ स्नीकानित अछि किन ई जकान नून-तीमन खाइ छथि तकन सनियत जनुन दइ छथि। तँए अपन सीमाकँ आँकि पहनुदान नजक सेहो छीहो। ठाना, करब ई गाए-महींस अमृत पैदा करैए स त नीक हएत। स हब कएल, अहूँ बूझै छी आ अपना बूझै छी ई क्रोधाक कारबबारब दूनु अधला - हम पनबौी कनी ना नइ कनी। दुनियाँक अगिनिका -छी। अहाँ त हुमि अछि, जकना हात हुमि करैत छथि। ठकना तँ अपन दशादानुम नशा बूझै छथि मुदा ठा-दिशा छइहे। अहाँ ताठी-, मान हातहुमि, ऊँ करैत ई नशा ताठीदानुम नहि-, अहाँक निबानम अछि। तखन अहींकँ की तामस नइ उठत? अहाँक निबान न नीकअधलाक निबान करैए। ऊँ घातक अछि तँए घात हइए-, तँए कि ठाढ़ नम्फ दुनियाँम नइ अछि, बहुता अछि, ई ध्वाक्षाघात करैए। दासन बात इहीहो ई जकना अहाँ अधला बूझि नहलिथ हन तकना नीका बूझनिहान तँ अछिए, तँए नीक बूझि नीकक सतन करैए। खाएत तइ सरसँ अपना कान मतलब अछि, मतलब अछि अपन सौंसूका बालक दुखसँ, ई क्रोधा पीलक। ठाना, अखना तक धूकधूकी अछिए ई जखन अपना आँखिय न क्रोध आकि बिलाइयकँ

𑒠𑒴𑒡 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒾𑓀, 𑒞𑒐𑒢 𑒞𑒿 𑒖𑒰𑒢𑒱𑒏𑓄 𑒠𑒳𑒐 𑒪𑒑𑒰𑒋𑒥 𑒦𑒹𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒪𑒑𑒪 𑒧𑒢 𑒄𑒯𑒰 𑒏𑒯𑒋 𑒄 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒃𑒏 𑒥𑒠𑒢𑒰𑒧𑒲 𑒞𑒿 𑒢𑒃 𑒮𑒳𑒢𑒻 𑒕𑒲 𑒄 𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒒𑒩𑒧 𑒞𑒩𑒪𑒰𑒯𑒰 𑒧𑒰𑒕 𑒏𑒱 𑒠𑒴𑒡 𑒂𑒏𑒱 𑒧𑒱𑒚𑒰𑒃𑒨 𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪। 𑒮 𑒥𑒠𑒢𑒰𑒧𑒲 𑒞𑒿 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒏 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒃। 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒨 𑒦𑒹𑒪𑒿 𑒢𑒃 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒾𑓀, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒧𑒳𑒯𑒹𑒿 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒞 𑒕𑒲, '𑒥𑒰𑒢𑒥𑒰 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰' 𑒂𑒏𑒱 '𑒥𑒰𑒢𑒩𑒲 𑒣𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲'। 𑒢𑒰𑒧𑒰𑒏 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒑𑒳𑒢𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒡𑒰𑒧 𑒮𑒯𑒰 𑒕𑒃𑒯। 𑒍𑒿 𑒮 𑒢𑒃 - 𑒕 𑒞𑒿'𑒢𑒰𑒧' 𑒏𑒢𑒰 '𑒂𑒞𑓂𑒧𑒰𑒢𑒰𑒧' 𑒕𑒟 𑒂 '𑒂𑒞𑓂𑒧𑒰𑒢𑒰𑒧' 𑒏𑒢𑒰 𑒢𑒰𑒧 𑒥𑒢𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟।

𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮 𑒥𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒪 𑒧𑒢 𑒔𑒙𑒣𑒙𑒰𑒃 𑒕𑒪, 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒞𑒯𑒳𑒢 𑒒𑒢𑒰 𑒒𑒢𑒱 𑒪𑒪𑒏 𑒄 𑒥𑒰𑒯 𑒥𑒢𑒰𑒋𑒥 𑒥𑒱𑒮𑒻𑒢 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒏𑒼𑒢 𑒥𑒋𑒏𑒰 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪, 𑒥𑒰𑒯𑒏 𑒠𑒴𑒡 𑒍𑒿 𑒣𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒏𑒱 𑒣𑒱𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒣𑒲𑒥𑒱𑒨 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒿 𑒣𑒲𑒥 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒧 𑒠𑒴𑒡 𑒢𑒃 𑒩𑒯𑒢 𑒑𑓂𑒩𑒲𑒢 𑒥𑒰𑒯 𑒥𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒣𑒲𑒥 𑒪𑒥, 𑒞𑒃𑒪 𑒋𑒑𑒼 𑒧𑒕𑒰𑒨𑒡𑓂𑒫𑒲𑒧 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒰𑒋𑒥-, 𑒏𑒞𑒾𑒮𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒦𑒹𑒪। 𑒅𑒢𑒰, 𑒥𑒰𑒯𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒥𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩, 𑒧𑒢𑒧 𑒅𑒚𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒪𑒑𑒪 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒠𑒰𑒥𑒧 𑒞𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒧𑒢𑒧 𑒅𑒚𑒪 𑒄 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒂 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒂𑒃𑒨 𑒢𑒯𑒱, 𑒁𑒠𑒾𑒮𑒿 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒿 𑒮 𑒢𑒃 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒳𑒏𑒳𑒩𑒥𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒏𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒩𑒥 𑒄 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒩𑒝 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒐𑒑𑒞𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒱𑒋 𑒦𑒹𑒪, 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒞𑒿 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒮𑒩 𑒞𑒢𑒯𑒿 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒥𑒰𑒢𑒰 𑒂 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒢𑒰𑒬 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱𑒋।

𑒅𑒚𑒰𑒧 𑒃𑒲 𑒢𑒃 𑒥𑒴𑒮𑒥 𑒄 𑒁𑒏𑒥𑒩 𑒠𑒩𑒥𑒰𑒩𑒧 𑒄 𑒥𑒲𑒩𑒥𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒞𑒃 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒧 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒅𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒯𑒥𑒏 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒥𑒮𑓂𑒞𑒳𑒑𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒦𑒰𑒫𑒑𑒞 𑒢𑒯𑒱। 𑒮𑒥 𑒖𑒢𑒻 𑒕𑒲 𑒄 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒫𑒰 𑒥𑒮𑓂𑒞𑒳𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒖𑒐𑒢 𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒋

तखन शब्दक जन्म होइत। अपना देशमे कुकुरबालिक नुआ सङ्ग एक ठामक गतिविधि अदौसँ अछित-, तँए कुकुरबालि शब्दक सृजन भेल। पहिने लोकक बच्चा बीतल, मुदा पहिनेपन सुखल जानब गाड़ि गुजर करैत छलैन, ई बीतल सभ सम्मान दुनियाँक देलैन। असमंजसमे पड़ल अपन देवज्ञाक बुद्धि लग बैसल नहि। देशमे ओही नहि कृषक ई देवज्ञाक बुद्धिक मात्र मनदेनमा बुद्धि भेल आ आँगनक बुद्धि मौगियाही भेल। अपना मन भेलँ अपन बूझि कs मानि लिअ, ओही अहाँक निवान छी, अहाँ ओहिना कहि सकै छी ई अँगनाक बुद्धिमे चाननूकवा विश्वास सङ्ग करैत, मुदा देवज्ञाक बुद्धि तँ स नहि करबैत। देसदुआरी देवज्ञा होइत। काना नीक लागय विश्वास चौघाना घनसँ घनल अँगनाक बुद्धि लग असगर बैस मनमाकि वना खाइव स, आ देस ओझाक बीच वनाकs खाइव गहिम अन्दन भेलय जाइत। स होइत लानलोकम, मर्त्यलोकम एक विश्वास गुरु नुय म वना कs खलायन, ई नहि देखलक, एकना तँ वर्जक आधान वनियँ जाइत। खाइन ई होइत, हनि अनन्द हनि कथा अनन्ता अछित।

गही बीच कुसुमलाल यहुँव गेल। अविरा डा धकमकाइल, तँए किछु न वाजल। डाना, कुसुमलाल जखन भेटैत तखन असयालक स्मारु जकाँ 'गाड़ लगै छी' स कहिरा अछि, मुदा स अखन डाकना मूहसँ नहि निकलल। नहि निकलवा उचित अछि। वहू, अहीं कहू ई जिनका सुगिडिO लान-, मान निवानक नुयम मातायिताकँ प्रणाम - करै छिऔन, जँ डा सवानीक चनिचकिया गाडीक चक्का तनम यति जाथि, तखन जँ डा सामन यडरा ना यडरी, तँ यहिन हनका चक्का

तनसँ निकालब आकि पहिने छवि प्रणाम करब? एहन असमंजसमे कुसुमलाल पड़ि गेल। प्रणामक आशीर्वाद तँ मनक अनुकूल रहैत, जहन मनक असीमताक तँ जनाऽऽन महकब करत। कुसुमलालक मनमे रहल जे रनिसक मूलसन रायकेँ बाबू बनबैसँ पहिने बाबूक नस्भू बाबूपणीदुध ऽऽत्यादि-विन्नी- पर ध्यान नऽऽ गेलैन आ जखन बुझि लग बनबऽ बैसला अछि तखन आगूमे नऽऽ देखि गुम्म छैथ। तँए कुसुमलाल प्रणाम करब छोड़ि पुछलक-

"राय, जँ बाबूविन्नी नऽऽ हुअए तँ कहु-, अखन 0ार छी दौड़ कऽ दोकानसँ लगल नन अबै छी।"

अथनअथन मनक नाजा कहियो आकि मालिक-, सर छीहे। तँए कुसुमलाल अपना विचार बाजल। कुसुमलालक बात सुनि मनमे रहल जे बिनु देखलबूझल लोक अहिना बजैत तऽऽल मनकेँ माहुन -बनाएब कोनोसँ उचित नऽऽ हएत। अपन सागाएल मनक विचार -ब्यक्त कनैत बजलौं

"कुसुमलाल, बाबूविन्नी सब अछिए मुदा दुध किछु पीब ललक। -जँ हनाएल नहैत तँ गिलासो उंघनाएल नहैत आ दुधक सिनखान सहा नहैत।"

काबा घनसुरुवी बिलाऽऽ किए न अछि मुदा उकना तँ चान ना चाननी नऽऽ कहि सकै छिऔ। मुदा कुफाकेँ तँ स बात नहि अछि। तहुमे पिल्ला तँ अथन चालिमनी -मर्यादा कनी-ढालिसँ अपन मान- नखनौं अछि मुदा पिल्लीकेँ सर'चाननी पिल्ली' कहैत छै।

दार्शनिक जकाँ कुसुमलाल बाजल-

"राय, अहाँकेँ कि नऽऽ बूझल अछि जे 'दानदान पन लिखा है -

खान वालां का नाम'। ऊकना कयानम दुध लिखल छलै स यीलक गह्ल अनन किछ मन मह्रुछन छी। रुमहुँ आविय गेलौं, सामाम दुनु राँ सामी दु गिलास यानि कगलीम नायिकऽ दियौ आ कनी असामी वाययगी सङ्ग दऽ दियौ, अंगनजिया वारु वनि जाएत।"

कुसुमलाल मुँहक 'अंगनजिया वारु' सुनि जिज्ञासा रुल ज अंगनजिया वारुक मान की रुल? शंका ऊ दुआन रुल ज जह्ह ह्ह्गेस्टेड वस्र), स्काटलैंड ह्ह्ग्लेंड मिला ग्रेट ब्रिटेनम वारुक (उयज नह्ह अछि, गह्ह देशक लाक सरसँ वसी वारु यीवैछ, स अनै कगछसँ अछि। वजलौं-

"की अंगनजिया वारु करुलरुक, कुसुमलाल?"

गिनाहि मौगी जकाँ, जकना गिनयन वनी यकैछ गहिना कुसुमलाल वाजल-

"राय, अंगनज सव जखन वारु वगानयन रुमला कऽ छीनलक, गखन अयना ऊगाम ज लऽ गेल स गँ लह्ह्य गेल, ज अयना ऊगामक मान अयना देशक लाक ज वारु नह्ह यीवै छला, गिनका सरकँ लारालार-ा वारुक आदेश लगा अयन वाजान वढा ललका।"

कुसुमलालक वारुक गागिहक विश्लेषण सुनि अयना मन सकयका - गेल ज कुसुमलाल ह्ह्गिहासक वाग वाजि नरुल अछि, गँछ ऊकना दासन दिशाम माउव, मान प्रश्नक माध्यमसँ निवानक नाम्हा माउल जाह्ह्छ, उचिग नहि, गँछ सरु देग वजलौं-

"आव की कनी, कुसुम?"

कुसुमलालकँ अयना निवानयन जना रुमास जगलै गहिना वाजल-

"राय, असाम ज गेल नही स मान अछि कि नहि।"

अपन गाछबिरीछसँ बेसी सिनेह अछि-, गँओ असामक बँसबारी आ नारियलसुपारीक बात देखि पाछू नहि गेलौं-, चाहक बागपर धियान न गेल। गँओ अपन कमजोरीकेँ नुकबैत बजलौंकुसुम" -, एक गोँ उमरा भेल आ शासन पनिजायम गहन खंजखोहनि सए अछि - जे ठाकुर सम्हारै पाछू अपन साहाअना शक्ति खाम भऽ जाइए। पाछी बाबाकेँ जहिना मिथिलाक विआह पद्धति आधा शक्ति खींच लेलकैन, मुदा हतिआर कएल नहियेँ भेलैन, तहिना अपन भऽ गेल छी।"

कुसुमलाल बाजल-

"अपना ठामक लोक बड़ धनिया छैथ से मानै छी की नहि। देखै छी जे असामक परखोक सए बागसाउम पानक पत्ता गाछ - लगू छैथ आ गाछसँ खसल सुपारीक खोंइचा साहि पान सन खा "कऽ पानक नस लगू छैथ की नहि।

कुसुमलालक विचार सुनि मन मधुआ गेल। बजलौं-

"कुसुम, अपना ठामक की धनिया कहलहक?"

हँसैत कुसुमलाल बाजल-

"हाय, अहाँ बौल करै छी। कहबी छै जे 'साँझक नाम सब जानै मुदा हडुहडु करै-', तहिना करै छी। हाउ अपना पहुक निमनजना करू। बाद आ बादक पहुम अधिन समय लगा देब से उचित नहि, एकटा विचार करए आएल छी।"

जिज्ञासा भेल जे बाद बनबैकेँ कुसुमलाल पहु कहलक। बजलौं-

"की पहु, कुसुम?"

कुसुमलालक मन जेना विचारसँ भरल हाउ, तहिना बाजल-

"राय साहेब, अहाँ तँ अपन जनै छथि, अनेर हमरा बानर किए बनबै छी। हनूमान जकाँ अपन शक्ति अहाँ बिसरि गेल छी तँए अंगद जकाँ मोन पाड़ि दैत छी।"

अपना मनमे तृप्ति नहि भेल, बजलौं-

"की यज्ञ कएलहुँक, कुसुम?"

जहिना नहला पछाति धोअल अंगक वस्त्रकेँ धोबि ओहिमे समाओल पानिकेँ निचोड़ि सुखाओल जाइए तहिना कुसुमलाल विचारकेँ निचोड़िकऽ बाजलराय साहेब" -, दिल्लीदिल्लीक गाँव छोड़ू। बाट - बनबए बैसल छी जहिना बाट बना दुनू गाँव एकठाम बैस पीब लिअ। जखन बाट पीब लब तखन चाननी दिल्ली मनसँ हटा जाएत आ आबि जाएत जे दुनियाँमे जते नंगक यज्ञ अछि ओहिमे 'स्नान यज्ञ' सभसँ श्रेष्ठ अछि।"

कुसुमलालक विचार सुनि मनमे हरियर क्रान्ति जकाँ जागि गेल। बजलौं-

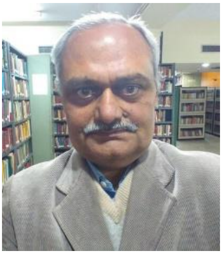
"स्नान याग तँ अनन्द अछि।"

कुसुमलाल बाजल-

"राय साहेब, अनेर कान ममलमे पड़ै छी, गामयागकेँ ज-ानि लब गहीसँ सब निपैट जाएत।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.नवीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)-धारावाहिक



नवीन्द्र नारायण मिश्र

बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

खण्ड ११-१३

बदलि गेल अछि सभकिछु

11

भोरुकवा उगि गेल छल। ओसारापर बैसल-बैसल हमसभ औंघा गेल छलहुँ। बाहर सड़कपर प्रातःभ्रमण करऽबला लोकसभक आवागमन प्रारंभ भऽ गेल छल। नानाजीक निन्न सेहो प्रायः पूरा भऽ गेल छलनि। ओ करोट बदललथि। कनीमनी आँखि खोललथि। आँखि खोलितहि हमरासभकेँ ओसारापर बैसल देखलथि। ओ बाबू ओछाओनपर सँ उठि जाइत छथि। ओसारापर अबैत छथि आ चिचिआ उठैत छथि-
"संदीप! संदीप!
कोनो जबाव नहि अबैत छैक। फेर ओ हमरासभक लगीच अबैत छथि। हमसभ किछु बूझि नहि पाबि रहल छी। हमरासभकेँ एना भोरक ओसारापर बैसल देखि ओ चकित छलाह। कनी काल तँ ओ बूझि नहि सकलाह। किछु सोचलाह। फेर हमर बाँहकेँ जोरसँ हिला देलाह। हम हड़बड़ा कऽ उठैत छी।
"तूँ एना, एहिठाम?"
हम किछु बाजि नहि पाबि रहल छी। आवाज सुनि शक्तिनाथो उठि जाइत अछि। हमसभ किछु बजितहुँ,किछु करितहुँ ताहिसँ पहिनहि नानाजी जोरसँ चिकरलाह-
"चान! चान!"
एकाएक नानाजीकेँ सामनमे देखि घबड़ाहटिमे शक्तिनाथ मकानक

सीढ़ीपर खसि पड़ल । हम ओकर पाछू-पाछू छलहुँ । हमरा संतुलन बिगड़ि गेल। हमहू ओतहि धड़ाम दऽ खसलहुँ। दुनूगोटे उलटैत-पलटैत सीढ़ीपर खसैत-पड़ैत नीचाँ पहुँचलहुँ । ऊपरसँ नेताजी हुँसाना कऽ रहल छथि। सीढ़ी लग हुनकर आदमीसभ हमरासभकें पकड़ि लेलक । सौंसे देहमे कतेको ठाम चोट लागल छल । हाथ-पैर ठेहुनसँ खून बहि रहल छल । शक्तिनाथोक कमोबेस सएह हाल रहैक । नेताजीक मुस्टंडसभ ओहुना हालमे हमरासभकें थपड़िअबैत लगीचमे बनल नौकरक आवासमे लए चलि गेल। हमसभ चोटसँ छटपटा रहल छलहुँ । मुदा एकर ओकरासभकें कोनो परवाह नहि रहैक । पनरह मिनटक बाद नेताजी स्वयं ओहिठाम अएलाह। हमरासभकें देखि बिगड़ऽ लगलाह-

"तोरासभकें की लगलह जे नेताजीकें चकमा दऽ देबैक । सारे-सारे बाजह जे तोरासभकें ओहिठाम के आ किएक पठौलक? जँ झूठ बजबह तँ पनिधाम लगबाक हेतु तैयार रहह ।"

नेताजी एतेक बाजल छलाह कि मुस्टंडसभ लाठी भाँजऽ लागल । लगैत छल जेना आब लाठी चलत तँ ताव । हम दुनूगोटे चुप रही । की बजितहुँ?

"बजैत किएक नहि छह?"

हमसभ तैओ चुप..

एतबहिमे नेताजीक फोनक घंटी बाजि उठल ।

"अहाँकें राज्यप्रमुख निवासपर बजौलनि अछि।"

"बात की छैक?"

"𑒮 𑒏𑒲 𑒖𑒰𑒢 𑒑𑒹𑒪𑒱𑒌𑒏?
"𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒞𑒿 𑒁𑓀𑒠𑒰𑒖 𑒯𑒋𑒞?"
"𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒢𑒰𑒨𑒏𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐𑒖𑒲 𑒮 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒰𑒤 𑒏𑒯𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒠𑒥𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒖𑒰𑒥𑒯।"
𑒅𑒯𑒱𑒏𑒰𑒪 𑒢𑒰𑒨𑒏𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐𑒖𑒲𑒏 𑒂𑒣𑓂𑒞𑒮𑒔𑒱𑒫 𑒤𑒼𑒢𑒣𑒩 𑒩𑒯𑒟𑒱।
𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒢𑒫 𑒢𑒰𑒨𑒏𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐𑒖𑒲𑒏 𑒅𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒙𑒏𑒱𑒋𑒮𑒿 𑒐𑒱𑒯𑒱𑒂𑒮𑒦 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒞 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒂𑒑𑒴-𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒞𑒿 𑒕𑒪𑒯𑒹। 𑒢𑒰𑒨𑒏𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐𑒖𑒲𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒮𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒞𑒯𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞𑒧 𑒢𑒰𑒨𑒏𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐𑒖𑒲 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒂𑒑𑒴 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒁𑓀𑒠𑒩 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒯𑒿𑒮𑒲-𑒚𑒯𑒰𑒏 𑒁𑒫𑒰𑒖 𑒮𑒳𑒢𑒰𑒃 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒍 𑒮𑒦 𑒒𑓀𑒙𑒰 𑒦𑒩𑒱 𑒏𑒲-𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯? 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪𑒰𑒯 𑒞𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒕𑒪। 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒫𑒰𑒣𑒮 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒂𑒃 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒮𑓂𑒞 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒮𑓀𑒦𑒫𑒞𑓁 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒣𑒮𑒧 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒾𑒠𑒰 𑒣𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒒𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒦𑒩𑒱 𑒕𑒰𑒿𑒏 𑒠𑒰𑒩𑒴 𑒣𑒲𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒔𑒻𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒴𑒞𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒯।
𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧 𑒂 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒧𑒳𑒩𑓀𑒞𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒥𑓂𑒖𑒰𑒧 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒧𑒰𑒩 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏 𑒯𑒰𑒪𑒞 𑒐𑒩𑒰𑒥 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒥𑒹𑒩-𑒥𑒹𑒩 𑒋𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒌𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒁𑒮𑒩𑒱𑒋 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒏। 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒿 𑒍 𑒮𑒦 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒤𑒼𑒢 𑒏𑒋𑒪𑒏।
"𑒋𑒏𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒯𑒰𑒪𑒞 𑒚𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏। 𑒖𑒯𑒰𑒿-𑒞𑒯𑒰𑒿𑒮𑒿 𑒐𑒴𑒢 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱

रहल छैक। ओ सभ दर्दसँ परेसान अछि।
"तँ की करबाक छैक?"
"एकरासभकेँ अस्पताल लऽ जाएब बहुत जरूरी अछि।"
"तँ लऽ किएक नहि जाइत छीही?"
"भेल जे अहाँसँ पुछि ली।"
"हद्द भऽ गेल। हम अखन जरूरी काजमे लागल छी। जे जेना जरूरी होइ से करू।"
तकर बाद ओ सभ हमरा दुनू गोटेकेँ कारमे बैसाकऽ अस्पताल पहुँचल। अस्पतालक गेटपर पुलिस ठाढ़ छल। कारसँ उतरलाक बाद आपातकालीन विभागमे पहुँचबासँ पहिनहि पुलिस हमरासभक पछोड़ करऽ लागल।
अस्पतालमे मामूली उपचारक बाद साँझ धरि हमरा दुनू गोटेकेँ छुट्टी दऽ देल गेल। मुदा पुलिस पछोड़ करिते रहल। बाट कहा लागल,की भेल ,अहाँसभ नगरी ओहिठाम की कऽ रहल छलहुँ? तरह-तरहक प्रश्नसँ जान बँचाएब मोसकिल भऽ गेल। शक्तिनाथ बहुत कहलकैक,खुसामद कलकैक मुदा पुलिस किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि भेलैक। शक्तिनाथ बुझि गेलैक जे बिना लेन-देन केने सभ जान नहि छोड़त। जबीमे हाथ देलक आ जतेक टाका रहैक से पुलिसकेँ जबीमे चुपचाप राखि देलक। कातमे जा कऽ ओ सभ टाका गनलक। पुनः ओकरासभक आन-बान बदलि गेलैक। पुलिसक कस हल्लुक भऽ गेलैक।
"ठीक छैक। अहाँसभ अपन घर चलि जाउ। जरूरी होएत तँ हम स्वयं संपर्क कऽ लेब।"

हमरासभक जानमे-जान आएल । निक्का भऽ कऽ अस्पतालसँ विदा भेलहुँ ।

12

अस्पतालसँ छुटलाक बाद हमसभ अपन ग्रामीणक डेरापर पहुँचलहुँ । संयोगसँ ओ अपन नहि छलाह । हुनकर परिवारक लोक सभ नहि रहए । हुनकर भागिन रहथिन । हमसभ अपन परिचय देलिअनि । ओ अपन मामसँ फोनपर गप्प कएलाह। हमरासभकेँ ग्रामीणसँ फोनपर गप्प भेल । एकरबाद निर्देशसँ हमसभ ओतए रातिभरि विश्राम कएलहुँ । घावसभमे दर्द होइत रहैत छल । डाक्टर किछु दवाइसभ देने रहए , से खाइत रहलहुँ । एकरबाद जे निन्न पड़लहुँ से भोरे उठलहुँ ।
रातिभरि हम आ शक्तिनाथ भविष्यक दिशा आ दशापर चिंतन करैत नहि गेलहुँ । न हम सुति सकलहुँ न ओ । जहलसँ लऽ कऽ नानाजीक शक्तिपूजन स्थित घर धरि घटित घटनाक्रम बेर-बेर मानस आबि रहल छल । बिना कोनो गलतीकेँ नानाजी हमरा जहल पठा देलथि । हम ओतए कतेक दिन धरि बंद रहलहुँ । बाबू हमर जमानतक हेतु की नहि कएलाह? खेत बेचि वकीलक फीस देने रहलाह । तारीखपर-तारीख पड़ैत रहल । मुदा जमानत नहि भेल । हम जहलसँ तखन छुटि सकलहुँ जखन नानाजी चाहलथि। कारण,किछु नहि बुझि सकलिऐक। मुदा आब बुझा रहल अछि जे नानाजीकेँ हमरापर शक भऽ गेल रहनि जे हम हुनका बारेमे बहुत

किछु जानि रहल छी,जानि गेल छी। चुनावक समयमे हमरासँ एकटा बात बहराइत तँ ओ बमसँ कम विस्फोटक नहि होइत। नेताजीक राजनीतिक रहस्य हमरा ओझरा सकैत छल। तँ तरह-तरहक बात कए ओ हमरा जहलमे पठौने होएत।

"मुदा आब की कएल जाए?"-हम एहि सवाल बेर-बेर शक्तिनाथसँ पुछलिऐक।

"हौ! हमरा तोरासँ बेसी थोउब बूझल अछि। मुदा एतबा तँ हमहू जनैत छी ,तोहूँ जनैत छह जे देश,समाजक हालत ठीक नहि चलि रहल अछि। नेताजी सन-सन लोक देशक समस्त व्यवस्थाकेँ अपहरण कए लेने अछि। बसक देशमे कानूनमे सभ बनाओल अछि मुदा असलियत की छैक,से के नहि जनैत अछि? जकरा ने रहबाक ठेकान छैक,ने खेबाक उपाय छैक ,से अपन मत की देत? ओकरा तँ केओ अपना हिसाबसँ बहका लेत। जे चाहत से करबा लेत। "

"ई समस्या तँ पुरान अछि। कोना आइ ई सभ भए रहल अछि से बात तँ नहि अछि। समाधान तँ बताबह।"

"समाधान कोना भगवान तँ करथिन नहि। हमरे-तोरा आगू आबए पड़त।"

"हम तँ सभ तरहेँ तैयार छी। मुदा कमहन की करी से मार्गदर्शन चाही।"

"से सभ के करत? जकरा करीका अकील छैक से अपन स्वार्थमे लागि जाइत अछि। के विवादमे पड़ए? "

"देखहक, कोना नव दल बनाएब, ओकरा चलाएब आ एहि पाथ

बनाएब ई ओ चुनाओ लड़ए आ जीतए बहुत कठिन बात छैक । एहिमे साल लागि सकैत अछि । तथापि, बात बनए, नहि बनए तकर कोनो ठेकान नहि अछि । कारण ई सत्ताम बैसल ई लोकसभ अछि, से कोना चुप तँ रहत नहि। ओहो सभ हमरासभक किछु-ने किछु काट निकालबाक प्रयास करत, हमर आदमीसभकेँ तरह-तरहक प्रलोभन दए हटएबाक प्रयास करत, ई नहि ओकर बात सुनैत तकरासभकेँ कोना-ने-कोना तरहँ फँसेबाक प्रयास करत ।"

"तखन?"

"हमरा हिसाबे तँ ई विरोधी दल अछि, ओकर सहयोग ली। तखनहि हमसभ किछु कए सकब ।"

"कहुक मान ई जनक्रान्ति दल(जकती)क संग मिलि जाइ।"

"आओर की? मोकायन मुकनाइ जनुनी छैक । ई संठी जकाँ ठाढ़ रहैत अछि,से टूटि जाइत अछि ।"

"मुदा एकटा बात नीकसँ बुझि लिअ । समग्र विकास दल (एसबीडी) अखन शासनम अछि । ओकरा खिलाफ कओ जल्दी सामने नहि आबए चाहत।"

"देखहुक । तकरासँ तँ बात नहि बनत । जकरा ई करबाक होइक से करओ । हमसभ तँ अपन विचारम स्पष्ट होइ। ओ दुनिआ तेयाक, कायनक लल नहि छैक । ई जीवए से खेलए होग । लड़नाइ तँ छैहे । जखन सभ जान बँचबाम लागल नहि जाएत तँ पनिर्णीत होएत करा?"

"ठीक छैक, हमसभसँ संपर्क करी सकैत न ।"

"आओर की?"

हमसभ दुनूगोटे गप्प करैत रहल छलहुँ की संदीप उठिकऽ पहुँचल । हमनासभकेँ देखि ओ कनी अप्रतिभ जकाँ भेल मुदा जल्दीए सही मुद्रामे आबि गेल ।

"तूँ सब अहिठाम?"

"संयोगसँ काल्हि अहिठाम अएलहुँ । मुदा गौना नहि छथि। हुनका लागनि छथिन । ओहो हमनासभकेँ स्वागत कए रहल छथि। "

"हमहू तँ हुनकसँ भेंट करबाक हेतु आएल छी ।"

हम संदीपकेँ देखैत नहि जाइत छी । ओ शीलनसँ किछु परेसान लागि रहल अछि । किछु बाजि नहि रहल अछि ।

ओ बन-बन याछु दिस ताकि रहल अछि । ओकर मानसिक स्थितिकेँ देखैत भक्तिनाथ बाजि उठैत छथि-

"बात की अछि? तूँ बहुत परेसान बूझा रहल छह? बन-बन याछु दिस किएक देखि रहल छह? "

मुदा संदीप किछु नहि बाजल । बूझि नहि गेल ।"

13

देवनक नाजी बनबाक खिस्सा बहुत रोचक अछि । हुनकर घरक नाम देवन रहनि । देवनक पिता बहुत गरीब रहथि। बहुत मोसकिलसँ जीवन-यापन करथि । गाममे बहुत कम जमीन रहनि । किछु जमीन बँटाइयर सेहो करथि । आमक मासमे हाटपर आम बेचि लथि । कुसिआरक मासमे कुसिआर पेरि कऽ गुड़

𑒥𑒢𑒰𑒥𑒟𑒱,𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒹𑒔𑒟𑒱। 𑒖𑒐𑒢 𑒍𑒯𑒳𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒍 𑒏𑒰𑒪 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒟𑒱। 𑒍𑒞𑒋 𑒦𑒢𑒮𑒱𑒂𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒟𑒱। 𑒠𑒹𑒫𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒋𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢। 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒩𑒰𑒐𑒟𑒱। 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒐𑒢𑒯𑒳 𑒍 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒰𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒠𑒹𑒫𑒢𑒏𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒪𑒢 𑒖𑒰𑒟𑒱। 𑒩𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒋𑒏 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒧 𑒥𑒋𑒮𑒧𑒹 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒞𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒋𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒟𑒱। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒕𑒪𑒢𑒱,𑒖𑒏𑒩 𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒑𑒰𑒧 𑒪𑒑 𑒮𑒢𑒱𑒂 (𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹) 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒩𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒢𑒹𑒢𑒣𑒢𑒮𑒿 𑒍𑒯𑒱𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒂𑒢𑒰𑒑𑒧𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒍𑒯𑒲𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱।

𑒩𑒰𑒖𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒢𑒍 𑒏𑒩𑒻-𑒏𑒩𑒻 𑒋𑒏𑒥𑒹𑒩 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒧𑒰𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒁𑒢𑒔𑒼𑒏𑒧𑒹 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒯। 𑒩𑒰𑒖𑒲 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒥𑒲𑒋𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒖𑒹𑒢𑒰-𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒁𑓀𑒞𑒱𑒧 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒋 𑒑𑒰𑒧 𑒒𑒴𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠𑓂𑒡𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒯𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒍 𑒋𑒏𑒠𑒧 𑒁𑒮𑒑𑒩 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒂𑒥 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒟𑒱 ? 𑒖𑒹𑒢𑒰-𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒲𑒋𑒏 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒬𑒏𑒱𑒨𑒴𑒢𑒧𑒹 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒞𑒋 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒦𑒹𑒙𑒢𑒱 𑒮𑒹 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒬𑒏𑒱𑒨𑒴𑒢𑒧𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒥𑒜𑓃𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒢𑒱।

𑒬𑒏𑒱𑒨𑒴𑒢𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒍 𑒙𑓂𑒨𑒴𑒮𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒟𑒱। 𑒍𑒯𑒲𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒑𑓂𑒩 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒠𑒪 (𑒋𑒮𑒛𑒲𑒛𑒲)𑒏 𑒞𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 𑒮𑒳𑒧𑓀𑒞𑒖𑒲𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲-𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒙𑓂𑒨𑒴𑒮𑒢 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒥𑒟𑒱। 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒑 𑒋𑒯𑒢 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒤𑒪𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒩𑓀𑒞𑒩 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒤𑒪 𑒢𑒲𑒏 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭𑒖𑒲 𑒑𑒠𑒑𑒠 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒩𑒰𑒖𑒲𑒏

𑒧𑒰𑒢𑒠𑒰𑒢 𑒥𑒜𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒁𑒐𑒱𑒪𑒹𑒬𑒖𑒲𑒏 𑒒𑒩𑒧𑒹 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒨-𑒏𑒳𑒮𑒧𑒨 𑒂𑒫𑒰𑒑𑒧𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒢𑒱। 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒥𑒮𑒲 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒱𑒞𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒱। 𑒏𑒯𑒱𑒍 𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒖𑒰𑒩-𑒯𑒰𑒙 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒖𑒰𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒱। 𑒍𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒻𑒏 𑒞𑒿 𑒠𑒹𑒫𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒋 𑒍 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞। 𑒁𑒐𑒱𑒪𑒹𑒬𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒂𑒬𑓀𑒏𑒰 𑒮𑒼𑒔𑒱𑒍 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰𑒏 𑒧𑒹𑒙𑓂𑒩𑒱𑒏𑒏 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒤𑒪 𑒥𑒯𑒩𑒰𑒋𑒪। 𑒍 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲𑒧𑒹 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑓀𑒥𑒩𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒋𑒪𑒏।

𑒁𑒐𑒱𑒪𑒹𑒬𑒖𑒲𑒏 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒥𑒜𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒋𑒏𑒠𑒱𑒢 𑒧𑒾𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒡𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒲𑒢। 𑒞𑒏𑒩𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒮𑒰𑒢 𑒯𑒼𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒢𑒱। 𑒠𑒹𑒫𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒄𑒧𑒰𑒢𑒠𑒰𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒁𑒐𑒱𑒪𑒹𑒬𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒏𑒩𑒟𑒱। 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒒𑒩𑒣𑒩 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰𑒏 𑒙𑓂𑒨𑒴𑒬𑒢 𑒞𑒿 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱।

𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒂 𑒠𑒹𑒫𑒢 𑒮𑒧𑒨-𑒏𑒳𑒮𑒧𑒨 𑒋𑒏-𑒠𑒼𑒮𑒩𑒮𑒿 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒁𑒐𑒱𑒪𑒹𑒬𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒰𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝𑒧𑒹 𑒅𑒢𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒣𑒩 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒍𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒁𑒐𑒱𑒪𑒹𑒬𑒖𑒲𑒏 𑒒𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒞𑒩𑒯-𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒮𑒾𑓀𑒮𑒹 𑒬𑒯𑒩𑒱𑒨𑒼𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒿 𑒏𑒲? 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒮𑒰𑒯𑒮 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒪𑒹𑒞। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒖𑒢𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒏।

𑒋𑒏𑒠𑒱𑒢 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒂 𑒠𑒹𑒫𑒢 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒏𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒡𑒩𑒱 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒮𑒧𑒨𑒣𑒩 𑒒𑒩 𑒫𑒰𑒣𑒮 𑒒𑒴𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒼𑒬 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒱

गेलनि। ओहिनाओ पसरि गेल रहैक। गंगाक प्रवाह आगु-पाछू होइत रहैत छलैक। ओहिना हुनका सभक मोनमे तूफान मचल रहनि। बड़ी कालक बाद अन्हार अएबाक संभावना बनैत देखि ओ सभ उठलाह आ वापस घर दिस विदा भए गेलाह। एकर बाद ई क्रम चलैत रहल। अश्रुजीकेँ समय नहि रहनि,परिवारमे ककरो कोनो मतलब नहि रहनि। महिमा आ देवनकेँ कथुक परवाह नहि रहि गेल रहनि। परिणाम भेल जे एकदिन साँझमे ओ सभ निर्णय कएलथि। ओहि निर्णयकेँ लागू करबाक हेतु दोसर दिन आर्य समाज मंदिर पहुँचलथि आ ओतए अपन किछु मित्रसभक उपस्थितिमे विआहक विधि पूर्ण कए लेलथि। विआह कएलाक बाद हुनकासभकेँ साहस नहि होनि जे घर वापस जाइ। सोझ शक्तिपुरम टीसन चलि गेलथि। ओतए विजयपुरमक रेलगाड़ी लागल रहैक। जेना-तेना टिकटक जोगाड़ कएलथि आ ट्रेनमे बैसि गेलथि।
दोसर दिनसाँझमे विजयपुरम टीसन पहुँचलाह। प्लेटफार्म नंबर एक पर ट्रेनसँ उतरि दूनु गोटे बेंचपर जा कए बैसि गेलथि। संजोग देखियौक जे ओही समयमे अश्रुजी विजयपुरमसँ शक्तिपुरम वापस जएबाक हेतु ओतए पहुँचलाह। ओतए दूनु गोटेकेँ एकक लगीचमे बैसल देखि कनीकाल तँ हुनका विश्वास नहि भेलनि जे ओएह सभ छथि। मुदा लग अएलाक बाद बात फरिछा गेलनि।
"महिमा! महिमा!"-अश्रुजी अवाज देलनि। ई तँ बाबूजी बूझा रहल छथि। महिमा हुनकर अवाज सुनि पाछू दिस घुमलीह। अपन पिताकेँ सामने देखि ओ हएबका गेलीह। देवन सेहो अकचका कए बेंचपरसँ उठलाह। महिमाक माथमे सिन्नुर देखि

अभिजीतकेँ बात बुझबामे देरी नहि लगलनि। कनीकाल तँ बहुत छगुन्तामे रहथि। फेर अपनाकेँ सम्हारलाह।
"जखन शालासकेँ विआह करबाक छलैक तँ हमरा तँ कहितहु? नीकसँ उत्सव मनबितहुँ। लोकसभकेँ बजबितहुँ। गीत-नाद होइत। सूखा बात नहि। ई होइत,ओ होइत। आब सभटा शकियुनम चलैत छै। जाहि आगुक कार्यक्रम मनाएब। मोनक किछुटा अभिलाषा तँ पूर्ण होएत। जाएत स्वागत समारोह आयोजित करल जाएत। एकर बाद शालासकेँ जाए जबाक होएत से जरूरहि।"
सभ किछु अनुकूल देखि दुनूगोटे अभिजीतक संग ओतसँ शकियुनम नायक विदा भऽ गेलाह।

14

अभिजीतक बेटीक विआहक स्वागत समारोह शकियुनममे धूमधामसँ मनाओल गेल। एक सप्ताह धरि विविध कार्यक्रम चलैत रहल। एहि-एहिक नृत्य-संगीतसँ महफिल दिन-राति आनंदमय बनल रहैत छल। जकरा जे मोन होइ से खाउ,जेहन गीत सुनबाक मोन होअए से सुनू। फिल्म देखबाक होअए तँ सेहो देखू। कहि नहि सकैत छी जे अहिठामक वातावरण कतेक आनंदमय रहए। शकियुनमक समस्त गण्यमान्य लोकसभ एहिमे सम्मिलित भेलथि। जय-जय भऽ गेल।
महिमाक संग देबनक विआह ओकर जीवनक एकटा ओवनदस्त

परिवर्तनकारी घटना साबित हएत। अखिलेशजी बहुत दिनसँ एकटा सही उत्तराधिकारीकेँ ताकि रहल छलाह। दिन-राति पार्टीक काज करैत-करैत थाकि गेल रहथि। एखनधरि हुनकर ध्यान बहुत दिनसँ छलनि। आब तँ ओ हुनकर जमाए बनि गेल छलखिन। स्वभावतः जे हुनक आगू कएल जाए। ओना ओ महिमाकेँ एहेन मौका देबए चाहथि। मुदा ओ राजनीतिमे जबाबसँ साफ मना कए देने रहथि। "राजनीतिमे हमरा कोनो रुचि नहि अछि।"-ओ साफ जवाब दए देने रहथि। मुदा आब तँ ओ विकल्प रहि गेल रहथि। तँ बिना कोनो विलंबकेँ आगू बढ़बाक निर्णय कएलनि। एकदिन साँझमे ओ महिमा आ एखनक संग गप्प-सप्प करैत छलाह। माहौल अनुकूल देखि बजलाह-"हम आब राजनीति करैत-करैत थाकि गेल छी। बहुत दिनसँ एकटा सही उत्तराधिकारीकेँ ताकि रहल छलहुँ। संयोगसँ एखन हमरासभकेँ बहुत उपयुक्त बूझा रहल छथि। हम चाहैत रही जे पार्टीक कमान परिवारसँ बाहर नहि जाए। सभहक अभिलाषा हमर पूरा भए जाएत। हमरा जीवैत ककरो साहस नहि छैक जे हमर प्रस्तावक विरोध करत। सरकार हाइकोर्ट हमर आलमीरामे बंद अछि। जँ कोनो अनट करत तँ परिणाम भोगत। ई सभ बात सभ जनैत अछि। तँ हमरा विचारसँ जल्दीए एखनकेँ पार्टीक कार्यकारी अध्यक्ष बनेबाक घोषणा कए देल जाए। ताहन सरकार की विचार?"

एखन स्वीकृतिमे मूड़ी हिला देलनि। तकर बाद अखिलेशजी बिना कोनो विलंबकेँ आगू बढ़ैत गेलाह। एखन पार्टीक कार्यकारी अध्यक्ष बना देल गेलाह। ताब नहि,तकर बाद जनक पदसँ नहैक ताहियन

गोट-गोट कओ दवनक यसिंदक लाकसरकँ वेसा दल गेलनि। अध्यक्षजीक कामना पूर्ण नहि जे दवन निष्कंटक नाज कनथि। यार्टी आ सनकान दूनूम। अध्यक्षजीक उाहिOाम संवंध रुलासँ दवनक राथ यलटी ललकनि। उा दूनकन अकूत संयत्तिक महिमाक संग उत्तनाधिकानी रुओ गेलथि। संगहि यार्टीक कार्यकानी अध्यक्षक यद सहा दहजम रुटि गेलनि।

मुदा सरटा सावलाहा थोडव हाकूर छैक?यार्टीक वहूत वनिष्ठ लाकनिसर कहि नहि कहिआसँ आश लगउान छलाह जे अध्यक्षजी आसन खाली कनताह तँ हमन नंवन आउात। मुदा अचानक दवन कातहूँसँ टयकि गेलाह। एकहि वन कार्यकानी अध्यक्ष सहा वनि गेलाह। सरटा शक्ति दूनकम कष्ठित रुओ गेलनि। वँकिओ लाकसरक हाथम रुकला। अध्यक्षजीक एहि काजक सामना-सामनी तँ कउा विनाध नहि कलक ,मुदा यार्टीम रीतन-रीतन दू गुट वनि गेल। एकगुटम वनिष्ठ लाकसर छलाह जे अयना-आयकँ Oगल महसूस कओ नहल छलाह। दासन दिस दवन आ दूनकन समर्थक छलाह। सही मानम उा सर दवनक काना शुरुविंाक छलाह स वात नहि नहैक। दवनक संग दवाम दूनका सरकँ तात्कालिक रुओदा रुलनि। यार्टी आ सनकानम महत्वपूर्ण यदसर रुटलनि। मुदा थोडव दिनक वाद चूनाउा रुलैक। अध्यक्षजीक प्रयासँ वा जना-तना दूनकन यार्टी चूनाउा जीति तँ गेल मुदा नाजप्रमुखक यद कउा आउान हथिआ ललक। यार्टीक चूनल गेल जन प्रतिनिधिम सँ वहूमत दवनक खिलाफ चलि गेलनि। यनिणाम सामन छल।

चूनाउा जितवाक हतु नताजी काना कर्म छाओन नहि छलाह। हमसर

सदा सुनैत छलाह यात्रा-यात्रा घूमैत रहलहुँ। मुदा साँच संग दोस्ती कतेक काल चलैत? मोका पबितहि ओ हमनासबकेँ ठक मानलाह। आओर ओ रहल,से रहल मुदा हमसभ नेताजीकेँ नीकसँ चिन्हि गेलहुँ। नेताजीकेँ तँ हमनासबपर कहिओ विश्वास नहि छलनि। ओ तँ हमनासबकेँ मात्र इस्तेमाल करैत छलाह। मुदा कतेक दिन एना चलितैक? आखिर हम,शक्तिनाथ आ संदीप एकठाम भए गेलहुँ। एकठाम आबि तँ गेलहुँ मुदा हमनासबक पासमे साधन बहुत सीमित छल। आइ-काल्हिक राजनीति तँ मात्र टाकाक खेल अछि। जँ टाका अछि,लाठी अछि तखनहि सिद्धान्तक बात करू।

15

संदीप अचानक हमना सबक लगीच आबि गेल छल। ओहिसँ पहिने बहुतदिन धरि ओ नेताजीक खासम-खास रहए। आब की भेलैक की नहि ओ ओहिठामसँ जान बँचा कए भागल। आएल तँ रहए गोंसासँ भरल करए मुदा भरि गेलिऐक हमसभ। ओ ताक आवेग लगैत छल जे मोका भेटितहि मानक बात उगलैत गेल। बुझि रहल ओकरा बसमे नहि रहैक। ओ कहए लागल-

"किछु करैत जाउ। लगैत अछि जे माथ फाटि जाएत।"

"की भेलह?"

"की कहू? बाजल नहि जाइत अछि। ई नेताजी बड़ अन्यायी अछि,नीच अछि। सभ तरहें बरबाद कए देलक।"

"ह! भेलैक की से तँ बुझिऐक?"-शक्तिनाथ बाजल।

"काल्हि एक दिनुका बात छैक जे कहि दिअ आ अहाँ खिस्सा बुझि

एबैक। अन्याय करब, निर्दोष लोकक शोषण करब ओकर चालि छैक।"

"मुदा तारा ई दरस्थान अचानक केना भऽ गेलह? सालक-साल तँ ओकर सलाम लागल छलह?"

"से की कहूँ? ए की करी आ केना करी? आ ऊँ कहब करब तँ अहाँसभकेँ विश्वास होएत? कदापि नहि? लोक एतब कहत ए अखन नागाजीक शक्ति कम भऽ गेलनि अछि तँ ई बदला निकालि रहल अछि।"

"देखहक। लोकक काज छइ कहनाइ। ओ तँ कहब करत आ हमसभ सुनबा करब। मुदा ताहिसभसँ सत्य नहि बदलि जेतैक।"

"तखन तूँही कहह जाहिसँ ताहन किछु मदति कऽ सकी आ हमहूसभ किछु शांत होइ।"

संदीपक हालत बहुत गंभीर लागि रहल छल। तथापि,ओ बारंबार बाहर दिस इसारा करए। मानू ओमहर देखिऔक। आखिर हम शक्तिनाथकेँ बाहर जा कऽ देखबाक हेतु कहलिऐक। ओ तुरंत बाहर गेल। सड़कक कातमे एकटा महिला बैसल कानि रहल छलि। संदीप ओहि महिला लग जाकए ठाढ़ भऽ गेल। ओ किछु नहि बजलैक, कानिते जा रहल छलि। आखिर शक्तिनाथे पूछलकैक-

"अहाँ संदीपक संग छिऐक?"

ओ सहमतिमे मूड़ी हिला देलकैक।

"तँ एहिठाम किएक बैसल छी?"

"संदीपक बाट ताकि रहल छी। ओ कहलथि ए हम गोनासँ हंट

कऽ कनीक कालमे वापस हएब, तखन संगे चलब।"

"मुदा ओ तँ हमरासभ लग छथि। हुनका मोन ठीक नहि बुझाइत छैक। अहाँ हमरा संगे चलू।"

ओ महिला शक्तिनाथक बात मानि कऽ हुनका संगे विदा भऽ गेलि। शक्तिनाथ ओहि महिलाक संगे अबैत छथि। ने संदीप ने ओ महिला किछु करबाक स्थितिमे बुझाइत छथि। हम बड़-बड़ प्रयास कएलिऐक जे संदीप किछु कहए जाहिसँ वस्तुस्थितिक सही अनुमान लगा सकी आ समाधानक बाटमे सोचि सकी। मुदा ओ किछु बजब नहि करए। हुनकासभकेँ कतहु कोनो चोट नहि लागल छलैक। देहमे बोखार नहि रहैक। कोनो स्पष्ट शारीरिक परेशानी नहि देखाइक। तखन कष्ट की छैक?

हम आ शक्तिनाथ आपसमे किछु चर्चा करैत छी। सड़कक कातमे बनल दोकानपर जाइत छी। ओतए सिंघाड़ा आ घुघनी टटका बनल छल। हम पर्याप्त मात्रामे सिंघाड़ा आ घुघनी कीनि लैत छी। शक्तिनाथ चाह बनबैत अछि। दुनू गोटेकेँ चाहक संग सिंघाड़ा आ घुघनी दैत छिऐक। हमहूसभ संगे चाह पिबैत छी, सिंघाड़ा, घुघनी खाइत छी। सिंघाड़ा, घुघनी आ चाहक जोगसँ हुनकासभक जेना भक्क टूटलैक। आकृतिपर हरिअरी अएलैक। हम कहलिऐक-

"अहाँसभकेँ अस्पताल लऽ चलैत छी। संभवतः डाक्टरक इलाजसँ बेसी फएदा हएत।"

"नहि, नहि। हमसभ कतहु नहि जाएब। नगीचक गुंडासभ हमरासभक पाछाँ कऽ रहल अछि। जँ हमसभ पकड़लहुँ तँ

गेल घर छी।"

"एकटा काज करू"-शक्तिनाथ बाजल।

"की? कनीक हटि कए एकटा औषधालय छैक। ओतए एकटा डाक्टर रहैत छथि। हुनक बड़ नाम छन्हि।"

"ठीक कहलहु। सएह करू।"

शक्तिनाथ ओहि डाक्टरक ओतए जाइत अछि। हुनका सभटा बात कहैत छनि। डाक्टर पुनः अपन स्कूटरसँ शक्तिनाथक संग विदा भए जाइत छथि।

-नवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अरेर डीह, मातृक: सिम्रिआ ग्राठी, वृत्ति: राज्य सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), रेल मन्त्रालयमे मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष२०११ १.रामसँ साँस धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष२०१८ ४. हुलास (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास)

१२.स्न्नलाक(उयन्यास); प्रकाभन नर्ष:२०२० १३.भंखनाद(उयन्यास) १४.ॐॅ३रु थिक जीनन(संभ्मनध)१ज.ढरुौ दवाल(उयन्यास); प्रकाभन नर्ष:२०२१ १६.या(थय(संभ्मनध) ११.रुम आवि नरुल ठी(उयन्यास) १८.प्रलयक यनाग(उयन्यास); प्रकाभन नर्ष:२०२२ १९.वीगि (गल समय(उयन्यास) २०.प्रगिविम्ब(उयन्यास) २१.वदलि नरुल अछि सरुकिछु(उयन्यास) २२.नाष्ट्र मंदिन(उयन्यास) २३.संयाग(कथा संग्रह) २४.नाचि नरुल छलि नसुधा(उयन्यास) २ज.दीय जनौ नरु७ (उयन्यास)।

अयन मंगाघ editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.१२.संतोष कुमार राय 'बटोही'-मंगनौना (धारावाहिक उपन्यास)-(पहिल खण्ड)



संतोष कुमार राय 'बटोही'

मंगनौना (धारावाहिक उपन्यास)- (पहिल खण्ड)

उपिंदर काका कहलखि , " बाबा बाँस म व्यासजी कँ सोना नहि देखेने छयैह । हुनकर सोना कँ लूटि लकऽ धन दियौय। ओ अहाँक पितृ छलाथि। "
हम कहलियैह जीबैत जी गुँहा रम्भा मुइला पर दुधा रम्भा। अहाँ कहनी ठीक छै। चिरंजीव व्यासजी अपन नाम बनौने रहथि। टाका सँ हुनका नहि छलैह, परञ्च ज्ञान छलैह । ओ ज्ञान कँ ससमय उपयोग नहि कऽ सकलाह।

आइ खुभवु कँ बाजार आबि रहल छथि। हम दरिभंगा सँ गाड़ि लऽ गाम आयल छी। आइ-कालि बन-बाजार म पाक र लेन-देनी होयत छै जे बटी नाला कँ दम फूलऽ लगैत छथि। सुपाथ दूल्हा खोजना म लोक कँ कून-कून घाटक पानि पीबऽ पड़ैत छथि स

महादेव साओ छथि। नीक दूल्हा मान सबहक लेल अलग-अलग होइत छै।

सुन्दर बाबा सुयोग्य दूल्हा खोजला

ओ कम परेशान नहि रहलाह। हुनक तिरिया गल जनि गेलन्हि। खुशबू देखबा-सुनबा मे नीक छथि, बी.ए. ... तिनिजन सँ पास केलीह। एकटा कुशल गृहिणी केर सभ गुण हिनका मे छन्हि। गामक आओर शहरी दुनू परिवेशक ज्ञान छन्हि। गोर छथि। कद-काठी सेहो नीक छन्हि।

खुशबू लेल नीक-सँ-नीक दूल्हा लेल ओ तीनि साल धरि परेशान रहलाह। बेटी लेल माय-बाप कतेक फिकिर करैत छथि से हुनका सँ जानल जाउ । एकटा गंभीर आओर जिम्मेदार पिता छथि सुन्दर बाबा। अपन काया केँ◌ँ बेच केँ बेटी केँ सुन्दर-सँ-सुन्दर दूल्हा करबाक प्रयास करैत छथि माय-बाप।

बाजा आबि गेल। लुक-लुकिया बल्ब सँ छानल छै सभ जगह। नीक सँ सजाओल गेल छै ब्याहक मड़बा। मड़बा मे बहुत हम देलियै। भीत पर खुशबू अपन हाथक पिठार लगौलाहा छाप देलकै। मूली मड़बा सजौने छलैह। मड़बा नीक लागि रहल छलैह। मुन्नी बड़ दिन सँ मड़बा सजबैत अछि। नीक टाका कमा जाइत छथि ना। अजुक कलाकारो मे सीजन मे नीक कमाइ छलाह ना, एतेक हुनरम ब्याहक लगन नहि होइत छै। किछु दिनस बराजगार रहऽ जाइत

छलाह ताहि दुआर ओ दिल्ली चलि गेलाह।

दिल्ली मे अइ कलाकार कँ के पूछै छै ? किया दुनिया नहि छहि दिल्ली मे। किछु दिन होटल लाइन मे काज करै छथि आओर मन नहि लगलाह पर फेर गाम भागि जायत छथि। एक-दू मास घर पर बीता कऽ फेर दिल्ली आओर बंगलोर दिस भागि जायत छथि। ई सालक तीनि-चारि मास बेरोजगार रहैत छथि। कलाकार कँ अंदरक कलाकारी मरि जायत छै।

मखनाही टोल पर भोला राम कँ अंदरक कलाकार अही कारण मरि गेलैक। भोला राम बंजा, हारमोनियम, ढोलक, झाल बगैरह वाद्य यंत्र बजा लैत छलाह। आल्हा-ऊदल कँ नाच मे तबला बजाबैत छलाह दुर्गा पूजा मे ओ। नीक जिनगी जीबै कर कोशिश करैत अछि भोला राम । गाम पर नहि कँ ओ पहिन निठ्ठा चलाबैत छलाह। हमर बड़की दीदी कँ सासुर करमौली कातक बर ओ गेलाह निठ्ठा लऽ।

दहेज लकऽ लोक परेशान छथि। ई कहिया खतम होयत ? दानवी जकाँ ई समाज लेल अभिशाप बनल छै। बेटा वाला सोचैत छथि जे हम बेटा जनमलहुँ बेटी वाला कँ जिनगी कँ तबाह करबाक लेल। आन गाम मे दहेज लेल हिंसा भऽ जायत छै, परञ्च मंगरौना मे ई नहि भेल आइ धरि। हमर ब्याह बिना दहेज कँ भेल अछि 2016 मे। नूधा कँ हुनकर माय जे देलकैह ओ अपना मोन

सँ। कानरिया गाम हॉल्ट दुआन रुमस अछि। जयनगन सँ यहिन येसंजन अञ्ञ हॉस्टल यन नुकैग अछि। रुम अयन चवना रा ञ्ञी कन ब्यारु म ‹गल नही कानरिया वानाग। ञ्ञी नरि वूमल ठल ज वानाग रुन आवS यनग लक अञ्ञ OमI। दूटा वटी आउान ७कटा वटा वाय रुम रलहूँ अछि।

-संतोष कुमान नाय 'वटारी', ग्राम - मंगरौना

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउ।**

३.पद्य खण्ड

३.१.डॉ. जियाउन नरुमान जारुनी - ७कटा नदी ठल/ ७रि नदी म

३.२.डॉ सुमंगला झा- सत्य कहूँ

३.३.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒂𑒞𑓂𑒧𑒫𑒪

३.१.𑒛𑒼. 𑒖𑒱𑒨𑒰𑒅𑒩 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒰𑒤𑒩𑒲 - 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒠𑒲 𑒕𑒪/ 𑒍𑒯𑒱 𑒢𑒠𑒲 𑒧



डॉ. जियाउर रहमान जाफरी

एकटा नदी छल/ ओहि नदी मे

१

एकटा नदी छल

मघ खोजैत आबि गेल
कतहु नदी छल
कतहु कालानी छल
आय बरखा रुसल

𑒮𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒪𑒰𑒑𑒪
𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒕𑒲𑓀𑒙𑒰 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏
𑒪𑒯𑒩𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒩𑒳𑒏𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪
𑒞𑒐𑒢 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒢𑒰 𑒪𑒯𑒩𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪

𑒏𑒰𑒞𑒯𑒳 𑒧𑒰𑒙-𑒧𑒰𑒙 𑒑𑒰𑒕-𑒥𑒱𑒩𑒱𑒕 𑒕𑒪
𑒟𑒰𑒏𑒪 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒩𑒳𑒏𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪
𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒏 𑒕𑒳𑒥𑒻𑒞 𑒚𑓀𑒜𑒰 𑒯𑒫𑒰
𑒮𑒥𑒏 𑒚𑓀𑒜𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪

𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒥 𑒢𑒠𑒲 𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱
𑒥𑒰𑒪𑒳, 𑒟𑒰𑒪 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒡𑒴𑒩𑒰 𑒁𑒕𑒱
𑒈𑒣𑒩 𑒖𑒩𑓂𑒖𑒩 𑒣𑒰𑒐𑒩𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒁𑒕𑒱
𑒣𑒴𑒩𑒰𑒢 𑒔𑒱𑒚𑓂𑒚𑒲 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒪

𑓒

𑒍𑒯𑒱 𑒢𑒠𑒲 𑒧𑒹

𑒍𑒯𑒱 𑒢𑒠𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒞 𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒁𑒕𑒱
𑒯𑒧 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏𑒪𑒾𑓀
𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒯𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒕𑒱𑒛𑓃𑒏𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒱𑒨𑒻𑒏
𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏

हम आ अहाँ नदीक कात मे बैसल छी
ओहि लहरि मे हवा गेल
जखन ठंढा हवा बहैत अछि
हम सब कोना मे नींद आबि जाइत छलहुँ

जाय माछ कुदि जाइत छल
अहाँ कहैत छलहुँ लुक मट
हमना सहा दखि खुशी हल
अहाँ ओहिना गप्प करैत छलहुँ

ऊँ नदी नहि नहैत त' हाइत
अहाँ हमनासँ प्रेम नहि करैत छी
जखन कि हम दूनू किनान नदी
ई रुंट हन बन नहि हाइत ठीक

गाहन प्रेम एकटा नदी अछि
कायल आबि गाबैत अछि
नदीसँ कहिया नहि निदा हाइत अछि
माछ एकना बिना मनि जाइत अछि

-डॉ. जियाउर रहमान जाफरी, सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग, मिर्जा गालिब कॉलेज गया, बिहार 823001
मो. 9934847941,6205254255, zeaurrahmanjafri786 @gmail. Com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.डॉ सुमंगला झा- सच कहूँ



डॉ सुमंगला झा
सच कहूँ

मिथिला विख्याति, मैथिली ज्ञान नय अछि
मातृभाषा छथि स मानसम्मान बढ़ अछि। -

विद्यापति गान म विनविनत वसन्त अछि,
काउा न उपलब्ध अछि। !ओ सौन्दर्यनस

जयदेव कवि कऽ !यदुँ जखन गीतगोविन्द,
मन पड़ गाइ, प्रसिद्ध नविमैथिली क। !
कवीश्वर चंदा झा क मैथिली मं रामायण,
 वृद्धिनाथ झा क'महाभारत' क यानायण।

अनकानक विद्वान अछि राष मैथिली म
गन्धी मा -ग्‍या नुचि घटल जाय गन्ध।

गिनह्ला लियि लगरग लुप्तप्राय रहल जाय,
गहि लियि, अन्य राष, विकसित रहल जाय।

नीगिनगिनी, कीर्तिलता कीर्ति यताका सन,
रटग न विद्यानन्द, कवि विद्यायति सन।

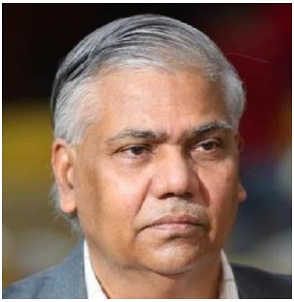
अनुवादित गिनह्ला म !गाकिया कगी रटग
ऋृग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद मैथिली मा।

मिथिलाक प्रगिष्ठा अछि वर्णित, मिथिकथा म
सरा-जनक !स्कानकाष यनियुर्धा,गार्गी सम्भाष मा।

-डॉ सुमंगला मा, MA (Socio & Hindi), PhD

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

𑓓.𑓓.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒂𑒞𑓂𑒧𑒥𑒪



𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩, 𑒩𑒱𑒙𑒰𑒨𑒩𑓂𑒛 𑒔𑒲𑒤 𑒖𑒢𑒩𑒪 𑒧𑒻𑒢𑒹𑒖𑒩 (𑒄), 𑒥𑒲.𑒋𑒮.𑒋𑒢.𑒋𑒪.(𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨), 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲,𑒑𑒰𑒧- 𑒁𑒢𑓂𑒡𑒩 𑒚𑒰𑒜𑓃, 𑒣𑒼. 𑒁𑒢𑓂𑒡𑒩 𑒚𑒰𑒜𑓃, 𑒧𑒡𑒴𑒥𑒢𑒲

𑒂𑒞𑓂𑒧𑒥𑒪

𑒖𑒰 𑒯𑒱 𑒒𑒩 𑒏 𑒕𑒥𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒐𑒰 𑒯𑒼,
𑒞𑒰 𑒑𑓁 𑒐𑒮𑒪 𑒏𑒢𑒰𑒞, 𑒥𑒙𑒰 𑒧𑒰।

सा ढन -वा ढना , काक का ल,
ठा टा वसा ग कनौ की व्हा ल?

ङमल्न टढ, ङमल्न सा म,
ङ0। न यवौ अछि अयना वा म।

ङ नहि अयन यङन यन 0। ढ,
का ना चढग ,जि नगी क यला ७?

ककन रनौ यट वङन सँ?
नि न लs कs क नल्ग वौन सँ?सँ

वा वा वsल यूनग मना नथ?
कि ङक ङा ग। , ना खव नि ङ समनथ?

वा ल -रना स, अा' आश्ना सन,
यथा र्थक, न अछि ङा या सढा।

यॆ◌॑◌॑◌ंच- ङधा न ,वृद्धि ङा वsलक,
वा ट न ङ्गी , जि नगी क, अछि चsलका।

टि कल दा सनक मदगि क आशा यन ङी वन,
ङा रवन अयन ? ङकन या ङाल ङनसी मन ।

वका न ,अनकन मह्ल -अटा नी ,
सर सँ वढि आ अयन ७कवा नी ।

सा अदगन नहि अछि छयन रा ग,
ज अयन नहि ,आ न जकन रा ग।

यनूबा नथ अयन अछि , असली धन,
ङा ङी ग , ङी गल नि ज वल सँ नद्य।

कगक दून धनि घि वि वलअङाॅ?
ॐजि न जा हि ग। ौ क अछि वगदल,
ङाहि ना ,घि सि आॐग नहग ङा जि नगी ,
जा हि म अछि नहि , जा गल आम्रवल।

अनकन वल क कहन आस?
मटा ङाग मघ, मनूर्मि - यि आस?

ज कनैग अछि अयन ग्रया स,
नूकग नहि ङा, (0कग अका सा।

अयन गs ७का ला टा या नि ,
ङाकन दखी , जलधि मा नि ।

शकि - खा नि यठल, गकि ङौ
गऽ ,अयना रा ग रि गनि ,
वनि जौक डा सूनर्ध सन,
जकना वूसेग ठी यि फठि ।

अनकन ला ख टका सँ वसी ,

अयन ७क छदा म,
सक रनि का ज कन७ वला
वढि ऑँ ,गुठथि ज मा मा

कगवा नी क नही चा न , मृदा
Oा ८ नदि नरुग घन ,सा ढन सँ,

दा म्यत्र जि नगी नदि चलेग छ ,
कूटला ,खा ली , अ(Oा ढन साँ

कर्मेछि य दा स अछि मना वलक,
आदश गऽ रा ठूक, डाकना चलका

यँच -ठधा नक वल सँ नदि चलेग अछि जि नगी ,
जठि वि नू का ना गन्नूक हनि अन नरेछ न रूनगी ।

जकरा लग ,आत्मबलक आयुध,
छा जी गण ,जि नगी क हृदयक युद्ध।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४. अनुलग्नक

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३. मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन Maithili Audios-Videos

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

५.विदेह स्त्री कोना

६. विदेह ई-लर्निंग

७.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

8.Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

९.विदेह मिथिलाक खोज

१०.विदेह मिथिला चित्र

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

विदेह पुरान अंक

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search within Old Issues of Videha

https://books.google.com/

Videha Archive of Old Issues **विदेह पुरान अंकक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि।** All the old issues of Videha e journal are available for pdf download at the respective links below.

....

तिरहुता, देवनागरी आ कैथी फॉन्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉन्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	देवनागरी ओ.टी.एफ.	देवनागरी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

१

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-२७ www.videha.co.in विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन	
देवनागरी	**मिथिलाक्षर**
विदेह:सदेह १	विदेह: सदेह १ तिरहुता
विदेह:सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना	विदेह: सदेह २ तिरहुता
विदेह:सदेह ३ मैथिली पद्य	विदेह: सदेह ३ तिरहुता
विदेह:सदेह ४ मैथिली कथा	विदेह: सदेह ४ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ७]	विदेह: सदेह ७ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ७२-संस्करण -[	विदेहतिरहुता २-संस्करण सदेह ७ :
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]	विदेह: सदेह ६ तिरहुता
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]	विदेह: सदेह ८ तिरहुता
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]	विदेह: सदेह १० तिरहुता
विदेहसदेह ११:	विदेहतिरहुता सदेह ११ :
विदेहसदेह १२:	विदेहतिरहुता सदेह १२ :
विदेहसदेह १३:	विदेहतिरहुता सदेह १३ :
विदेहसदेह १४:	विदेहतिरहुता सदेह १४ :
विदेहसदेह १५:	विदेहतिरहुता सदेह १५ :
विदेहसदेह १६:	विदेहतिरहुता सदेह १६ :
विदेहसदेह १७:	विदेहतिरहुता सदेह १७ :
विदेहसदेह १८:	विदेहतिरहुता सदेह १८ :
विदेहसदेह १९:	विदेहतिरहुता सदेह १९ :
विदेहसदेह २०:	विदेहतिरहुता सदेह २० :
विदेहसदेह २१:	विदेहतिरहुता सदेह २१ :
विदेहसदेह २२:	विदेहतिरहुता सदेह २२ :
विदेहसदेह २३:	विदेहतिरहुता सदेह २३ :
विदेहसदेह २४:	विदेहतिरहुता सदेह २४ :
विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ तिरहुता

विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in

विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ- थीम आधारित मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनुपा कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ नवि कुमार ठाकुर आन लोकसँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह) सदेह २८:अनूदित गद्य आ पद्य-अंक १ -३५० सँ(	विदेह: सदेह २८ तिरहुता
विदेह:सदेह २९ (नवि कुमार ठाकुर आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३५० सँ)	विदेहतिरहुता सदेह ३० :
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (नवनाटक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता
विदेह:सदेह ३३ (नवनाटक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (नवनाटक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (नवनाटक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (नवनाटक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह ११	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

२

विदेह सभटा पुरान अंक (अंक १ सँ ३७४ आ आगाँ)

विदेह अंक १-१४९ (देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेल)

देवनागरी	मिथिलाक्षर	ब्रेल
Videha_01_01_08	Videha_01_01_08_Tirhuta	1
Videha_15_01_08	Videha_15_01_08_Tirhuta	2
Videha_01_02_08	Videha_01_02_08_Tirhuta	3
Videha_15_02_08	Videha_15_02_08_Tirhuta	4
Videha_01_03_08	Videha_01_03_08_Tirhuta	5
Videha_15_03_08	Videha_15_03_08_Tirhuta	6
Videha_01_04_2008	Videha_01_04_2008_Tirhuta	7
Videha_15_04_2008	Videha_15_04_2008_Tirhuta	8
Videha_01_05_2008	Videha_01_05_2008_Tirhuta	9
Videha_15_05_2008	Videha_15_05_2008_Tirhuta	10
Videha_01_06_2008	Videha_01_06_2008_Tirhuta	11
Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12
Videha_01_07_2008	Videha_01_07_2008_Tirhuta	13
Videha_15_07_2008	Videha_15_07_2008_Tirhuta	14
Videha_01_08_2008	Videha_01_08_2008_Tirhuta	15
Videha_15_08_2008	Videha_15_08_2008_Tirhuta	16
Videha_01_09_2008	Videha_01_09_2008_Tirhuta	17
Videha_15_09_2008	Videha_15_09_2008_Tirhuta	18
Videha_01_10_2008	Videha_01_10_2008_Tirhuta	19
Videha_15_10_2008	Videha_15_10_2008_Tirhuta	20
Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008_Tirhuta	21
Videha_15_11_2008	Videha_15_11_2008_Tirhuta	22

Videha_01_12_2008	Videha_01_12_2008_Tirhuta	23
Videha_15_12_2008	Videha_15_12_2008_Tirhuta	24
Videha_01_01_2009	Videha_01_01_2009_Tirhuta	25
Videha_15_01_2009	Videha_15_01_2009_Tirhuta	26
Videha_01_02_2009	Videha_01_02_2009_Tirhuta	27
Videha_15_02_2009	Videha_15_02_2009_Tirhuta	28
Videha_01_03_2009	Videha_01_03_2009_Tirhuta	29
Videha_15_03_2009	Videha_15_03_2009_Tirhuta	30
Videha_01_04_2009	Videha_01_04_2009_Tirhuta	31
Videha_15_04_2009	Videha_15_04_2009_Tirhuta	32
Videha_01_05_2009	Videha_01_05_2009_Tirhuta	33
Videha_15_05_2009	Videha_15_05_2009_Tirhuta	34
Videha_01_06_2009	Videha_01_06_2009_Tirhuta	35
Videha_15_06_2009	Videha_15_06_2009_Tirhuta	36
Videha_01_07_2009	Videha_01_07_2009_Tirhuta	37
Videha_15_07_2009	Videha_15_07_2009_Tirhuta	38
videha_01_08_2009	videha_01_08_2009_tirhuta	39
videha_15_08_2009	videha_15_08_2009_tirhuta	40
videha_01_09_2009	videha_01_09_2009_tirhuta	41
videha_15_09_2009	videha_15_09_2009_tirhuta	42
videha_01_10_2009	videha_01_10_2009_tirhuta	43
videha_15_10_2009	videha_15_10_2009_tirhuta	44
videha_01_11_2009	videha_01_11_2009_tirhuta	45
videha_15_11_2009	videha_15_11_2009_tirhuta	46
videha_01_12_2009	videha_01_12_2009_tirhuta	47
videha_15_12_2009	videha_15_12_2009_tirhuta	48
videha_01_01_2010	videha_01_01_2010_tirhuta	49
videha_15_01_2010	videha_15_01_2010_tirhuta	50

videha_01_02_2010	videha_01_02_2010_tirhuta	51
videha_15_02_2010	videha_15_02_2010_tirhuta	52
videha_01_03_2010	videha_01_03_2010_tirhuta	53
videha_15_03_2010	videha_15_03_2010_tirhuta	54
videha_01_04_2010	videha_01_04_2010_tirhuta	55
videha_15_04_2010	videha_15_04_2010_tirhuta	56
videha_01_05_2010	videha_01_05_2010_tirhuta	57
videha_15_05_2010	videha_15_05_2010_tirhuta	58
videha_01_06_2010	videha_01_06_2010_tirhuta	59
videha_15_06_2010	videha_15_06_2010_tirhuta	60
videha_01_07_2010	videha_01_07_2010_tirhuta	61
videha_15_07_2010	videha_15_07_2010_tirhuta	62
videha_01_08_2010	videha_01_08_2010_tirhuta	63
videha_15_08_2010	videha_15_08_2010_tirhuta	64
videha_01_09_2010	videha_01_09_2010_tirhuta	65
videha_15_09_2010	videha_15_09_2010_tirhuta	66
videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67
videha_15_10_2010	videha_15_10_2010_tirhuta	68
videha_01_11_2010	videha_01_11_2010_tirhuta	69
videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70
videha_01_12_2010	videha_01_12_2010_tirhuta	71
videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72
videha_01_01_2011	videha_01_01_2011_tirhuta	73
videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74
videha_01_02_2011	videha_01_02_2011_tirhuta	75
videha_15_02_2011	videha_15_02_2011_tirhuta	76
videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77
videha_15_03_2011	videha_15_03_2011_tirhuta	78

videha_01_04_2011	videha_01_04_2011_tirhuta	79
videha_15_04_2011	videha_15_04_2011_tirhuta	80
videha_01_05_2011	videha_01_05_2011_tirhuta	81
videha_15_05_2011	videha_15_05_2011_tirhuta	82
videha_01_06_2011	videha_01_06_2011_tirhuta	83
videha_15_06_2011	videha_15_06_2011_tirhuta	84
videha_01_07_2011	videha_01_07_2011_tirhuta	85
videha_15_07_2011	videha_15_07_2011_tirhuta	86
videha_01_08_2011	videha_01_08_2011_tirhuta	87
videha_15_08_2011	videha_15_08_2011_tirhuta	88
videha_01_09_2011	videha_01_09_2011_tirhuta	89
videha_15_09_2011	videha_15_09_2011_tirhuta	90
videha_01_10_2011	videha_01_10_2011_tirhuta	91
videha_15_10_2011	videha_15_10_2011_tirhuta	92
videha_01_11_2011	videha_01_11_2011_tirhuta	93
videha_15_11_2011	videha_15_11_2011_tirhuta	94
videha_01_12_2011	videha_01_12_2011_tirhuta	95
videha_15_12_2011	videha_15_12_2011_tirhuta	96
videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97
videha_15_01_2012	videha_15_01_2012_tirhuta	98
videha_01_02_2012	videha_01_02_2012_tirhuta	99
videha_15_02_2012	videha_15_02_2012_tirhuta	100
videha_01_03_2012	videha_01_03_2012_tirhuta	101
videha_15_03_2012	videha_15_03_2012_tirhuta	102
videha_01_04_2012	videha_01_04_2012_tirhuta	103
videha_15_04_2012	videha_15_04_2012_tirhuta	104
videha_01_05_2012	videha_01_05_2012_tirhuta	105
videha_15_05_2012	videha_15_05_2012_tirhuta	106

videha_01_06_2012	videha_01_06_2012_tirhuta	107
videha_15_06_2012	videha_15_06_2012_tirhuta	108
videha_01_07_2012	videha_01_07_2012_tirhuta	109
videha_15_07_2012	videha_15_07_2012_tirhuta	110
videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111
videha_15_08_2012	videha_15_08_2012_tirhuta	112
videha_01_09_2012	videha_01_09_2012_tirhuta	113
videha_15_09_2012	videha_15_09_2012_tirhuta	114
videha_01_10_2012	videha_01_10_2012_tirhuta	115
videha_15_10_2012	videha_15_10_2012_tirhuta	116
videha_01_11_2012	videha_01_11_2012_tirhuta	117
videha_15_11_2012	videha_15_11_2012_tirhuta	118
videha_01_12_2012	videha_01_12_2012_tirhuta	119
videha_15_12_2012	videha_15_12_2012_tirhuta	120
videha_01_01_2013	videha_01_01_2013_tirhuta	121
videha_15_01_2013	videha_15_01_2013_tirhuta	122
videha_01_02_2013	videha_01_02_2013_tirhuta	123
videha_15_02_2013	videha_15_02_2013_tirhuta	124
videha_01_03_2013	videha_01_03_2013_tirhuta	125
videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126
videha_01_04_2013	videha_01_04_2013_tirhuta	127
videha_15_04_2013	videha_15_04_2013_tirhuta	128
videha_01_05_2013	videha_01_05_2013_tirhuta	129
videha_15_05_2013	videha_15_05_2013_tirhuta	130
videha_01_06_2013	videha_01_06_2013_tirhuta	131
videha_15_06_2013	videha_15_06_2013_tirhuta	132
videha_01_07_2013	videha_01_07_2013_tirhuta	133
videha_15_07_2013	videha_15_07_2013_tirhuta	134

videha_01_08_2013	videha_01_08_2013_tirhuta	135
videha_15_08_2013	videha_15_08_2013_tirhuta	136
videha_01_09_2013	videha_01_09_2013_tirhuta	137
videha_15_09_2013	videha_15_09_2013_tirhuta	138
videha_01_10_2013	videha_01_10_2013_tirhuta	139
videha_15_10_2013	videha_15_10_2013_tirhuta	140
videha_01_11_2013	videha_01_11_2013_tirhuta	141
videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142
videha_01_12_2013	videha_01_12_2013_tirhuta	143
videha_15_12_2013	videha_15_12_2013_tirhuta	144
videha_01_01_2014	videha_01_01_2014_tirhuta	145
videha_15_01_2014	videha_15_01_2014_tirhuta	146
videha_01_02_2014	videha_01_02_2014_tirhuta	147
videha_15_02_2014	videha_15_02_2014_tirhuta	148
videha_01_03_2014	videha_01_03_2014_tirhuta	149

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓕𑓐𑓒𑓔𑓔-

VIDEHA_150	VIDEHA_151	VIDEHA_152	VIDEHA_153	VIDEHA_154
VIDEHA_155	VIDEHA_156	VIDEHA_157	VIDEHA_158	VIDEHA_159
VIDEHA_160	VIDEHA_161	VIDEHA_162	VIDEHA_163	VIDEHA_164
VIDEHA_165	VIDEHA_166	VIDEHA_167	VIDEHA_168	VIDEHA_169
VIDEHA_170	VIDEHA_171	VIDEHA_172	VIDEHA_173	VIDEHA_174
VIDEHA_175	VIDEHA_176	VIDEHA_177	VIDEHA_178	VIDEHA_179
VIDEHA_180	VIDEHA_181	VIDEHA_182	VIDEHA_183	VIDEHA_184
VIDEHA_185	VIDEHA_186	VIDEHA_187	VIDEHA_188	VIDEHA_189
VIDEHA_190	VIDEHA_191	VIDEHA_192	VIDEHA_193	VIDEHA_194
VIDEHA_195	VIDEHA_196	VIDEHA_197	VIDEHA_198	VIDEHA_199
VIDEHA_200	VIDEHA_201	VIDEHA_202	VIDEHA_203	VIDEHA_204
VIDEHA_205	VIDEHA_206	VIDEHA_207	VIDEHA_208	VIDEHA_209
VIDEHA_210	VIDEHA_211	VIDEHA_212	VIDEHA_213	VIDEHA_214

VIDEHA_215	VIDEHA_216	VIDEHA_217	VIDEHA_218	VIDEHA_219
VIDEHA_220	VIDEHA_221	VIDEHA_222	VIDEHA_223	VIDEHA_224
VIDEHA_225	VIDEHA_226	VIDEHA_227	VIDEHA_228	VIDEHA_229
VIDEHA_230	VIDEHA_231	VIDEHA_232	VIDEHA_233	VIDEHA_234
VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238	VIDEHA_239
VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244
VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249
VIDEHA_250	VIDEHA_251	VIDEHA_252	VIDEHA_253	VIDEHA_254
VIDEHA_255	VIDEHA_256	VIDEHA_257	VIDEHA_258	VIDEHA_259
VIDEHA_260	VIDEHA_261	VIDEHA_262	VIDEHA_263	VIDEHA_264
VIDEHA_265	VIDEHA_266	VIDEHA_267	VIDEHA_268	VIDEHA_269
VIDEHA_270	VIDEHA_271	VIDEHA_272	VIDEHA_273	VIDEHA_274
VIDEHA_275	VIDEHA_276	VIDEHA_277	VIDEHA_278	VIDEHA_279
VIDEHA_280	VIDEHA_281	VIDEHA_282	VIDEHA_283	VIDEHA_284
VIDEHA_285	VIDEHA_286	VIDEHA_287	VIDEHA_288	VIDEHA_289
VIDEHA_290	VIDEHA_291	VIDEHA_292	VIDEHA_293	VIDEHA_294
VIDEHA_295	VIDEHA_296	VIDEHA_297	VIDEHA_298	VIDEHA_299
VIDEHA_300	VIDEHA_301	VIDEHA_302	VIDEHA_303	VIDEHA_304
VIDEHA_305	VIDEHA_306	VIDEHA_307	VIDEHA_308	VIDEHA_309
VIDEHA_310	VIDEHA_311	VIDEHA_312	VIDEHA_313	VIDEHA_314
VIDEHA_315	VIDEHA_316	VIDEHA_317	VIDEHA_318	VIDEHA_319
VIDEHA_320	VIDEHA_321	VIDEHA_322	VIDEHA_323	VIDEHA_324
VIDEHA_325	VIDEHA_326	VIDEHA_327	VIDEHA_328	VIDEHA_329
VIDEHA_330	VIDEHA_331	VIDEHA_332	VIDEHA_333	VIDEHA_334
VIDEHA_335	VIDEHA_336	VIDEHA_337	VIDEHA_338	VIDEHA_339
VIDEHA_340	VIDEHA_341	VIDEHA_342	VIDEHA_343	VIDEHA_344

विदेहक सभ अंक सम्बन्धी किछु आवश्यक बात/ जानकारी

Learn Maithili Sign Language- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

Learn Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn IPA through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Braille through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

Learn Kaithi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

कैथी लिपि (मैथिली साहित्य संस्थान डाउनलोड लिंक)

Learn Newari- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Calligraphic Newari (Ranjana)- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Urdu Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Tibetan Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Japanese Script for Haiku- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Brahmi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Kharoshthi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

स्थायी स्तम्भ जेना मिथिला-रत्न, मिथिलाक खोज, विदेह ई-लर्निंग, विदेह शब्दकोश, विदेह आर्काइव (विदेह ई-पत्रिकाक सबटा पुरान अंक; विदेह पोथी डाउनलोड; विदेह मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन आ विदेह शिशु, बाल आ किशोर साहित्य) आ सूचना-संपर्क-अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement) सभ अंकमे समान अछि, ताहि हेतु ई सभ स्तम्भ सभ अंकमे नै देल जाइत अछि, ई सभ स्तम्भ देखबा लेल क्लिक करू विदेहक ३४६ म, ३४७ म, ३६६ म आ ३७४ म अंक। ई चारू अंकमे सम्मिलित नूतन ई सभ स्तम्भ देल गेल अछि।

विदेहक ३४५म आ आगाँक अंक

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल
VIDEHA_345	VIDEHA_345_Tirhuta	VIDEHA_345_IPA	VIDEHA_345_Braille
VIDEHA_346	VIDEHA_346_Tirhuta	VIDEHA_346_IPA	VIDEHA_346_Braille
VIDEHA_347	VIDEHA_347_Tirhuta	VIDEHA_347_IPA	VIDEHA_347_Braille
VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille
VIDEHA_349	VIDEHA_349_Tirhuta	VIDEHA_349_IPA	VIDEHA_349_Braille

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल	कैथी
VIDEHA_350	VIDEHA_350_Tirhuta	VIDEHA_350_IPA	VIDEHA_350_Braille	VIDEHA_350_KAITHI
VIDEHA_351	VIDEHA_351_Tirhuta	VIDEHA_351_IPA	VIDEHA_351_Braille	VIDEHA_351_KAITHI
VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI
VIDEHA_353	VIDEHA_353_Tirhuta	VIDEHA_353_IPA	VIDEHA_353_Braille	VIDEHA_353_KAITHI
VIDEHA_354	VIDEHA_354_Tirhuta	VIDEHA_354_IPA	VIDEHA_354_Braille	VIDEHA_354_KAITHI

नागरी	गिनहूला	आल्ह्यीञ	ब्रल	कैथी	नंजना	नवाऊ	खनाष्ठी	ब्राह्मी
355	Tirhu	IPA	Brail	KAI	Ran	Newa	Kharo	Brahmi

नागरी	गिनहूला	कैथी	नंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रल	खनाष्ठी	उर्दू	गिब्बती	गिब्बती-उम
356	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रल	खनाष्ठी	उर्दू	Tib	Ume
357	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रल	खनाष्ठी	उर्दू	Tib	Ume

नागरी	गिनहूला	कैथी	नंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रल	गिब्बती	गिब्बती-उम
358	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रल	Tib	Ume
359	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रल	Tib	Ume
360	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रल	Tib	Ume

नागरी	गिनहूला	कैथी	नवाऊ	आल्हू.यी.ञ.	ब्रल
361	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
362	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
363	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
364	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
365	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
366	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
367	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
368	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
369	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
370	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
371	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
372	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
373	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille

....

३

विदेह विशेषांक

१) हाइकू विशेषांक

Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12

२) गजल विशेषांक

Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008_Tirhuta	21

३) विहनि कथा विशेषांक

videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67

४) बाल साहित्य विशेषांक

videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70

५) नाटक विशेषांक

videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72

६) समीक्षा विशेषांक

videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74

७) नारी विशेषांक

videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77

८) अनुवाद विशेषांक (गद्य-पद्य खानी)

videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97

९) बाल गजल विशेषांक

videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111

१०) भक्ति गजल विशेषांक

videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126

११) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक

videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142

१२) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

Videha_01_01_2015

१३) अनचिन्हार आखर विशेषांक

Videha_01_11_2015

स्मारिका- अनचिन्हार आखर: व्यक्ति-कृति (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अनचिन्हार आखर विशेषांकक प्रिंट रूप]

१४) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

Videha_01_12_2015

१५) विदेह सम्मान विशेषांक

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

साक्षात्कार/ समाचार

साक्षात्कार	videha_15_12_2011	videha_15_01_2012	videha_01_02_2012	videha_01_03_2012
videha_01_09_2012	videha_15_01_2013	videha_01_03_2013	Videha_15_04_2016	Videha_01_07_2016

१६) मैथिली सी.डी./ एल्बम गीत संगीत विशेषांक

Videha_01_01_2017

१७) मैथिली नव पत्रकारिता विशेषांक

VIDEHA 313

१८) मैथिली वीहनि कथा विशेषांक-२

VIDEHA 317

१९) नामलाक्न Oक्रुन विशेषांक

VIDEHA 319

२०) नामलाक्न Oक्रुन श्रद्धांजलि विशेषांक

VIDEHA 320

२१) नाजनइन लाल दास विशेषांक

VIDEHA 333

२२) नवीन्द्र नाथ Oक्रुन विशेषांक

VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille

२३कदान नाथ चौधनी विशेषांक (

VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI

२४ प्रमलता मिश्र ('प्रम' विशेषांक

Videha_357	Videha_357_Tirhuta

२७शनदिनु चौधनी विशेषांक (

Videha_358	Videha_358_Tirhuta

२६संज्ञ दास -सहर्ट) विमर्श विशेषांक-कला (, कृष्ण कुमान कश्यप, शशिवाला, जस(सुमन आ श्वेता मा चौधनी.सी.

Videha_368	Videha_368_Tirhuta

२१नवनाकान अशोक विशेषांक (

Videha_369	Videha_369_Tirhuta

२१ नाम स्नास कायति ('त्रमन' विशेषांक

Videha_370	Videha_370_Tirhuta

२८विशेषांक (.यु.जस.जम) मिथिला सूतइ युनियन (

Videha_371	Videha_371_Tirhuta

....

४

लखकक आमंत्रि नवना आ उल्ल्यन आमंत्रि समीउकक समीआ सीनीज

१कामिनीक यांच टा कविता आ उल्ल्यन मधूकान्त झाक टिप्पणी.

Videha_01_09_2016

२यन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी"माटिक वासन" क"मनू" जगदानन्द झा.

VIDEHA_353

३आ उल्ल्यन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी "जिनगीक माल" मुन्नी कामतक एकांकी.

VIDEHA_354

४ टा कथा कपिलेश्वर राउतक ग.आ उल्ल्यन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_356

गटा कथा आ उल्ल्यन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी उमेश मण्डलक ग.

Videha_357

६टा कथा आ उल्ल्यन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी नाम विलास साहुक ग.

Videha_358

१निन नवल सु.राब चन्द्र यादवनसु.राब चन्द्र यादवक समस्त साहित्य आ उल्ल्यन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी -

निन नवल सुराब चन्द्र यादव

निन नवल सुराब चन्द्र यादव (मिथिलाउन)

८नाजदेव मण्डलक साहित्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी.

Rajdeo Mandal - Maithili Writer

९टा कथा आ उल्ल्यन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी आचार्य रामानन्द मण्डलक ग.

Videha_360

१०नन्द विलास रायक चारिटा कथा. आ एकटा एकांकी आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_361

११जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यायन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी.

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

१२दुर्गानन्द मण्डलक पाँचटा कथा आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी.

Videha_363

१३नारायण यादवक पाँचटा कथा आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_364

१४दिनेश कुमार मिश्रक समस्त लेखन आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी -नित नवल दिनेश कुमार मिश्र .

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (जानी)

१५सुशीलक समस्त साहित्य आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी -नित नवल सुशील .

नित नवल सुशील (जानी)

....

७

"पाठक हमर पोथी किए पढ़थि"- लेखक द्वारा अपन पोथी/ रचनाक समीक्षा सीरीज

१. आशीष अनचिन्हार ०१ अगस्त २०२१

१).a) आशीष अनचिन्हार ०१ मार्च २०२३

२सितम्बर २०२२ गजेन्द्र ठाकुर ०१ .

....

६

एडिटर्स चॉइस सीरीज

एडिटर्स चॉइस सीरीज१-

विदेहमे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल। ई दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, तेलुगुमे पसुपुलेटी गीताक कविताक हिन्दी अनुवाद कएने छलीह आर.शांता सुन्दरी आ हिन्दीसँ मैथिली . अनुवाद कएने छलाह विनीत उत्पल। हमर जानकारीमे एसँ बढ़ि सिहरावैवला कविता ओ विषयपर कतौ भाषामे नै रचल गेल अछि। कतेक सालक बादो ई समस्या ठाढ़ अछि। ई कविता सभकेँ पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापकेँ, सभ बहिनक भाइकेँ आ सभ पत्नीक पतिकेँ। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपना बच्चा सभ लेल केहन समाज बनने छी।

एडिटर्स चॉइस सीरीज१- (डाउनलोड लिंक(

एडिटर्स चॉइस सीरीज२-

विदेहमे ब्रेस्ट कैंसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा कृत एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैंसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि ओ विषयपर कथा नै लिखल गेल छल, कारण ओ कथाक ई-प्रकाशित भेलाक १-२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घोंघाउज भऽ रहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा

हुनक लिखल मैथिलीक कथाक पतनगी छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

विदेह आर्काइव्स सीरीज२- (डाउनलोड लिंक)

विदेह आर्काइव्स सीरीज३-

विदेहमे जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक किछु बाल कविता प्रकाशित भेल। बादमे हुनकर ३ टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल जाहिमे २ टा कविता बर्खी बाल्हुयन छल। पढ़ू ई तीनू कविता, बादक हुनू बर्खी बाल्हुयन लिखल कविता पढ़ब टा करू से आग्रह।

विदेह आर्काइव्स सीरीज३- (डाउनलोड लिंक)

विदेह आर्काइव्स सीरीज४-

विदेहमे जगदानन्द झा 'मनु'क एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ वा "मनु" उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चानहो। बादमे ई रचना विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी ताहि ट्रेनिंग कोर्समे ऐ उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कोना मोडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, शुरू बाद शुरू आ सेहो बाल उपन्यास। पढ़ब टा करू से आग्रह।

विदेह आर्काइव्स सीरीज-४ (डाउनलोड लिंक)

विदेह आर्काइव्स सीरीज५-

ज्योतिरीश्वर वाह्स ३ म मैथिलीक मान कुमार यनक "उसन कहा था" । हिन्दीक याठक (सारान अंगिका) "यह्0" दीर्घकथा, जे उसन " यढन हरा "कहा था, कँ वृमल छन्हि जे काना अदि कथाकँ नवि चढ्ढधन शर्मा वर्वा कऽ अमन रऽ (गलाह। हम "गुलनी" नरल छी, कुमार यनक दीर्घकथाक। ओकना यढलाक वाद अहाँकँ ओकटा "यह्0" निचित्र, सुखद आ मान हौल कर्नेवला अनुरव रटत, जे सम्प्रयीनिअन द्रजती सँ मिलिता लागत आ रहनाक। मुदा ओ नवनाकँ यढलाक वाद गमस, घृणा सरयन नियंत्रणकँ आ सामाजिकयानिनानिक दायित्वकँ / आन गं सहा अहाँरीनतासँ लवे, स धनि यक्षा अछि। मुदा ओकन ओकटा शर्त अछि जे ओकना समै निकालि कऽ ओक्षे उखठाहम यढि जाह्।

ज्योतिरीश्वर वाह्स सीनीज३- (ताउनलाउ लिंक(

ज्योतिरीश्वर वाह्स सीनीज६-

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा क अकालम ४३-१९४२ :"विसाँढ" लाख लाक मृत्ला वंगालम १७, मुदा अमर्थ सन लिखैत छथि जे हुनकन काना सनसम्बन्धी ओ अकालम नै मनलन्हि। मिथिलाम अकाल - म आ ह्न्हिना गाँधी जखन ओ ऊत्र अओली गँ .ह्री आओल १९६७ मूसहन जात हुनका दखाउल (गल जे कानाकि लाक विसाँढ खा कऽ ओ अकालकँ जीति ललन्हि। मैथिलीम लखनक ओकरगाह स्थिति निदहक आगमनसँ यहिन छल। मैथिलीक लखक लाकनि सहा अमर्थ सन जकाँ उदि महानिरीक्षिकासँ प्रशानित नै छला आ गँ विसाँढयन कथा नै लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल जेयन कथा लिखलन्हि जे प्रकाशित

रहल छलाह समितिक पत्रिकामे, मुदा कार्यकारी सम्पादक छला तखनो पनिवर्तनक काजक छा मैथिलीमे नै ननक् अनरहुम लिखल बुझा पड़ल, आ छाक प्रभावी नै रहऽ सकल काजक विषय नहि खाँटी आ तखनो कृत्रिमे। स एकर पुनः ईप्रकाशन अपन असली रूपमे रहल निदर्शन - लघुकथा संग्रहमे। ई पोथीमे "गामक जिनगी" आ ई संकलित रहल जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड रहलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लखनी मैथिली कथाधाराकेँ एकरगाह होवासँ बचा ललक, आ मैथिलीक समानान्तर ईतिहासमे मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पहिल जाए लागल जगदीश प्रसाद मण्डलसँ - पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डल आगमनक बाद। ई प्रस्तुत अछि अपन सुन्ना स्वरूपमे। -लघुकथा विसाँढ

एतिहास बाल्हूस सीनीजक- (डाउनलोड लिंक)

एतिहास बाल्हूस सीनीजा-

मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथासहीय कुमार साही। : सहीय कुमार साहीक दलित आत्मकथा ज अहाँकेँ अपन लघु आकारक अछैत हिलाऽ देत आ अहाँक ई स्थिति कऽ देत ज समानान्तर मैथिली साहित्य कतबा पहु अहाँकेँ अछैत नै हएत। ई आत्मकथा निदर्शन ईवैशाखम " प्रकाशित रहलाक बाद लखकक पोथी-म संकलित रहल आ ई मैथिलीक अखन धरिक एकमात्र "दलानपन दलित आत्मकथा थिक। ई प्रस्तुत अछि मैथिलीक पहिल दलित सहीय :आत्मकथाकुमान साहीक कलमसँ।

ऑडियो बुक्स सीरीज७- (डाउनलोड लिंक)

ऑडियो बुक्स सीरीज८-

नेना भुटकाकेँ नानीसँ सुनबा लेल किछु लोककथा। (विदेह प्रकाशनसँ)

ऑडियो बुक्स सीरीज८- (डाउनलोड लिंक)

ऑडियो बुक्स सीरीज९-

मैथिली गजलपर परिचर्चा। (विदेह प्रकाशनसँ)

ऑडियो बुक्स सीरीज९- (डाउनलोड लिंक)

....

विदेह सम्मान: **सम्मानसूची-** (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीतनाटक अकादमी - (पुरस्कार नामसँ विख्यात /सम्मान

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक नर्सनीम यर्याप्त निनिधना अछि। मूदा प्रश्नयत्र दखला उप्पन एकान नर्सनी कोर्स BMAF001 सँ प्रनिना वृसाक्ष्त अछि, स एकान एकाना एक उखठाव्हाम उनटा-पूनटा दियौ, गाव धनि यर्याप्त अछि। यू.यी.एस.सी. क **मैथिली (कम्यलसनी) ययन लल सन्न ज्ञी पर्याप्त अछि,** स ज निद्यार्थी मैथिली (कम्यलसनी) ययन लन छथि स एकान एकटा आन स्वास्थ्य-नीतिंग दासन-उखठाव्हाम कनथि|

IGNOU कोर्स BMAF-001

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

विदेह पोथी

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Books (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mthila/ Maithili

https://books.google.com/

Videha Archive of Maithili Books 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫 (𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒞𑓁 𑒁𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑒰𑒨𑒱𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒨 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒬𑒻𑒏𑓂𑒭𑒝𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒪𑒹𑒪) 𑒮𑒦 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒣𑒲.𑒛𑒲.𑒋𑒤. 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒏 𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰, 𑒢𑒹𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒂 𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒤𑒾𑒢𑓂𑒙 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 Google's Noto Fonts project/ GitHub

𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰 𑒢𑒼𑒙𑒼 𑒤𑒾𑒢𑓂𑒙	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒍𑒙𑒲𑒋𑒤	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒙𑒲𑒙𑒲𑒋𑒤	𑒢𑒹𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒍.𑒙𑒲.𑒋𑒤.	𑒢𑒹𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒙𑒲.𑒙𑒲.𑒋𑒤.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://mal arproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡 𑒔𑒩𑓂𑒨𑒰𑒣𑒠 (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨- 𑒧. 𑒧. 𑒯𑒩𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲, 𑓑𑓙𑓐𑓗, 𑒖𑒨𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒱𑓀𑒯, 𑓑𑓙𑓖𑓙)

𑓒𑓓 𑒏𑒫𑒱 𑓕𑓐 𑒙𑒰 𑒔𑒩𑓂𑒨𑒰𑒣𑒠 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 [𑒪𑒳𑒃𑒣𑒰𑒠 𑓑, 𑓒𑓙; 𑒏𑒳𑒏𑓂𑒏𑒳𑒩𑒲𑒣𑒰𑒠 𑓒, 𑓒𑓐, 𑓔𑓘; 𑒫𑒱𑒩𑒴𑒫𑒣𑒰𑒠 𑓓; 𑒑𑒳𑒝𑓂𑒛𑒩𑒲𑒣𑒰𑒠 𑓔; 𑒔𑒰𑒙𑒱𑒪𑒣𑒰𑒠 𑓕; 𑒦𑒳𑒮𑒳𑒏𑒳𑒣𑒰𑒠 𑓖, 𑓒𑓑, 𑓒𑓓, 𑓒𑓗, 𑓓𑓐, 𑓔𑓑, 𑓔𑓓, 𑓔𑓙; **𑒏𑒰𑒢𑓂𑒯𑒣𑒰𑒠** 𑓗, 𑓙, 𑓑𑓐, 𑓑𑓑, 𑓑𑓒, 𑓑𑓓, 𑓑𑓘, 𑓑𑓙, 𑓒𑓔, 𑓓𑓖, 𑓔𑓐, 𑓔𑓒, 𑓔𑓕; **𑒏𑒧𑓂𑒥𑒪𑒰𑒧𑓂𑒥𑒩𑒣𑒰𑒠** 𑓘; **𑒛𑒼𑒧𑓂𑒥𑒲𑒣𑒰𑒠** 𑓑𑓔; **𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒣𑒰𑒠** 𑓑𑓕, 𑓒𑓖; **𑒧𑒯𑒱𑒡𑒩𑒣𑒰𑒠** 𑓑𑓖; **𑒫𑒲𑒝𑒰𑒣𑒰𑒠** 𑓑𑓗; **𑒮𑒩𑒯𑒣𑒰𑒠** 𑓒𑓒, 𑓓𑓒, 𑓓𑓘, 𑓓𑓙; **𑒬𑒥𑒩𑒣𑒰𑒠** 𑓒𑓘,𑓕𑓐; **𑒂𑒩𑓂𑒨𑒠𑒹𑒫𑒣𑒰𑒠** 𑓓𑓑; **𑒜𑒹𑒝𑓂𑒜𑒝𑒣𑒰𑒠**

३३; दारिकपाद ३४; भादेपाद ३५; ताडकपाद ३७; कङ्कणपाद ४४; जयनन्दीपाद ४६; धामपाद ४७; तन्त्रीपाद २५]

१६ राग ४१ चर्यापद संख्या- ३ टा चर्यापद संख्या -२४, २५, ४८ (इन्द्रताल २४; शीवरी- २५, पटह- ४८)- **म राग अनुपलब्ध** [पटमञ्जरी १, ६, ७, ९, ११, १७, २०, २९, ३१, ३३, ३६; गवड वा गौड २, ३, १८; अरु ४; गुर्जरी, गुञ्जरी वा कान्ह-गुञ्जरी ५, २२, ४१, ४७; देवक्री ८; देशाख १०,३२; कामोद १३, २७, ३७, ४२; धनाशी वा धनश्री १४; रामक्री १५, ५०; बलाडी वा बराडी २१, २३, २८, ३४; शबरी २६, ४६; मल्लारी ३०, ३५, ४४, ४५, ४९; मालसी ३९; मालसी-गवुडा ४०; बंगाल ४३; भैरवी १२, १६, १९, ३८]

चर्यापद

महाकवि डाक (संकलन ओ जीवानन्द ठाकुर, १९५०)

डाकवचन

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) [सौजन्य- डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इण्डिया]

विद्यापति पदावली (सम्पादन नगेन्द्रनाथ गुप्त १९१०)

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)- गजेन्द्र ठाकुर

ज्योतिरीश्वर ठाकुर (सौजन्य- डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इण्डिया)

वर्णन रत्नाकर

मैथिली धूर्तसमागम

विद्यापति ठाकुरः [(१३५०-१४३५) मैथिलीक आदि कवि ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक]

व्याडीभक्तितरङ्गिणी

गोरक्षविजयम्

Vidyapati A Political Analysis- Dr Shankar Kumar Jha

[सौजन्य पं शशिनाथ झा/ रामदेव झा]

शंकरदेव

पारिजातहरण

रामविजय

दैत्यारि ठाकुर

श्रीमंत शंकरदेव यात्रा (अंकिया नाट)

माधवदेव

भूमि लुटिया झूमुरा आ पिम्परा-गुचुवा-झूमुरा

लक्ष्मीदेव

कुमारहरण नाट शर स्कंध रावण वध (अंकिया नाट)

जगत्प्रकाशमल्ल

प्रभावतीहरण नाटक

सिद्ध नरसिंहमल्ल

गीतावली सिद्धि

जगज्ज्योतिर्मल्ल

हरगौरी विवाह नाटक कुञ्जविहार नाटक

हर्षनाथ झा

माधवानन्द नाटक

उषाहरण

हर्षनाथ काव्यग्रन्थावली (संकलन रमानाथ झा १८९१-१९७१)

रत्नपाणि

उषाहरण नाटक

श्रीकांत

श्रीकृष्ण जन्म रहस्य

नन्दीपति

कृष्णकेलिमाला

गीतमाला

कान्ह रामदास

गौरीस्वयंवर

लाल

गौरीस्वयंवर नाटक

उमापति

पारिजात हरण

भानुनाथ

प्रभावती हरण

हर्षनाथ

उषाहरण

रमापति

रुक्मिणी परिणय

उपाध्याय रामदास

आनन्द विजयाख्यान नाटिका

शिवदत्त

गौरीपरिणय सीतास्वयंवर दुर्गाविजय

<u>यानिजात नाटक</u>

....

कथा वौद्ध सिद्ध मरुथया (वाल साहित्य कथिग) मंरुथम रुल ८२ म सगन नाति दीय जनयम यठिग कथा सरक संकलन

<u>कथा वौद्ध सिद्ध मरुथया</u>

सखुआनाली (नानी निमर्श कथिग) रुयटियाहीम रुल ८३ म सगन नाति दीय जनयम यठिग कथा सरक संकलन

<u>सखुआनाली</u>

सन जी. ७. ग्रियर्सन (१८७१-१९४१)

<u>मैथिली ग्रामन</u>

<u>मैथिली क्रेस्टामथी ७ण्ड नाकावूलनी</u>

मुंशी नघुनन्दन दास (१८६०-१९४७) (सौजन्य- नाधाकृष्ण दास)

<u>सुरुद्रा रुनण</u>

नासविहानी लाल दास (१८७२-१९४०) (सौजन्य- नमानन्द झा "नमण")

<u>सुमति</u>

हनिनन्दन दास (सौजन्य- नाधाकृष्ण दास)

<u>सुदामा चनित</u>

यं नामजी चौधनी (१८७८-१९७२) (सौजन्य- श्री श्रीमोहन चौधनी)

<u>विविध नचनावली</u>

आचार्य नामलोचन शनण (१८८९-१९७१) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान)

<u>जयन्ती-स्मानक ग्रन्थ</u>

धनुषधारी दास (१८९७-१९६७) (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

मैथिली मे बिहारी

हरिमोहन झा (१९०८-१९८४) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान/ (गोपीनाथ)

अभिनन्दन ग्रन्थ

अंतिका (हरिमोहन झा विशेषांक)

....

डॉ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (सौजन्य- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर')

महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (१९९१)

लोक नाट्य: जट जटिन (२००१) (शोध)

हुगली उपर बहैत गंगा आ आन कथा (कथा संग्रह) (२००८)

भ्रमर मैथिली दीर्घ कविता (हिन्दी अनुवाद-अब बस नहीं) (२००९)

मैथिली लोक संस्कृति (नेपाली भाषाम) (२००९)

रैया अएलै अपन समाज (नाटक संग्रह) (२०१०)

घरमुहाँ (उपन्यास) (२०१२)- ई बुक वर्जन

घरमुँहा (उपन्यास) (२०१२)- प्रिंट वर्जन

Homebound (2023)

अनहरियाक चान (गजल संग्रह) (२०१३)

चीन जे हम देखल (यात्रा संस्मरण) (२०१४)

सूली पर ईशु एवं अन्य नाटक (२०१७)

सीमाक आर-पार (यात्रा संस्मरण) (२०१६)

युद्धभूमिक एसगर यात्री (कविता संग्रह) (२०११)

एंटीवायरस (कथा संग्रह) (२०१९)

𑒏𑒼𑒩𑒼𑒢𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒞𑓂𑒩𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒛𑒑𑒧𑒑𑒰𑒨𑒪 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 (𑒪𑒏𑒛𑒰𑒅𑒢 𑒛𑒰𑒨𑒩𑒲) (𑓒𑓐𑓒𑓐)

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒓𑓂𑒒𑒩𑓂𑒭 (𑓒𑓐𑓒𑓒)

𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒑𑒫𑒹𑒭𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒫𑒹𑒭𑒲 𑒛𑒰. 𑒣𑓂𑒩𑒤𑒳𑒪𑓂𑒪 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒮𑒱𑓀𑒯 '𑒧𑒾𑒢'

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲

𑒮𑓂𑒧𑒰𑒩𑒱𑒏𑒰 (𑓒𑓐𑓑𑓐)

𑒂𑓀𑒑𑒢 𑒁𑓀𑒏-𑓔 (𑓒𑓐𑓑𑓒) 𑒮𑒪𑒯𑒹𑒮 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

𑒂𑒿𑒑𑒢 (𑒁𑓀𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓓𑓖, 𑒁𑓀𑒏 𑓓) 𑒮𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭

𑒑𑒰𑒧𑒒𑒩-𑓓𑓐-𑓐𑓘-𑓒𑓐𑓑𑓘

𑒑𑒰𑒧𑒒𑒩-𑓐𑓔-𑓑𑓐-𑓒𑓐𑓑𑓘

𑒑𑒰𑒧𑒒𑒩-𑓑𑓖-𑓐𑓗-𑓒𑓐𑓑𑓙

𑒑𑒰𑒧𑒒𑒩-𑓒𑓑-𑓐𑓖-𑓒𑓐𑓑𑓙

𑒩𑒰𑒧𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒏𑒰𑒣𑒛𑓃𑒱 "𑒦𑓂𑒩𑒧𑒩"𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒰𑒙𑒏

𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒰𑒖𑒲 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒣𑒵. 𑓓𑓒𑓑-𑓓𑓒𑓘

𑒠𑒪𑒱𑒞 𑒫𑒹𑒠𑒢𑒰𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒩𑒰𑒧𑒪𑒼𑒔𑒢 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑 𑒣𑒵. 𑓓𑓔𑓑-𑓓𑓗𑓑

𑒯𑒧𑒩 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢-𑒣𑒱𑒣𑒰𑒮𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒩𑒼𑒞: 𑒬𑒩𑒠𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒣𑒵. 𑓓𑓑-𑓓𑓔

𑒖𑒙 𑒖𑒙𑒱𑒢 𑒣𑒵. 𑓗𑓖𑓘-𑓑𑓐𑓗

𑒩𑒻𑒨𑒰, 𑒁𑒘𑓂𑒖𑒪𑒻 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒣𑒵. 𑓗𑓖𑓘-𑓑𑓐𑓗

𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒏𑒟𑒰-𑒤𑓂𑒪𑒻𑒬𑒥𑒻𑒏 𑒣𑒵. 𑓘𑓔-𑓘𑓘

𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒣𑒵. 𑒣𑒵. 𑓑𑓑𑓑-𑓑𑓒𑓗

𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒣𑒵. 𑓑𑓒𑓑𑓖-𑓑𑓒𑓙𑓐

𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒣𑒵. 𑓙𑓑-𑓙𑓘

𑒩𑒰𑒨𑒣𑒳𑒩 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑 𑒣𑒵. 𑓑𑓗𑓐-𑓑𑓗𑓔

𑒮𑒪𑒯𑒹𑒮 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒩𑒱𑒣𑒼𑒩𑓂𑒙 𑒣𑒵. 𑓔𑓑-𑓔𑓗

अंक १६

अंक १८

अंक १७ जून २०१२

अंक २४ जून २०१२

२७ जुलाई २०१२

०७ अगस्त २०१२

२३ जनवरी २०१६

आसिन २०१३

सुशील कुमार झा (सौजन्य- सुशील कुमार झा)

निर्माण डायरी (निर्माण)

चिड़ै (लघुकथा-संग्रह)

जिद्दी (लघुकथा संग्रह)

काल्हि घुरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

गप्प (लघु कथा संग्रह)

खजनीवाली (लघु कथा संग्रह)

बुलबुल (कथा संग्रह)

दुधमती- (नेपाली आ मैथिलीमे)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

निश्छल ठाकुर

नेपालक लाल मनुस्मृति

विनीत ठाकुर (सौजन्य- विनीत ठाकुर)

बाँकी अछि हमरा दूधक कर्ज

संजीव मिश्र (सौजन्य- संजीव मिश्र)

पासपुत (लघुकथा-संग्रह)

उदास मोन (लघुकथा-संग्रह)

एना-किए (कविता-संग्रह)

अएना (संपादन- कविता-संग्रह)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद नूतन धीनु आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

रंगीन बढक देश-भ्रमण

Ayodhyanath Choudhary (Courtesy- Ayodhyanath Choudhary)

Varied Verses (Maithili Verses in English Translation)

...

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया देवी कुमारी

स्कन्ध (पृ. ६३८-६७४)

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

कल्यानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनुदित नाटक)

अनुश्री देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वस्त्र-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

प्रमिला मिश्रा

नामरस्मास कार्याते भ्रमन (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

सुस्मिता पाठक (सौजन्य- कदान कानन)

यनिचिति (कविता संग्रह)

कनाजात (कथा संग्रह)

नन्दिनी पाठक (सौजन्य- कदान कानन)

पाथनक शरुन (कविता संग्रह)

पन्ना झा (सौजन्य- नन्दू झा)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

गोसाउनिक गीत

नशामुक्ति हेतु गावी गीत

निनियाँ

यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

सुखल मन भसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सुखल मन भसल आँखि (कविता)

अंततः (कविता संग्रह)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा अकास (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४७९-५१२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)

प्रीति ठाकुर

(गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा-पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

रस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

७ बी सी डी- प्रकृति अपन साथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सभ खास अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बा ब्याउ बाट (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

नढ़ सरु (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छाट आ येघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(११) हमर यनिवान (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

याथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अवाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

किनक्ष चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-नाटी

आर्या कॉकयिट म

दीया कनमाकन- सही संतुलन म

जंगल म अहाँक स्वागत अछि

फूल छथि आकाश म

रैया क मुस्कान क चानीलक

बीज संचयक

अर्चिता कनय "रिवानाची"

(शौचालयक खिस्सा

लाल वनसारी

गुल्लीक जादुई यटी

समीनाक निक0 राजन

निनादु म जादुई छी

प्रियंका झा (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कौआ सकै छी, नदिया कs सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

वधी आ ववली

नीलिमा चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सरसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बूढ़ा नाचल नै छोड़ छै

गुलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा डा चाही!

मधुलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

डांघाऽत रीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सब संग सैर-घाँट

पूनम मण्डल

सूर्य कालक खिस्सा

....

राम इकबाल सिंह 'राकेश' (१९१२-१९९४) [सौजन्य- ई-पुस्तकालय]

मैथिली लोकगीत (१९४२, १९७७)

राज नारायण लाल 'शास्त्री' [सौजन्य- ई-पुस्तकालय]

मैथिली लोकगीतों का अध्ययन (१९६२)

डॉ शंकर कुमार झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा/ आर्काइव डॉट ओआरजी**)**

Vidyapati A Political Analysis

राधाकृष्ण चौधरी (१९२१-१९८७) (सौजन्य- प्रकाश कुमार चौधरी/ IGNCA-ASI)

मिथिलाक इतिहास

A Survey of Maithili Literature

The Political and Cultural Heritage of Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) (सौजन्य- काश्मीर रिसर्च इन्स्टीच्यूट लाइब्रेरी, आर्काइव डॉट ओआरजी, इण्डियन कल्चर डॉट जीओभी डॉट इन, साहित्य-अकादेमी डॉट जीओभी डॉट इन)

वृहत् मैथिली शब्दकोश भाग-१

A History of Maithili Literature Vol. I

Introduction to the Folk Literature of Mithila

Meet the Author

उपेन्द्र ठाकुर (१९२९-१९९१)[सौजन्य- डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इण्डिया/ IGNCA-ASI]

History of Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

सोमदेव (१९३४-२०२२) (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर')

आँगन सोमदेव विशेष

प्रभास कुमार चौधरी (१९४१-१९९७) (सौजन्य- अशोक)

सन्धान प्रभास विशेष

लल्लन प्रसाद ठाकुर (१९५३-१९९५) (सौजन्य- कुसुम ठाकुर)

लौंगिया मिरचाइ

नाटककार लल्लन प्रसाद ठाकुर समग्र रचनावली (५ टा नाटक, ४ टा एकांकी आ ३ टा गीति नाटिका सहित)

सुभाष चन्द्र यादव (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

नित नवल राजकमल

बनैत बिगड़ैत (लघुकथा संग्रह)

गुलो

गुलो (हिन्दी अनुवाद- रमेश कुमार सिंह)

रमता जोगी

मतन

भोट

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादक तारानन्द वियोगी आ केदार कानन)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

अशोक (सौजन्य- अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास)

चक्रव्यूह (कविता संग्रह) (१९८६)

त्रिकाल (कथा संग्रह) (१९८६)

ओहि रातिक भोर (कथा संग्रह) (१९९१)

मातवर (कथा संग्रह) (२००१)

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००७)

आँखिम बसल (यात्रा कथा) (२०१३)

बात-विचार (आलोचना) (२०१५)

ऊँतीगाम (कथा संग्रह) (२०१७)

अशोक-सलक्स (निबन्ध)

अशोक-नव कविता

नीक दिनक वाङ्स्काय (व्यंग्य संग्रह) (२०१८)

कथा-यात्रा (मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन) (२०२२)

प्रतिमान (सम्पादन)

निकष (प्रतिमान गोष्ठी- सम्पादक मोहन भारद्वाज)

सन्धान १ (सम्पादन)

सन्धान २ (सम्पादन)

सन्धान ३ (सम्पादन) प्रवास विशेष

सन्धान ४ (सम्पादन)

मुन्ना जी द्वारा साक्षात्कार (पृ. ३६२-३६७)

बनैत कम बिगड़ैत बेसी (पृ. २०२३-२०३१)

सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत (पृ. ११९-१२२)

रामलोचन ठाकुरक कविता यात्रा (पृ. ३२१-३४१)

केदार नाथ चौधरीक उपन्यास (पृ. १०१-१०६)

शरदिन्दुजी (पृ. १०-१३)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

रामदेव झा (सौजन्य- शंकरदेव झा/ योगानन्द झा)

सव्यसाची (अभिनन्दन ग्रन्थ)

मैथिली शब्द संचय

दृष्टि-नवीक वस्तु कौशल

संकल्प अंक-७ (सम्पादक डॉ रामदेव झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा/ आर्काइव डॉट ऑर्ग**)**

कुरल: मैथिली भावानुवाद (मूल तमिल आदि-कवि तिरुवल्लुवर)

टूटल पाँखि (खलील जिब्रानक उपन्यास 'द ब्रोकन विंग्स'क मैथिली अनुवाद)

किछु पुरान गद्य, किछु नव गद्य (कथा संग्रह)

अनुपम मिश्र पोतकास्त्र जयीसात ४० कीर्तिनाथ झा

आशीष अनचिन्हार

संदर्भ सहित (गजल-आलोचना)

कुमारि इच्छा (गजल संग्रह)

ठँघाजाठी (गजल संग्रह)

अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह)

मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास

मैथिली नव पत्रकारिताक इतिहास (अनुलग्नक: अंतिका आलेख:अंतर्जाल आ मैथिली: गजेन्द्र ठाकुर)

मैथिली गजलक गती सकातन

शब्द-अर्थ-शक्ति

स्वर्णप्रभा- अनचिन्ह ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (विदेह अनचिन्ह ठाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप)[सम्पादन]

डॉ. योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य १९८६

संकल्प अंक-१ (सम्पादक डॉ. नामदत्त झा, सहायक सम्पादक डॉ. योगानन्द झा) १९८८

आलेख सञ्चयन २००२

मैथिली शाक्त साहित्य- शास्त्रीय रागनी गीत (सम्पादन) २००२

मैथिली पत्रकारिता क सौ वर्ष २००६

लोक, साहित्य आ शब्द-सम्पदा २००१

गहवन गीत (संकलन-सम्पादन) २००१

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९

कथा-लोककथा २०१०

कपिलदेव ठाकुर 'मधुलता' कृत सीतानतानन्द (सम्पादन) २०११

मंगल-प्रभात गाँधीजी (अनुवाद) २०१३

टान-टान (डॉ ए. कीर्तिवर्द्धनक हिन्दी कविता संग्रहक अनुवाद) २०१४

तारानन्द वियोगी (सौजन्य- तारानन्द वियोगी/ सुभाष चन्द्र यादव)

प्रलय रहस्य (कविता संग्रह)

अतिक्रमण (कथा संग्रह)

Between the Two Dams (English Translation by Prabhat Jha)

जैसे अँधेरे में चाँद (हिन्दी अनुवाद- अनुस्वार सौरभ)

बखान का पद्य (जीवकान्त)- (अतिथि सम्पादक तारानन्द वियोगी)

राजकमल-जीवन क्या जिया (पृ. १६४-२१४)

महिषी की तारा

बुद्ध का दुख जैन मना (हिन्दी अनुवाद- अविनाश)

तुमि चिर सारथि (हिन्दी अनुवाद- केदार कानन/ अविनाश)

तारा-चालीसा

ड्डी टोल गाँ की टोल

साखी (मैथिली दलित-कविता)

कवीन आ हुनक मैथिली पदावली

धराशायी हेबाक समय (कविता आ कविता काल)

दुनिया घर मेहमान (प्रेम कविता)

अयन यूथक साझ (गजल संग्रह)

छियानबे (कथा संग्रह)

बहुवचन (आलोचना)

गुलः कला आ रोथा (सम्पादन)

सुधांशु शेखर चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

शेखर नवीन गजल ओ गीत

शरदिन्दु चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

ॐ हम जनितहुँ (२००२)

बड़ अजगुत देखल (२००७)

गोबरगणेश (२०११)

कनिया कक्काक कानामिन (२०१६)

बात-बातयन बात खण्ड-१ (२०१९)

मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातयन बात खण्ड-२) (२०२०)

हमर अपराधः हुनक नहि दोष (बात-बातयन बात-३) (२०२१)

साओन (बात-बातयन बात-४) (२०२१)

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

काशीकान्त मिश्र मधुप

विदेह काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

राजनन्दन लाल दास

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

प्रमिला मिश्र प्रेम

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

मायानन्द मिश्र (सौजन्य- केदार कानन)

अवांतर (गजल-गीतल)

कलानन्द भट्ट (सौजन्य- केदार कानन)

कान्ह पर लहास हमर मैथिली गजल संग्रह

अनुलग्नक-कासी कॉलोनी सँ किशन कुटीर धरि

रामकृष्ण झा 'किसुन' (सौजन्य- केदार कानन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादक केदार कानन आ रमण कुमार सिंह)

किसुन समग्र-२ (सम्पादक केदार कानन आ रमण कुमार सिंह)

मैथिलीक नव कविता (सम्पादन)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादक महेन्द्र आ केदार कानन)

केदार कानन (सौजन्य केदार कानन/ CIIL/ सुभाष चन्द्र यादव)

अऊ पर नवीन (संस्मरण: जीवकान्तक पत्रक बहाने)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

गुला: कला आ राखा (सम्पादन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादन)

किसुन समग्र-२ (सम्पादन)

अपना नगरि म (सम्पादन)

सृजन कर दीप पर्व (सम्पादन)

रानी मंडन अंक-१६ (सम्पादन)

महेन्द्र (CIIL/ केदार कानन)

ड्रआयल कनकनी

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

बाबा बैद्यनाथ (सौजन्य- बाबा बैद्यनाथ)

पहना ॐमानयन (गजल संग्रह)

अनविह्न Oाकुर (सौजन्य- अनविह्न Oाकुर/ CIIL)

यनती टूटि नहल अछि (कविता संग्रह)

सवद मितानथ धाया (कविता संग्रह)

उ७ाक प्रतिवाद म (साहकन-दीOक आत्मकथा गाथा- दीर्घ कविता)

वहुनुयिया प्रदेश म (गजल संग्रह)

मीन तुलसीयात यन (गजल संग्रह)

अज्ञानक विरोध म (लघु कथा संग्रह)

नाशनाक लाकयऊ (कथेतर गद्य)

सृजन कन दीय पर्व (सम्पादन)

विदेह अनविह्न Oाकुर विशेषांक

स्नांप्रवना- अनविह्न Oाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार)

[विदेह अनविह्न Oाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप]

नन्द्र मा (सौजन्य- नन्द्र मा)

चयल चनन चित चंचल रान

विकास ऊ अर्थतंत्र

Mthila Rising

नाजश्नन मा (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

मिथिलाञनक उद्गन ऊ विकास

सन्द्र मा सुमन (आर्काइव तोट कोम)

दत्त-वती (मूल)

गोविंद झा ((IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

प्रो. शैलेन्द्र मोहन झा (आर्काइव डॉट कॉम/ CIIL)

परिचय निचय

मैथिली गद्य संग्रह- सं

रमानाथ झा (CIIL Site **आर्काइव)**

प्रबन्ध संग्रह

रमानाथ मिश्र "मिहिर" (आर्काइव डॉट कॉम)

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश

आनन्द मिश्र (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

श्यामानन्द झा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मैथिली गीत वल्लिका

मैथिली संदेश (विभिन्न कविक कविता-सम्पादित)

पं. लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

रत्नग्रीवानन्द ओझा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

पदावली

गणनाथ-विश्वनाथ पदावली (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

गणनाथ-विश्वनाथ पदावली

रूपनारायण झा "राकेश" (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मनमोहन लड्डू

राजा लाल दास (आर्किटेक्ट जीत कोम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

खड्ग बल्लभ दास 'स्वजन' (सौजन्य- रमानन्द दास "रमि")

सीता-शील

डॉ. मदनेश्वर मिश्र (सौजन्य- यशोकान्त विद्यानन्द झा)

एक छलीह महारानी

यात्री (नागार्जुन) (सौजन्य- मिथिला सांस्कृतिक परिषद)

बलचनमा

कालीकान्त झा "बुच"

कलानिधि- कविता-संग्रह

उपेन्द्रनाथ झा "व्यास" (सौजन्य- मयंक झा)

रुबाइयात-ए-उमर खैयाम (मैथिली पद्यानुवाद)

प्रतीक (कविता संग्रह)

संन्यासी (काव्य)

रमेश नारायण (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

पाथरक नाव (लघुकथा संग्रह)

गोपालजी झा "गोपेश" (सौजन्य- गोपालजी झा "गोपेश")

गुम्म रहल 018 डी

विजय नाथ झा (सौजन्य- विजय नाथ झा)

अहींक लेल (गीत-गजल संग्रह)

कामायनी (अनुवाद)

नरेन्द्र कुमार (सौजन्य- प्रसन्न कुमार झा)

ससनहानी

प्रबोध नारायण सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

अहीन नगरी (अनुवाद)

चयनिका (सम्पादन)

वैजयन्ती (कविता)

हाथीक दाँत

टटका गप (सम्पादित कथा संकलन)

प्रेमक ताग (नाटक)

मानक मैथिली (हिन्दी शोध प्रबन्ध)

अमरनाथ (सौजन्य- अमरनाथ)

ऊधिका- विहनि कथा संग्रह

प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

पंचदशायासक भूमि मिथिला ई. १००१-१०८०

डॉ. गंगेश गुंजन (सौजन्य- गंगेश गुंजन)

गाथा (१-३०) ई. १३१३-१३८०

प्रथम-चौबटिया-नाटक *(बुधिबधिया)*

नाटक आङ्न स्नान

कथा-संग्रह उचितवक्ता

गीत-गजल दुखक दुपहरिया

कमलधन दास (सौजन्य- कमलधन दास)

मैथिल कर्ण कायस्थक (गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध

कीर्त्तिनारायण मिश्र (सौजन्य- कीर्त्तिनारायण मिश्र)

ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप

सीमान्त

आदमीकेँ जोहैत

अयन एकान्त म

स्मृतियात्राक एकान्तम

राजनाथ मिश्र

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

प्रेमशंकर सिंह (सौजन्य- प्रेमशंकर सिंह/ मिथिला दर्पण प्रकाशन)

मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

विद्यापति कृत व्याडीभक्तितरङ्गिणी (सम्पादन)

डॉ. रमण झा (सौजन्य- रमण झा)

मैथिली काव्य अलङ्कार

अलङ्कार-भास्कर

मैथिली काव्य शास्त्र

छिन्न-अछिन्न

अभिनन्दन-पत्र (खण्ड काव्य)

पारिजात-मञ्जरी

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण"/ CIIL Site **आर्काइव)**

हिआउल

सगर राति दीप जरय

चाङ्गु आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

आखियासल

केदार नाथ चौधरी (सौजन्य- केदार नाथ चौधरी)

चमेलीरानी

मादून

कनान

अबाना नदिगन

अयना

हीना

विदेह कदान नाथ चौधरी विशेषांक

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बातकही

विज्ञानक बातकही भाग-२

जनक विजय (सम्पूर्ण)

जनक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

विनाशितक दर्शन

अकटा मिसिया (कथा संग्रह)

गावार (अनूदित सार्जस-रिकान नाटक)

किछु गीत मधुर (यात्रा वृत्तांत)

सुशील (सौजन्य- सुशील)

घनाठी (उपन्यास) (१९७३)

गामवाली (उपन्यास) (१९८२)

भामती (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३)

अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६)

कामेश्वर झा 'कमल' (सौजन्य- नवीनानारायण मिश्र)

कमल-ताल (गीत संग्रह)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

जे कहब साँच कहब

आँखि मूनने आँखि खोलने (संस्मरण)

स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरण)

अपूर्णा (कविता संग्रह)

इतिहासहन्ता (कविता संग्रह)

देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता संग्रह)

लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता संग्रह)

प्रतिध्वनि (विदेशी भाषाक कविताक मैथिली अनुवाद)

पद्मानदीक माझी (अनूदित उपन्यास)

मैथिली लोककथा

आजुक कविता (सम्पादित कविता संग्रह)

बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य)

रसिल बयना (अनुवाद)

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

डॉ. देवशंकर नवीन (सौजन्य- देवशंकर नवीन)

आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

डॉ बचेश्वर झा

निबन्ध-निकुञ्ज

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

आँखिमे चित्र हो मैथिली केर (आत्मकथा- जानी)

धारक ओहि पार (दीर्घ कविता)

गीत गंगा (गीत संग्रह)

गजल गंगा (गजल संग्रह)

गाना अंगना म (गीत संग्रह)

गाना अंगना म (गीत संग्रह)- मूल

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

राज किशोर मिश्र

बानगि (कविता संग्रह)

सप्तपदी (कविता संग्रह)

नवीन्द्र नारायण मिश्र (सौजन्य- नवीन्द्र नारायण मिश्र)

भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा)

प्रसंगवश (निबंध)

स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग)

हसाद (कथा संग्रह)

नमस्तस्यै (उपन्यास)

विविध प्रसंग (निबंध)

महराज (उपन्यास)

लजकाटर (उपन्यास)

सीमाक ओहि पार (उपन्यास)

समाधान (निबंध संग्रह)

मातृभूमि (उपन्यास)

स्वप्नलोक (उपन्यास)

शंखनाद (उपन्यास)

दुःख थिक जीवन (संस्मरण)

ढहैत देवाल (उपन्यास)

पाथेय (संस्मरण)

हम आबि रहल छी (उपन्यास)

प्रलयक परात (उपन्यास)

बीति गेल समय (उपन्यास)

प्रतिबिम्ब (उपन्यास)

बदलि रहल अछि सभ किछु (उपन्यास)

राष्ट्र मंदिर (उपन्यास)

संयोग (कथा संग्रह)

नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

दीप जरैत रहए (उपन्यास)

ठेहा पथक मौलाएल गाछ (उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

गामघर (कथा संग्रह)

सुजाता (उपन्यास)

महारानी कैकयी (प्रस्तावनात्मक निबन्ध)

गुदरीक लाल (उपन्यास)

अनठिया कुकुर (उपन्यास)

आत्मन (कथा संग्रह)

दिल्लीक पार्क (शब्द चित्र)

सुकन्या (उपन्यास)

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

काव्य सरिता (मैथिली काव्य संग्रह)

परिवार (संस्मरणात्मक उपन्यास)

पावक क नहि (मैथिली शब्द-चित्र)

सत्यानन्द पाठक (सौजन्य- सत्यानन्द पाठक)

हमर गाम (उपन्यास)

डॉ. उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (सौजन्य- नचिकेता)

नो एण्ट्री : मा प्रविश

आस्फालन

एक छल राजा

जनक आ' अन्यान्य एकांकी

नाटकक लेल

नायकक नाम जीवन

प्रत्यावर्तन

रामलीला

प्रियंवदा (एकांकी)

नचिकेता विविध (मैथिली, बांग्ला, हिन्दी आ अंग्रेजी)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाई १९६९)

मिथिला दर्शन मार्च २०२१

मिथिला दर्शन नवम्बर २०२१

रवि भूषण पाठक

रिहर्सल (नाटक)

विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)

विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ नीति सुधा पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

विदेह:सदेह २९ (नीति सुधा पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)

कुमार मनोज कश्यप

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)

डॉ. शम्भु कुमार सिंह

(तुकाराम गाथा (मराठी कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद डॉ शम्भु कुमार सिंह द्वारा) पाखला

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनूप कुमार सिंह अंक १-३७० सँ)

डॉ. अनूप कुमार सिंह

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनूप कुमार सिंह अंक १-३७० सँ)

कुमार पवन (सौजन्य- अंशिका)

पचास (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

डायरीक खाली पन्ना

कमल रानबाज

अजगुत अफ्रीका (अफ्रीका डायरी) पृ. २१४-४६६

किछु पढ़ल आ किछु सुनल- ज़्रीदी अमीन पृ. ४६८-७४८

खलौना पृ. ४६१-४८१

पैवह पृ. १४९-१९८

किछु कथा १०-४६३

गोपाल झा 'अभिषेक' (सौजन्य- गोपाल झा 'अभिषेक')

आठ स्वप्न सामी करी (कविता संग्रह)

आमोद कुमार झा (सौजन्य- आमोद कुमार झा)

विम्बक पथार (कविता संग्रह)

किशन कारीगर (सौजन्य- किशन कारीगर)

किछु रूना (गल हमना

मुन्नाजी

मकाम दिस (बीहनि कथा संग्रह)

प्रतीक (बिहनि कथा संग्रह)

माँझ आंगनमे कतिआएल छी (मैथिली गजल संग्रह)

हम पुछैत छी (साक्षात्कार)

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

घाह (हाइकू-टंका संग्रह)

संदीप कुमार साफी

वैशाखमे दलानपर (पहिल मैथिली दलित आत्मकथा सहित)

ओम प्रकाश झा

किया बुझि नै सकल हमरा (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह)

अमित मिश्र

नव अंशु (गजल-हजल, रुबाइ संकलन)

चन्दन कुमार झा

मानक भाग (गजल, हजल,बाल गजल, रुबाइ आ कताक संकलन)

डॉ. अनमोल झा

समय साक्षी थिक (विहनि कथा संग्रह)

ई ओ समय अछि (विहनि कथा संग्रह)

विनय भूषण (सौजन्य- आशीष अनचिन्हार)

उजरा परबाक खोज (कविता संग्रह)

आनन्द कुमार झा

टाकाक मोल (नाटक)

कलह (नाटक)

बदलैत समाज (नाटक)

धधाइत नवकी कनियाँक लहास (नाटक)

हठात् परिवर्तन (नाटक)

मुक्ति यात्रा (नाटक)

शिव कुमार झा "टिल्लू"

क्षणप्रभा-कविता-संग्रह

अंशु-समालोचना

हरांशु नस

नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कौमिक्स)

डॉ. विनीत उत्पल

हम पुछैत छी (कविता संग्रह)

रेहन पर रग्घू - काशीनाथ सिंह हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद

मन्त्रद्रष्टाऋष्यशृङ्ग- लेखक हरिशंकरश्रीवास्तव "शलभ" (हिन्दीसं मैथिली अनुवाद विनीत उत्पल द्वारा)

मोहनदास- उदय प्रकाशक हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी) मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर) मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

नढ़िया पुकैत हमर घराडीयर (गजल संग्रह)

तोहर कतक रंग (विहनि कथा संग्रह)

बानहा- (बाल उपन्यास)

व्यथा- (कविता-गीत संग्रह)

राजदेव मण्डल

अम्बरा-कविता-संग्रह

हमर टोल (उपन्यास)

बसुंधरा(कविता संग्रह)

झाल (पटकथा)

लाज (एकांकी)

जल रंगन (उपन्यास)

त्रिवर्णीक रंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

पंचैती (लघु पटकथा)

नायसी

Rajdeo Mandal- Maithili Writer by Gajendra Thakur

दुर्गानन्द मण्डल

संचयिका

कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

चञ्चु

राम विलास साहु

अंकुर- लघुकथा संग्रह

रथक चक्का उलटि चलै बाट (कविता/ टनका संग्रह)

कर्म विनु जग सूना (दासन कविता/ टनका संग्रह)

फूलक खिचड़ी (विहनि/ लघु कथा संग्रह)

दुधवचनी (लघु कथा संग्रह)

मनक मैल

नारायण यादव (सौजन्य- उमेश मण्डल)

खाली घर

रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"

हमरा विनु जगत सूना छै

गीतांजलि झारू

कपिलेश्वर राउत

उलहन (विहनि - लघु कथा संग्रह)

नंद विलास राय

सखारी-पटारी(लघुकथा संग्रह)

मदन अमन (दासन लघु कथा संग्रह)

मनजादक राज (गसन लघुकथा संग्रह)

हनदुतिया

छडिक ताला

हमन चानुधाम

असल पूजा

ललन कुमार कामत (सौजन्य- उमेश मण्डल)

किछु विहनि आ लघुकथा

उमेश पासवान

नर्मिा नस

वचन ठाकुर

बटीक अपमान आ छीननन्दनी (नाटक)

बाप हल पिन्ही आ अधिकार (नाटक)

विसवासघात (नाटक)

ऊँच-नीच (नाटक)

साँट (नाटक)

डॉ. उमेश मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण)

अयन्दन (संकलन-सम्पादन)

हनुवृक सँ हसवृक धरि (संकलन-सम्पादन)

जाग न जाग कवि जाग जाग अनुरागी (संकलन-सम्पादन)

निर्विकल्प (संकलन-सम्पादन)

समस्या सँ समाधान धरि (संकलन-सम्पादन)

निश्छली- कविता संग्रह

मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन)

मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

सगर राति दीप जरय- इतिहास

सगर राति दीप जरय- आशीष कुमार राउल

दूध-पानि रुनाक-रुनाक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

हिन्दुस्तानी मुसलमान आ़ैर हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीतेश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल

उमेश मण्डल द्वारा मैथिली लेखकक रचना संसारसँ वीडियो विचारक पोस्टरक पोथी

जगदीश प्रसाद मण्डल राजेन्द्र मण्डल डॉ. शिव कुमार प्रसाद रामदेव प्रसाद मण्डल "झारुदार" राम विलास साहु नन्द विलास राय कपिलेश्वर राउत शंभु कुमार सिंह

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ श्रमदान गीत (उमेश मंडल :सौजन्य)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43

अन्तर्ध्वनि चयन -(गोट वीडियो कथा जगदीश प्रसाद मण्डलक १७) (उमेश मण्डल -एनम् सम्पादन

....

जगदीश प्रसाद मण्डल

गामक जिनगी (लघुकथा संग्रह)

मिथिलाक बेटी (नाटक)

मौलाइल गाछक फूल (उपन्यास)

जिनगीक जीत (उपन्यास)

उत्थान-पतन (उपन्यास)

जीवन-मरण (उपन्यास)

जीवन-संघर्ष (उपन्यास)

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

पंचवटी (एकांकी-संचयन)

अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुरक्षा.. रामक सिनेह इत्यादि (लघुकथा संग्रह)

कम्प्रोमाइज (नाटक)

झमेलिया बिआह (नाटक)

इन्द्रधनुषी अकास (पद्य संग्रह)

शंभुदास (तीनटा दीर्घ कथा मइटुआन, शंभुदास आ फाँसी)

गीतांजलि (गीत संग्रह)

राति-दिन (कविता संग्रह)

सतभैंया पोखरि (लघु कथा संग्रह)

तीन जेठ एगारहम माघ (गीत संग्रह)

बजन्ता-बुझन्ता (विहनि कथा संग्रह)

रत्नाकर डकैत (नाटक)

बड़की बहिन (उपन्यास)

एकमाड़ (लघुकथा संग्रह)

उलबा चाउर (लघुकथा संग्रह)

सरिता (कविता संग्रह)

सुखाएल पोखरिक जाइठ (गीत संग्रह)

नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)

स्वयंवर (नाटक)

पतझाड़ (लघु कथा संग्रह)

फलहार (लघु कथा संग्रह)

गामक शकल सूरत (लघु कथा संग्रह)

लजबिजी (लघु कथा संग्रह)

वटसन काका (लघु कथा संग्रह)

आमक गाछी

अपन गाम

दिवालीक दीप

पंचदन सीरीज

पंचदन-१ पंचदन-२ पंचदन-३ पंचदन-४ पंचदन-५ पंचदन-६ पंचदन-७ पंचदन-८ पंचदन-९ पंचदन-१० पंचदन-२० पंचदन-३० पंचदन-४० पंचदन-५० पंचदन-६० पंचदन-७० पंचदन-८० पंचदन-९० पंचदन-१००

दूध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ (Videha_01_09_2017) सँ २५० (Videha_15_05_2018) धरि अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

VIDEHA_233	VIDEHA_234	VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238
VIDEHA_239	VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244
VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249	VIDEHA_250

पंगु (उपन्यास)- साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार २०२१ सँ सम्मानित पोथी

पंगु (हिन्दी अनुवाद नारायण प्रसाद मण्डल)

अप्पन साती (लघुकथा संग्रह)

मा3यन (उपन्यास)

सुचिता (उपन्यास)

सरन्हा सरन्ह नहि गेल (लघुकथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

उठि न सकी पत विठै ढी हम (भाग १-२) (पृ. १०७४-१०९७)

खिस्सा अन्टार्कटिका केर (पृ. १०७४-१०९७)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१७)

बाल कविता (पृ. १००४-१११३)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४१-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८७०)

....

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (शान्तिलक्ष्मी पूर्व)

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

तेलुगु कथा आ उड़िया, तेलुगु, गुजराती, राजपूती आ कश्मीरी कविता

तेलुगु कथा आ डोगरी, तेलुगु, गुजराती, राजस्थानी आ कश्मीरी कविता (मिथिलाक्षर)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-१

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम अन्तर्मनक-२)

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (भाग-२, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-८) (संक्षिप्त)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (मिथिलाक्षर)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (कैथी)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (नेवारी)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (IPA)

दुखद पञ्जी- The Black Book

दुखद पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)

पर्वत ठयन रमना ओ सूतल (वीहनि, लघु आ दीर्घ कथा संग्रह)

पर्वत ठयन रमना ओ सूतल (मिथिलाक्षर)

पर्वत ठयन रमना ओ सूतल (कैथी)

पर्वत ठयन रमना ओ सूतल (नेवारी)

पर्वत ठयन रमना ओ सूतल (IPA)

स्वप्नम मिथ्यान ह्ठ्ठत

The_Science_of_Words

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (हिन्दी अनुवाद नारायण प्रसाद मण्डल)

गंगा ब्रिज (नाटक)

उल्कामुख (नाटक)

संकर्षण (नाटक)

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ (रुबाइ, कता आ गजल संग्रह)

सहस्रजित् (पद्य संग्रह)

सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह)

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दूटा गीत प्रबन्ध)

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)

सहस्रबाढ़नि_ब्रेल-मैथिली (मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी)

सहस्रशीर्षा (उपन्यास)

गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह)

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

देवनागरी वर्सन मिथिला वर्सन ब्रेल वर्सन

Learn Maithili Sign Language

Learn Mithilakshar Script

Learn Braille through Mithilakshar Script

Learn International Phonetic Script through Mithilakshar Script

Learn Kaithi

Learn Newari

Learn Calligraphic Newari (Ranjana)

Learn Urdu Script

Learn Tibetan Script

Learn Japanese Script for Haiku

Learn Brahmi

Learn Kharoshthi

मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाढ़क बढ़ौना (बाल-पद्य संग्रह)

नाराशंसी (गीत-प्रबन्ध)

मवङु (नाटक)

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

२८ जाजव झा (मैथिलीक 2012 म प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन ड्रामा- *Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक रगगा

गनरुनिम यनीलाक

वसी छुट्टी कम ००सकुल

व७द कनै७ दाउन न यो

वाल गजल

रिुनिश ला००न

अनुदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ नति रुपक याठकक आन भाषासँ अनुदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)

वाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाई कन यनिनिनकानी नवका

(सब ४० टा वाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुनु	घन सर	एकटा नीक दिन	चलु हम गँ ठीक छी ना!	की अहाँ ओ चिड़े सरकेँ देखन छी?
टाल	बौटा! कनियटा!	ओ८ हम सर नहि छी	रानगालक नाजकुमानी	रानगालक नाजकुमानी (बिनु शब्दक)
नुया	कवकव- कवाक	चुन्नमुन्नक- नहनाई	नना ज वेलुनसँ उनाइन छल	अद्भुत रिखानावी अंक-शृंखला
हानु	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उसव राज	मार नाजा यागन-दुबा कुका	बचिया ज अयन हँसी नै नाकि सकौं छलि
अंग्रेजी	हम सुधि सकैं छी	छाट लाल-टुहटुह जनी	कनु नीक, रागु नीक	ई सरटा बिलाजिक दाख अछि!
चारा आम!	हमन टालक बाट	जखन ईकरु स्कूल गेल	माछी रुन आउ टाटा!	अमावीक झलुम मशीन सर
टिंग टांग	याउथाउ--नाह	कुकुरक एकटा दिन	हमना नीक लगैए	नीगाक नव-स्कूलम पहिल दिन
कनी हँसियौ ना!	लाल वनसाती	रुपाक नाग्रशाला-	आउ यउन गानी	कार८ अछि ई अंक ११?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग चीत-अलाउड □तिया बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसोमात कें पनिचर्चनकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गाँ ठीक छी ने!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सए)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- गाइड बुक

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव आ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास मिलकसम छथि आ समय कवि चतुर चतुर्भुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतय समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू लेखक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक स्थानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरम ध्यान आउत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ छाँटी मैथिलीम प्रश्नोत्तर लिखबाम धारा आस्ते-आस्ते स्वयं होयत, लेखनीम प्रवाह आयत आ सूक्ष्म भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न- प्रथम पत्र- लोकक गाथाम समाज आ संस्कृति)

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न- द्वितीय पत्र- मैथिली नाटक)

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-७

(मैथिली आ दोसर पूर्वी भाषा सभक बीचक सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ उड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-"ए", क्रम-६])
[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ राजपूती/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]
मैथिली

बांग्ला

असमिया

उड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01- गजेन्द्र ठाकुर
NTA_UGC_NET_Maithili_02- गजेन्द्र ठाकुर
Test Series-1- गजेन्द्र ठाकुर
Test Series-2- गजेन्द्र ठाकुर
GS (Pre)
Topic 1 - गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-२९ www.videha.co.in
विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ

गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन	
देवनागरी	**मिथिलाक्षर**
विदेह:सदेह १:	विदेहतिरहुता सदेह १ :
विदेह:सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना	विदेह: सदेह २ तिरहुता
विदेह:सदेह ३ मैथिली पद्य	विदेह: सदेह ३ तिरहुता
विदेह:सदेह ४ मैथिली कथा	विदेह: सदेह ४ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]	विदेह: सदेह ५ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५२-संस्करण -[	विदेहतिरहुता २-संस्करण सदेह ५ :
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]	विदेह: सदेह ६ तिरहुता
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]	विदेह: सदेह ७ तिरहुता
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]	विदेह: सदेह ८ तिरहुता
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]	विदेह: सदेह १० तिरहुता
विदेहसदेह ११:	विदेहतिरहुता सदेह ११ :
विदेहसदेह १२:	विदेहतिरहुता सदेह १२ :
विदेहसदेह १३:	विदेहतिरहुता सदेह १३ :
विदेहसदेह १४:	विदेहतिरहुता सदेह १४ :
विदेहसदेह १५:	विदेहतिरहुता सदेह १५ :
विदेहसदेह १६:	विदेहतिरहुता सदेह १६ :
विदेहसदेह १७:	विदेहतिरहुता सदेह १७ :
विदेहसदेह १८:	विदेहतिरहुता सदेह १८ :
विदेहसदेह १९:	विदेहतिरहुता सदेह १९ :
विदेहसदेह २०:	विदेहतिरहुता सदेह २० :
विदेहसदेह २१:	विदेहतिरहुता सदेह २१ :
विदेहसदेह २२:	विदेहतिरहुता सदेह २२ :

विदेहसदेह २३:	विदेहतिरहुता सदेह २३ :
विदेहसदेह २४:	विदेहतिरहुता सदेह २४ :
विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ तिरहुता
विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५० सँ- थीम आधारित मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन*	
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनुपम कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि कृष्ण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह) सदेह २८:अनूदित गद्य आ पद्य-अंक १ -३५० सँ(	विदेह: सदेह २८ तिरहुता
विदेह:सदेह २९ (रवि कृष्ण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३५० सँ)	विदेहतिरहुता सदेह ३० :
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता
विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

....

यु.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३७

....

Videha-Sadeha

भाषापाक -विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

विदेह पूर्वक अंकक आर्काइव

Videha 1-50

Videha 51-100

Videha 101-149

Videha 150-250

Videha 251-Onwards

Audio Archive Folder

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

Videha Old Issues Folder

Videha Classical Sites Folder

....

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन)

मैथिलीक प्रतिनिधि गजल

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)

....

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)

जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध

जेनेयोलोजिकल मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-२

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

MAITHILI-ENGLISH DICTIONARIES

Maithili-English Dictionary Vol.I

Maithili-English Dictionary Vol.II

ENGLISH-MAITHILI DICTIONARIES

Videha English Maithili Dictionary

English-Maithili Computer Dictionary

....

दिनेश कुमार मिश्र (सौजन्य दिनेश कुमार मिश्र)

बंदिनी महानंदा

बागमती की सद्गति!

दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी)

न घाट न घर

बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी

गंडकी नदी और तकनीकी मात-झूक

The Kamla River and People On Collision Course

Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft

Refugees of the Kosi Embankments

....

पत्रिका-जर्नल-म्यागजिन

मिथिला मिहिर (मिथिलाङ्क) १९३६ (सौजन्य- सुनील झा सुमन/ रमानाथ झा)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (सौजन्य- नचिकेता)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाई १९६९)

कौशिकी (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

कौशिकी (१९७१-७२)

दलित चेतना (अखबार) (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

दलित चेतना (अखबार)

मिथिला दर्शन (सौजन्य- नचिकेता)

मार्च २०२१

नवम्बर २०२१

Society Today (सौजन्य- सुमित आनन्द)

अंक ११

संकल्प (सौजन्य- योगानन्द झा)

अंक ७ १९८८

अंतिका (सौजन्य- (गौरीनाथ)

जुलाई-सितम्बर २००८ (हरिमोहन झा विशेषांक) अक्टूबर २०१०सँ मार्च २०११ अक्टूबर २०११ सँ मार्च २०१२

स्रानी मंतन (सौजन्य- कदान कानन)

𑒁𑓀𑒏-𑓑𑓖

𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨- 𑒁𑒬𑒼𑒏)

𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑓑

𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑓒

𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑓓 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭

𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑓔

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒑𑒢 (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨 𑒧𑒳𑒏𑒹𑒬 𑒠𑒞𑓂𑒞)

𑒁𑒣𑓂𑒩𑒻𑒪-𑒮𑒱𑒞𑒧𑓂𑒥𑒩 𑓒𑓐𑓒𑓒

𑒧𑒻𑒪𑒰𑒢𑓀𑒑 (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨- 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒗𑒰)

𑒁𑓀𑒏𑓒-𑓓

𑒡𑒴𑒁𑒰-𑒡𑓂𑒫𑒖𑒰 (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨- 𑒒𑒢𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒏𑒰𑒨𑒮𑓂𑒟)

𑒁𑓀𑒏 𑓑 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓔 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓗 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓖 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓘 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓐 𑒖𑒴𑒢 𑓒𑓐𑓑𑓒 𑒁𑓀𑒏 𑓒𑓔 𑒖𑒴𑒢 𑓒𑓐𑓑𑓒 23February2016 𑓒𑓗 𑒖𑒳𑒪𑒰𑒃 𑓒𑓐𑓑𑓒 𑓐𑓗 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓑𑓒 𑒂𑒮𑒱𑒢 𑓒𑓐𑓑𑓓

𑒮𑓂𑒧𑒰𑒩𑒱𑒏𑒰 (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨- 𑒢𑒰𑒧𑒮𑓂𑒧𑒰𑒮 𑒏𑒰𑒨𑒮𑓂𑒟 𑒁𑒧𑒢)

𑒮𑓂𑒧𑒰𑒩𑒱𑒏𑒰 (𑓒𑓐𑓑𑓐)

𑒂𑓀𑒑𑒢 (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨- 𑒢𑒰𑒧𑒮𑓂𑒧𑒰𑒮 𑒏𑒰𑒨𑒮𑓂𑒟 𑒁𑒧𑒢)

𑒂𑓀𑒑𑒢 𑒁𑓀𑒏-𑓔 (𑓒𑓐𑓑𑓒) 𑒮𑒪𑒯𑒹𑒮 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

𑒂𑒿𑒓𑒢 (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨- 𑒢𑒰𑒧𑒮𑓂𑒧𑒰𑒮 𑒏𑒰𑒨𑒮𑓂𑒟 𑒁𑒧𑒢)

𑒂𑒿𑒓𑒢 (𑒁𑓀𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓓𑓖, 𑒁𑓀𑒏 𑓓) 𑒮𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭

𑒑𑒰𑒧𑒒𑒩 (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨- 𑒢𑒰𑒧𑒮𑓂𑒧𑒰𑒮 𑒏𑒰𑒨𑒮𑓂𑒟 "𑒁𑒧𑒢")

𑒑𑒰𑒧𑒒𑒩-𑓓𑓐-𑓐𑓘-𑓒𑓐𑓑𑓘

𑒑𑒰𑒧𑒒𑒩-𑓐𑓔-𑓑𑓐-𑓒𑓐𑓑𑓘

गामघर-१६-०७-२०१९

गामघर-२१-०६-२०१९

दुखमोचन- (नेपाली आ मैथिलीमे) (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

घर-बाहर (सौजन्य- चेतना समिति)

अप्रैल-जून २०११

नवचा (सौजन्य- सुरेश चन्द्र यादव)

दिसम्बर "०७ मार्च "०६राजकमल चौधरी: मोनाक्षर

पल्लव (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

पल्लव- १ गजल अंक

पूर्वोत्तर मैथिल (सौजन्य- प्रेमकान्त चौधरी)

अप्रैल-जून 2010 जुलाई-सितम्बर 2010 जनवरी सँ मार्च 2011 अप्रैल-जून २०११ जुलाई-सितम्बर २०११

लालदास स्मरणांजलि स्मारिका २०२२ (सौजन्य डॉ संजीव शमा)

....

किछु मैथिली पाथी डाउनलोड साइट (डायरेक्ट साइट्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

Sahitya Akademi

प्रकाशन

डिजिटल-पोथी

CIIL

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

ढआयल कनकनी- मल्हु

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलवस)

सृजन कर दीप पर्व- सं कदान कानन आ अनिरुद्ध ठाकुर

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

Archive.Org (विजयदेव झा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान रत्नाकर

मिथिला दर्शन

गीतगुक्ति

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI-English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ष्तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

याथी डॉट कॉम

I Love Mithila (ऐप डाउनलोड लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mithila

ध्यान मैथिल चैनल- विनय चौधरी आ संगीता आनन्द

मिथिला चैष्टन

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

....

JNU

मैथिली

मैथिली लेक्सिकन

....

Videha e-Learning YouTube Channel

....

विदेह सम्मान: **सम्मानसूची**- (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीतनाटक अकादेमी - (पुरस्कार नामसँ विख्यात /सम्मान

....

मैथिलीक वर्नी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रतीत होइत अछि, से एकर एकरा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, भाव धनि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पपेर लेल सेहो इग्नू पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पपेर लेने छथि से एकरा एकटा आन हाइ-लाइटिंग टेस्ट-उदाहरण करथि।

IGNOU इग्नू *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

३. मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन Maithili Audios-Videos

विदेह ऑडियो-वीडियो

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Audio-Video related information (including Print, Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

"Videha" Ist Maithili Fortnightly ejournal Archive of Audios-Videos 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो-वीडियो आर्काइव मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल)ऑडियो-वीडियो देखबाक लेल सम्बन्धित लिंकपर क्लिक करू। For viewing audios-videos click the respective links.

....

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (सौजन्य: उमेश मंडल)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43

....

गुवाहाटी विद्यापति पर्व २०१०

पहिल भाग दोसर भाग तेसर भाग चारिम भाग पाँचम भाग

गुवाहाटी अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ विद्यापति पर्व २०११

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46

....

मैथिली फिल्म

ममता गाबय गीत (सौजन्य- Saregama)

कन्यादान (सौजन्य- BEJOD)

Maithili Movies on Rent

BEJOD

गामक घन

धूऽऽन

चौबटिया (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

चौबटिया

सौराठ मिथिला

ललका पाग भाग-१

ललका पाग भाग-२

……………..

मिनाप-१

बुधियान छौडा आ नाउस

मिनाप-२

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

यं लक्ष्मीयनि सिंह (सौजन्य नमानन्द मा "नमक")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीम यहित वन)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

ध्यान मैथिल चैनल- किनका चौधरी आ संगीता आनन्द

मिथिलांग लोक रंग

मिथिला चैनल

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

मिनाय

मैलानंग

मिथिलांगन

रंगिमा

मैथिली रंगमंच

कोकिल मंच

मिथिला दर्शन

मिथिला मिलन

स्मृति इंटरटेनमेंट

BEJ OD

अचल चित्र

नीलम मैथिली

मैथिली गंगा

मिथिला उत्थान

मैथिली क्लास

मैथिली समाचार (जनता टेलीविजन)

मैथिली टॉक्स

अयन टी.वी.

टी.वी. टुडे, जनकपुर

दृश्यम मीडिया

संस्थान मिथिला

सारेगामा मैथिली

नवरस मीडिया

श्रुति इंटरनेशनल

ऊर्जानिया फिल्म्स

अयोध्यानाथ चौधरी

नडिया जनकपुर

मिथिला टी.वी.

मधुर मैथिली

मैथिली-नेपाली सीखू

अयन मैथिली

मैथिली या0

सुन्दर नाउत

मिथिलांचल

अमित झा

प्रवेश मल्लिक

आदित्य फिल्म्स एण्ड म्युजिक

नेपाल टेलीविजन

आकाशवाणी मैथिली समाचार

आकाशवाणी अमृत महोत्सव

रश्मि रेखा

प्रिया मल्लिक

अनामिका झा

नरु कझ, नविकना

कुञ्ज बिहानी

राम बाबू झा

बी. जे., विकास झा

गिनहुन मिथिला

आर्ट लव मिथिला

लोक कला केन्द्र

रजनी पल्लवी

पूनम मिश्र

रंजना झा

जूली झा

मैथिली ठाकुर

अनुपम मिश्र याँतकारू ज्योतिसात ४० कीर्तिनाथ झा

बिमल लाल्ब्रनी मैथिली

अनियन राजलक्ष्मन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ▯तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाऊ्ली कान यनिवर्गनिकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गँ ठीक छी न!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ए विठे सरकँ दखन छी?)

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

I Love Mthila

online maithili journal

owner I Love Mthila

....

वृक्ष वन्धु लाल, जनकपूनक सौजन्यसँ

मिमिया

पवनकान्त झा (काश्यप कमल), रूटसिमनि, मधुबनीक सौजन्यसँ

....

विद्यापति गीत

गीत-गोविन्ददास (गायन दीक्षा रानी)

....

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन दीक्षा रानी)

गजल-४

………………

११म सगर राति दीप जरय (०२ अक्टूबर २०१०), गाम वनमा, जिला मधुबनी (संयोजक- जगदीश प्रसाद मंडल)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५ भाग-६

82 म सगर राति दीप जरय, स्थान- गजेन्द्र ठाकुर जीक निज आवास, गाम- मेंहथ, जिला- मधुबनी। दिनांक- 31 मइ 2014 (शनि दिन), समय- संध्या छह बजेसँ (गोष्ठीक नाओं- कथा बोद्ध सिद्ध मेंहथमे सगर राति दीप जरय। आयोजनक क्रम- ८२ म आयोजन, संयोजक- गजेन्द्र ठाकुर। विशेषता- बाल साहित्यपर केन्द्रित।

……………

मैलोरंग-१ (सौजन्य- प्रकाश झा)

नचिकेताक एक छल राजा - भाग-1

नचिकेताक एक छल राजा - भाग- 2

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-1

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-2

मैलोरंग-२

कासी समीनान 12 सितम्बर 2008 भाग-१

कासी समीनान 12 सितम्बर 2008 भाग-२

....

मिथिलांगन

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

यू ट्यूब लिंक

विदेह मैथिली साहित्य/ नाट्य/ कविता/ चित्रकला उत्सव

विदेह समानान्तर साहित्य अकादमी सम्मान समारोह

जनकपुर- विद्यापति पर्व

जितेन्द्र झा, जनकपुर

नागरन्द्र

सामा चकेवा 1

सामा चकेवा 2

मैथिली कवि सम्मेलन (मिथिला कल्चरल (एसोसिएशन, यू.के.)

रिपब्लिक डे 2009 (लंदन)

सगर राति दीप जरय, कविलपुर, जून २०१०

भाग-१ भाग-२

कृष्ण कुमार कश्यपसँ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लेल साक्षात्कार

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७

प्रबन्ध सम्मान: नारायणजी झा

(स्क्रिप्टकेँ बीचमे ल' जाउ, अदहाक बाद नारायणजी झासँ विनीत उत्पलक साक्षात्कार छन्हि।)

साहित्य अकादमी पुरस्कार: मन्त्रेश्वर झा

मिथिलाक खोज

1.गोनीशकन

भाग-१ भाग-२

2. वाङ्सी-बसौटी

नर्षकृत्य

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव

Samanvay 2-4 November 2012 IHC Indian Languages' Festival. Venue: India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi -- 110 003.

3rd November 2012 Maithili- Love's Own Language/ Brahminism in Maithili/ Pre-Jyotirishwar Non-Brahmin Vidyapati

𑒦𑒰𑒑-𑓑 𑒦𑒰𑒑-𑓒 𑒦𑒰𑒑-𑓓 𑒦𑒰𑒑-𑓔 𑒦𑒰𑒑-𑓕

𑒦𑒰𑒑-𑓖 𑒦𑒰𑒑-𑓗 𑒦𑒰𑒑-𑓘 𑒦𑒰𑒑-𑓙 𑒦𑒰𑒑-𑓑𑓐

𑒦𑒰𑒑-𑓑𑓑 𑒦𑒰𑒑-𑓑𑓒

2nd November 2012 Ugna Re- By Shovna Narayan (Pre-Jyotirishwar Non Brahmin Vidyapati's Life Episode)

𑒦𑒰𑒑-𑓑 𑒦𑒰𑒑-𑓒 𑒦𑒰𑒑-𑓓 𑒦𑒰𑒑-𑓔 𑒦𑒰𑒑-𑓕

𑒦𑒰𑒑-𑓖 𑒦𑒰𑒑-𑓗 𑒦𑒰𑒑-𑓘

𑓑𑓕𑒧 𑒮𑒑𑒩 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒲𑒣 𑒖𑒩𑒋 𑒧 𑒧𑒴𑒢𑓂𑒢𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒥𑒱𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰 𑒣𑒼𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒲

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒴𑒞𑒢- (𑒩𑒮𑒢𑒔𑒾𑒏𑒲𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑)

𑒯𑒵𑒠𑒨𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒗𑒰

𑒦𑒰𑒑-𑓑 𑒦𑒰𑒑-𑓒 𑒦𑒰𑒑-𑓓

𑒩𑓀𑒖𑒢 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒂 𑒩𑒳𑒢𑒲 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 (𑒞𑒥𑒪𑒰)

𑒦𑒰𑒑-𑓑 𑒦𑒰𑒑-𑓒 𑒦𑒰𑒑-𑓓 𑒦𑒰𑒑-𑓔 𑒦𑒰𑒑-𑓕

𑒦𑒰𑒑-𑓖 𑒦𑒰𑒑-𑓗 𑒦𑒰𑒑-𑓘 𑒦𑒰𑒑-𑓙

𑒪𑒪𑒱𑒞 𑒩𑓀𑒑 𑒂 𑒩𑒳𑒢𑒲 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 (𑒞𑒥𑒪𑒰)

राग-१ राग-२ राग-३

दीआ रानी

राग-१ राग-२ राग-३ राग-४

सुषमा

वटगमनी

नन्द कुमान मिश्रक गजल या0

नन्द कुमान मिश्र जीक कविता या0

राग-१ राग-२

मैथिली- राजयूनी अकादमी, नऽ्ी दिल्ली

राग-१ राग-२ राग-३ राग-४ राग-५

मैथिली- राजयूनी अकादमी, नऽ्ी दिल्ली समीनान 29 मार्च 2009

राग-१ राग-२ राग-३ राग-४ राग-५

राग-६ राग-७ राग-८ राग-९

मैथिली- राजयूनी अकादमी, ब्रानका, नऽ्ी दिल्ली समीनान

राग-१ राग-२ राग-३ राग-४ राग-५

राग-६

....

विदेह सम्मान: **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

……………….

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रभावित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, तखन धनि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो इग्नू पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आन स्वाध्याय-नीतिंग दोसर-उदाहरणमे करथि|

IGNOU इग्नू **BMAF-001**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

विदेह शिशु, बाल आ किशोर उत्सव

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Children Literature (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

Videha Archive of Maithili Children Literature विदेह मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्यक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं. लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य गजानन्द झा "गजेश")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

विदेह मैथिली शिशु उत्सव

कथा बौद्ध सिद्ध सरहपा (बाल साहित्य केन्द्रित) संग्रहमे रहल ८२ म सगर राति दीप जरय मे पठित कथा सभक संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध सरहपा

नेना भुटकाकेँ नानीसँ सुनबा लेल किछु लोककथा

भोला लाल दास (आर्काइव डॉट कॉम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

नाङ्ग आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बातकही

विज्ञानक बातकही भाग-२

ननक विजय (सम्पूर्ण)

ननक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

यिनामितक दर्शन

नावार (अनुदित साइंस-फिक्शन नाटक)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

मैथिली लोककथा

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुन्तल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

बाल कविता

मुन्नाजी

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुनलुब्बी (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

दनांशु नस

नाशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कौमिक्स)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

चानहा (बाल उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

वृषेश चन्द्र लाल (सौजन्य- वृषेश चन्द्र लाल)

टालक (बाल कविता संग्रह)

सुशील कुमार झा (सौजन्य- सुशील कुमार झा)

कोइली घुरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

उठि ने सकी यर विउँ छी हम (राग १-२) (पृ. १०७४-१०९७)

खिस्सा अण्टार्कटिका कर (पृ. १०७४-१०९७)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१७)

बाल कविता (पृ. १००४-१११३)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४१-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८७१)

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया रवी कुमारी

रुकम्य (पृ. ६३८-६७४)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

रगा बढ़क देश-भ्रमण

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

नशामुक्ति हेतु जागो गीत

निनियाँ

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

प्रीति ठाकुर

(गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

वैज्ञानिक पूरुष पनीआ (बाल साहित्य)

जस (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

७ बी सी डी- प्रकृति अउन पाथी (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

सरु खाइत अछि (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

बा म्याउ बाह (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

नढ सरु (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

(११) हमर परिवार (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

पाथी १३: १...२...३... (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अवाज (अनूवाद- बाल चित्रकथा)

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

नीना झा (सौजन्य- नीना झा)

बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

किशन चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-नाओ

आर्या कॉकपिट मे

दीया कनमाकन- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

फूल छथि आकाश मे

रैया क मुस्कान क चानीलक

बीज संचयक

अवंतिन कनय "हिवानावी"

शौचालयक खिस्सा

लाल बनसाती

गुल्लीक जादुड़ी यटी

समीनाक निक0 राजन

निनाद मे जाड़ी छी

प्रियंका झा (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कोया सकै छी, नहिया कs सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बड़ी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सबसँ नीक संगी

स्मारिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बूट नाचल नै हाऽऽ छै

गुलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा डर चाही!

मधुलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

डांघाऽऽन सीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सब संग रँट-घाँट

पूनम मण्डल

सुनी कालक खिस्सा

गजेन्द्र ठाकुर

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

Learn Mithilakshar Script

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाङक बङौना (बाल-पद्य संग्रह)

रङ जाएब छू (*मैथिलीक 2012 मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन ड्रामा- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक रंगना

तनहनिम पनीलाक

बसी छुट्टी कम ज्ञसकुल

बउद कनैओ दाउन न यौ

बाल गजल

हिनिभ लाञ्ञन

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाञ्ञी कन पनिहारिनकानी नवका

सुनु

घन सर

एकटा नीक दिन

चलु हम गँ ठीक छी न!

की अहाँ ओ विओ सरकँ देखन छी?

टास्

बड़ीटा! कनियटा!

बाऽ हम सब नहि छी

रानगोलक राजकुमारी

रानगोलक राजकुमारी (बिनु शब्दक)

नूया

कच-कच कचाक

चुन्नू-मुन्नूक नहुनाऽऽ

नना ओ बेलुनसँ उड़ाऽऽन छल

अद्भुत दिवानाची अंक-शृंखला

हानू

अखन नै, अखन नै!

जन्मदिनक उत्सव राज

मोट राजा पातर-दुब्बर कुकुर

बचिया ओ अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि

अंग्रेजी

हम सूँघि सकै छी

छोट लाल-टुहटुह जनी

कनु नीक, रागु नीक

ई सरटा विलातिक दाख अछि!

चारा आम!

हमन टालक बाट

जखन ईकउ स्कूल गेल

माछी हन आउ टाटा!

अमावीक झलूम मशीन सर

टिंग टांग

याउ-म्याऊ-नाद

कूकूउक एकटा दिन

हमना नीक लगैए

नीगाक नव-स्कूलम पहिल दिन

कनी हँसियो न!

लाल वनसानी

रूग-प्राक नाद्यशाला

आउ पएन गानी

कतऽ अछि ई अंक ए?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wf6zr5CoF (मसाञ्ञी कान यनिर्नानकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गाँ ठीक छी न!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सर)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह: सदेह ९ तिरहुता

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)

English-Maithili Computer Dictionary

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वस्त्र-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

(गोविंद झा)(IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

रामदेव झा (शंकरदेव झा -सौजन्य)

मैथिली शब्द संचय

....

किछु मैथिली पाथी डाउनलोड साइट (डायन साईट)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

विस्मान नन्नाकन

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पाथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI - English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली चिरिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

पाथी डॉट कॉम

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

जानकी अरुसमाचार अम.

आकाशवाणी दनरंगा यू ट्यूब चैनल

....

विदेह सम्मान: **सम्मानसूची**- (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीतनाटक अकादेमी - (पुरस्कार नामसँ विख्यात /सम्मान

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रभावित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, ताव धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पपर लेन छथि से एकर एकटा आन शास्त्र-नीतिंग दोसर-उदाहरणमे करथि।

IGNOU इग्नू *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

७.विदेह स्त्री कोना

विदेह स्त्री कोना

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Works (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili by Female Writers/ Artists

https://books.google.com/

Bottom of Form(पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पीडीएफ लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक .एच.टी.

सर्वसुलभ अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

सखुआनाली (नारी विमर्श केन्द्रित) स्यरिटियाहीम रुल ८३ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

सखुआनाली

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खल

फुल्लानानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनूदित नाटक)

अनुपमा देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वस्त्र-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

प्रामिशा मिश्रा

नामदेवदास कार्याठ भ्रमन (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

सुस्मिना याठक (सौजन्य- कदान कानन)

यनिचिनि (कनिना संग्रह)

कनाजिउ (कथा संग्रह)

नन्दिनी याठक (सौजन्य- कदान कानन)

याथनक शहन (कनिना संग्रह)

यन्ना झा (सौजन्य- नन्द्र झा)

अनूटुनि (लघुकथा संग्रह)

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

(गासाउनिक गीन

नशामुक्ति हिन गावी गीन

निनियाँ

यायानती- (शेफालिका नर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामन (सौजन्य- मुन्नी कामन)

सूखल मन नरसल आँखि (यद्य आ गद्य)

सूखल मन नरसल आँखि (कनिना)

अंगन: (कनिना संग्रह)

चुक्का (वाल कथा संग्रह)

नीना झा (सौजन्य- नीना झा)

बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा आकाश (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दुटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४५६-५१२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)

प्रीति ठाकुर

(गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा-परिचय मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

नेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

ए बी सी डी- प्रकृति अउन पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सर खाऽऽग अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बा ब्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

नढ सर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०१) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(११) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अवाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

किरण चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-गाछ

आर्या कॉकपिट मे

दीया कनमाकन- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

फूल छथि आकाश मे

रेया क मुस्कान क चानीलक

बीज संचयक

अर्चरित कनय "रिवानावी"

शौचालयक खिस्सा

लाल वनसानी

गुलीक जादुई थैली

समीनाक निक0 रानन

निनाद म जाई छी

प्रियंका झा (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

नमिता प्रिया (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

केयो सकै छी, नहियो कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

वर्षा आ बतही

नीलिमा चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सपरसँ नीक संगी

स्वातिका ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू गुप्पा नाचल नै छाऽह छै

गुलिका (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा डर लागै!

मधुलिका मिश्र (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

डंघाउन सीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवन सरु संग रुँट-घाँट

यूनम मण्डल

सूी कालक खिस्सा

कनकमणि दीक्षित (मुल नयालीसँ मैथिली अनुवाद **नूया धीनु** आ धीनद्र प्रमर्षि, वाल साहित्य) (सौजन्य- धीनद्र प्रमर्षि)

रुगना वढक दश-ग्रमण

डॉ शशिधन कुमन आ **सुप्रिया ववी कुमानी**

रुकन्य (पृ. ६३८-६1४)

....

लखकक आमंत्रि नचना आ डाऽऽयन आमंत्रि समीक्षकक समीक्षा सीनीज

१. **कामिनी**क यांच टा कविता आ डाऽऽयन मधुकान्त माक टिप्पणी

Vi deha_01_09_2016

३. **मुन्नी कामत**क एकांकी आ डाऽऽयन गजन्द्र "जिन्दगीक माल" 0ाकुनक टिप्पणी

VI DEHA_354

यसपूलटी गीता

एतिटर्स चाऽऽस सीनीज१-

मीना झा

चिल्ड्रेन बुक्स सीरीज२-

जगदीश चन्द्र ठाकुर टा बाल कविता संग्रह ३)२ **टा कविता सेहो चान्द्रायन**)

चिल्ड्रेन बुक्स सीरीज३-

....

विद्यापति गीत

गुलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन **दीक्षा रानी**)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन **दीक्षा रानी**)

वरुन मृतकानिव

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

६. विदेह ई-लर्निङ्ग

विदेह ई-लर्निङ्ग



[संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री] [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

रामायाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रभावित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उदाहरण उनटा-पुनटा दियौ, गाम धनि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पपन लेल सेहो इग्नू पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पपन लेने छथि से एकर एकटा आन स्टाइ-नीतिंग दासन-उदाहरण करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

....

Maithili (Compulsory & Optional)

UPSC Maithili Optional Syllabus

BPSC Maithili Optional Syllabus

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (ऐच्छिक)

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (अनिवार्य)

मैथिली प्रश्नपत्र- बी.पी.एस.सी.(ऐच्छिक)

....

यू. पी. एस. सी. (मेन्स) जर्नल: मैथिली साहित्य विषयक टेस्ट सीरीज

यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मुख्यमे हुनकर ऐच्छिक विषय मैथिली साहित्य रहतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठाबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- एतय क्लिक करू

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, मैथिली आ २ १ -पत्र-प्रश्न /लेल टेस्ट सीरीज (ऐच्छिक)

Test Series-1- एतय क्लिक करू

Test Series-2- एतय क्लिक करू

....

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- एतय क्लिक करू

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलवसम छथि आ रससमय कवि चतुर चतुर्भुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एहि समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक स्थानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे ध्यान आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सूक्ष्म भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लौकिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-७

(मैथिली आ शासन पूर्वनिया राजाक बीचक सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ उड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-'ए', क्रम-ए])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ राजपूती/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

मैथिली-हिन्दी नार्गालाय (३ घण्टा)

मैथिली

बांग्ला

असमिया

उड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01

NTA_UGC_NET_Maithili_02

GS (Pre)

Topic 1

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह ११	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३१

....

General Studies

NCERT-Environment Class XI-XII

NCERT PDF I-XII

Sansad TV

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

....

Other Optionals

IGNOU eGyankosh

....

यटान (निसार्ग सहन)

....

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश- रमानाथ मिश्र मिहिर (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. कमला चौधरी-मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ योगानन्द झा- मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

मैथिली शब्द संचय- डॉ श्रीनारायण झा (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

दक्ष-नीक वस्तु कौशल- डॉ. श्रीनारायणझा

परिचय निचय- डॉ शैलेन्द्र मोहन झा

English Maithili Computer Dictionary (Complete)- Gajendra Thakur

Maithili English Dictionary- गोविंद झा

अणिमा सिंह -शिशु गीत खंड

आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा 'रमण')- मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

मैथिली सुबोध व्याकरण- भोला लाल दास

राधाकृष्ण चौधरी-A Survey of Maithili Literature

राधाकृष्ण चौधरी- मिथिलाक इतिहास

जयकान्त मिश्र-A History of Maithili Literature Vol. I

राजेश्वर झा- मिथिलाक्षरक उद्भव आ विकास (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव) (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

दत्त-वती (मूल)- श्री सुरेन्द्र झा सुमन (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (पी.पी.एस.सी. सिलेबस) CIIL Site

सुभाष चन्द्र यादव-राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

शिव कुमार झा 'टिल्लू' अंशु-समालोचना

डॉ वचेश्वर झा- निबन्ध-निकुञ्ज

डॉ. देवशंकर नवीन- आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

प्रेमशंकर सिंह- मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

हिआउल

अखियासल CIIL Site

दुर्गानन्द मण्डल-चक्र

हेन एहि मनलग्नु हाइपल सरकेँ सहो पढ़ू:-

रामलोचन ठाकुर- मैथिली लोककथा

कुमार पवन (सारंग अंगिका)

प०० (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

डायरीक खाली पन्ना

केदारनाथ चौधरी

अबारा नहितन	चमेलीरानी	माहुर	करार	अयना	हीना

डॉ. रमण झा

भिन्न-अभिन्न	मैथिली काव्य अलङ्कार	अलङ्कार-भास्कर	मैथिली काव्य प्रणिष	अभिनन्दन-पत्र	पानिजाग-मञ्जरी

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

विज्ञानक बताही	विज्ञानक बताही भाग-२	अकाट्य मिसिया (कथा संग्रह)
ननक विजय (सम्पूर्ण)	ननक विजय (संशोधित)	किछु बीतल मधुर (यात्रा वृत्तांत)
हमर गाम	चिन्तामणिक दर्शन	संवाद (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

अनूदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाज्जी कान पनिर्नानकानी नवका

(शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुनु	घर सभ	एकटा नीक दिन	चलु हम गाँ ठीक छी ना!	की अहाँ ई चिड़ै सभकेँ देखने छी?
टाम	बड़ीटा! कनियेटा!	ओह हम सभ नहि छी	भानाल्लक राजकुमारी	भानाल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)
बूया	कचकच- कचाक	चुनमुनक- नहनाइ	नना ओ बेलुनसँ उनाहुल छल	अहूगर दिवानाची अंक-शृंखला
हानु	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उत्सव भोज	मात नाजा पापन-दुब्बे कुकुरे	बचिया जे अपन हँसी नै नाकि सकैत छलि
अंग्रेजी	हम सुघि सकै छी	छोट लाल-टुहटुह जनी	कनु नीक, भगु नीक	ई सभटा बिलाडिक दाख अछि!
चारा आम!	हमर टालक बाट	जखन ङुकरु स्कूल गेल	माछी हम आउ टाटा!	अमावीक झलुम मशीन सभ
टिंग टांग	पाउयाऊ--बाह	कुकुरक एकटा दिन	हमना नीक लगैए	नीनाक नव-स्कूलमे पहिल दिन
कनी हँसियौ ना!	लाल बनसाती	चुलबुलक ना-खशाला	आउ पढ़ए गनी	कते अछि ई अंक १?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड □तिया बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाल्ली कन यनिवर्णनकारी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलु हम गाँ ठीक छी न!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMb (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ चिडै सभकेँ देखन छी?)

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (डायन सार्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

यं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दीशिक्षक-मैथिली-

मैथिली(घण्टा ३) हिन्दी वार्तालाप-

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित(मैथिलीमे पहिल बेर -

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

Sahitya Akademi

प्रकाशन

डिजिटल-पोथी

CIIL

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलबस)

सृजन कल दीप पर्व- सं. कदान कानन आ अनिरुद्ध ठाकुर

मैथिली गद्य संग्रह- सं. शैलेन्द्र मोहन झा

Archive.Org (विजयदेव झा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान रत्नाकर

मिथिला दर्शन

गीतगुञ्जि

OLE Nepal's e-Pustakalaya

याथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mthila

Mthila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mthila

Mthila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली □तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

याथी डॉट कॉम

I Love Mthila (याथी डाउनलोड लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mthila

यात्रा मैथिल चैनल- किनद्ध चौधनी आ संगीता आनद्ध

मिथिला चैट्स

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

जानकी ७रू.७म समाचान

आकाशवाणी दनरंगा यू ट्यूब चैनल

आकाशवाणी मैथिली समाचान

आकाशवाणी अमृत महासत

सूनह्र नाउग

....

JNU

मैथिली

मैथिली लेक्सिकन

....

Videha e-Learning YouTube Channel

....

विदेह सम्मान: सम्मानसूची- (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीतनाटक अकादेमी - (पूर्वस्थान नामसँ विख्यात /सम्मान

....

Maithili eBooks/ eJournals/ Audios-Videos can be downloaded from **Maithili eBOOKS/ eJournals/ Audios-Videos**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Information relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

Top of Form

सूचना

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

"विदेह जीवित लेखक-सम्पादक, आलोचक, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला-संगीत-रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

स्मारिका- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिन्ट रूप]

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

विदेह कला-विमर्श विशेषांक (सहर्ष- संजय दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

विदेह रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

विदेह अपन जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक श्रृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (८) शरदिन्दु चौधरी, (९) रघुनाथन अशोक आ (१०) राम स्वास कायति 'ग्रमन' विशेषांक निकालने अछि। ऐ १० म सँ रामलोचन ठाकुर, राजनन्दन लाल दास आ रवीन्द्र नाथ ठाकुर आब हमरा सभक बीच नै छथि। शेष ७ गोटे मात्र (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३) केदार नाथ चौधरी, (४) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (५) शरदिन्दु चौधरी, (६) रघुनाथन अशोक आ (७) राम स्वास कायति 'ग्रमन' केर स्टेटस विदेहम 'लाइफटाइम रहल' सन रहत। जे अपन नव रचना कथा), कविता वा कथेतर गद्यवा नव पोथी (पद्य-रंगमंच] वा नव प्रातक्रम, सटक नाटक वा अन्य कला -कृतिया) विश्वभल सहितनिकलताक वादक हुअय वा विदेहपर ऐ विशेषांक [(प्रकाशन -नै हुअय पठा सकै छथि। ओकर हम समीक्षा सहित ई कएब आ अध्ययन पाठक, श्रोता, द्रष्टाक मध्य सम्पादक प्रारम्भ लेल प्रस्तुत करब।

"विदेहक जीवित लेखकसम्पादक-, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला रंगमंचकर्मी-संगीत-आ रंगमंचपर विशेषांक निर्देशक-क चयन प्रक्रियाक विधि निम्न प्रकारसँ अछि। "श्रृंखला

नियम:

१) लगातार पाँच-छह मास पहिनेसँ विदेह अपन पाठककेँ सुझाव देबा लेल लेल सूचना दैत अछि।

२) आएल सुझावमसँ विदेह मात्र जीवित लोकक चयन करैत अछि।

३) ओ सभ लोकक लेखनकाज / एकर आवश्यक साक्ष्य देखल जाइत अछि। जिनकर लेखन/ काज ओ आवश्यकसँ बेसी साक्ष्य (कम सँ कम) देखैत तकर छह टा नाम चयनित होइत अछि।

४) छह नाम एलाबाद हुनकर तुलना कएल जाइत छै जे हुनकर छहमेसँ ककरा लेखनकाज /के एकजम समाजसँ की देखलनि।

५) जिनका सभसँ कम देखल बुझाइत अछि तइ तीन लोककेँ अगिला चरण लेल राखि लेल जाइत अछि।

६) ओ तीन चयनित जीवित लोकक रचना, काज आ उद्देश्य आदिक बीचमे परस्पर तुलना कएल जाइत अछि।

७) अंतिम तीनसँ विदेह द्वारा एकटा नाम चुनि सालक अंतमे घोषणा कएल जाइत अछि आ नियत समयपर हुनकर विशेषांक निकालबाक प्रयास कएल जाइत अछि।

प्रश्न उठि सकैए जे की उपरका नियम एहन छै जइमे अंतिम तीनसँ सभ सुयोग्य जीवित लोककेँ चयन समयपर हएत? तँ एकर उत्तर छै नै। विदेहक पाठक लग सभ अपन सीमा छनि। मुदा अही सीमाक संग रचना सभकेँ अपन बेस देबाक अछि आ मैथिली लेल

एकरा एहन नक्शा बना देबाक छै जइसँ आबयबला १००-५०० बर्खक साहित्य विदेहक लीकसँ प्रतिष्ठा पाबय।

अही विचारक संग विदेह उपरका संस्था, पत्रिका, लेखक, कलाकार, स्वयंसेवी वा सार्वजनिक जीवन जीनिहारकेँ अपन (ध्यान सेहो केन्द्रित कऽ रहल अछि जे सुपात्र छथि मुदा जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। एकर नाम रहल विदेहक "नित नवल सिरीज", जकर विवरण नीचाँ "नित नवल सिरीज"मे देल जा रहल अछि।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक बेर मात्र एकटा जीवित संस्था, पत्रिका वा संस्था-पोथी-पत्रिकासँ जुड़ल स्वयंसेवीक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

विदेह अंक ३११ (०१ जून २०२३) "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" विशेषांक

नियम:

१) संस्था कैटेगरी- संस्थाक काज माला आदि पहिरेनाइ, पत्रिका-सम्मानिका आदि छपेनाइ, जे मात्र फोटो बनबाबला हुअय, नै हुअय। संस्था द्वारा जातिवादी कट्टरता नै बढ़ाओल जेबाक शर्त रहत, संस्था पॉकेट संस्था नै हेबाक चाही आ जीवित हेबाक चाही।

२) संस्था-पोथी-पत्रिकासँ जुड़ल व्यक्तित्व कैटेगरी- लेखक-प्रकाशकसँ भिन्न आन जे लोक पोथी-पत्रिका कीनि विक्री कऽ अपन जीवन-यापनक संग मैथिलीक प्रचारमे सहायक छथि, संगहि संस्था (रंगमंच संस्था सहित) सेहो सम्मिलित व्यक्तित्व, जिनका मूल्यांकन विदेह विशेषांक निकालि कऽ कएल।

३) पत्रिका कैटेगरी- मैथिलीक ओहन पत्रिकाक चयन विदेह विशेषांक प्रकाशित कएल। मुदा देलन ओहि पत्रिकाक सभ अंक विदेहपर डाउनलोड लेल ओहि पत्रिकाक संपादक वा कॉपीराइट धारक देता, से शर्त अछि।

चयन प्रक्रियाक नियम "विदेहक जीवित लेखक-सम्पादक, आलोचक, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला-संगीत-रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"क चयन प्रक्रियाक नियम सन रहत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

"विदेह मानागार" शृंखला

विदेह अपन जीवित लेखक-सम्पादक, आलोचक, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर,

(६) कदान नाथ चौधनी, (७) प्रमलता मिश्र 'प्रम', (८) शनदिन्दु चौधनी, (९) नवनाकान अशोक आ (१०) नाम श्वास कायित 'ग्रमन' विशेषांक निकालल अछि।
अही सन्दर्भमे हुनका सदस्यता "विदेह मानाग्रारु" शृंखला अन्तर्गत "मानाग्रारु" आमंत्रित कयल जा रहल अछि।
"विदेह मानाग्रारु" शृंखलाक विवरण निम्न प्रकार अछि:
(१) इच्छुक लेखक अपनाम कोना एक लोटयन अपन मानाग्रारु लिखवाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.comपर पठा सकै छथि।
(२) विदेह लेखकक नाम मानाग्रारु लिखवाक लेल चयनित कऽ ओकर सार्वजनिक घोषणा करत।
"विदेह मानाग्रारु" लिखवाक नियम:
(१) मानाग्रारु पूर्व नूँ सम्बन्धित लोकयन कहिया दुअय। साहित्य अकादमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत नूँ लिखल मानाग्रारु/ वायाग्राफीम लेखक संस्मरण आ व्यक्तिगत प्रसंग जाहि कय सम्बन्धित लोकक बदला अपन-आत्म-प्रशंसा लिखै छथि। "विदेह मानाग्रारु" हीरा नहि कय स्कूटवाल सन रहत। हीरा नहि कय स्कूटवाल एहन एकमात्र टूर्नामेन्ट अछि जाय कोना "डायनिंग" वा "क्लोजिंग" सेरीमनी अलगसँ नै होइ छै, पहिल आ अन्तिम मैचक संग होइ छै आ तकर कारण छै जे अलगसँ कएल "डायनिंग" वा "क्लोजिंग" मे टूर्नामेन्टम नै खेल रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि होइ छथि आ होकस खिलाडी सँ दूर चलि जाइ छै। हीरा मात्र आ मात्र स्कूटवाल खिलाडीयन कहिया रहैत अछि से ओकर टूर्नामेन्ट "डायनिंग सेरीमनी" नै ननन् साम "डायनिंग मैच" सँ आनन्द होइत अछि आ ओकर

समायन "क्लाजिंग सनीमनी"सँ नै बनन् "फाऊनल मैव आ झाम्बी"सँ खगम हाऊग अछि आ फाकस माग्र आ माग्र खिलाण्डी नहैग छथि। गहिना "विदेह मानाग्रारू" माग्र आ माग्र सम्बन्धित लाकयन कछिग नहग आ काना संम्मनय आदि जाणि कऽ फाकस अयनायन कछिग कनवाक अनुमति नै नहग।

(२) मानाग्रारू लल "विदेह यटान"म उयलब्ध सामग्रीक सहर्ष सहित उययाग कएल जा सकैए।

(३) विदेहम ऊली-प्रकाशित नचना सरक कॉयीनाइट लखक/संग्रहकर्ता लाकनिक लगम नहगहि। सम्यादक 'विदेह' ऊली-यत्रिकाम प्रकाशित नचनाक प्रिंट-वेव आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनुदित आर्काइवक ऊली-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकान नखैग छथि। ऊ ऊली-यत्रिकाम काना नॉयल्टी/ यानिश्रमिकक प्रावधान नै छै।

(४) "विदेह मानाग्रारू"क फॉर्मेट: सम्बन्धित लाकक यनिचय (सम्बन्धित लाकक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवेचना सहित) आ नचना/ काजक विवनय (समीक्षा सहित)।

घाषणा: "विदेह मानाग्रारू" शृंखला अन्तर्गत (१) नाजनन्दन लाल दास जी यन मानाग्रारू निर्मला कर्ण, (२) नवीन्द्र नाथ ठाकुन यन मुन्नी कामत आ (३) कदान नाथ चौधनी यन प्रम मारून मिश्र द्वाना लिखल जायत। शेष १ शोटयन निर्णय शीघ्र कएल जायत।

-गजेन्द्र ठाकुन, सम्यादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (१)

विदेहक "नित नवल सिरीज"

विदेह द्वारा ई विशेषांक प्रकाशित होइत छै जकर संग विदेह आहन संस्था, पत्रिका, लेखक, कलाकार, स्वयंसेवी वा सार्वजनिक जीवन जीनिहारनयन अपन ध्यान सहज केंद्रित करत जिनकायन विदेहक विशेषांक कारा कारबारण नै प्रकाशित होs सकल। एकर प्रक्रिया आ कार्यान्वयनक विवरण एना अछि।

नियम आ कार्यान्वयन:

१) हम एकटा वाला संस्था, पत्रिका, लेखक, कलाकार, स्वयंसेवी वा सार्वजनिक जीवन जीनिहारनयन समग्र आलोचना करब जकर भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी रहत। ई पाठीक पहिल नुप ई-बुक कर नुपम जेत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सहज आवय जे पनिश्चितियन निर्देन करत।

२) ई शृंखलाम:-

(i) सुभाष चंद्र यादवपर केंद्रित "नित नवल सुभाष चंद्र यादव",

(ii) राजदेव मंडलपर केंद्रित "Rajdeo Mandal- Maithili Witer" आ

(iii) जगदीश प्रसाद मण्डल केन्द्रित "Jagdish Prasad Mandal- Maithili Witer" प्रकाशित भेल अछि।

यहिल दूनू याथीक लाकार्यंध ३१ दिसम्बन २०२२ कँ १११म सगन नागि दीय जनय म कण्ल (गेल। गसन याथीक लाकार्यंध २ग मार्च २०२३ कँ ११२ म सगन नागि दीय जनय म कण्ल (गेल।

(iv) "निग ननल दिनेश कूमान मिश्र" आ

(v) "निग ननल सूशील" जानी अछि।

आगाँक घाषधा।

लल http://videha.co.in/investigation.htm देखेग नही।

यूर्वयीOिकासमय समाज आ :मैथिली उयन्यास" कमलानन्द्द माक याथी : क शीर्षक ग्रामक अछि। ऽी दूनकन किछ सनर्दं (२०२१) "सनाल उयन्यासकानयन किछ सिधिकरटत कथिग समीआत्मक आलखक संग्रह अछि, २६३ यन्नाक ऽी याथी हाउवाउण्म लाऽ्ध्वनीकँ माग्र ववल जा सकग, जगs ऽी सठि जायग, अमजनसँ हम ऽी चानि सय याँच टाकाम किनलौं मूदा जेम याँचा याऽ्क सामिग्री नै अछि।

ण्गs णकटा दूल सूधान अछि, णकटा गण्न सनर्दं लखक सूराष चन्द्र यादनक उयन्यास 'गुला'कँ विन् यढन उा दू याँगि लिखलहि आ नियटा दलहि, उा दूनू याँगि हम ण्गs अहाँक मनानंजनार्थ प्रस्फूग कs नहल छी। अहाँ गुला यढनहिय हण्व, उँ नै यढन छी गँ यहिन यढि लिअ, कानध गखन वशी मनानंजक अनूरन हण्ग, गुला सूराष चन्द्र यादन जीक अनूमगि सँ उयलब्ध अछि निदह आर्काऽ्नयन जे http://videha.co.in/pothi.htm लिंकयन।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

जइ उपन्यासमे राजनीति दूर दूर धरि नै छै ओतऽ-'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्न नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक सहारा धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त कयलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'घाट' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा ओतहु सुभाषजीक रचना शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक सहारक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा वामपंथक सहारा पकड़ने छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सजग अछि। ओ अपन बाबाताराम गतन सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ओ असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सब किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल

मैथिली बायाउटाक एकटा पाँखि अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

आब अहाँ पूछब जे एकर प्रतिकार समानान्तर धारा कोना कएलक, ओ तँ कन्नारोहट नै करैए, तँ एकर उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ केँ, वएह सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादेमी गत दस वर्षसँ तोड़ि लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ई तीनू पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी मे राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमर तेसर पोथी मैथिली समीक्षाशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि। एकरा बाद जगदीश प्रसाद मण्डल जी पर पोथी लिखल गेल (११२ सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित) सभटा पोथीक लिंक नीचाँ देल गेल अछि। 'नित नवल दिनेश कुमार मिश्र' आ 'नित नवल सुशील' जारी अछि।

Rajdeo Mandal - Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (जारी)

नित नवल सुशील (जारी)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

संगम पर्व कमलानन्द झा क ब्राह्मणवादपर प्रहार:

दुखद पक्षी- The Black Book

दुखद पक्षी- The Black Book (मिथिलाक्षर)

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४(२)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच में' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ई मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बंदिनी महानंदा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में(कोसी नदी की कहानी) .., न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झोल-झोंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and

engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य यंकज झा यनाशन द्वारा हिनकर याथी सत्सँ येनाक येना मैथिली अनुवाद कs अयना नाम उयन्यास छयवाउल (गल अछि, जकना छत्म समीउक कमलानन्द झा ओ वान लखकक निसर्व कहे छथिओंs स्यष्ट । कs दी ज ओ वान लखक आ छत्म समीउक दूनू अलीगढ मुस्लिम विद्यालयक हिन्दी विराागम छथि। ओ निसर्व दिनश कुमान मिश्रक थीक, ज आ .सिविल इन्जीनियनिढ म वी खओगयूनसँ .टी.आ. .१९६८म आ स्ट्रक्चनल इन्जीनियनिढम ओम .टकटक१९७०म कन . छथि, आ उ निसर्व लल क्वालिफाइड छथि। जखन काना विषयम नामांकन नै हाइ छै गखन लाक हानिथाकि हिन्दीम नामांकन लओ-, नै गँ कमलानन्द झा कँ वूसs म आवि जाइगाहि ज ओ निसर्व काना सिविल इन्जीनियनक रs सकैग अछि, रs सकैओ वूसला हाइहि। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनश कुमान मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सत स्थानक कथा उा लिखन छथि, हम सत हुनका प्रगि कृगज्ञ छी आ हुनकन प्रृष्ठसँ मिथिलावासी कहिया उमृण नै रs सकगा, मुदा मूलस्थानाक यूनस्थान आ याइ लालूय लाकसँ कृगघ्नग रटग स हन सिद्ध रला। ओ लखककँ दस वानह वर्ख यहिन सहा गानानन्द वियागी उद्धानक रटल छलखिह ज लिखन नहथिह ज उा कविगाम प्रगाविग रs अनायास अयन नचनाम दासनक सामिग्री चानि कs लइ छथि, ओहन सना। आव ओ कमलानन्द झा क आश्रय गकलहि मुदा दुर्गीयजइ हिसाव ब्राह्मणवादकँ आगाँ ।

बढ़बैल कमलानन्द झा नामपंथक साढ़न यकड़ै छथि आ सामाजिक व्यापक बलि बढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सेहो अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीनजोतावला लोक कम्युनिस्ट बनल-ा आ आब ब्राह्मणवाद बचबालेल नामपंथक शरण, जकर लोक सरसँ कम्युनिस्टकेँ बहुत नूकसान भेल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सम्पादित पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे

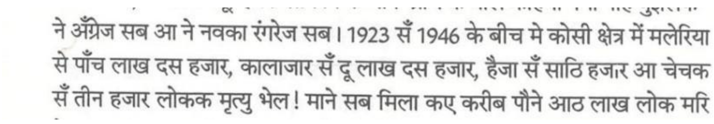
http://videha.co.in/pothi.htm

एहि ठकरा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल (गेझकँ पुछल (गेलहि जे की ओ एक बाँध लोकनाम पाण्डवीक तनसँ देवीसँ आनि नेहल छथि? तँ हुनकर उत्तर नहि जे माण्डवासोढ़ पाण्डवीक तन कोना उधार देवीसँ नै उतारल अछि। से विदेह पटालम हम सब जे तनहक लिख नहिगा। एकना आन समृद्ध करैत नेहब, कारण समानान्तर धाराम सञल मोछ ढ्वारा पाखनिक सब मोछ नै सड़ैए, जतुका मलाह गोट-गोट कऽ सञल मोछ निकालैत नेहल छथि, निकालैत नेहता।

सिद्धीकरण समीक्षायन अन्तिम प्रदान।

मूल दिनेश कुमार मिश्र :(२००६ ...दूस्त पाटन क बीच मं) यह ध्यान देन की बात है कि 1923 से 1946 क बीच कोसी क्षेत्र मं मलेरिया से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजा से 60,000 तथा चेचक से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।

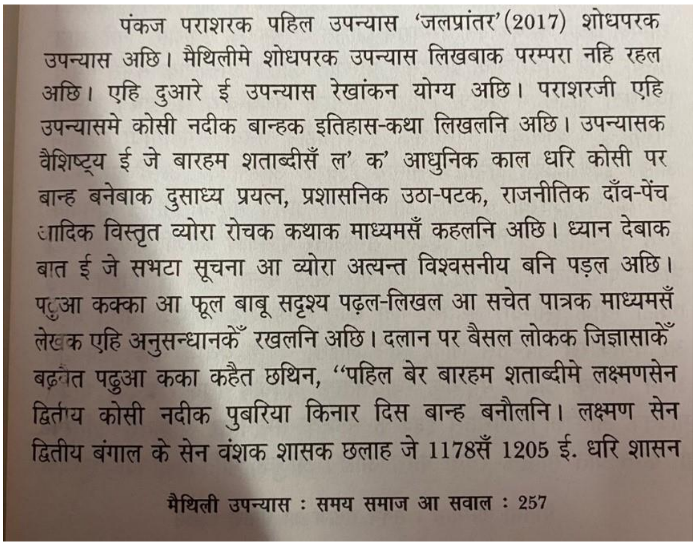
चान पंकज मा पनाशन)साहित्य अकादमीक मैथिली पनामर्शदात्री समिमिक सदस्य([जलप्रांगन २०११ :[(१०३ .पृ)


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमान मिश्र दू्ॐ)यारन क वीच मं:(२००६ ... रानानवर्ष मं विहान मं कासी नदी का बांधन का काम 12वीं शताब्दी मं किसी नाजा लक्ष्मण द्वितीय न कनवाया था औन ॐस काम क लिए उसन प्रजा स 'वीन' की उपाधि पाई औन नदी का गटवन्ध 'वीन बांध' कहलाया। ॐस गटवन्ध क अवशेष अभी री सुपौल जिल मं रीम नगन स काई 5 किलामीटन दक्षिण मं दिखाई पड़त हैं। डॉ. फ्रांसिस वुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किल की सुनक्षा क लिए वनी वाहनी दीवान नहा हागा क्योंकि यह बांध धौस नदी क पश्चिमी किनान पन गिलयुगा स उसक संगम तक 32 किलामीटन की दूनी मं फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टन (1877) वुकानन क ॐस तर्क क साथ सहमत नहीं थ कि यह बांध किसी किल की सुनक्षा दीवान था। स्थानीय लागां क हवाल स हन्टन का मानना था कि अधिकांश लाग ॐस किल की दीवान नहीं मानत औन उनक हिसाव स यह कुछ औन ही चीज थी मगन वह निश्चित नुप स कुछ कहन की स्थिति मं नहीं था। फिन री जा आम धानणा वनी है वह यह है कि यह कासी नदी क किनान वना काई गटवन्ध नहा हागा जिसस नदी की धाना का पश्चिम की ओन खिसकन स नाका जा सक। लागां का यह री कहना था कि जैसा लगता था कि ॐस गटवन्ध का निर्माण

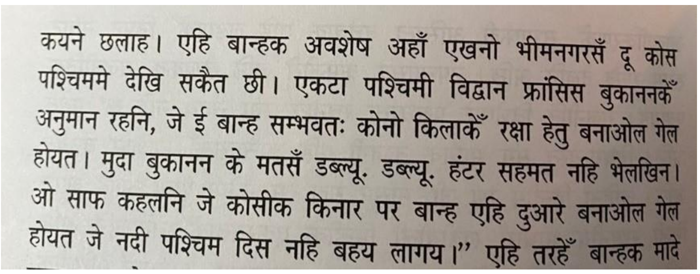
कार्य ॐकाॐक नाक दिया गया हागा।

ठञ्म समीऊक कमलानह्द मा ह्वाना चान उयन्यासकानक यी0 (0ाकव, दखु ठञ्म समीऊक कमलानह्द मा ह्वाना उड्बा चान यंकज मा यनाशन मैथिली उयन्यास), समय, समाज ञा सनाल यृ:(२७८-२७१ .



पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257



कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चान यंकज मा यनाशन)साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य([जलप्रांतन २०११ :[(३१ .यृ)

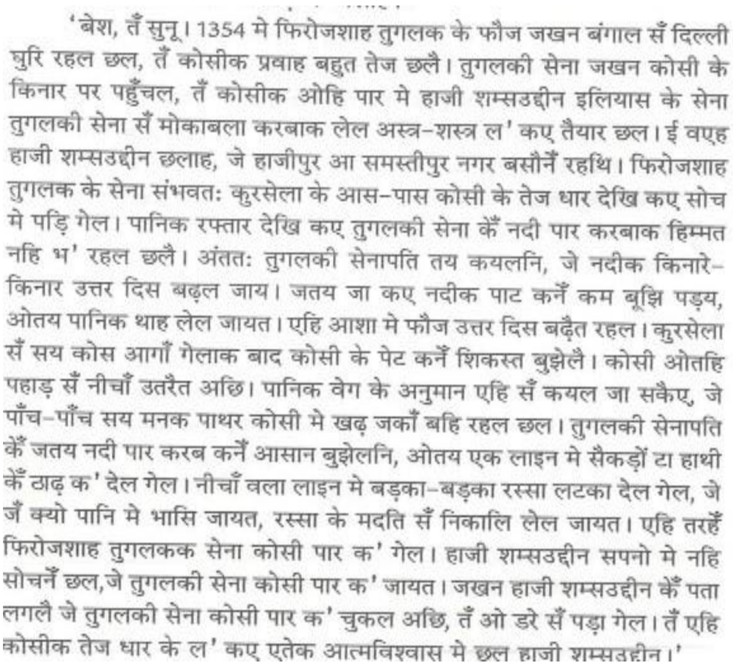
पढ़ुआ कका पछिला गप कें आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कें लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनें छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन ? लोक कें बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कें आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनश कुमान मिश्र :(२००६ ...दुइ याटन क वीच मं) कासी क प्रवाह कि रयानहणा की एक मलकफिनाजशाह गुगलक की फौज क सन् 1354 मं वंगाल स दिल्ली लौटन क समय मिलगी है। वगाया जागा है कि जव सुल्गान की फौजं कासी क किनान यहूँचीं गा दखा कि नदी क दूसन किनान यन हाजी शमसुद्दीन इलियास की फौजं मुकावल क लिए गैयान खडी हैं। यह नदी हाजी शमसुद्दीन (थ जिन्हांन हाजीयुन गथा समस्तीयुन शहन वसाय (था। फिनाज की फौजं शायद कुनसला क आस यास किसी जगह यन कासी क-किनान साव मं यड गइ़ी। नदी की नफ्तान उइं आगे वढन स नाक नही थी। आखिनकान फैसला हुआ कि नदी क साथसाथ उन्हन की उान वढा जाय औन जहाँ - नदी यान कनन लायक हा जाय वहाँ यानी की थाह ली जाय। सुल्गान की फौजं प्रायः सौ कास ऊयन गइ़ी औन जियानन क यास, जा कि उसी स्थान यन अवस्थित था जहाँ नदी यहाडां स मैदानां मं उगनी

थी, नदी का यान किया। नदी की धाना ग यहाँ याली जनून थी यन प्रनाह ङ्गना गज था कि याँवयाँव सी मन क रानी यछन नदी मं - गिनकां की गनह वह नह (था जहाँ नदी का यान कनना मूमकिन लगा उसक दानां ओन सूल्तान न हाथियां की कतान खडी कन दी ओन नीव वाली कतान मं नस्स लटकाय गय जिसस कि यदि काङ्गी आदमी वहगा हूआ हा गा ङ्गस नस्सां की मदद स उस ववाया जा सका। शम्सूद्दीन न कही साचा ही न था कि सूल्तान की फौजं कासी का यान कन लंगी ओन जव उस का ङ्गस वाग का यगा लगा कि सूलगान की फौजां न कासी का यान कनन मं कामयावी या ली ह गा नह हाग निकला।

चान यंकज मा यनाशन)साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य([जलप्रांगन २०११ :[(१०७ .यृ)



'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनें रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवत: कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कें नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंतत: तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनें कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनें शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कें जतय नदी पार करब कनें आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कें ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनें छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कें पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(... शीघ्र अही लिंकयन आन स्क्रीनशॉट अयडट कएल जायत। (

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ जनवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... डॉ. नवल दिनेश कुमार मिश्र

http://videha.co.in/ विदेह पत्रिका-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई : ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पत्र।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (३)

डॉ. नवल सुशील

कमलानन्द झाकेँ हम किए श्रेष्ठ समीक्षक कहलियनि?

कारण ओ श्रेष्ठ समीक्षक छथि।

ओ लिखै छथि जे लगभग सय वर्षक बाद -मैथिली उपन्यास" - मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।"

तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार जे हम ककरो चढ़ा सकै छी आ - कर पराकाष्ठा थीक -ककरो उतारि सकै छी, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण?

चलू अहाँकँ लऽ चली कमलानन्द झा कन स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादुवला साहित्यिक निश्छल दुनियाँमे।

अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यिक दुनियाँमे।

प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामवाली' (१९८२ज आब उपलब्ध अछि (विदेह आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर।

पहिल पाँतीमे उपन्यास आनबासँ पहिनहिये 'गामवाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि-

"विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे। "

आ उपन्यास आनब।

गामवालीक मृत्यु आ तखन समस्या, गामवालीक दाह संस्कार के करत? ब्राह्मण समाज कि यादव समाज?

मैथिलीक सिद्धीकरण समीक्षायन अन्तिम प्रहार।

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ फरवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... **नित नवल सुशील**

http://videha.co.in/ विदेह पत्रिका-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका : ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

५

विदेहक "साहित्यिक ग्रन्थागार विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक ग्रन्थागार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमीः-

(क) पुस्तकालयक राजनीति

(ख) सरकारी अकादमीमे पैसबाक गैर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सत्तागुट आ अकादमी कर काज करबाक तरीका

(घ) सरकारी सम्मानक द्वारा विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सम्मानक कार्यपद्धति

(ङ) अकादमी पुस्तकालयमे पाइ देबाकः मिथक वा यथार्थ

२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुस्तकालयक राजनीति

३. प्रकाशन जगतमे पसरल ग्रन्थागार आ लेखक

४. मैथिलीक द्वारा लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण

५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक ग्रन्थागारक विविध रूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, विद्यु, मंच-माला-माइक आ लोकार्पणक खेल-

गमाण।

१. लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी कान चुनाव , कैलेंडरवाद आ रचना पाठक राजनीति

८. दलित एवं लेखिका सबहक संग रद-रान आ ठाकुर शोषणक विविध रीतिका

९. कोना आन विषय।

६

विदेह ब्लॉगकास लिंक

विदेह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लेल अपन whatsapp नम्बर हमर whatsapp no +919560960721 पर पठाउ, ठाकुर प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

....

मैथिली आ मिथिलासँ संबंधित किछु मुख्य साइट:- आन लिंकक विषयमे सूचना editorial.staff.videha@gmail.com केँ ई-मेलसँ पठाबी।

http://www.videha.co.in/ ("विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका)

http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाई २००४)

http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाई २००४)

भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाई २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)* केर रूपमे इंटरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA पल्लवमिथिला

(धीरेन्द्र प्रेमर्षि) २०१९ माघ संक्रान्ति- २००३ जनवरी मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका अछि जे ओ लिंक www.pallavmithila.mainpage.net पर छल मुदा आब ई उपलब्ध नै अछि। ई रिपोर्ट मात्र इतिहास सुरक्षा लेल अछि।

....

http://videha-aggregator.blogspot.com/ (मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://www.videha.com/ (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक सभसँ पुरान उपलब्ध उपस्थिति/ लोकप्रिय ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर १ जुलाई २००४ www.gajendrathakur.blogspot.com)

http://esamaad.blogspot.com/ (पूनम मंडल आ प्रियंका झाक पहिल मैथिली न्यूज पोर्टल, ९ अगस्त २००४ सँ)

http://prakarantar.blogspot.com/ (प्रकारान्तर मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, फरवरी २००१)

http://vidyapati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००१)

http://www.vidyapati.org/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००१)

http://hellomithila.blogspot.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, नूतन झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ३ मई २००६)

http://pallav.blogsome.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, नूतन झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ११ मई २००६)

http://hellomithilaa.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://www.hellomithila.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://shampadak.wordpress.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरवरी २००८)

http://www.esamaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरवरी २००८)

http://hellomithilaa.wordpress.com/

http://premarshi.wordpress.com/ (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

....

http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय गजलक ब्लॉग)

https://mithilastudentunion.com/ (Mithila Student Union)

....

https://vigyanprasar.gov.in/vigyan-ratnakar/ (विज्ञान रत्नाकर)

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

....

ALL INDIA RADIO DOORDARSHAN आकाशवाणी दूरदर्शन

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

https://doordarshan.gov.in/

आकाशवाणी मैथिली पॉडकास्ट http://prasarbharati.gov.in/podcast.php?filterlang=Maithili&from=1947-08-15&fromwp=2020-08-29&to=2050-12-31&search=GO

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रीजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-1 http://newsonair.com/RNU-NSD-Audio-Archive-Search.aspx

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रीजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-2 http://newsonair.com/Regional-Text.aspx

आकाशवाणी दरभंगा http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=282

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWlTEMkVA

आकाशवाणी भागलपुर http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=359

आकाशवाणी पूर्णियाँ http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=256

आकाशवाणी पटना http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=122

ALL INDIA RADIO ENGLISH NEWS

ALL INDIA RADIO NEWS ARCHIVE

ALL INDIA RADIO TALKS AND CURRENT AFFAIRS

RAJYA SABHA TV NEWS DISCUSSIONS

SANSAD TV

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/@videha-elearning

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

....

http://bramhanews.blogspot.com/ (मैथिली समाचार)

http://www.mithilakhabar.com/ (नेपालक मैथिली ई-पत्रिका)

http://mithilanews.com/

http://www.maithilinews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.hamargam.in/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithiladotcomblogspot.com/ (मैथिली राष्ट्रीय दैनिक)

https://mppdainik.com/ (मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश, मैथिली दैनिक)

http://mithilasamad.blogspot.com/ (मिथिला समाद, मैथिली दैनिक)

http://janakpurnews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.mithilalok.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithimedia.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://www.mithimedia.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://mithiladharohar.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://simanchal.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://maithilijindabaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

....

https://kirtinath.blogspot.com/ (कीर्तिनाथ झा ब्लॉग)

http://jct27novmaithili.blogspot.com/ (जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" क ब्लॉग)

http://brikhesh.blogspot.com/ (वृषेश चन्द्र लाल)

http://www.chetnasamiti.org/ (चेतना समिति, पटनाक वेबसाइट)

http://shiva-pustak-bhandar.blogspot.com/ (मैथिली पोथी कीनू)

https://mishrarn.blogspot.com/ (रामसँ साँस धरि)

https://rjanakpuri.blogspot.com/ (साहित्यपुरी)

http://bataahmaithil.in/

http://maithilpravahika.org/

http://ganeshbawra.blogspot.com/

http://maithilinews.com/

http://anandjhakavitakahani.blogspot.com/

http://chaaywala.blogspot.com/

http://maithilputr.blogspot.com/

http://maithilputramanu.blogspot.com/

http://mithilanchalpatrika.blogspot.com/

http://mithilakbat.blogspot.com/

http://maithilitimesonline.blogspot.com/

http://mithilavidehavajjitirhut.blogspot.com/

http://samadiya.blogspot.com/

http://jitumaithili.blogspot.com/

http://pratipadamaithili.blogspot.com/

http://bhatsimar.blogspot.com/

http://maithilirangmanch.blogspot.com/

http://www.mithilavaani.blogspot.com/

http://www.maithilisongsjagat.co.in/

http://mithilablog.com/

http://www.lahakchahak.com/

http://www.jaimithila.com/

http://www.dahejmuktmithila.org/

http://mithilavaani.blogspot.com/

http://www.chamundanagarpachahi.com/

http://kisunsankalplok.wordpress.com/

http://www.kisunsankalplok.co.nr/

http://maithilisongshub.blogspot.com/

http://www.rajnipallavi.com/

https://maithilinewsnetwork.com/

https://mithilamirror.com/

https://www.emithila.in/

http://csts.org.in/ (CSTS)

http://www.samaysaal.com/ (समय साल)

https://www.maithili.org.in/ (नागन चौधनी)

https://doorvaksata.org/ (मिशन दुर्वाक्षत)

http://mithilakshar shikshaabhiyan.in.net/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

http://mithilakshar.in/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

https://missionmithilakshar.blogspot.com/ (सिद्धिरस्तु- मिशन मिथिलाक्षर लिपि)

https://mithilani.in/ (मिथिलानी)

https://www.maithilmanch.in/ (मैथिल मंच)

http://madhubani.co.in/

http://www.premkumarmallik.com

http://apandalan.wordpress.com/

http://www.mithilaworld.tk/

http://www.mithilachowk.com/

http://maithilisongsgeet.blogspot.com/

http://rayprabhatbhatt.blogspot.com/

http://amitmohanjha83.blogspot.com/

https://maithiliswasthyaparicharcha.blogspot.com/ (मैथिली स्वास्थ्य परिचर्चा- नमाकन चौधनीक ब्लॉग)

http://maithili-darpan.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilatol.blogspot.com(मिथिलाटोल मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilicinema.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithilifilms.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithili-drama.blogspot.com/ (विदेह मैथिली नाट्य उत्सव- वचन 0व्रतनक ब्लॉग)

http://mjnk.co.cc/ (श्री जनकपुर ग्रुप, नेपाली मॉडल, मिथिला इन्स्टमेशन)

http://www.TeraiNepal.co.cc/ (नेपाली नयाल मिथिला जनकपुर मधेश हालचाल Anytime Anywhere see)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/ (मैथिलक आ मिथिलाक लोकप्रिय ब्लॉग)

https://www.mithiladainik.in/ (मिथिला दैनिक)

http://www.mithilaamanch.blogspot.com(मिथिला मंच)

http://maithilisong.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक ब्लॉग)

http://maithilifoundation.blogspot.com/ (मैथिली फाउन्डेशन)

http://maithilibhasha.blogspot.com/ (काश्यप कमलक ब्लॉग)

http://rkjteoth.blogspot.com/ (नूतन कुमार झा "आँख"क ब्लॉग)

http://paraati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://singarhaar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://vaachik.wordpress.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilainfo.blogspot.com(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithlasamachaar.blogspot.com (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://pilakhwar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://desilbayna.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilynjha.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://gaam-ghar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithila-mihir.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://www.maithililekhaksangh.blogspot.com/ (मैथिली लेखक संघक जालस्थल)

http://www.maithili.co.uk/ (मिथिला कल्चरल एसोसिएशन, यू.के.)

http://minapjanakpur.org/ (मिनाप, जनकपुर)

http://www.airdarbhanga.org/ (आकाशवाणी दरभंगाक साइट)

http://mithilangan.org/ (मिथिलांगनक साइट)

http://www.desilbayana.com/ (देसिल बयना, हैदराबाद)

http://www.vmymin/ (विश्वव्यापि मैथिल युवा मंच)

http://www.jaimithila.com/ (मिथिलाक सभ्यता, संस्कृति, विभूति, गीत-संगीत आ बहुत रास जानकारीक लेल)

http://sobhagyamithilatv.com/ (सौभाग्य मिथिला- पहिल मैथिली चैनल)

http://kashyap-mithila.blogspot.com/

https://kashyapartschool.wordpress.com/ (कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबालाक साइट)

http://mithilapaintingtraining.blogspot.com/

http://dularuababumaithilifilmblogspot.com/

http://senurakl aajmaithilifilmblogspot.com/

http://maithlivideosongs.blogspot.com/

http://kalikantjhabuch.org/ (काली कांत झा "बूच")

http://saketanands.blogspot.com/ (साकेतानन्दजीक जालवृत्त)

http://gunjang.blogspot.com/ (गुंजनजीक जालवृत्त)

http://darihare.blogspot.com/ (श्याम दरिहरेक जालवृत्त)

http://deoshankarnavin.blogspot.com/ (देवशंकर नवीनक जालवृत्त)

http://www.udayanarayana.com/ (नचिकेताक साइट)

http://www.indianembassy.org.np/ (भारतीय दूतावास नेपाल)

http://www.purvottarmaithilsamaj.com/ (पूर्वोत्तर मैथिल समाज)

http://www.purvottarmaithil.blogspot.com/ (मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका)

http://apanmithladhaamblogspot.com/

http://maithilikavita.blogspot.com/

http://pankajjha23.blogspot.com/

http://maithili-haiku.blogspot.com/

http://manak-maithili.blogspot.com/

http://mithilauday.org/

http://dsal.uchicago.edu/lsi/ (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings)

http://dsal.uchicago.edu/lsi/taxonomy/term/1718 (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings, Maithili)

http://music2.cooltoad.com/music/category.php?id=10576

http://maithiliacademy.org/

https://maithiliacademybihar.org/ (मैथिली अकादमी, पटना)

मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली

http://artandculture.delhigovt.nic.in/wps/wcm/connect/doit_art/Art+Culture+and+Language/Home/Maithili-Bhojpuri+Academy/

http://maithili.sourceforge.net/

http://ansiss.org/

http://fedoraproject.org/

https://fedorahosted.org/fuel/wiki/fuel-maithili

http://l10n.gnome.org/teams/mai

http://translate.fedoraproject.org/languages/mai

http://www.biharlokmanch.org/ (मिथिला-मैथिली पोथी ऑनलाइन कीनू)

http://www.biharlokmanch.org/mithila_products_online.php (Buy Mithila-Maithili books online)

http://mithila-haat.com/ (Buy Mithila-Maithili books/ other materials online)

http://www.antikaprakashan.com/ (अंतिका प्रकाशनक साइट- मैथिली प्रकाशक)

https://shashiprakashan.blogspot.com/ (शशि प्रकाशन-- मैथिली प्रकाशक)

https://pallavipublication.blogspot.com/ (पल्लवी प्रकाशन-- मैथिली प्रकाशक)

http://www.navarambh.com/ (नवानम्ह-- मैथिली प्रकाशक)

http://www.gorkhapatra.org.np/

http://www.sajha.org.np/

http://www.kantipuronline.com/

http://mithilahyd.org/

http://www.jyoticonsultant.com/ (मैथिलक नौकनी जॉब कॉम)

http://www.mithilamanthan.com/

http://www.brandbihar.com/

http://www.biharbrains.org/

http://maithilijokes.blogspot.com/

http://www.rdo91fmblogspot.com/

http://www.kfm961.com/ (हल्ला मिथिला कार्यक्रम प्रथक शनिकँ नयाली समयानूसान नागि ९.३० वजसँ ११ वजधनि ञा नाजनीगिक निषयनस्फूयन कछ्रिग चौवटिया कार्यक्रम प्रथक सामकँ नागि १० सँ ११ वजधनि प्रसानध)

http://www.radiokantipur.com/ (हल्ला मिथिला कार्यक्रम प्रथक शनिकँ नयाली समयानूसान नागि ९.३० वजसँ ११ वजधनि ञा नाजनीगिक निषयनस्फूयन कछ्रिग चौवटिया कार्यक्रम प्रथक सामकँ नागि १० सँ ११ वजधनि प्रसानध)

http://www.jumptv.com/en/channel/nepal1/ (नयाल1 टी.वी.-जम्य टी.वी. मैथिली कार्यक्रम सूवना)

http://janakifmorg.np/ (जानकी ७रू.७म., मैथिली समावान नतिया)

http://www.mithilaradio.com/ (मैथिली नतिया)

http://www.youtube.com/user/Janakifm(जानकी ७रू.७म., मैथिली समावान नतिया Youtube channel)

http://www.radiomithila.org/ (मैथिली नतिया)

http://www.appanmithila.org/ (नतिया ञ्यन मिथिला ९४.४ MHZ)

http://www.janakpurtoday.comnp/

http://madanpuraskar.org/

http://www.madheshuk.org/ (७साभि७शन ▯रू नयाली मधेसीज ॡन यू.क.)

http://www.mithilaart.com/ (श्रीमति प्रगा माक साॡट)

http://www.mithilavihar.com/

http://www.sugatisopan.com/

http://www.maithilsamaj.org.in/

http://www.maithilsamaj.com/

http://www.janakpurcity.com/

http://www.janakpur.com.np/

http://home.att.net/~maithils/

http://shyamprakashjha.com/

http://ramanathjha.com/

http://www.ramajha.com/

http://sudhakar.co.in/maithili

http://www.maithils.net/

http://www.getpredictiononline.com/

http://www.bihartimes.com/

http://www.bihar.ws/

http://www.patnadaily.com/

http://www.krraman.blogspot.com/

http://www.adi-maithili-kavita.blogspot.com/

http://www.mithilasevasamiti.blogspot.com/

http://www.jankitoday.blogspot.com/

http://opjha.blogspot.com/

http://chitthajagat.in/ (देवनागरी लिपिक ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://mailorang.blogspot.com/ (मैलोरंग नाट्य संस्थाक ब्लॉग)

http://mailorang.in/ (मैलोरंग)

http://mailorang.com/ (मैलोरंग)

http://vandanasgeet.blogspot.com/

http://www.darbhangaraj.blogspot.com/

http://mithila_samachar.tripod.com/mithilasamachar/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.ciilcorpora.net/maisamhtm

http://www.ildc.in/Maithili/Mindex.aspx (मैथिली अध्ययन आ शोध)

http://www.mithilaarts.com/

http://www.mithilapainting.org/

http://www.maithili.net/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.mithilaonline.com/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.onlinemithila.in/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.nnl.gov.np/

http://www.nepalacademy.org.np/

http://www.karnagoshthi.org/

http://surmasti.com/

http://www.maithiliworld.com/

http://www.mithila-museum.com/aboutMM/Eindex.html

http://www.tribhuvan-university.edu.np/

http://www.swastifoundation.com/ (स्वस्ति फाउन्डेशनक साइट)

http://foundationsaarcwriters.com/

http://www.opmcm.gov.np/

http://www.moe.gov.np/ (नेपाल सरकारक साइट)

http://lnmu.bih.nic.in/

http://gov.bih.nic.in/ (बिहार सरकारक साइट)

http://www.india.gov.in/

http://rajbhasha.nic.in/

http://www.hindinideshalaya.nic.in/

http://themithila.tripod.com/

http://www.mithilaconnect.com/

http://www.esabha.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilvivah.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kanyadan.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilbrahminvivahbandhan.org/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.mithilashaadi.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kalyanifoundation.org/

http://www.madhubani.com/

http://www.janakpur.org/

http://www.darbhanga-friends.com/

http://www.hindisansthan.org/

http://www.biharassociation.net/

http://www.nationallibrary.gov.in/ (नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता)

http://dpl.gov.in/ (दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी)

http://www.connemarapubliclibrarychennai.com/ (कोनेमारा पब्लिक लाइब्रेरी)

http://rrrlf.gov.in/ (राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन)

http://www.sahitya-akademi.gov.in/(साहित्य अकादमीक साइट)

http://www.nbtindia.org.in/ (नेशनल बुक ट्रस्टक साइट)

http://www.csuchico.edu/anth/mithila/

http://web.mac.com/nadjagrimm/iWeb/JWDC/Mithila%20Art%20.html

http://www.southasianist.info/india/mithila/index.html

http://www.mithilalive.com/

http://www.ethnologue.com/show_language.asp?code=mai

http://linguistlist.org/forms/langs/LLDescription.cfm?code=mai

http://www.languageshome.com/English-Maithili.htm

http://www.rosettaproject.org/archive/mai

http://www.nepalgov.gov.np/

http://maithili-mp3-songs.folkmusicindia.com/

http://www.ciil.org/ (भारतीय भाषा संस्थानक साइट)

http://www.ciillibrary.org/

http://www.lisindia.net/Maithili/Maithili.html

http://www.ntm.org.in/languages/maithili/default_maithili.asp (राष्ट्रीय अनुवाद मिशन)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2012/tagore-literature-awards-bring-together-india-best-literary-talent (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2011/samsung-felicitates-the-winners-of-tagore-literature-awards-2010 (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/Tagore-Awards/index.html (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://jnanpith.net/ (रानीय स्नानयी0क साइट)

http://bparishad.in/ (रानीय राषा यनिषद, कालकाताक साइट)

http://www.bharatiyabhashaparishad.com/ (रानीय राषा यनिषद, कालकाताक वागर्थ)

http://www.themanbookerprize.com/ (मैन-वूकन यूनस्कानक साइट)

http://www.commonwealthfoundation.com/ (कॉमनवल्थ स्वाउन्डेशनक साइट)

http://www.crossword.in/ (वातास्कन-क्रॉसवर्डक साइट)

http://www.pulitzer.org/ (यूलित्जन यूनस्कानक साइट)

http://nobelprize.org/ (नावल यूनस्कानक साइट)

http://www.goakonkaniakademi.org/akademi/aims.htm(गाेवा कोंकणी अकादमीक साइट)

http://www.museindia.com/

http://www.asiawrites.org

http://indianorway.wordpress.com/

http://samanvayindianlanguagesfestival.org/

http://jaipurliteraturefestival.org/

http://dscprize.com/

http://www.hindu.com/lr/2011/04/03/stories/2011040350010100.htm

http://southasianlitfest.com/

http://www.varnamala.org/

http://india.poetryinternationalweb.org/

http://www.fortunecity.com/victorian/charcoal/49/

http://www.tarainews.com.np/

VIDEHA IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

*विदेह*प्रथम मैथिली याक्षिक ई यत्रिका मैथिली याथीक आर्काइव

http://videha-pothi.blogspot.com/

*विदेह*प्रथम मैथिली याक्षिक ई यत्रिका [illegible]तिया आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

*विदेह*प्रथम मैथिली याक्षिक ई यत्रिका वीतिया आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

विदेह ई पत्रिकाक सभटा पुरान अंक-Videha e journal's all old issues

http://sites.google.com/a/videha.com/videha/

विदेह ईअंक पत्रिकाक पहिल ५०-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/
विदेह ईम अंक पत्रिकाक ५०म सँ १४९-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/
विदेह ईपत्रिकाक १५०म आ आगाँक अंक-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-iii/

मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi

मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio

मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video

मिथिला चित्रकला आधुनिक चित्रकला आ चित्र /Mithila Painting/ Modern Art and Photos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/

सगर राति दीप जरय

http://sagarraatideepjaray.blogspot.com/
http://sagarraatideepjaray.wordpress.com/

विदेह मैथिली क्विज :
http://videhaquiz.blogspot.com/

विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/
विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित

http://madhubani-art.blogspot.com/
विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/
विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/
विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

Maithili Sign Language- पहिल मैथिली संकेत लिपि ब्लॉग

https://maithili-sign-language.blogspot.com/

विदेह ब्राह्मी- ब्राह्मी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-brahmi.blogspot.com/

विदेह खरोष्ठी- खरोष्ठी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-kharoshthi.blogspot.com/

विदेह कैथी लिपिमे- मैथिलीक कैथी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-kaithi.blogspot.com/

विदेह नेवारी लिपिमे- मैथिलीक नेवारी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-newari.blogspot.com/

विदेह आइ.पी.ए. लिपिमे- मैथिलीक आइ.पी.ए.मे पहिल ब्लॉग

https://maithili-ipa.blogspot.com/

विदेह- उर्दू नस्तालिक लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-urdu.blogspot.com/

विदेह- तिब्बती लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-tibetan.blogspot.com/

विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

विदेह गूगल-ग्रुप

https://groups.google.com/g/videha

विदेह फेसबुक ग्रुप

https://www.facebook.com/groups/7436498043

https://www.facebook.com/groups/10299304978

https://www.facebook.com/groups/videha

गजेन्द्र ठाकुर इडेक्स

http://gajendrathakur123.blogspot.com

नेना भुटका

http://mangan-khabas.blogspot.com/

Videha Radio विदेह नित्य पोडकास्ट साइट कविता आदिक पहिल-मैथिली कथा:

http://videha123radio.wordpress.com/

http://videha.listen2myradio.com/

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

http://maithili-drama.blogspot.com/

समदिया

http://esamaad.blogspot.com/

मैथिली फिल्म्स

http://maithilifilms.blogspot.com/

मैथिली हाइकू

http://maithili-haiku.blogspot.com/

मानक मैथिली
http://manak-maithili.blogspot.com/

विहनि कथा

http://bihanikatha.blogspot.com/

मैथिली कविता

http://maithili-kavita.blogspot.com/

मैथिली कथा
http://maithili-katha.blogspot.com/

मैथिली समालोचना
http://maithili-samalochna.blogspot.com/
Maithili Literature in English

http://madhubani-art.blogspot.com/

तिरहुता- कैथी फॉन्ट/ मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी आधारित इतिहास

https://deepblue.lib.umich.edu/bitstream/handle/2027.42/110341/pandey_1.pdf?sequence=1 (उत्पन-विधानक मैथिल ब्राह्मणक जाति)

https://www.unicode.org/L2/L2009/09329-maithili.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉन्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९- विदेहक सहयोग)

https://www.unicode.org/L2/L2011/11175r-tirhuta.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉन्ट लेल आवेदन ७ मई २०११- विदेहक सहयोग)

http://www.tirhutalipi.4t.com/ (देवनागरी-तिरहुता फॉन्ट- वर्तमान आधारित)

http://www.anujha.co.cc/ (देवनागरी यूनीकोड आधारित तिरहुता फॉन्ट-मिथिला)

"विकीपीडिया"म मैथिली

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

अंतिम याँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्ट अछि। अहि लिंक सभ पर जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाउ।

विकीपीडिया/ गूगल ट्रान्सलेट/ मिथिलाक्षर (तिरहुता) आ आन फॉन्ट/ कीबोर्ड प्रोजेक्ट प्रगति:
विकीपीडिया ०१ फरवरी २००८ लिंक
https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false (मैथिली देवनागरी)
https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली तिरहुता)
https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली ब्रेल)
गूगल ट्रान्सलेट २३ जून २०११क लिंक
https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/
गूगल ट्रांसलेशन टूलमे
"विहारी" भाषाक बदलामे मैथिली लेल अलग ट्रांसलेशन टूल बनेबाक आवेदन विदेहक सदस्यगण द्वारा देल गेल अछि। अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कामेमे (अंग्रेजीमे) "विहारी" नामसँ कोनो भाषा नै देबाक चर्चा करू। ओ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंटसँ लॉग इन केलाक बाद ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh (link closed)

मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉन्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ आ फेर संशोधित आवेदन ७ मई २०११ केँ श्री अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल आ दुनू बेर ओमे विदेहक सहयोगक वर्णन छल। ११ जूनकेँ श्री अंशुमन पाण्डेय एकर स्वीकृतिक सूचना विदेहक फेसबुक ग्रुपपर देलनि। आब ई फॉन्ट बनि कऽ तैयार अछि आ नीचाँक लिंकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

तिरहुता, नेवारी आ कैथी फॉन्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉन्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवारी ओ.टी.एफ.	नेवारी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

https://keymanweb.com/?_ga=2.7155890.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_tirhuta

https://keymanweb.com/?_ga=2.241635586.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_malar_tirhuta

https://aksharamukha.appspot.com/converter (Script/ Website Convertor)

https://aksharamukha.appspot.com/keyboards [Input (IME]

https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts (fonts- opensource)

https://www.cdac.in/ (Tirhuta/ Unicode Typing Tool)

यूनीकोड तिरहुता फॉन्ट, "विकीपीडिया"मे मैथिली आ आब मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"/ बिंग-माइक्रोसॉफ्ट ट्रान्सलेटरमे सेहो। अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"

गूगल बार्ड/ गूगल ट्रान्सलेट (मैथिली)

https://bard.google.com/ (गुगल बार्ड)

गुगल ट्रान्सलेटक लिंक

https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate

गुगल ट्रान्सलेटकेँ आर पुष्ट करबाक खगता छै, तइ लेल अगिला काज अहाँ करू छी:

https://translate.google.com/about/contribute/

Crowdsource Maithili Community

Please fill the form

Next Step

Download the Crowdsource app from android play store and start contributing

or go to web on the following link for contributing:

https://crowdsource.google.com/about/

Crowdsource by Google is a gamified platform that empowers users to directly train Google's artificial intelligence systems and make Google products work equally well for everyone, everywhere.

चैट जी.पी.टी- जी.पी.टी.-४/ माइक्रोसॉफ्ट बिंग ट्रान्सलेट (मैथिली)

https://openai.com/

https://openai.com/gpt-4

https://openai.com/chatgpt

https://www.bing.com/translator

https://translator.microsoft.com/

CONTRIBUTE VOICE CLIPS TO MICROSOFT TRANSLATOR

GO TO https://translator.microsoft.com/

Download Microsoft Translator APP- (Android/ IOS)

Click three horizontal lines in the left top corner.

Click "on" to Contribute Voice Clips to contribute clips to teach Microsoft's speech technology more about Maithili.

Your contribution start confirmation date/ time appears, which could be sent to your email too.

AI4BHARAT (MAITHILI)

AI4BHARAT [Maithili Version 2 translation IndicTrans2 launched on May 26,2023; Nilekani Centre at AI4Bharat launched on July 28, 2022]

https://ai4bharat.iitmac.in/ (AI4BHARAT IIT MADRAS)

https://models.ai4bharat.org/#/nmt/v2 (Maithili Translation Version 2)

https://github.com/AI4Bharat/IndicTrans2

https://arxiv.org/abs/2305.16307

https://github.com/AI4Bharat (GitHub AI4Bharat)

https://ai4bharat.iitmac.in/models (AI4Bharat Models)

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfEOrRdR4SxFbzFD9CSR1scrrEUMdbsg7wsbZ6Vfxn6FQoq8A/viewform?pli=1 Audio Transcriber Maithili Apply)

अमेजन अलेक्सा मैथिली (शीघ्र....)

किछु मैथिली विकिपिडिया पेजक लिंक:

विदेह (पत्रिका) https://mai.wikipedia.org/s/kgv

इन्टरनेटक संसारमे मैथिली भाषा https://mai.wikipedia.org/s/s6h

रालसनिक गाछ https://mai.wikipedia.org/s/ipm

विदह https://mai.wikipedia.org/s/ie1

विदहक रुसवुक रर्सन https://mai.wikipedia.org/s/iu1

विदह सम्मान https://mai.wikipedia.org/s/jc2

विदह आर्काइर https://mai.wikipedia.org/s/jc0

विदह मिथिला नत्न https://mai.wikipedia.org/s/jc3

विदह मिथिलाक खाज https://mai.wikipedia.org/s/jc4

विदह सूचना संपर्क अन्वषण https://mai.wikipedia.org/s/jc5

श्रुति प्रकाशन https://mai.wikipedia.org/s/iu7

अनचिह्नान आखन https://mai.wikipedia.org/s/ion

मैथिली गजल https://mai.wikipedia.org/s/idz

मैथिली वाल गजल https://mai.wikipedia.org/s/iex

मैथिली रक्ति गजल https://mai.wikipedia.org/s/if1

....

किछु मैथिल याथी, तिया-नीतिया, कलाकृति/ यू ट्यूव चैनल ताउनलाउ साइट (डायन सार्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली-हिन्दी वार्तालाय (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकात राषा सहित- मैथिलीम यहिल वन)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

SAHITYA AKADEM

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisamhtm

अखियासल (नमानन्द मा नमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

डआयल कनकनी- मदन्द्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रवन्ध संग्रह- नमानाथ मा (वी.यी.एस.सी. सिलवस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन कन दीय यर्न- सं कदान कानन आ अनिरुद्ध Oकुन

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

ARCHIVE.ORG (विजयदेव झा)

https://archive.org/details/vijay_deo_jha

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

http://videha.co.in/archive.htm

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm(MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

मिथिला दर्शन

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

तीरभुक्ति

https://archive.org/details/@teerbhukti_journal

OLE NEPAL's E-PUSTAKALAYA (https://pustakalaya.org/en/)

याथीक लिंक

आइ.जी.एन.सी.ए.- ए.एस.आइ. https://ignca.gov.in/divisionss/asi-books/

https://ignca.gov.in/Asi_data/16612.pdf (History of Navya-Nyaya in Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/42365.pdf (Studies in Jainism and Buddism in Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/63227.pdf (Mithila in the Age of Vidyapati)
https://ignca.gov.in/Asi_data/64994.pdf (Cultural Heritage of Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/72754.pdf (Mithila under the Karnatas)

ए.एस.आइ.अंग्रेजी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temples_of_mithila_english.pdf

ए.एस.आइ.हिन्दी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temple_of_mithila_hindi.pdf

मैथिली साहित्य संस्थान https://www.maithilisahityasansthan.org/resources

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

https://bloomlibrary.org/language:mai (ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली)

अरिपन फाउण्डेशन (http://www.aripanafoundation.org/)

PRATHAM BOOKS MAITHILI STORYWEAVER

https://www.youtube.com/playlist?list=PLAT74nNc2fmYaW29mRVAIgzRq63_9zWbI (मैथिली कथा वृक्ष)

https://www.youtube.com/channel/UCE1HEUJEzc-NUbMsHzklHLw(विदेह मैथिलीअलाउड कथा वृक्ष आ संगम मैथिली संकाय -अंग्रेजी टॉकिंग गीत- देनू मैथिलीमे यहिल बन -राखा)

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाल्ली कन यनिवर्नकानी नवका)
https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (बलू हम गँ ठीक छी न!)
https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (थकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर)
https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ विडे सरकँ देखन छी?)

पोथी डॉट कॉम

https://store.pothi.com/browse/free-ebooks/?language=Maithili

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/maithili-books-pdf-free-download/ (पोथी डाउनलोड लिंक)

https://www.ilovemithila.com/ *(online maithili journal)*

https://maithili.com.np/ *(owner I Love Mithila)*

मैथिली फिल्म

https://youtu.be/4jhaQ3Nw38I (ममता गावय गीत, सौजन्य- Saregama)

https://youtu.be/V3KWhhB6Kg (कन्यादान, सौजन्य- BEJOD)

https://www.bejod.in/ (Maithili Movies on Rent)

https://mubi.com/films/gamak-ghar (Maithili Movies on Rent)

https://mubi.com/films/dhuin (Maithili Movies on Rent)

ध्यान मैथिल

https://www.youtube.com/channel/UCq3OLlck2tNw8BI4t8jjzQg (*ध्यान मैथिल चैनल- किनका चौधरी आ संगीता आनन्द*)

https://www.youtube.com/@mithiranglokrang677 (मिथिरंग लोक रंग)

https://www.youtube.com/MithilaChapter (मिथिला चैप्टर)

https://www.youtube.com/sounyajha (खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल)

https://www.youtube.com/@maithilirangmanch9536 (मैथिली रंगमंच)

https://www.youtube.com/@kokilmanch4330 (कोकिल मंच)

https://www.youtube.com/@mithilanatyakalaparishadmi5636 (MINAP)

https://www.youtube.com/@milrmedia3097 (मैलारंग)

http://www.youtube.com/user/mailorang (मैलारंग)

https://www.youtube.com/@praakshjha (मैलारंग)

https://www.youtube.com/@mithilangan109 (मिथिलांगन)

https://www.youtube.com/@bhangimamaithilitheatre9509 (भंगिमा)

https://www.youtube.com/@MithilaDarshan (मिथिला दर्शन)

https://www.youtube.com/@MithilaMirror (मिथिला मिरर)

https://www.youtube.com/@SmritiEntertainmentMaithili (स्मृति इंटरटेनमेंट)

https://www.youtube.com/@achalchitra (अचल चित्र)

https://www.youtube.com/@Bejod (BEJOD)

https://www.youtube.com/@neelammaithili (नीलम मैथिली)

https://www.youtube.com/@maithiliganga4714 (मैथिली गंगा)

https://www.youtube.com/@MithilaJunction (मिथिला जंक्शन)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLgmlEgU89nhRIGV-rG2SXY3uuhnXGT-j5 (दीपशिखा झा)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLT8LMrml4tPHxM64K8Iov_Arr_3uPaPgf [मैथिली समाचार (जनता टेलीविजन)]

https://www.youtube.com/@maithilitalks (Maithili Talks)

https://www.youtube.com/@AppanTV (Appan TV)

https://www.youtube.com/@TVTODAYJANAKPUR (TV Today, Janakpur)

https://www.youtube.com/@drishyambiharlok7552 (Drishyam Media)

https://www.youtube.com/@sanskarmithila (संस्कार मिथिला)

https://www.youtube.com/@saregamaapanmaithili3522 (सरेगामा मैथिली)

https://www.youtube.com/@NavrassMedia (नवरस मीडिया)

https://www.youtube.com/@jyotient778 (ज्योति इंटरटेनमेंट)

https://www.youtube.com/@RKSMAITHILIPRODUCTION (रूपानिया फिल्म्स)

https://www.youtube.com/@ayodhyanathchoudhary345 (अयोध्यानाथ चौधरी)

https://www.youtube.com/@RadioJanakpur97MhzOfficial (रेडियो जनकपुर)

https://www.youtube.com/@mithilatv1 (मिथिला टी.वी.)

https://www.youtube.com/@Madhurmaithilichannel (मधुर मैथिली)

https://www.youtube.com/@sktutorials8921 (मैथिली-नेपाली सीखू)

https://www.youtube.com/playlist?list=PL_HQDKXbaRKq3YTS7-Pkks1Y-UIL33fiD (नयन मैथिली)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLH1UiGl69_SLRhxZMZ1TSxUi-JXcHhAZr (मैथिली यात्रा)

https://www.youtube.com/@maithiliforiassurendraraut1589 (सुरेन्द्र राउत)

https://www.youtube.com/@UdayaSingh (उदय कान्त, नचिकेता)

https://www.youtube.com/@kunjbiharimithilaratna (कुंज बिहारी)

https://www.youtube.com/@RAMBABUJHA (राम बाबू झा)

https://www.youtube.com/@VJEntertainments008 (वी. जे., विकास झा)

https://www.youtube.com/@user-ib7pn3li5q (गिनदूत मिथिला)

https://www.youtube.com/c/ilovemithila (आई लव मिथिला)

https://www.youtube.com/@LokKalaKendra (लोक कला केन्द्र)

https://www.youtube.com/@rajnipallavi (रजनी पल्लवी)

https://www.youtube.com/@PoonamMishra (पूनम मिश्र)

https://www.youtube.com/@ranjanajhasangeetdivyam2908 (रंजना झा)

https://www.youtube.com/@julijhaofficial8057 (जूली झा)

https://www.youtube.com/@maithilithakur (मैथिली ठाकुर)

https://podcasters.spotify.com/pod/show/anupam-mishra04/episodes/Episode-40-e135mlu/a-a5uoe0r (अनुपम मिश्र पॉडकास्ट(

जानकी एफ.एम समाचार

https://www.youtube.com/user/Janakifm/videos (जानकी एफ.एम समाचार)

https://www.youtube.com/@AmitJhaOfficial (Amit Jha)

https://www.youtube.com/@PMPCORNER (Pravesh Mallick)

https://www.youtube.com/@AdityaFilmsandmusic (Aditya Films & Music)

https://www.youtube.com/@NepalTelevision (Nepal Television)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLEqde8-nxNTHL78RKSiuTGeeTJXot3YrY (AIR MAITHILI NEWS)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLJuuojdiqz3NMKxKUbbc07cT3sPrgRejS (AIR AMRIT MAHOTSAV)

https://www.youtube.com/@Mithilanchal (Mithilanchal)

https://www.youtube.com/channel/UCsB8UkEYLZe471GrcAlcG1A (Rashmi Dutt)

https://www.youtube.com/channel/UCVYE4fcasReMKTpbXWgp2ng (Priya Mallick)

https://www.youtube.com/@AnamikaJhaOfficial (Anamika Jha)

Videha e-Learning

https://www.youtube.com/@videha-elearning

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

....

http://www.youtube.com/user/ggajendra71(विदेह)

https://www.youtube.com/gunjanshree

http://www.youtube.com/user/Maithilinews
http://www.youtube.com/user/jitumaithil (जितेन्द्र झा, जनकपुर)
http://www.youtube.com/user/sobhagya8 (सौभाग्य मिथिला)
http://www.youtube.com/user/bhaskaranjha (भास्कर झा)
http://www.youtube.com/user/mahakalijha
http://www.youtube.com/user/karia1885
http://www.youtube.com/user/omuniv
http://www.youtube.com/user/sumankumar137
http://www.youtube.com/user/gyansjha
http://www.youtube.com/user/bclalan
http://www.youtube.com/user/gareri1986
http://www.youtube.com/user/avinashjha84
http://www.youtube.com/user/chandankumarjha1
http://www.youtube.com/user/chandanmishra2010

http://www.youtube.com/user/nirmaana

http://www.youtube.com/user/Janakifm1

http://www.youtube.com/watch?v=XpSuVHtbaQ8&feature=mfu_in_order&list=UL

http://www.youtube.com/user/gxcng

http://www.youtube.com/user/gautamkrishna85

http://youtu.be/3i3OG5Nf3y8

http://youtu.be/sJnxSe-ckmo

http://www.youtube.com/user/jitmohanjha

http://www.youtube.com/user/MITJnPNN

http://www.youtube.com/watch?v=-9KaC8ji9t4

http://www.youtube.com/user/luvvivek2k7

http://www.youtube.com/user/bindassatyandra

http://www.youtube.com/user/rustymind1

http://www.youtube.com/user/MrDeveshKarna

http://www.youtube.com/user/rambabushah

http://www.youtube.com/user/mukeshjha84

http://www.youtube.com/user/Mauahi
www.youtube.com/user/MrBasantjha
http://www.youtube.com/user/themadan
http://www.youtube.com/user/sentukhu

http://www.youtube.com/user/yarowjha

http://www.youtube.com/user/mkoxp
http://www.youtube.com/user/luvvick21

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/MrRamkisor

http://www.youtube.com/user/pratyushsangita/
http://www.youtube.com/user/hellomithilaa

http://www.youtube.com/user/mariyoshj

http://www.youtube.com/user/dearshantanu/

www.youtube.com/user/RajuPrasadRajbanshi

www.youtube.com/user/premarshi
http://www.youtube.com/user/Dhipre (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

http://www.youtube.com/user/TheShubhaprabhat

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/mithilaconnect

http://www.youtube.com/user/NAYAKSAURABH80

http://www.youtube.com/user/Rabindra888

http://www.youtube.com/user/uday88mandal

http://www.youtube.com/user/nimesdeath

http://www.youtube.com/user/pawanks6102
http://www.youtube.com/user/sahayogee
http://www.youtube.com/user/sunilkumarpawan

http://www.youtube.com/user/videhuk

http://www.dailymotion.com/video/xjophq_documentary-kosi-katha_shortfilms#from=embed

http://blackbuddhas.com/

http://youtu.be/CPwpkn5YI1I

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

8.Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

Issue No. 88 (November-December 2019) of Muse India at http://museindia.com/ displays Maithili literature in an extremely poor light. Moreover, it wrongly claims to be a representative review of Maithili Literature, whereas it was only in line with the Sahitya Akademi, Delhi; a mere representation of the so-called "dried main drain". It is expected that Muse India will correct itself by announcing an issue exclusively devoted to the parallel tradition of Maithili literature.

T.K. Oommen writes in the "Linguistic Diversity" Chapter of "Sociology", 1988, page 291, National Law School of India University/ Bar Council of India Trust book: "... the Maithili region is found to be economically and culturally dominated by Brahmins and if a separate Maithili State is formed, they may easily get entrenched as the political elite also. This may not be to the liking and advantage of several other castes, the traditionally entrenched or currently ascendant castes. Therefore, in all

possibility the latter groups may oppose the formation of a separate Maithili state although they also belong to the Maithili speech community. This type of opposition adversely affects the development of several languages."

T.K. Oomen further writes: "... even when a language is pronounced to be distinct from Hindi, it may be treated as a dialect of Hindi. For example, both Grierson who undertook the classic linguistic survey of India and S. K. Chatterjee, the national professor of linguistics, stated that Maithili is a distinct language. But yet it is treated as a dialect of Hindi". (Ibid, page 293)

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. - Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

Parallel Literature

The references to parallel literature are found in Vedas, where Narashanshi is referred to as parallel literature.

Parallel Literature in Maithili

The need for parallel literature in Maithili arose due to the constant onslaught on literature and dignity by the Public and Private Academies, for example, Maithili-Bhojpuri Akademi of Delhi, Maithili Akademi of Patna, Sahitya Akademi of Delhi, Nepal's Prajna Pratishthan, all of which are government Academies. In addition to these Academies, the onslaught on Maithili Literature and dignity was constantly done by the so-called literary associations which were recognised by the Sahitya Akademi and were the main tool for usurping all the literary space meant for this language. Besides these, the funding to these and other parochial associations and organisations led to the presentation of an interface in the name of Maithili, which was mediocre and non-representative.

The Book of Bihari Literature (Abhay K. Editor)

This book contains five translations from non-representative Maithili short stories into English by Vidyanand Jha. Nagarjun (Maithili's Yatri) and Usha Kiran Khan are from the Hindi quota though both got the Sahitya Akademi prize from the Maithili quota. Vibha Rani and Rajkamal Chaudhary are from the Maithili quota though both wrote in Hindi also.

This book is edited by Abhay K. who has read Samskrit only up to high school. Yet he pretends to translate Arthashastra directly from Samskrit into English. I am Kovid in Samskrit and from the quality of the translation, I can presume that he has used some intermediary language in translating Samskrit texts into English. It is a matter of ethics to acknowledge the source.

Vidyanand Jha's translation is below par, for example, he has no inkling what would be the English word for 'olak sanna', and there are plenty of such instances. I have some suggestions for him. First, read A Bird's Eye View on Mithila by Rajnath Mishra, it mentions all the terms for which you could not find English equivalents. Then go to the Videha

archive (www.videha.co.in) and look for Umesh Mandal's Picture Dictionary containing vegetation, animals and skill sets of Mithila, here you will find the actual photographs too. Further, under A Parallel History of Maithili Literature (Videha www.videha.co.in), you will find sample English translations of some Maithili short stories. Therefore, what Vidyanand Jha is presenting as exotic is the original thing of the Maithili Language (but not that of Maithili literature, as was two decades ago). Interestingly his choice of short stories reminds me of Contemporary Maithili Short Stories (Maithili short stories translated into English) edited by Murari Madhusudan Thakur and published by the Sahitya Akademi in 2005. It seems that the stories in this selection are leftover material from that collection. Rip Van Winkle awoke after two decades but Vidyanand Jha is still in slumber not realizing the changes that have happened during the period.

If you compare the translation of this selection vis-a-vis the English translation of Latin American

Spanish literature, you would be able to understand the difference.

But these types of selections are not known for their literary excellence, Harper Collins publishes these types of selections for five-star hotels and Airport lounges. The publishers announced this book on March 22, 2022. So, in 6-7 months, you will get old materials only.

The Bride: The Maithili Classic Kanyadan by Harimohan Jha (1908-1984) translated into English by Lalit Kumar (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi)- Harper Perennial (Harper Collins Publishers)

I had pre-ordered the book, which was scheduled to be delivered to my kindle account on the 1st of December 2022, but the delivery date was postponed, and it was delivered to my account on the 14th of December 2022.

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili

language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

Sh. Harish Trivedi has committed the same mistake. In his foreword Harish Trivedi writes- "In Hindi, the language to which Maithili is the closest (and of which it was indeed an integral part until it was granted recognition as a separate language by the constitution in 1993) ..."

Harish Trivedi refers to the inclusion of Maithili in the eighth schedule of the constitution of India. Here the year mentioned should be 2003 instead of 1993. Moreover, Maithili was a separate language in 2003, 1993, and 1965 and during the time of pre-Jyotirishwara Vidyapati. The status granted to Maithili by Sahitya Akademi and the Constitution of India, on the other hand, strengthened the hands of the obscurantist elements like Ramanath Jha, Shardananda Jha (he is not a famous person but why I have taken his name, I will explain it later) and others who gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha's Khattar Kakak Tarang, Pranamya Devata, Rangshala and Charchari all these books were eligible for the

Sahitya Akademi Award initiated in 1966 for Maithili (because of recognition given to Maithili by Sahitya Akademi in 1965. But a philosophy treatise was awarded the prize in 1966, this philosophy book itself is a horrific one, and if one has read the book to understand the nuances of Indian Philosophy, then he will have to unlearn first to be able to grasp the philosophical concepts from a new book on Indian Philosophy. In 1967 no award was given for the Maithili Language.

Ramanath Jha's obscurantism vis-a-vis Panji is evident from one example (because Lalit Kumar also seems to have followed in his footstep, though he gives credit for his ignorance to some other writers). He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret-which has been released by us on google books in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I &

II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila"-

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh Harimohan Jha? So, the Sahitya Akademi saved the Maithili Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, is wrong and so is the assertion made by Sh. Harish Trivedi.

Mr Lalit Kumar is a young person, but he is being misused by some obscurantist elements, who gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha stopped writing in Maithili following the recognition of it by Sahitya Akademi and was awarded the Sahitya Akademi prize for his autobiography in 1985, after his death, which means nothing.

Mr Lalit Kumar writes- "Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) and Shardananda Jha's Jayabara (1946) attack such social divisions that played a decisive role in marriages." Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) was indeed a pathbreaking novel, but Shardananda Jha's novel was reactionary. Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Yoganand Jha's 'Bhalamanusa' deals with the social problems connected with the problem of marriage. As a reply to this novel, Shardanand Jha wrote a second-rate novel 'Jayabara,' having little literary merit. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

Mr Lalit Kumar for his Panji-related ignorance gives credit to Mm Parmeshwar Jha's "Mithila Tattva-Vimarsha." Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Mm Parmeshwar Jha's 'Mithila Tattva-Vimarsha' is the history of Mithila in Maithili prose and is based mainly on tradition. Mm Mukunda Jha Bakshi's 'Mithilabhashamaya Itihas' gives an account of the Khandawala dynasty. From the point of view of modern Maithili prose, these two works are important, though from the historical point of

view, are unreliable. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

The following excerprt from Our Panji Paband ((part I&II) is being reproduced below for ready-reference: -

महाराज हरिसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरिसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरिसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरिसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, ई नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकमे स्थापना कएने रहथि- नन्देन्दु शुन्यं शशि शाक वर्ष (१०१९ शाक)... मिथिलाक पञ्जिकारलोकनि शाक १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे (धात वृद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाक माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) (श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files.

Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjīkara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panjī records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014]. Later these Panji Manuscripts were uploaded to google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh

vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

Mr Lalit Kumar further tries to put his agenda by writing- "Harimohan choose a middle ground in his reformist agenda." He gives laughable reasons for his contention viz. "he espouses the significance of local traditions, languages, scripts, education system, and moral values" thereby meaning that these are conservative values!

(All the referred books are available for free pdf download from the link http://videha.co.in/pothi.htm)

VIDEHA MAITHILI LITERATURE MOVEMENT AND A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE

Therefore, the missing portions, the ignored and non-represented aspects of society, started to be chronicled. It led to the depiction marked by the richness of vocabulary and experiences and was a revolution in literature and art as far as people speaking Maithili are concerned. The quality now has not remained mediocre. The real power of the Maithili language was realised by the native speakers, mediocrity was replaced by excellence. This attempt at the writing of History of Parallel Literature for the Maithili Language arose as the mediocre agency (private and governmental) funded so-called mainstream literature, which has no readership, and no acceptance among the speakers of Maithili continued to be presented by these Akademies as representative literature. The mediocre interface of Maithili literature was presented by the government radio and television stations also. Literary journals like Museindia (www.museindia.com) & Publishers like Harper Collins were also used for their sinister design.

Pseudo-criticism in Maithili and the case of Kamalananda Jha

The title of Kamalanand Jha's book "Maithili Novel: Time, Society and Questions" (2021) is misleading. It is a collection of some syndicated so-called critical articles on some of his caste novelists. The 263-page book can only be sold in hardbound to libraries where it will rot. Here is a correction, a non-caste writer's work, i.e., Subhash Chandra Yadav's novel 'Gulo', has been dealt with by him in two lines, of course without reading it. I am presenting those two lines here for your entertainment. You must have read *Gulo*, if you haven't already, read it first because then you will have a more entertaining experience. Gulo is available on Videha Archive with the permission of Subhash Chandra Yadav at this link http://videha.co.in/pothi.htm

"The weakness of the novel is the author's political bias. The partisanship towards a particular politics does not do justice to the work."

In a novel where politics is not remotely involved, there is no question of 'political bias and partisanship of a particular politics'. Dhumketu and Yatri used political bias or partisanship. Subhash Chandra Yadav's 'Vote' which came out in 2022 and is available with permission of Subhash Chandra Yadav on Videha Archive at this link http://videha.co.in/pothi.htm, is on politics but even there Subhashji's enchanting style obviates the need of any political bias... Read my book 'Nit Naval Subhash Chandra Yadav' which is available at this link http://videha.co.in/pothi.htm. On the other hand, Mr Kamlanand Jha sounds like a spokesperson of some political party or a casteist organisation rather than a literary critic. Kamalananda Jha's Brahministic bias against Subhash Chandra Yadav is an alarm bell. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist stance to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. In his biodata, he proudly mentions the Maithili translation assignment bestowed on him by the Sahitya Akademi, and this assignment was allotted to him not on account of

merit but solely on the ground of his caste title and in lieu of these deeds. For people like him, Maithili-related work is merely a line in their *curriculum vitae*, but it is a question of life and death for the people of the parallel stream. Why did I call Kamalananda Jha a pseudo-critic? Because he is a pseudo-critic. He writes: "After nearly a hundred years of journey, Gaurinath is credited with writing a dignified novel on the dreams, struggles and ironies of inter-caste marriage. So, did Kamalananda Jha take away this credit from Sushil? Is this the culmination of the arrogance of his Brahministic upbringing ("*Through my whims and fancies I can place some literature on top and can downgrade some to the bottom*") or is this the evidence of his lack of study? Let me take you away from the selfish world of Kamalananda Jha, away from deception and disguise to the sincere world of Sushil's magical literature. Welcome to the world of Sushil's literature. Here is Sushil's 'Gambali' (1982) which is now available in the Videha Archive at the link http://videha.co.in/pothi.htm. In the first line of this novel, even before the

novel begins, Sushil writes about the novel 'Gambali': "In support of widow marriage and inter-caste marriage" and here begins the novel. The death of a village woman and then the trouble ensues, who will cremate this village woman? Brahmin community or Yadav community of the village? Dinesh Kumar Mishra's 'Dui Patan Ke Bich Me' is a historical biography of the Kosi River. He has also written historical biographies of other rivers of Mithila like 'Bandini Mahananda,' 'Bagmati Ki Sadgati!', 'Dui Patan Ke Bich Me... (Story of the Kosi River)', Na Ghat Na Ghar, Kamla River, 'Bhutahi River and Technical Herbalism', The Kamla River and People on Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a Ghost River and Engineering Witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments. Pankaj Jha Parashar, a member of the Maithili Advisory Committee of the Sahitya Akademi, Delhi has plagiarised paragraph after paragraph from his books and has published a novel in Maithili in his name, which pseudo-critic Kamalananda Jha mentions as research of this thief author Pankaj Jha Parashar! Let me clarify here that both the thief writer and the pseudo-critic are in

the Hindi department of Aligarh Muslim University. This research is done by Dinesh Kumar Mishra, who is a graduate of IIT, Kharagpur in Civil Engineering (in 1968) and M Tech in Structural Engineering (in 1970) and is qualified for that research. In Hindi, the cut-off for admission is the lowest across universities, otherwise, Kamalananda Jha would have known that this research could be done by a civil engineer only. The Hindi original and Maithili screenshots are attached below. Dinesh Kumar Mishra is not from Mithila, but he has authored the story of all the streams of Mithila. We are grateful to him, and the people of Mithila will remain indebted to him for this. This thief writer Pankaj Jha Parashar is a habitual offender. More than a decade ago he found a saviour in Mr Taranand Viyogi who wrote that he (thief writer Pankaj Jha Parashar) gets influenced involuntarily stole others' material in his works. Now he has found another saviour in Kamalananda Jha. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist side to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. Communism has suffered a lot from

people who became communists to escape the land ceiling.

All books by Dinesh Kumar Mishra are now available in the Videha Archive with his permission:

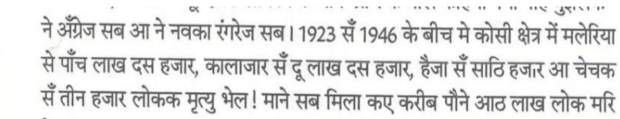
http://videha.co.in/pothi.htm

Let us recall here that when Bill Gates was asked whether he was delaying the introduction of the X-Box in India for fear of piracy. His answer was Microsoft never delays the launch of products for fear of piracy. We will continue enriching Videha Archive (http://www.videha.co.in/archive.htm), despite such risks because not all the fish in the pond rot by some rotten fish in parallel streams. The fishermen here have been and will continue to remove such rotten fish.

The final blow to syndicated pseudo-literary criticism in Maithili.

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): It is noteworthy that between 1923 and 1946, 5,10,000 people died of malaria, 2,10,000 from Kala Azar, 60,000 of Cholera and 3,000 of smallpox

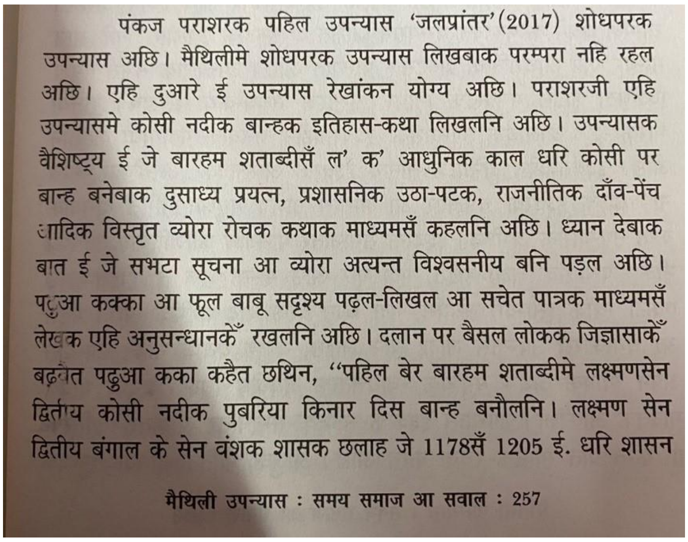
in the Kosi region (783,000 total deaths). Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi)[Jalpranthar 2017 (p. 103)]:


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

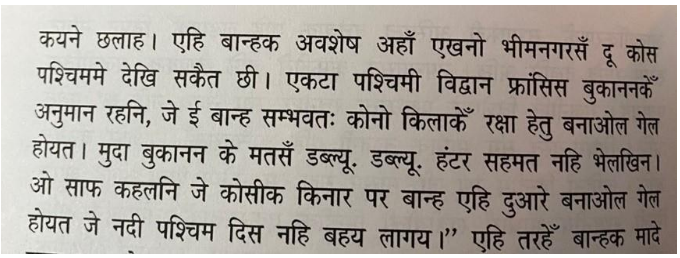
Original Dinesh Kumar Mishra(Dui Patan Ke Beech Me... 2006): On the Kosi River in Bihar, India, a dam was built by King Laxman II in the 12th century and for this, he received the title of 'Bir' from the people and the embankment of the river was called 'Bir Dam' The remains of this embankment are still visible in Supaul district, about 5 km south of Bhim Nagar. Dr Francis Buchanan (1810-11) speculated that the dam must have been an outer wall built to protect a fort as it stretched over a distance of 32 kilometres from Tilyuga to its confluence on the western bank of the Dhaus river. Dr WW Hunter (1877) did not agree with Buchanan's contention that the dam was the protective wall of a fort. Quoting locals, Hunter believed that most people did not consider it a fortress wall and according to him it

was something else but he was not in a position to say anything. Yet the common impression is that it must have been an embankment built along the Kosi River to prevent the river's current from sliding westwards. People also said that it seemed that the construction of the embankment had suddenly stopped.

The pseudo-critic Kamalananda Jha's saviour of the habitual offender thief Pankaj Jha Parashar quoted the plagiarised work as follows: (Maithili Novel, Time, Society and Questions pp. 257-258):


पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257


कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi)[Jalpranthar 2017 (p. 31)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कें आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कें लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनें छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कें बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कें आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

Original Dinesh Kumar Mishra(Dui Patan Ke Beech Me... 2006): A glimpse of the horrors of the Kosi River can be seen in the event when the army of Feroz Shah Tughlaq returned to Delhi from Bengal. It is said that when the troops of the Sultan reached the banks of the Kosi, they saw that on the other side of the river, the troops of Haji Shamsuddin Ilyas were waiting, ready for a battle. This was the same Haji Shamsuddin who founded the cities of Hajipur and Samastipur. Feroze's troops

were stranded on the banks of the Kosi somewhere around Kursela. The speed of the river was preventing them from moving forward. It was finally decided to proceed northward along the river and to locate the water where it was navigable. The troops of the Sultan went up about a hundred *kos* and crossed the river near Ziaran, situated at the same place where the river descended from the mountains into the plains. The river was thin, but the flow was so fast that heavy stones weighing five hundred *manas* were floating like straws in the river. On either side of the river where it was found possible to cross it the Sultan erected a row of elephants, and ropes were hung in the bottom row so that if a man loses control he could be rescued with the help of these ropes. Shamsuddin never thought that Sultan's troops would be able to cross the Kosi and when he came to know that Sultan's troops had managed to cross the Kosi, he fled.

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi)[Jalpranthar 2017 (p. 105)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनेँ रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनेँ कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनेँ शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनेँ आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मददि सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनेँ छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

A Parallel History of Maithili Literature

I

Introduction

FESTIVAL OF LETTERS OR FESTIVAL OF SHAME

SAHITYA AKADEMI AND the DOWNFALL OF INDIAN LANGUAGES (IN SPECIAL CONTEXT OF MAITHILI LANGUAGE)

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

He was wrong on this on two counts. What he referred to as applicable, if it applied at all, only to the part of Maithili speaking area, geographically located in India. Maithili is spoken, natively, in India and Nepal. After the treaty of sugauli (ratified in 1816), which was in the aftermath of the Anlo-Nepalese war of 1814-16, the hilly regions were incorporated in British India, including the Nepalese-speaking Darjeeling Area. Similarly in 1816 and 1860, the Britishers ceded some Terai region to Nepal. As a result, part of Maithili speaking Area, which was earlier ruled by Malla Kings (when Maithili was an official language of the region), was ceded to Nepal. Even today some Maithili scholars (!!) refer to the golden period of Maithili as the period of "Nepali (!!)" Malla Kings (Ramanath Jha, Introduction to Maithili Sahityak Itihas by Dr Durganath Jha "Shreesh").

Ramanath Jha himself admits that during his visit to "Vir Library" of Nepal (Kathmandu) he came to know about the Nepal legacy (his monograph on kirtaniya Natak, which he wrongly presents as

Kirtaniya Nach) in respect of Maithili. So, he cannot be blamed for his lack of knowledge in this respect. He was wrong on the second count also, and this second count was an artificial creation. He began a tradition of elitism and conservatism in Sahitya Akademi, as the first convener of the Maithili language. The tradition got stronger and stronger in the last 55 years of the Existence of Maithili in that Akademi. So, he ensured that liberal writers, like Sh. Harimohan Jha, attacking casteism and conservatism did not get the award, even though the year 1967 went unrewarded and the Ist award in 1966 was given to a non-literary book in Maithili (academic book of Philosophy!!!).

He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him, and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father. But he informed Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya in a distorted way. Sh. Dinesh

Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila".

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila-Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", and he writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh? Harimohan Jha. So, the Sahitya Akademi saved the Maithili Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, was wrong on those two counts.

Now come to Nepal, the Prajna Pratisthan and other organizations often recognize Indian Maithili writers, but Sahitya Akademi of India does not recognize Nepalese Maithili writers, be it the Seminars or the poets meet, be it an anthology of poems or prose published by the Akademi. Regarding the treatment of Nepalese Maithili writers by Sahitya Akademi Sh. Ram Bharos Kapari "Bhramar" laments that there is demand in Nepal that they should also not award Indian Maithili writers/

publish them in their anthologies as reciprocity demands this.

The narrow-mindedness of the Maithili advisory board of the Indian Sahitya Akademi has its origin in the organizations that are recognized by the Sahitya Akademi, the basis of which is extra-literary credentials. These are pseudo-organizations running on paper, political organizations or casteist organizations pocket-run by a few. The complete list is:

MAITHILI LITERARY ASSOCIATIONs (!!!) RECOGNIZED by SAHITYA AKADEMI

1. The Secretary, All India Maithili Sahitya Samiti, Tirbhukti, 1/1B, Sir P.C. Banerjee Road, Allahabad-211 002.

2. The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, C/o Dr. Ganapati Mishra, Lalbag, Darbhanga-846 004.

3. The Secretary, Chetna Samity, Vidyapati Bhawan, Vidyapati Marg, Patna-800 001.

4. The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6 B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007.

5. The Secretary, Vidyapati Seva Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004.

6. The Secretary, Centre for the Study of Indian Traditions, Tantrabati Geeta Bhavan; Ranti House, Ranti, Madhubani-847 211

Now the Literary Association lists read as under. Serial no. 1 & 6 above have been derecognised and has been replaced by other non-literary associations at sr no 5, 6 & 7 below.

(1) The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, Professors' Colony, Digahi West, Opp. of Primary School, Darbhanga-846 004, (Bihar)

2) The Secretary, Chetna Samiti, Vidhya Pati Bhavan, Vidyapati Marg, Patna-800 001 (Bihar)

3) The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007, (West Bengal)

4) The Secretary, Vidhya Pati Sewa Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004, (Bihar)

5) The Secretary, Anand, Samajik Sanskritik Sahityik Manch, Rajkumarganj (Mirzapur Chowk), Darbhanga-846 004, (Bihar)

6) The General Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, Rosebery 5032, Sahara Garden City, Adityapur-2, Jamshedpur-831 014, (Jharkhand)

7) The General Secretary, Akhil Bharatiya Mithila Sangh, G-6, Hans Bhavan, Wing 2 I.T.O., Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-110 002, (Delhi)

What is the literary credential of the Centre for the Study of Indian Traditions (now recognised and replaced by another pocket association)? Chetna Samiti and Vidyapati Seva Sansthan are casteist political outfits, vehemently displaying the casteist attire of a great ancient poet, whose caste is still uncertain (VIDYAPATI), but who was certainly not Brahmin. All India Maithili Sahitya Samiti (now derecognised and replaced by a non-literary association) became non-existent even during the lifetime of the Late Jaykant Mishra, same is the case with Akhil Bhartiya Maithili Sahitya

Parishad. Mithila Sanskritik Parishad has done a crime through an investiture ceremony of the great Vidyapati, they tried to convert Vidyapati and "Maithili" language to the language of only the Brahmins (the name of the artist who sketched the Vidyapati has still not been disclosed by this organisation). When these non-existent organizations exercise voting powers granted by Sahitya Akademi and chose a convener, it is not a coincidence that for successive times only conservative people among the Maithil Brahmin caste, are chosen. The complete list is:

1. Ramanath Jha, 2. Jaykant Mishra, 3. Surendra Jha Suman, 4. Sureshwar Jha, 5. Ramdeo Jha, 6. Chandranath Mishra Amar, 7. Vidyanath Jha Vidit, 8. Veena Thakur, 9. Prem Mohan Mishra, 10. Ashok Avichal.

The result is now for everybody to see. The complete list of Sahitya Akademi awards (till 2019) is:

Total booty distribution- 50 times, Maithil Brahmins- 42 times, Kayasthas- 6 times, Rajpoots- 3 times; Others- 0 times!!! (Now in 2021 Sh. Jagdish

Prasad Mandal has been awarded this prize for his novel "Pangu", so the count is now not zero but one.

The result is not based on the quality of the books but solely upon the caste-based other considerations and the disease has its root in the faulty seedling that the Sahitya Akademi of India found through the faulty literary associations.

What were the objectives of the setting of this Akademi?

Sahitya Akademi was established (National Academy of Letters to be called Sahitya Akademi) by Government of India resolution No F-6-4/51G2(A) dated December 1952 "to set high literary standards, to foster and co-ordinate literary activities in all the Indian languages and to promote through them all the cultural unity of the country; to promote good taste and healthy reading habits, to keep alive the intimate dialogue among the various linguistic and literary zones and groups through seminars, lectures, symposia, discussions, readings and performances, to increase the pace of mutual

translations through workshops and individual assignments and to develop a serious literary culture through the publications of journals, monographs, individual creative works of every genre, anthologies, encyclopedias, dictionaries, bibliographies, who's who of writers and histories of literature."

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, " along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year".

The Akademi recognises " Besides the twenty-two languages enumerated in the Constitution of India", English and Rajasthani as languages. Sahitya Akademi has constituted twenty-four language Advisory Boards "to render advice for implementing literary programmes in these 24 languages".

The Akademi gives prizes in twenty-four languages recognised by it for original and translated works. It gives " special awards called Bhasha Samman to

a significant contribution to the languages not formally recognized by the Akademi as also for contribution to classical and medieval literature"; "It has also a system of electing eminent writers as Fellows and Honorary Fellows and has also established a fellowship in the names of Dr Anand Coomaraswamy and Premchand".

FESTIVAL OF LETTERS (SHAME)!!!!

In February every year, Sahitya Akademi "holds a week-long Festival of Letters; It begins with the ceremony to present the Akademi's Annual Awards for creative writing".

In February every year, there is a need to examine whether Sahitya Akademi is fulfilling its objective and whether Sahitya Akademi is aware of the rich cultural and linguistic variety prevalent in India.

On scrutiny it is revealed that Sahitya Akademi believes in "forced standardisation of culture through a bulldozing of levels and attitudes" and it is not "conscious of the deep inner cultural,

spiritual, historical and experiential links that unify India's diverse manifestations of literature".

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, "along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year". If we see the data in respect of Maithili it comes out that every year around twelve books should have been published in Maithili and the Maithili writers might have attended thirty seminars every year at regional, national, and international levels and might have participated in eight literary gatherings every year. The number of Maithili books published by the Akademi is pathetically low, and when we see the assignments, through which these books get artificially prepared (be it translation, anthology or monograph), then the people getting these assignments are often related to the members of the advisory board (as the answer to RTI application by Sh. Vinit Utpal brings forth). The

quality suffers, and as a result, there is no readership.

How this Akademi failed? And why this Akademi failed? And what action should be taken against Akademi for its intentional failure?

Firstly, Akademi is not the name of a man or woman. Akademi or its member of the Advisory Board consists of persons, and if the group of persons is failing the Akademi, that language itself is to blame! But again, the language is not the name of a man or woman. So, the people speaking that language are to be blamed for the failures of the Akademi. Really!!

Even if it is partially true, the Sahitya Akademy cannot shirk its responsibilities. How an advisory committee can be considered representative of Maithili-speaking people (even that of India), when the Convener of that language is nominated by six organisations (recognised by the Sahitya Akademi for reasons best known to it), having no remote connection with literature? Sahitya Akademi sowed seeds of Acacia and expected Mango fruit. Having

said that it is also true that the Akademi or any organisation can transform itself, but only when the conservative people representing these find pressure from the literary fraternity, change themselves or are replaced.

What is the solution?

The literary fraternity has already taken initiative by establishing parallel Sahitya Akademi awards and parallel literary meets. It should be taken further. All legal means should be explored to take the Akademi to the task. On all available forums, the fact is made clear that the literature being prepared by Sahitya Akademi through assignments is not grammatically correct, that it is not up to mark and is of inferior quality. On all available forums, it should be made clear that the thin, casteist-looking (quantitatively and qualitatively) and pale Maithili literature, which is being shown by the Sahitya Akademi of India to the world, has no readership or respect in its native speaking area of India and Nepal. And that

Maithili has moved not because of Sahitya Akademi but despite it.

Demand

The six organisations representing Maithili should be derecognized with immediate effect and an inquiry initiated to ascertain their genuineness. A committee should be set up to scrutinize the work done by the Sahitya Akademi (in respect of Maithili) in the last 55 years. The awards should be kept in abeyance till the results of the inquiry are made public and corrective steps are taken.

II

THE CELEBRATION BEGINS

Videha Ist Maithili Fortnightly International e-journal has e-published more than three hundred issues to date. Meanwhile, we will enumerate the problems faced and the solutions found by us. The Journey began in the year 2000 at yahoo Geocities-the first words on the internet in Maithili were written by me on the yahoo Geocities sites (now yahoo has discontinued Geocities) towards the end

of 2000 when I suffered a major accident which kept me confined to crutches for one and a half years. But that shaped my destiny. I could concentrate on my Maithili writings and my research on Tirhuta Manuscripts. On 5th July 2004, the first blog in Maithili came (gajendrathakur.blogspot.com) as "Bhalsarik Gachh", which was rechristened as Videha ejournal from 1st January 2008. From Ist January 2008 it came to be published as a fortnightly journal. The first rechristened issue brought the story of the life and creations of a forgotten Maithili poet Late Ramji Choudhary (1878-1952).

Till the eighth issue of Videha the columns on Music, Mithila Painting, Children column, learn samskrit through Maithili got strengthened. Moreover, the projects on digitalisation of Maithili Classics and Panji Manuscript-leafs got started. The searchable dictionary (Maithili-English_Maithili) was designed and strengthened. From the eighth issue, a latest unpublished Maithili Play of Nachiketa "No Entry Maa Pravish" began its e-publication in Videha. Nachiketa, the greatest

dramatist of Maithili Literature was silent for the last 25 years, as far as the drama was concerned.

Technology has two aspects, bad (its chances of misuse) and good (its effective use). It is a great leveller; it challenges status quo forces. It is applicable in all areas of knowledge. So, school-going children today have a clearer understanding of the universe and atoms than the Aryabhata or Sir Issac Newton had. After mass-scale use of printing education and literature expanded its wings, but only after the "Internet and electronic transformation of tools of knowledge", it has become universal, it has jumped geographical boundaries. All shackles unfurled, the weak links of the chain were identified, and the chain which tried to capture knowledge, which tried to thwart its expansion, started breaking down. And the greatest beneficiary became the Maithili Literature. What is Videha, nothing, it is only its commitment to the Maithili Language, which helped it expand its base, and Videha became the means that were able to bind together the Maithili-speaking areas in both parts

of the boundary (India & Nepal). Videha gave Maithili a batch of committed writers and a batch of committed readers. It challenged the status quo and casteist forces. It challenged confused writers, who were using Maithili as a tool to ride the ladder of Hindi. The lack of criticism, the lack of teeth in criticism was the reason that some writers and dramatists were using Hindi-Mix Maithili for cheap popularity, they were using derogatory language for the so-called lower castes of their society (some were finding plea in Natyashastra- when even the modern-day Samskrit Drama is not using Prakrit etc.!!), and for their mimicry, those castes started keeping distance with this kind of literature. And once the confusion of the confused thinned, a new type of awakened literature, stage, and drama (top-class) became the norm.

Videha is regularly getting some excellent brains. Since its inception, Videha, the idea factory, is dependent upon them. As far as their versatile qualities are concerned, people associated with Videha are different. All are known for their

perseverance and resilience. All are known for their arduous work. All are known for their quality work. All are known for their discipline. And all are committed; committed to Maithili and the Mithila. The cumulative force resulted in a natural revolution. A revolution in the field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. The only international e-journal in Maithili started this quality movement in Maithili. Nothing less than world standard was acceptable. The awards were instituted to recognize the parallel field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. Only the best was selected, there was no scope for the second best. The participation of readers in the decision-making processes was encouraged. The readers got full access to the digitalised Maithili Literature. More than five hundred Maithili books and around 11000 palm-leaf mithilakshar manuscripts were digitalised and made available online under the "Videha Archive" section of www.videha.co.in (and the number is increasing every day). The audio-video-paintings-photographs were archived, and all these archived "art and lifestyle" of the people of

Mithila were then placed online. The Videha Archive is a unique gift to the world.

So, what is the ideology of people associated with Videha? Is it collective thinking? No, of course not. In Videha all are welcome. Here all are welcome to discuss their respective ideology. Having said this, it needs emphasis that there are some basic human principles where no compromise is possible. The casteists, those having genetic superiority complex (which is another name for an inferiority complex), the practitioners of plagiarism, those who are unable to take part in a healthy discussion and persons who are not able to withstand the criticism of their creation, Videha is not a platform for them. The ideology of people associated with Videha may have different tinges, not all need to toe the line taken by any member of the editorial board. Videha believes in the individuality of ideas and the editorial board never imposes its ideology upon its members. At the same time, it is being emphasized that each member of the Videha editorial board has

a strong ideological leaning, the ideology of humanism is practised by all.

Videha-Maithili Literature Movement has its roots in the year 2000 when I started making Maithili Websites on Yahoo Geocities. After Yahoo Closed Geocities these sites were automatically deleted. However, the early form of Videha "Bhalsari Gachh" was started on 5 July 2004, and it is the earliest presence of Maithili on the internet. Videha and its vibrant members did their utmost in translating lacs of words on Wikipedia, and they successfully opposed the nomenclature "Bihari Languages" (Gerard M accepted the role of Umesh Mandal, the co-editor of Videha, go to Gerard Ms blog and click the Dasipat Aripan photo from Videha archive (Preeti Thakur) placed at his blog, you will reach http://videha.co.in/). In Google translate/Wikipedia localisation drive, in Tirhuta and Kaithi script research and the localisation of Braille in consonance with the Maithili Language, Videha shouldered the responsibility as a pioneer in technology viz-a-viz Maithili Language. It was a

pioneer in many respects. It started for the first time a Maithili Websites Aggregator at http://videha-aggregator.blogspot.com/, the first braille site in Maithili, the first mithilakshar site in Maithili among others (total list).

Videha has organised several dozen Maithili book fairs to date. The 16th Videha Maithili book fair was held at Sagar Rati Deep Jaray, Patna on 10-11th December 2011 and the 17th Videha Maithili book fair was held at Guwahati, on 22-23 December next year at the Vidyapati Parv organised by Mithila Sanskritik Samanvay Samiti. The detailed list of all the venues (datewise). Videha also organised a parallel Sahitya Akademi Kavi Sammelan, besides awarding parallel Sahitya Akademi prizes, as corrective measures, as the awards and Kavi Sammellans of Sahitya Akademi were awarded/ organised in a unilateral manner where merit took a beating. Videha has, thus, fulfilled its obligation by interfering in the murky affairs of government organisations. Videha cannot remain a silent spectator, be it plagiarism or copyright violations.

So, the authors like Pankaj Parashar, and Ashok Sahu, who were engaged in lifting other articles/ stories/ poems were banned after verifying the sources and target writings.

Literature in translation is a major issue with Videha. Lack of translation in America resulted in Americans lagging in quality literature. We practise literature in translation in both directions- from Maithili into English and from other languages into Maithili. As far as translations from other languages into Maithili are concerned English, Nepali, Sanskrit and Hindi function as buffer languages in the process. Direct translations into Maithili are limited; and it is done directly only from English, Sanskrit, Hindi, Nepali and Bengali, although there are some exceptions. As far as the question of translations from Maithili into other languages is concerned, directed translations are again limited; and it is again done directly only into English, Hindi, Sanskrit, Bengali and Nepali, barring some exceptions. Videha contacted some notable personalities of class literature, took

permission, and translated that literature into Maithili. Most of the time English was used as a buffer language and translation work from English, Hindi, Konkani, Telugu, Gujarati, Odia, Kannada, Nepali and Telugu into Maithili was completed; and these works were regularly published in Videha. Maithili novels, poems, and short stories, on the other hand, were translated from Maithili into English and were published regularly in Videha.

VIDEHA became a Maithili Literature movement. No, VIDEHA was from day one of the Maithili Literature movement. Many established misconceptions got cleared through VIDEHA. The well-known facts, the not-so-obvious plot of some people to kill Maithili through its twin institutions the Sahitya Akademi and the CIIL was unearthed. The Right to Information came in handy. Sri Vinit Utpal asked for information from Sahitya Akademi through his RTI application dated 23.09.2011 (file no. RTI-125) and sought information on "Assignment assigned by Maithili Advisory Board, Sahitya Akademi under the convener ship of Sri Vidyanath Jha 'Vidit'". The information

included a proposal received, a proposal rejected, and a proposal kept in abeyance." The statutory mandatory information supplied by the Sahitya Akademi unearthed a vicious circle of Maithili-speaking so-called litterateurs, hell-bent upon making Maithili a language- "of the Maithil Brahmin, for the Maithil Brahmin and by the Maithil Brahmin". More than 90% of the assignments went to the friends, relatives, and acquaintances of the 10-member Maithili Advisory Board. No assignment to Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Bechan Thakur (the greatest Short-story-novel writer of Maithili, the greatest living poet of Maithili and the greatest living Maithili dramatist; respectively), Sh. Umesh Paswan, Sh. Umesh Mandal, Sh. Ramdev Prasad Mandal "Jharudar", Sh. Durganand Mandal, Sh. Sandeep Kumar Safi or to Sh. Anand Kumar Jha. When every member of the Maithili advisory board is hand in glove with the Sahitya Akademi to kill the Maithili language then where lies the hope? The demand for Mithila state by these people will see that 10 Maithil Brahmin families would loot the Mithila state. Then where lies the hope?

Here lies hope. Sh. Bechan Thakur has created a parallel Maithili stage and theatre, a slap on the existing slapstick humouristic Maithili theatre. Sh. Umesh Paswan is a discovery of the Parallel Sahitya Akademi Poetry festival organised by Videha. Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Jharudar, Sh. Sandeep Kumar Safi and Sh Umesh Mandal have pumped their energy, wealth, and time into our Maithili Language. This language will live...proofs are given below: -

Google Translate:

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

then Wikipedia translate:

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator
http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai
http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)

[Monday, May 09, 2011

The #Bihari #Wikipedia is written in #Bhojpuri

This is the kind of article that has many people's eyes glazed over. It is about standards and scientific documents, and it is about languages most of my readers have never heard about. For the people that do speak one of the languages that are considered Bihari, it is extremely relevant, and it has implications for Wikipedia.

This is information provided by Umesh Mandal that explains the "Bihari group of languages" with the Maithili language:

Kellogg (1876/1893) and Hoernle (1880) regarded Maithili as a dialect of Eastern Hindi; Beames (1872/reprint 1966: 84-85), regarded Maithili as a dialect of Bengali, Grierson has done a great service to the Maithili language, however, he erred when he gave a false notional term of "Bihari" language after that western linguists started categorizing Maithili as a dialect of "Bihari" language; although there is nothing known as "Bihari Language" and both Maithili and Bhojpuri are spoken in Bihar (of India) as well as in Nepal.

Umesh is working on the localisation of MediaWiki for the Maithili language and as this language is currently in the Incubator, the language committee does its due diligence and trying to understand if Maithili can have a place in the Bihari Wikipedia. The information provided by Umesh makes it quite clear: "no".

This still leaves us with the misnomer that is the Bihari Wikipedia. The language used for the localisation and the articles is Bhojpuri. Bhojpuri has the ISO-639-3 code "bho".

Are you still following all this? Ok, there is one question I am not asking: How about the Kaithi script?

Thanks, GerardM]

Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at

length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.]।

TIRHUTA UNICODE See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman Pandey at Page 23 of the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

The Maithili Speaking area is shrinking. It is shrinking due to a conscious-subconscious policy of the Governments of India and Nepal, and the situation became critical due to the invasion of Hindi and Nepali media and the biased educational system in Maithili-speaking areas, and due to the large-scale migration, which has happened in one single generation. The question of Hindi saw to it that Vajjika, Angika and now Thethi, Surjapuri etc. languages should get the tacit support of supporters of Hindi, first in the name of religion and second in the name of caste. Through this they did not support Vajjika, Angika, Thethi or Surjapuri; but they tried to weaken Maithili, which resulted in the weakening of Vajjika, Angika, Thethi and Surjapuri. For all this, the Maithili-speaking people, more so the officials (I will explain it later), are also responsible, as they tried to delimit Maithili within the two castes and four districts. All other people and areas, than these, were considered northern, southern, eastern, and western deviations of so-called pure Maithili, which was fictitiously considered as being spoken by

these Maithil Brahmins/ Karna Kayasthas of Madhubani, Darbhanga, Saharsa and Supaul districts. For the last 45 years the officials, yes, I call them officials, the officials of the Maithili Department of Sahitya Akademi, did not try to accommodate the people outside this fictitiously delimited domain. But the major problem lies somewhere else. The slow poisoning was given in many disguises, be it the faulty top-heavy education system, which neglected primary and middle school education through the Mother Language Maithili, or be it through the concept of dialect, which initially conveniently declared languages like Maithili as dialects. Elementary education through Maithili was a non-starter because the Maithili books published by the Bihar State Textbook Publishing Corporation Limited seemed to be in Avahatt, it was not fit for children. Further, the authors and subjects selected for these books had a casteist bias. Maithili became a tool for caste-based politics, as once Hindi had been a tool for religion-based politics. Still, these officials, of the Maithili Department of Sahitya Akademi, are

residing in their own built ghetto, bereft of any thinking or vision. Another reason for the present plight of Maithili is the policy undertaken by the tax collectors of Mithila (permanent settlement Zamindars of Cornwallis), whom the sycophants call King or the great king (Raja/ Maharaja) or Mithilesh (King of Mithila) these were mere tax collectors, the right for which were given to the highest bidders permanently; and there was not one such Mithilesh (tax collectors), but many within the borders of Mithila. These tax collectors employed mostly those two castes from four districts in their merchandise venture, and as the selection was based on sycophancy, so the work suffered. So, they imported the lathiyals from outside the Mithila region. The masses of Mithila suffered a blow from the double-edged weapon. First, from their people who did not consider them as their own and second, the outsiders looted them. Now after some time these outsiders, the non-Maithili speaking people, found it convenient to declare the masses (not belonging to the two castes from four districts) as non-Maithili speaking people, and the officials/

sycophants from those two castes from four districts tacitly agreed to it. Now these outsiders, the non-Maithili speaking people, formed a majority in many places of Mithila, and they led the rumour that Maithili, like Samskrit, is an upper-caste phenomenon, and thus they legitimized their anti-Maithili stance (all these facts have been brilliantly dealt with in the Maithili Novels of Sh. Jagdish Prasad Mandal) and they propagated the case of Hindi, first based on religion and second based on caste. But why our people fell into their trap, why these tax-collector Maharajas did not consider the masses of Mithila as their own and imported the perpetrators to loot their masses? The simple answer is that merit took a downward leap in auction-based tax collection rights allocation.

We started from one and reached number three, then thirty and now three hundred!! and we are growing-... and are three hundred not out and are creating a grand history. http://www.videha.co.in/ Videha Ist Maithili Fortnightly e-Journal ISSN 2229-547X has e-published its 300th issue recently. When I began

this venture in the year 2000 with a Samsung TV net appliance, and when the existing was posted on 5th of July 2004, I moved all alone. Then on 31st January 2007, I suddenly thought to include the public, as after some groundwork I was ready for it. I decided to e-publish Videha and did publish it, on a fortnightly basis, the first issue that came on 1st January 2008 tried to include all the previous posts.

From all corners of this planet earth, the people tried to change the destiny of Mithila and Maithili. Now Sh. Ashish Anchinhar, Sh. Munnaji (Manoj Kumar Karn), are part of our team, and together we are three hundred not out now. With three hundred plus issues, 30,000 pages of Maithili literature (one hundred lac words corpora) creation and 11000 Tirhuta manuscript transcription we maintained a 50000-word Maithili-English vocabulary database. Now we are 350 strong, with 350 authors.

Videha has faced challenges and has withstood them. We never shirk from any question and/ or problem. The question of the state of Mithila is one such

question which often comes calling. We are in favour of the states of Mithila within the sovereign borders of India and Nepal. We are in favour of Mithila. But which type of Mithila, that type that we had during the Zamindari Raj, where means of sustenance and avenues of existence remained limited for a few castes? Or that culture that existed within "Aryavarta-Indian Nation newspaper" and other Industries during that Raj. A dozen families of Mithila galloped all these mostly from a single caste!! No, we are not in support of that Mithila, that Mithila where Maithili would be swallowed, as it is being swallowed by the Sahitya Akademi and the CIIL, swallowed by another dozen families. We are not in favour of that Mithila where the proceeding of the legislative assembly would be held in a language other than Maithili. Till the misgivings of the people of Mithila are addressed, we cannot support any Mithila state movement. So the people striving hard for Mithila state should sit on a protest before the advisory board members of the Sahitya Akademi/ CIIL and sing patriotic songs in front of their houses, and pressurise them

not to misuse government funds by unscrupulously awarding functions of Akademi outside Mithila and not to misuse the power of assigning translation and other rights to themselves and to those people who are hell-bent upon destroying our language. The RTI application by Sh. Vinit Utpal has thwarted an attempt to strangulate Maithili, but if the supplementary work is not done the sinister design would resurface again. We request the Maithili advisory board members of Sahitya Akademi immediately return their assignments taken in their name and the name of the members of their family. Otherwise, pressure should be mounted to force these 10-member Maithili Advisory Board members to voluntarily resign from their membership in the larger interest of Maithili. So, what is our answer viz-a-viz demand of Mithila state: it is a categorical Yes.

The technology-centric venture called Videha became a success. The native speakers of Maithili reside in Bihar (of India) and South-East Nepal. The net connectivity had been extremely poor in these areas.

Then how the authors, new and old, started using Unicode for writing for Videha. The Nepal Side of Mithila had been using Preeti, Kantipur, Himala etc. fonts, the Kolkata Maithili-speaking population had been using the Marathi fonts and the rest had been using the fonts based on the old Remington keyboard. All these three types of fonts are ASCII fonts. We researched these fonts and provided font converters to our Nepal-based authors. We also provided phonetic and Remington-based Unicode writers to all Maithili authors, who asked for them. We asked the authors if they may send their creations in any font, but at the same time, we encouraged them to use Unicode fonts. The technical support that we provided resulted in numerous receipts of typed entries from persons like Sh. Gangesh Gunjan, who in earlier stages had been sending their creations in their handwritings. As Sh. Gangesh Gunjan was well versed in Remington keyboard typing, so he made wonderful use of the Remington Unicode typewriter. He sent that software to some of his friends too and he was courteous enough to intimate about this to us, although there was no need for that. Sh.

Saketanand also used that software and sent his short story कालनाग्निश्व दानूक्षा in Unicode, and it was published in one of the issues of Videha. The technology-centric venture called Videha became a success because we made it simple and intelligible at a time when even the technologists were not sure about the future of this Unicode. The virtual medium was being seen with anxiety by the literary fraternity, and the copy-paste system of theft was rampant in those days. But we assured the authors that with Videha they may rest assured that the copyright thieves would not be spared, while at the same time we were firm, that only for fear of misuse of technology we should not stop our venture midway. With the internet and technology, the geographic barrier became non-existing. The end of the problem of distribution in Maithili literature became possible due to our technology-friendly attitude and it proved a boon for our Maithili language. And it made the technology-centric venture called Videha a success... It is the success of the parallel Maithili literature movement.

III

HONOUR KILLING OF GANGESH UPADHYAYA (FIRST BY RAMANATH JHA, THEN BY UDAYANATH JHA 'ASHOK' *(A PARALLEL HISTORY OF MITHILA AND MAITHILI LITERATURE, WHY TODAY ITS NEED BEING FELT MORE INTENSELY?)*

I was not surprised, though I must have been when I saw a monograph on Gangesh Upadhyaya, whose copyright is being held by Sahitya Akademi, the author of the monograph is Udayanath Jha 'Ashok'. I thought that Udayanath Jha 'Ashok', who has been given Bhasha Samman also, by the same Sahitya Akademi, would do some justice. But truth and research seemelusive in Sahitya Akademi monographs, at least that I found in this monograph.

I searched and searched through chapters, that now the author will show courage. But the author like Ramanath Jha seems ashamed of the roots and offspring of Gangesh Upadhyaya. He tries to confuse the issue, but there is no confusion now at least since 2009. But in 2016 Sahitya Akademi seems to carry out the casteist agenda. Udayanath Jha

mockingly pretends to search his name, lineage etc, where nothing is there to search for, yet he could not muster the courage, to tell the truth, and ends up just repeating the facts in 2016 that Dineshchandra Bhattacharya already has published way back in 1958.

The honour killing of Gangesh Upadhyaya by Prof. Ramanath Jha is being taken forward by Sahitya Akademi, Delhi in a most hypocritical way.

Ramanath Jha's obscurantism *vis-a-vis* Panji is evident from one example. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila". (1958)

"*The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila----- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name-----...As there is no other reference to Gangesa we can assume that the family dwindled into insignificance again and became extinct soon after his son's death.*" [1958, Chapter III pages 96-99), which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha, and he seemed thankful to him.

The following excerpt from Our Panji Prabandh (parts I&II) is being reproduced below for ready reference:

-

महाराज हरिसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरिसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु

विजयदत्त ओहि ठाम प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरिसिंहदेवक प्रचेष्टासँ- आ ई. हरिसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कर्णाट वंशक १००९ शाकम स्थापना कर रहथि- वह्वेद शून्यं शशि शाक वर्ष (१०१९ शाक)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाक १२४८ तदनुसार १३२६ ई. म पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपम (थोड़ वृद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. म आदेश करवाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करवओलन्हि। ओकर वाद पाँजिम (कखनो काल वर्णित १६०० शाक मान १६७८ ई. वास्तवम माधव सिंहक वादम १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलाम उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files. *Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjikara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panji records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting*

the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014].

Later these Panji Manuscripts were uploaded to Videha Pothi at **www.videha.co.in** and google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education streamin British India, in Nepal it still has that meaning.

ORIGINAL PANJI REFERENCES ARE PLACED BELOW

DOOSHAN PANJI- THE BLACKBOOK

४९.

१८८/२	वर्मकानिधी	माण्डुन	नरनियाम	छादन
गन्नविंनामधि कानकगंगेश	छादनगंगेशक	नाँव्री	नलाकनक-मानृक (अद्धाग)	गंगेश
	वल्लरा	रवाञ्ञ	माहश्वन	
			जीव	

२१//१० छादनसँ गन्न विन्नामधि कानक जगद्गुरु गंगेश

छादनसँ गन्न विन्नामधि कानक

गंगेशक वल्लरा वर्मकानिधी पितृ यजाऊ यञ्ज वर्ष व्यणीग गन्न विन्नामधि कानक गंगेशोपाध्याय- **वर्मकानिधी मधाक सन्तानक लागिम छलहि**

छादन सँ गन्न विन्नामधि कानक म०म० गंगेश

"गन्न विन्नामधि कानक म. म. या. गंगेशक विषयक लेख प्राचीन यञ्जीसँ उपलब्ध�।।

पितृ यजाऊ यंव वर्ष यणीग गंगेशोपाध्याय: इति प्राचीन लखनीय: कृप्राप्ति

दनानन्द यञ्जी ३९-२ छादनसँ जगदगुरु गुंरु गंगेश सुगाय नरनियामसँ जयादित्य सुग साधुकन यनी

दनानन्द पञ्जी ३३९-३ जगद्गुरु गंगेश सुत सूयन दौ रघुनिसमसँ हरादित्य दौ।। पुत्र सुताव गोना जजिवाल सँ जीव पञ्जी ७ सुत सद्गढि रत्नश्वरा अग्रस्थान सूयनग्रामृ हरिशर्म्म दानिति ब्राचित् जजिवाल ग्राम

दनानन्द पञ्जी ३०=७ छादनसँ उपाध्यायक म.म. पा. वर्द्धमान सुताव खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पञ्जी गंगेश- म.म. वर्द्धमान/ सूयन/ हरिशर्म्म

Gangesh, the author of the Tattvachintamani, wrote one text equivalent to 12,000 texts. Now come to the fact mentioned in the Panji- it clearly states that Gangesh of Tattvachintamani was born five years after the death of his father and he married a tanner, so why did Ramanath Jha hide this from Dinesh Chandra Bhattacharya? Vardhamana, son of Gangesh, calls Gangesh *sukavi kairavakananenduh*. But the conspiracy under which the poems of a famous scholar like Gangesh are not available today is clear from the example given above. Vasudev of Bengal was a classmate of Pakshadhar Mishra of Mithila, he came to study in Mithila, passed the *shalaka* examination and received the title of *sarvabhaum*. Vasudeva memorised the *tattvachintamani* of Gangesh and the *nyayakusumanjali karika* of Udayana. Pakshadhar

and other Mithila teachers did not allow writing (copying) *tattvachintamani*. Raghunath Shiromani, a disciple of Vasudeva, took the right of certification after he defeated his guru Pakshadhar Mishra in a scriptural debate *(shastrartha)*. The *Navya Nyaya* school was founded in Navadvipa by Vasudeva-Raghunath. Pakshadhar Mishra was a contemporary of Vidyapati (distinct from the Padavali writer who was of the pre-Jyotirishwar period) who wrote in Sanskrit and Avahatta. And the arrival of Mithila students of Bengal from Bengal stopped after Raghunath Shiromani. Gangesh Upadhyaya enjoyed '*param guru*' as well as '*jagad guru*' titles, the highest titles of the time and as per Panji only Vacaspati Mishra II was the other person who enjoyed the title of '*param guru*'. The extinction of Navya-Nyaya School from Mithila, as described above, was a revenge of nature against the honour killing of Gangesh Upadhyaya and his family.

[Translation of the Maithili Short Story, 'Shabdashastram' (based on the true Panji records of Gangesh Upadhyaya) was done by the author Gajendra

Thakur himself: published as 'The Science of Words' Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93 (16 pages) Published By: Sahitya Akademi]

3

Kamlanand Jha has written a book on Nagarjun (Maithili's Yatri) where he credits him with giving a new direction to Maithili literature. Chandradhar Sharma Guleri wrote 'Usne kaha tha', a marvellous short story in Hindi, the best one of its time. But his literary corpora is very little in quantity, so if anyone tried to give him credit for giving direction to Hindi short story writing would make himself a laughing stock. And Yatri's Maithili literary corpora is even thinner than Guleri's. Moreover, Rajkamal Chaudhary calls him of the medieval age (Rajkamal Monograph, Subhash Chandra Yadav, Page no 14). He wrote Chitra (25 poems). He wrote, rather hurriedly published his 'Patrahin Nagn Gachh' (44 poems) for Sahitya Akademi Award in Maithili, which he got in 1968. After that he stopped writing in Maithili, so how can he influence

anybody when after getting the award one stops writing in that language? This is one example of his instability so far as his ideology is concerned. He became a Buddhist monk when he left for Sri Lanka and became a Brahmin again when he returned after a 2nd sacred thread ceremony performed in his village. This is another example of his instability so far as his ideology is concerned. Kamlanand Jha does not know Maithili literature. His comments should be exposed, as he tries to give a bad name to the great tradition of Maithili literature. There were mainstream writers, but there were writers of parallel tradition also (see below Annexures 1 & 2). He has confused the Sanskrit and Avahatt Vidyapati Thakkurah with the Padavali writer pre-Jyotirishwar Vidyapti. He should read the writing of Vijay Kumar Thakur, a leftist historian, who has given ample light on pre-Jyotirishwar Vidyapati. [*My article on Vidyapati in Prabandh Nibandh Samalochna Vol.II (available in Videha Archive) covers all these, the logo of Videha is the photograph of Pre-Jyotirishwar Vidyapati, sketched by Panak Lal Mandal, recipient of Videha Samman for fine arts.*]

Annexure 1

चन्दा झा (१८३१-१९०७), मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारूछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रियर्सनकँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता कयलन्हि। कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

१

न्यायक भवन कतहु नाम।

सभ अन्याय भेल गहि ठाम॥

सत्य वचन विरल जन भाष।

सभ मन धनक हरन अभिलाष॥

कपट भेल कत कोटिक कोटि।

ककर न कर मर्यादा छोटि॥

भन कवि 'चन्द्र' कतहु घूस।

सभ सहमत ककरा क दूस।

२

नेनिया दिन दुनगनिया हे रामा!

खेया जगतक मैया हे रामा

कटय कसैया हाथ

हाकिम भेल निनदैया हे रामा

कानय लगायव माथ

वनसा नहि भेल सनसा हे रामा

अनसा कए गेल मह

नेनिया दिन दुनगनिया हे रामा

जन गन जिवन संदह

मुखिया व७ व७ सुखिया हे रामा

अन्नवक दुखिया जाल

क सह कान कनखिया हे रामा

सुखिया विनना टाल

३

अस्त्र शस्त्र नाक आव मामिलाक मानि।

राज्य राज्यकँ यष्ठ निम निम गानि॥

0क्क लाक हक्क याव साधु कँ उजानि।

दैव क ललाट लेख के सकैछ टारि?

चाही नहि धन, ललितधाम, पकवान जिलेबी,

मनोविनोदक हेतु भ्रमणपति सदन न देवी।

एहो अन्तिम अभिलाष हमर करुणामयि देवी

भक्ति भाव सँ सतत अहँक पदपंकज सेवी॥

अन्न महग, डगमग अछि राजत, हयत कोना निस्तारा

उत्तर पश्चिम भूमि अगम्या पर्वत असह तुषारा।

धर्म-विनाशी सहसह कर्मठ, कुमत कथा विस्तारा

करथु कृपा जगजननी देवी महिसीवाली तारा॥

मिथिला की छलि की भय गेलि,

याज्ञवल्क्य मुनि, जनक नृपतिवर

ज्ञान भक्ति सौं गेलि।

वाचस्पति मिश्रादि जगद्गुरु

निर्जित बौद्ध समलि

से शारदा स्वर्ग जनि गेली

बढल कुविद्या कलि।

वर्णाश्रम विधि ककरहु रुचि नहि

श्रुति श्रद्धाकँ ठेलि

यज्ञ याग ध्यान तपस्या

संयम नियम छलि।

कहु कलियुग कयलनि दिनदिन

बढ़ल रोग कर जेलि,

कलह कराय धर्म धन नाशे

कलिक दशा इ छलि।

४

भय करुन हेल ध्यान हे शिव!

शोषण नियति, धरम अनरीति देखि कत हिय करब कठोर॥

साधु समाज नाजसँ पीड़ित अति दुर्भिक्ष-चित चोर।

अकुलित लोकँ धरहि पनियुति कुलिन समादर शोक॥

धरम सुनीति प्रीति ककरहु नहि, खलहिक बलवृद्ध जान।

कष्ट-मूल-फल सहा अब दुर्गतिए अन्न शेल दशक ज्ञान॥

किछु गुरु साधन बनि नहि पछुआ थाकल मन, मति ग्लान।

कहु कवि बच्छ हमन दुख मेटत दायक कृपा शिव पान॥

५

सुमनु सुमनु मन! शंकर समय भयंकर जानि।

ककर हृदय नहि कलुषित शासन कलि नृप यानि॥

कवल शिव करुणाकर सवयित नहि जन हानि॥

एकि कल्पलति जानह यनम यनशमनि खानि॥

कतहु विषयम न लागह त्यागह अनुचित मानि।

सुखसौँ अन्त विलसवह 'चन्द्र' चुउ नजधानि॥

ANNEXURE 2

१

रघुनीलालक अकाली कविताअकाली कवित्त /

रघुनीलालक रसली वर्ख १२८१ .ऊँ १४-१८१३)सनसालक (अकाली कविता

[ग्रियर्सन [(मैथिली क्रस्टोमैथी ॐ वाकावुलरी)

साल ॐकासिक नर्शन सुनुवौदिस यउल अकाल /
एल वनिसाग खिन्न ॐ सालककहाँ लगि ननमौँ हाल /
नाहिधि आदि थीक वनिसागक /जहिँ ॐला गहिँ गेला
म्रिगिसिना मन यूनल मनानथरै मीसा किछु गेला /

अदरा आतमन रानीगनजा हैं बड़ दान /
पूख नूख नाखल धनी कनरल बनखा कन दान /
पुनर्वसु थिक बड़ पुनीतादाहा बजा कसनस /
विआ विजानक ज किछु उपटलधनि बनिसल अप्रसनस /
मघा रल मंगाहिआ कल्लनजगरनि क नै जान /
पूनवा पून पछ नै नाखलककना कनब बखान /
उन्दना आङ्‌ जाय घन वेसलसयौं लै नै वून /
हथिआ शृंग मूँड दै मूनलगनिकौं लागल घून /
चिनना चिन मिन नै नाखलडाहा रल जाकु धानी /
नाक नंगौलहि सरै नछन्दनदाम नूकौलहि खानी /
जानिष पडिसाधि रुगोल-साधि /पडि ज जन जेलाह-
नखागधिन बीजसौँ डाआकिरुनानि कौँ कबी बाल /
श्रीनाम कृपागनि डाहा न जानथिजाहि कृपा सर काज /
पानिक प्रश्न कवौं जौं पूछि जेहिसहा कहैन हाङ्‌हि लाज /
जहिखन नदी नाल नै रनलाहिखन नौदी सननी /
विना जल जग किछु नै उपजलदगध रल छथि धननी /
न नन नौदीक आगम वूमलज छल कृषि किसान /
दैव वपछ पछ नै नाखलजाउ कटौलक धान /
कादा मडआ जका न उपजलनै उपजल किछु साम /
गम्हडी गह्वनि खाहि सूखाजलरल निधाना नाम /
मानुवनम क कन नछाकहाँ जाङ्‌ कँ रागि /
सूखल पनाल हाल नै डानहुँलागल आगि सगनहूँ /
धृक जीवन डाङ्‌ नृपनि ङ्‌हूकँज नाकल गहि यानि /

जीनाजन्-गु निकल यूहमीमणाकँ हा नै आनि /
नवीन खढी ओ चीन /नाय ओका नै उयजल-
घनदूनदिन रल अव वीन /नानी-घन साव कनै नन-
धनिक लाक सर मनहि मगन छथिनाखथि वहूणा ढनि /
हसाथि नूयेया घन कें नाखथिसन महगी रल अव /
कउा कूनथी खण मासु् वसाहलजाहि कौ७ छल अयना /
कणक जना हनिनासन 0नलरणा वहूण कें सयना /
कणक जना मिलि जनन वसाहलनिनधन वैसल णकॐ /
रल धनन्धिनि दूॐ हसिल जगनाह७ आउान मकॐ /
काल य७ल गिनहूगिम रानीगँ ॐी वहि (गल हाना /
घनहाँकि मकॐ कन लाना /नानी-घन मगन कनै नन-
मालिक ओन महाजन सरकँघन ढनी अन्न-घन /
लाक वूसाउान उाहा णकें छथिमूँह / गनीवक सन
समै दखि वनिआँ सर सनकलतनँ लगोलक टट्ठी /
सून्न दाकान सहनम यनि (गलसून्न रल सर वट्ठी /
सूखल गाण वाण रो लटयटकणक वाण अव सहना /
नन नानी सर सान गआगलविकनी रल अव गहना /
मँगटीका खुटी ओ ण७कीनकमून्नी नै नाक /
कटसनि विछिआ ओ मिममिमिआँवाझवह ओ वाक /
वछूहान, हैकल ओ सिक७ीओन घमौनिक दाना /
सूणि, ननग्रह ओ यवखँ७ीलगुनी रल निदाना /
णायन दर्वजाण नै ववलकनम रल निखइ /
णमघेल, अढेआ ओ यिकदानीनै णसला ओ णटू /

वाटी, वड़ा ऊौ यनवड़ारराजन कनैक थानी /
माधन सीहि सहिन सावननानै वचल घन माऊी /
धन संयनि घन किछ नै वचल/ सरऱा यऽि गेल वंधक
गैऊा दुख छटल नै ककनाअरुन यट रल खंधक /
दैव अंश अवानल कम्यनीजा यन नाम सहाअ /
मिथिलायून वूऽन जव लागयस सुनि यहुँचल धाअ /
खनिद अनाज जहाजहिं वामलरनी कनि कनि वाना /
सदन गिलंगा ऊाआ यन रनीऊौन ऊालाह्रनि गाना /
हाजीयूनम लाख हजानमकेँ लाखन हऽुऽ यटना /
वाजिनयून सूलनानयून गालानै जानन हौँ कनना /
गाऊी, वैल, छकऽ, ऊँट विहानऊवहन हऽुऽ सर दाना /
मिसन कहैआ कँ याखनन मयहिलुक अऽी (0काना /
श्री लक्ष्मीश्वन सिंह नृयनिमहानाज मिथिलेश /
अवल नाज दऽिरंगाश्रीयनि हनहिं कलेश /
गाऊी वैल लाखन हजाननाकँ यन घऽन /
यहिलुक गाला मधूवन, रौऽाजहना ऊौन अऽन /
वनीयट्टी, ऊौ यचमहलाकूश्नौल ऊौ कमनौल /
हनिहनयून, यिऽानूछ वननौंकानज कनकाँ वनिऊौल /
वानि याखनि, विनसायन वननौंयगोल का नै जान /
ननहद, सनिसा ऊा रटयूना, ना साँ दऽिश्च ऊजान
संमानयून, महनैल, कह्वीलीमधयून हऽुऽ खास /
वनीयून, कमान, ननैहिऊावननौं हूलयनास /
ममना हऽुऽ जगजानिन जगममहथा ऊौन वछौन /

दुरुवी ओ मरिनाथयूनओन ओनगन गक रु़ू़ दोन /
वलदवयून ओ ढंगा वननौमिनजायून लघू राट /
सीवीयटी ओ कयसीआसदन (गाला सीना० /
गुनवाकँ यनवनसी राकिमकन गिनरूाम आक /
नै गा मनग कग नन नानीवाल वव सूखा क /
कग मूनदा गनदा मे मिलगअसंख जीव वल जागा /
सन समधी कँ संरा न लक्ष्मनन वचग जलदागा /
सरकँ सर उयष्ठ रे (गलधून याखन ओ स७क /
नरि (गल व्राह्मध सागी यग्गिगकायथ यठिमा ०क्रन रुनक /
कओ ओनसिअन नाम लिखाओलरँट कओ मारर्निन /
धर्मकार्यम लूटथि नूयेआगँ रल सर कन रँट /
कओ जमानग दैकँ ववलारजिनका अमला नही /
ककना मानि कँग यि० गाउहिउगनैहि जन्मक (०री /
ककनहूँ गानग गाग सूखाओलवहूगा राअय वलाना /
मातुयिना घन यनिजन नानयवाबू (गलार जरुलखाना /
ककनहूँ घन रल खानागलासीरट मारर्निन घाँठ /
कओ अदालगिम तिउआ़ू़ छथिककनहूँ उयनैहि माँठ /
ज्गना सुनि राकिम निसिआओलगँ लागल जन ०ीका /
नाक नंगोलहि सरे मारर्निनलागल चूनक टीका /
जाग, विकौआ,लौकिक नंशककिनिआमंग सुकुल /
गाछी, बाँस, वेल ओ मरिसिजगर कैल रुकरूल /
गारि नूयेआ सौँ कना गजनीन लै कानट सौँ /
गँ कानन वहूगा घन मगउारा़ू़ रगीजा रीन /

आ७ लाट वहादुन ऊौ /दतिरंगा धाम
वावू ऊौ ववूआन सहिग मिलिकीह्न कूमेटी खान /
......
......
......
७ह सरु संग वौ0 कौजाय कूमेटी रुल /
अजव कान सनकान कागिनहूग यहूँवल नल /
वाजिायूनसँ स७क निकालैआय दौतिह दौ७ी /
हहया गं७क यूल वह्या७आ७ वौनही वौनी /
धर्म्मधीन, वलवीन, कम्यनी जानग हक्क /जगदीशन
लछमी सागन क यावनिमगादि कीह्न ञ्सटीसन /
व७ा लाट कलकफ्नालश्रीदूर्गा हा७ संग /
आगना क छ्याटा लाल वहादुनवौ0 सरु ७कनंग /
ज्ञट कमिश्नन औन कलङनवालहिं वाग नअंट /
७ह यावा ञ्जलास यन वौ0उह ऊंट संग जाग /
खवनि ग७ अखवान मौमैथिल क ७ह हाल /
सुनहू हिनंगी अनघ दैकँमटहू दूख क जाल /
हूकूम दीह्न दा७ लाट कासूनहू हमान वौन /
मदगि कनहू नआआनकाक्षा वौ0 ही वौन /
व७ा लाट दा७ वीन ७0ा७साह्व औ जननैल /
मजन मजिस्ून औन कलङनसंगजाग कननैल /
दस दससौँ अन्न मंगाडालदीह्न सगनि क दाम /
महामुँग, गहूम औ चाउनवज७ा औन वदाम /

तली, यटना ओ स्टसानदीली ओ अजमन /
आगना ओन काह्यून ढाकाजहाँ अन्न क ढन /
स्ध नमाना अन्न गिनहृगिमलादि गाठी ओन वेल /
गज, तुनंग, गदहा ओ ठकठसंग सियाही ठेल /
ठग्री ओ येठान मागल सरवाँकावीन नजयुग /
सारा वननि नजाग हु्ओस हनूमन्द दुग /
आगे सरहन डा मेनायलटन वीन जमान /
वनठी ओ गन्आनि गहेकन गहे गीन कमान /
चढि तुनंग यन कने कनाह्गजमादान हाथ संग /
सारा वननि न जाग हुदखि गखनूक नंग /
कनग काम सर धाममटूट अट सर लूट /
ढाहि रीठ गाठी सहिगवाबे सठक ओ यूल /
जिल यटन ओ स्टसानप्रगन्ना महिसीन /
गहाँ वसहिँ एक सज्ञनगहि घन जा लक्ष्मी येठ /
श्री ह्वानिका प्रशादिगधर्मवीन वृद्विमान /
गहसीलदान कानट क खासाजानहिँ सकल जहान /
वावू हसनी प्रसाद दियोटीसा मधूवनम आथ /
हकुम दीह्न सूयननतंटकँटाल टाल हाथ जाथ /
मन यँवा मनगन रे लिथखेनाग वहग लिथ /
धन्य धन्य अंगनज वहादूनसरकँ ह्रटल गाग /
गनिव, गनी, गुनवा, कनू जे, जेवाह्मध दग असीस /
श्री नघूनाथ वटे वदसाहीगदी लाख वनीस /

रुगुन लाल कवि वननग हैँउरु नौदी क हाल /
(गोनमिंट (गोननल वहादुनगिनरुगि नाखहिँ वहाल /

२

नाधाकृष्ण चौधनी (मिथिलाक इुगिहास) (निदरु यटानम उपलब्ध(

"१११० क अकाल मिथिलाक इुगिहासम अद्वितीय छल आ मिथिलाक जनसंख्या घटिकँ एक दम कम्म रुऽ (गल छल। १८१३म पुनः १४-एकटा डारुन अकाल मिथिलाम रुल छल जकन विवनध रुमना रुगुनी लाल कनिक अकाली कविग्दसँ रुटुइये, अकाली कविग्द अप्रकाशिग अछि। अकालकँ दुन कनवाक रुगु आ मझनकँ नाजी दवाक रुगु गाहि काल नलगाउीक याजना चलाउल (गल जकना सम्बन्धम रुगुनीलाल लिखैग छथि-

'कम्पनी अजान जान कलनका वनाय शान।
यनन का छकाय मैदानम धनाया है॥
छाउग है अउदान वउ वीच धाय धाया।
सरलाग रुटाजाग कगाजाग खउ है॥
गानकी अयानकान खवनि दग नान नाना।
चग गया टिकसदान नल की उनाइी है॥
कनग है अनान (शान यीछ कग लगग छाना।
जान की धमाक स मशीन की वउाइी है॥
कम्पुसन यरुनदान काथी सव अजवदाना।
काइला रुन कनल कान धुआँस उउाया है॥

वाजा ७क वजन लाग हाथी ञसा
यिकन लाग ऊँसा ञा वढनदान वैसाधन याया है॥
गंगाकँ रनल धान ञानि गया रूनून यान गाठीकी।
ञजवकान कनिफ यरु वनाया है॥'"

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

ञयन मंगाबeditorial.staff.videha@gmail.comयन यठाउ।

८.विदेह मिथिलाक खोज

विदेह मिथिलाक खोज

वि द ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

प्रस्तुत अछि विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति आ तिरहुतक नामसँ विख्यात वर्तमान राज्य आ नेपालमे पसरल माटिक प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्रांकित अभिलेख आ मूर्तिकलाक एकटा छोट संग्रह। ऐ संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रह editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित फोटोग्राफर आ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठेबा लेल धन्यवाद ज्ञापित करैत छी। सादर। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू **दर्शनीय मिथिला**, **Brochure 1**, **Brochure 2**, **Brochure 3**, **Brochure 4**, **Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)**, **IGNCA ASI (Cultural Heritage of Mithila**-search keyword Mithila), **Temple Survey Project ASI-English** आ **Hindi**. पूर्णतः अव्यावसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल।



भुवनेश्वरी भगवतीपुर (Madhubani, Bihar) बौद्ध तारा सँ समानता नाकक कुण्डल देखू



सूर्य भगवतीपुर (Madhubani Bihar)



विष्णु भगवतीपुर (Madhubani, Bihar)

<table>
<tr>
<td>
दुर्गा, पाखनिसँ स्टल, उगाहि वहनी मन्दिन (वजानसँ दक्षिण)म स्थापित</td>
<td>
हनुमान मन्दिन घनश्यामपुन (दनरंगा)- वानि रS गेल</td>
<td>
(गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधुवनी</td>
</tr>
<tr>
<td>
(गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधु वनी</td>
<td>
(गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधुवनी</td>
<td>
(गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधुवनी</td>
</tr>
<tr>
<td>
(गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधु वनी</td>
<td>
(गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधुवनी</td>
<td>
वाङ्सी- वसैटी, अननिया मिथिलाउन गाम्र लख</td>
</tr>
<tr>
<td>
वाङ्सी- वसैटी, अननिया मिथिलाउन गाम्रल ख</td>
<td>
वाङ्सी- वसैटी, अननिया मिथिलाउन गाम्र लख</td>
<td>
वाङ्सी- वसैटी, अननिया मिथिलाउन गाम्र लख</td>
</tr>
</table>

 धनहना, वनमनखी, पूर्णियाँ, ननसिंह अवतान	 धनहना, वनमनखी, पूर्णियाँ, ननसिंह अवतान	 पूनणादेवी, पूर्णियाँ
 विदेश्वन स्थान अभिलेख, मधुवनी	 अन्धाराठी अभिलेख, मधुवनी	 बुद्ध अस्थधातु, सिसन वसंतपुन, वगहा
 12 शताब्दी, कामेश्वलख, मधुवनी	 अग्नि विदेश्वन स्थान, मधुवनी बुद्ध, मुंगेन	 अहिल्या स्थान
 अन्धाराठी, मधुवनी	 अशोक स्तंभ, वसाढ, वैशाली	 बुद्ध



अवलोकितेश्वर तारा, भागलपुर



वसाढ़, वैशाली



बुद्ध भूमिस्पर्श



बुद्ध, ताम्र



बुद्ध मस्तक, सुल्तानगंज



वैशाली मूर्त्ति



चामुण्डा नाग-नागिनी, मुंगेर



मुकुटधारी बुद्ध, अंतीचक, भागलपुर



नाचैत गणेश, 10म शताब्दी, दरभंगा



दरभंगा म्यूजियम



दरभंगा म्यूजियम



दुर्गा, कार्त्तिकेय





गणेश बुद्ध



गौतम बुद्ध, वैशाली

10म शताब्दी, रीट रुणानयून, अ न्ना ०ाढी		
 हनिरुन वृद्ध	 चिउँकँ खुआवैत महिला, नाजमहल	 लौनिया नद्दनगढ, अशोक स्तंभ
 लामश सुदामा गुफा	 मूंगेन	 नागनाज तीर्थंकन
 कुमानिल स्टट रुकलाद, नालन्दा	 विक्रमशिला विश्वविद्यालय, रागलपुन	 ०ाढ वृद्ध
 पार्वती	 नामायण	 नामपूनवा वृषभ



नागमूर्त्ति



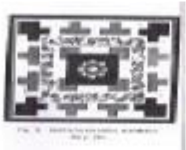
बुद्धक अवशेष



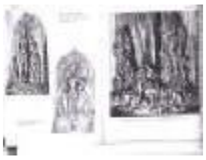
संकिसा



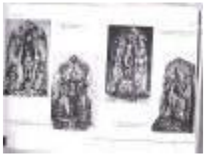
सप्तमातृका



सर्वतोभद्र मण्डल



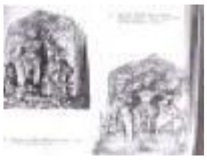
सूर्य



सूर्य



सूर्यक संगी



सूर्य, मधुबनी आ संग्रहालय



मूर्त्ति



मूर्त्ति



मूर्त्ति, वैशाली



उमा माहेश्वर, कल्याणसुन्दर



वैशाली वृषभ शीर्ष



वैशाली, शालभंजिका संग्रहालय



विष्णु बुद्ध



यक्षियुक्त महिला



अहिल्या



अष्टयोगिनी मन्दिर, सहरसा



वनगंगा



दरभंगा



दरभंगा नगर, 1934



दरभंगा मेडिकल कॉलेज



दुल्हदुल्हिन मन्दिर, जनकपुर



गन्धीश्वर



गंगासागर पोखरि, मधुबनी



हनुमान मन्दिर, मधुबनी



हरिहरस्थान



मधुबनी हॉस्पीटल



जनकपुर जानकी मन्दिर



जानकी मन्दिर



जानकी मन्दिर, सीतामढ़ी



जानकी मन्दिर, सीतामढ़ी



जिला स्वास्थ्य कार्यालय राजविराज, नेपाल



कलनेश्वर बाबा



कपिलेश्वर



कावलखाकार्यालय, राजविराज, नेपाल



मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।



लक्ष्मीश्वर पैलेस, 1934



माध्यमिकविद्यालय , जनकपुर



मरुद्ध चौक, जनकपुर



जनकपुर मंडप







मिथिला, 1988 रुकम्य	यगलावावा धर्मशाला, जनकपुर, नयाल	यंतील अल्या
		
मधुवनी वस स्टैंड	नाज रूत □रिस, 1934	नाज हॉस्पीटल, दनरंगा, 1934
		
सौना0 सरा	शिव मन्दिर, 1934	शिवशंकर सिनमा, मधुवनी
		
श्यामा मन्दिर	विद्यापति मूर्ति, विश्फी	उग्रनाना, गानास्थान, मदिषी, सहरसा
		
विद्यापति स्मारक, विश्फी	विश्फी, उदना महादव	विश्फी, विश्वेश्वरी रगवती



अहल्या मन्दिर, अहियारी



अशोक स्तंभ, वैशाली



स्तूप अशोक स्तंभ, वैशाली



बलिराजपुर किला पूर्वी गेट



बलिराजपुर किला मीनार



चण्डी स्थान, बिराटपुर, सहरसा



गाँधी पाखनि, ढाका, मोतिहारी



गाँधी विद्यालय, ढाका, मोतिहारी



गिरिजा स्थान, मधुबनी



हरिहर मन्दिर, सोनपुर



जैन मन्दिर, भागलपुर



जैन मन्दिर, वैशाली



कमलादित्य स्थान



कपिलेश्वर शिव मन्दिर



लौरिया नन्दनगढ



मदनेश्वर शिव मन्दिर



मन्दार पर्वत, बाँका



मोतिहारी सत्याग्रह स्मारक



परमेश्वरी मन्दिर, ठाढी, मधुबनी



रामजानकी मन्दिर, सीतामढी



सत्याग्रह स्मारक, सीतामढी



शान्ति स्तूप, वैशाली



उच्चैठ भगवती



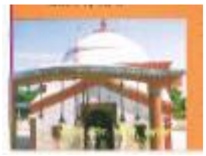
उच्चैठ मन्दिर



सिंहेश्वर स्थान, मधेपुरा



सूर्यधाम, परसा



उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा



वैशाली स्तूप



विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर



विराटपुर मन्दिर, मधेपुरा



वृषट शीर्ष, नामयूनवा



सिंह शीर्ष, नामयूनवा



शनर, नयाल



याँखियूक्ा्प दवी, वैशाली



वावा वतश्वन, दवना, वनगाँव



वट वृक्ष, वनगाँव



रगवान विष्ु, दवना, वनगाँव



शास्त्रार्थ स्थल,गानास्थान महिषी



शास्त्रार्थ स्थल,गानास्थान महिषी



गानास्थान महिषी



मागा गाना, गानास्थान महिषी



उग्रगाना (खादन वाधी गाना) मूर्ति, महिषी



वशिष्ठ मुनि, गानास्थान महिषी



आनर्धिग काली उच्चै0



वौद्धदवी गाना वानी समस्तीपुन

 रुगवती दकुली	 रुगवती गिनिजा रूझ्न	 रुगवती मृध्मुर्गि गब्रवानि
 रुगवती वानी समर्क्षीयून	 गुवनश्वनी कार्थ	 दवीकाली कार्थ
 गंगामुर्गि नगनठीद दनरंगा	 (गासाउनि मद्दिन कार्थ	 देवट्ठ दवी दावीठीद
 काली उब्रै0	 मदिवासुनमर्दिनी वदनी दनरंगा	 मदिवासुनमर्दिनी दावीठीद
 मदिवासुनमर्दिनी नादन- रुगवतीयून	 उमा ग्लब्रमर्दिनी मिर्जायून दनरंगा	 यमुना रैनव वलिया मधुवनी



रैनव, रैनव-वलिया



नटनाज, गानालाही



शिव-
यार्वती मन्दिन, कयिलश्वनस्थान



शिव-
यार्वती मन्दिन, कयिलश्वनस्थान



शिव मन्दिन, सिंगिया, विस्थी



उमामाहश्वन, महादवम0



उमामाहश्वन, गिनहुग



विष्नु, रवानीयून



विष्नु, री0 रगवानयून



विष्नु, जयनगन



विष्नु, लदहा



विष्नु, साहा-
यनवी, हावीठीह







शेषशायी विष्णु, सहरसा, मुजफ्फरपुर	वराह मूर्ति, तिलकेश्वरस्थान	मिथिलाक्षर अभिलेख, विष्णु बुद्ध मूर्ति
		
भगवती उग्रो, वनीयट्टी	भगवती बागेश्वरी, दरभंगा	चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपुर
		
अष्टभुज गणेश, हावीडीह	अष्टभुज गणेश, कार्थ	गंगा, आन्ध्रा-ठाढ़ी
		
महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा	महिषमर्दिनी मन्दिर, मिर्जापुर, दरभंगा	नटराज
		
राममन्दिर, अहिल्यास्थान	सराय, वैशाली, विष्णु तिलक-यज्ञोपवीतधारी	नवनगर शिव मन्दिर



सूर्य, दकूली



सूर्य मूर्ति, तिलाही



सूर्य मूर्ति, निम्बू, वनुआन



उमामाहेश्वर



यमुना, आन्ध्रा-ठाढी



सिमरौनागढ मूर्ति



आदि काली, चैनपुर सहरसा

चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगम आदिकालीन रुद्र काली-
मन्दिर सेहो एहि गाममे अछि। महा शिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधाम सँ चैनपुरमे होइत अछि।



नाथगढक स्वामी माधवानन्द कौलाचार्य काली मन्दिर

नाथ गढ लग। पूनान गढ। एकर पूर्वमे ब्रह्मपुत्रक बाबा हरिहरनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणमे उग्रतारा भगवती छथि।



नाथगढक दसमुखी काली

नाथ गढ लग। पूनान गढ। एकर पूर्वमे ब्रह्मपुत्रक बाबा हरिहरनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणमे उग्रतारा भगवती छथि।



कामलख (मधुबनी) देवीक मन्दिर



अकौन, बनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवतीपीठ



अकौन, बनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवतीपीठ



१.अष्टभुज गणेश, कार्थ २.शिव मन्दिर, सिंघिया, विश्वी



१. बौद्ध देवी तारा, वानी, समस्तीपुर २.उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा



१.भगवती, वानी २.भगवती, दकुली



१. भगवती गिरिजा, फुलहर २.काली, उच्चै0



१. भैरव, भैरव बलिया २. उमामाहेश्वर, महादेवम0



१. देवीकाली, कार्थ २. गुसाउनि स्थल मन्दिर, कार्थ



१. गणेश, लहेरियासराय २.उमामाहेश्वर ३. नटराज, ४. विष्णु, गिलक, जनउ धानी, सहान, वैशाली



१. गंगा मूर्ति, नगरडीह, देनरंगा २. भगवती मृण्मूर्ति, गन्नानि



१. हेरुक देवी, हावीडीह २.गुनेश्वनी, कार्थ



१. कथिग काली, उच्चै0, २.अष्टभुज गणेश, कार्थ



१. महिषासुर मर्दिनी, हावीडीह, २.उमा, मुण्डमर्दिनी, मिर्जापुर, देनरंगा



१.महिषासुरमर्दिनी, भगवतीपुर, नाहर, महिषासुर मर्दिनी, वहनी, देनरंगा



१. महिषमर्दिनी भगवती, मिर्जापुर, दरभंगा २. नाग मन्दिर, अहिल्यास्थान



१. महिषमर्दिनी भगवती, मिर्जापुर, दरभंगा २.सिंहेश्वर स्थान, मधेपुरा



१. नटराज, नानालाही २. उमामहेश्वर



१_व्यवसायी, सवास, मुजफ्फरपुर, २_नटराज_नानालाही ३_ भगवती ४_ उमा माहेश्वरी



१- शिव पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वर स्थान २. सूर्य मूर्ति तिलाही



१_ सूर्यमूर्ति, विष्णु वरुआर २. गंगा, आन्ध्रा ठाढ़ी



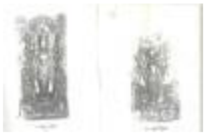
१_उग्र0 भगवती, वनीपट्टी २_महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा ३_ चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपुर ४._भगवती वाणेश्वरी, भण्डारिसम



१. वराहमूर्ति, शिलकण्ठस्थान, २. विष्णु, भवानीपुर



१. विष्णु, जयनगर २.विष्णु, री0 भगवानपुर



१_विष्णु, लदहा, २.सूर्य, दकुली



१_विष्णु_साहु पनऽी, स्थापित- हारीड़ीह २.वृद्ध- विष्णु मूर्ति अभिलेख



१_विष्णु, सहान, २_वराह ३_गणेश ४.शिव मन्दिर_नूयनगर

		
१_यमुना, आनन्दा ठाढ़ी, २.अष्टभुज गणेश, हावीडीह	१_यमुना, रैयाम बलिया, २_शेष शायी, सवास, मुजफ्फरपुर, ३_नट राज_नानालाही ४_ हरगौरी ५_ उमा माहेश्वरी	कथित, काली, उच्चैठ, बनीपट्टी
		
मूर्ति (मिथिला उग्र)	सम्भवतः सूर्य	वेणुगोपाल, मिथिला
		
विष्णु, जाल, दरभंगा	विष्णु	विष्णु, डखोल, दरभंगा

मिथिलाक खोज

श्री आलोक रमन दत्तकेँ जयनक मिथिलाक यात्राक उपनान्धक सूत्र-वृत्तान्त अछि आ जेम जे सभ स्थानक स्थानीय निवासी आ गाइड सभक अकथनीय योगदान छन्हि । कखनो कालेँ राजाक गाछीक ब्राह्मण लोकनि सेहो नीक गाइड सिद्ध भेला। -गजेन्द्र ठाकुर

"𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒨𑒠𑒨𑒬𑓂𑒔 𑒧𑒡𑓂𑒨𑓀 𑒢𑒱𑒨𑒞𑒰 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒑𑒩𑒲" - 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒖𑒞𑓄 𑒬𑒞𑓂𑒩𑒳𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒟𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱- 𑒣𑒰𑒝𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡।

𑒏𑒱𑒪𑒰 𑒂 𑒑𑒜

𑒥𑒪𑒱𑒩𑒰𑒖𑒣𑒳𑒩 𑒏𑒱𑒪𑒰- 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒥𑒩𑒯𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒐𑒝𑓂𑒛𑒮𑒿 𑓓 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒣𑒴𑒥 𑒥𑒪𑒱𑒩𑒰𑒖𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒕𑒱। 𑒉𑒏𑒩 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝 𑒠𑒱𑒬𑒰𑒧 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒏𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒫𑒬𑒹𑒭 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒪𑒰 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒢𑒧𑒑𑒩 𑒂 𑒉𑒏 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒔𑒰𑒏𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒮 𑒤𑒲𑒙𑒏 𑒧𑒼𑒙 𑒠𑒹𑒫𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒄 𑒒𑒹𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒮𑒳𑒩𑒑𑒜 𑒏𑒱𑒪𑒰- 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒴𑒥 𑒂 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒣𑒩 𑒞𑒱𑒪𑒨𑒳𑒑𑒰 𑒡𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒞𑒧 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒚 𑒪𑒑 𑓓𑓐 𑒉𑒏𑒛𑓃𑒧 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒖𑒨𑒢𑒑𑒩 𑒏𑒱𑒪𑒰- 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒏𑒱𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒣𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒖𑒨𑒣𑒳𑒩 𑒂 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒨𑒢𑒑𑒩 𑒪𑒑। 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒪𑒑 𑒣𑓀𑒔𑒼𑒦 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒞𑒰𑒧𑓂𑒩 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐 𑒣𑒩 𑒖𑒨𑒣𑒳𑒩 𑒏𑒩 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒁𑒕𑒱।

𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢𑒑𑒜- 𑒥𑒹𑒞𑒱𑒨𑒰𑒮𑒿 𑓑𑓒 𑒧𑒲𑒪 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒱𑒧-𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩𑒧 𑒄 𑒏𑒱𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒲𑒢 𑒣𑓀𑒏𑓂𑒞𑒱𑒧 𑓑𑓓 𑒙𑒰 𑒆𑒿𑒔 𑒛𑒲𑒯 𑒁𑒕𑒱।

𑒪𑒾𑒩𑒱𑒨𑒰-𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢𑒑𑒜- 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢𑒑𑒜𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒉𑒞𑓄 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒮𑓂𑒞𑓀𑒦 𑒂 𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡 𑒮𑓂𑒞𑒴𑒣 𑒁𑒕𑒱।

𑒠𑒹𑒏𑒳𑒪𑒲𑒑𑒜- 𑒬𑒱𑒫𑒯𑒩 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒞𑒲𑒢 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒣𑒴𑒥 𑒯𑒰𑒃𑒫𑒹 𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒞𑒧 𑒠𑒳 𑒙𑒰 𑒏𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒫𑒬𑒹𑒭 𑒁𑒕𑒱। 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒠𑒱𑒮 𑒐𑒡𑒰𑒃 𑒁𑒕𑒱।

कटरागढ़- मुजफ्फरपुरक कटरा गामक विशाल गढ़ अछि, एकरो गढ़ जकाँ चारू कात खधाइ खुनल अछि।

नौलागढ़-बेगुसरायसँ २५ किलोमीटर उत्तर ३५० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

जयमंगलगढ़- बेगुसरायक बरियारपुर थानाक काबर झीलक मध्य एकटा ऊँच टीह अछि। ओतऽ ई गढ़ अछि। नाउंकाठी (मझौल) गाम लग ई गढ़ अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलाक हसनपुर ब्लॉकक दुधपुरा बजार लग दहाउर गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश ओतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन ओतऽ निवास सेहो कयलन्हि।

अलौलीगढ़- खगड़ियासँ १५ किलोमीटर उत्तर अलौली गाम लग १०० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

कीचकगढ़- पूर्णिया जिलाक डंगराघाटसँ १० किलोमीटर उत्तर महानन्दा नदीक पूबमे ई गढ़ अछि।

बनुगढ़- टेढ़गाछ थानाक कबल धारक कातमे ई गढ़ अछि।

बेनिजनगढ़- बहादुरगंजसँ छह किलोमीटर दक्षिणमे लोनसबरी धारक कातमे ई गढ़ अछि।

नजनी- दरभंगाक बिरौल प्रखण्डसँ १३ किलोमीटर पश्चिममे एकटा गढ़ अछि जे लोरिकक मानल जाइत अछि।

बुद्ध

कुण्डग्राम- हाजीपुरसँ बत्तीस किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे बसाढ़-वैशाली आ लगमे वासोकुण्ड लग गाम गढ़-टीलासँ २ कि.मी. उत्तर-पूर्व अछि कुण्डग्राम , जतऽ जैनक २४म तीर्थंकर महावीरक जन्म भेल छलन्हि। ओतऽ बुद्धक छाउर, अभिषेक पुष्करिणी (राजा अभिषेकसँ पूर्व ओतऽ नहाइत रहथि), अशोक स्तम्भ आ संसद-भवन (राजा विशालक गढ़) अछि।

पुरवारगढ़ ननही टाल- ओतऽ एकटा बुद्ध मूर्ति भेटल छल, मुदा ओकर आब कोनो पता नै अछि। ई स्थल सेहो रखवारी गामक लगे अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग दउढ़ गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश ओतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदत्तक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन ओतऽ निवास सेहो कलन्हि।

मूसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊँच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्ति, पात्र, बर्तनक टुकड़ी आ पुरवारक अवशेष ओतऽ अछि।

अकौन- मधुबनीसँ २० किलोमीटर पश्चिम आ उत्तरमे अकौन गाममे एकटा ऊँच डीह अछि, जतऽ बौद्धकालक मूर्ति अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, ओतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

𑒫𑒱𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑒱𑒪𑒰- 𑒦𑒰𑒑𑒪𑒣𑒳𑒩𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨। 𑒦𑒰𑒑𑒪𑒣𑒳𑒩 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒁𑓀𑒞𑒲𑒔𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒁𑒕𑒱। 𑓑𑓐𑓘 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒂 𑒥𑒰𑒯𑒩𑒮𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒨 𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒋𑒞𑓄 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒔𑒧𑓂𑒣𑒰𑒢𑒑𑒩- 𑒦𑒰𑒑𑒪𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒱𑒧𑒧𑒹, 𑒂𑒥 𑒢𑒑𑒩𑒮𑒿 𑒮𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒃 𑒖𑒻𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒋𑒞𑓄 𑒧𑒯𑒰𑒫𑒲𑒩 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒰𑒫𑒰𑒮 𑒏𑒩 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒖𑒻𑒢 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒋𑒞𑓄 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒹 𑒖𑒻𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟𑓀𑒏𑒩 𑒫𑒰𑒮𑒳𑒣𑒴𑒖𑓂𑒨 𑒢𑒰𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒯𑒰𑒫𑒲𑒩 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒧 𑒕𑒯 𑒙𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒰𑒫𑒰𑒮 𑒥𑒱𑒞𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒰 𑒇𑒞𑒳𑒧 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒧𑒰𑒮 𑒋𑒏 𑒚𑒰𑒧 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒰𑒫𑒰𑒮 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡 𑒋𑒏𑒼𑒙𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒰𑒫𑒰𑒮 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒧 𑒢𑒻 𑒥𑒱𑒞𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒫𑒻𑒬𑒰𑒪𑒲 𑒢𑒑𑒩𑒲𑒧 𑒂𑒧𑓂𑒩𑒣𑒰𑒪𑒲𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒨𑒰𑒢𑒧 𑒪𑒱𑒔𑓂𑒕𑒫𑒲𑒑𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒣𑒠𑒹𑒬 𑒠𑒹𑒢 𑒕𑒪𑒰। 𑒂𑒧𑓂𑒩𑒣𑒰𑒪𑒲𑒮𑒿 𑒦𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑓄 𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒫𑒹𑒪𑒳𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒲 𑒏𑒩𑒨 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒰𑒫𑒰𑒮।

𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐

𑒑𑒾𑒩𑒲-𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢, 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒖𑒧𑒟𑒩𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒂 𑒯𑒻𑓀𑒚𑒲 𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒃 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒂 𑒬𑒓𑓂𑒏𑒩𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒂 𑒍𑒯𑒱𑒣𑒩 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒣𑒰𑒪𑒫𑓀𑒬𑒲𑒨 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐। 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒮𑒿 𑓒-𑓓 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒠𑒱𑒬𑒰𑒧 𑒃 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱।

𑒦𑒲𑒚-𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐- 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒢𑒰𑒢𑓂𑒨𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒪𑓂𑒪𑒠𑒹𑒫𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡𑒱𑒞 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐 𑒋𑒞𑓄 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒡𑒹𑒣𑒳𑒩 𑒟𑒰𑒢𑒰𑒧 𑒃 𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒦𑒑𑒲𑒩𑒟𑒣𑒳𑒩- 𑒣𑒝𑓂𑒛𑒾𑒪 𑒪𑒑 𑒦𑒑𑒲𑒩𑒟𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒍𑒃𑒢𑒫𑒰𑒩 𑒫𑓀𑒬𑒏 𑒁𑓀𑒞𑒱𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒬𑒰𑒮𑒏 𑒩𑒰𑒧𑒦𑒠𑓂𑒩𑒠𑒹𑒫 𑒂 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒰𑒮𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒧𑒹 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒧𑓀𑒠𑒰𑒩 𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞- 𑒥𑒰𑓀𑒏𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒮𑓂𑒟𑒪𑒧𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩𑒏 𑒑𑒳𑒣𑓂𑒞𑒫𑓀𑒬𑒲𑒨 𑓗𑒧𑓂 𑒬𑒞𑒰𑒥𑓂𑒠𑒲𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩 𑒧𑓀𑒟𑒢𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒧𑓀𑒠𑒰𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒢𑒱𑒏𑒙𑒧𑒹 𑒔𑒾𑓀𑒮𑒲𑒧𑒹 𑒖𑒻𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟𑓀𑒏𑒩 𑒫𑒰𑒮𑒳𑒣𑒴𑒖𑓂𑒨 𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱, 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒪𑒰𑒪 𑒣𑒰𑒟𑒩𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒠𑒰𑒯𑒱𑒢 𑒏𑒰𑒿𑒮𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒩 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒿 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒣𑒠𑒔𑒱𑒯𑓂𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒻𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟𑓀𑒏𑒩 𑒫𑒰𑒮𑒳𑒣𑒴𑒖𑓂𑒨 𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒔𑒧𑓂𑒣𑒰𑒢𑒑𑒩𑒧𑒹 𑒂 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒫𑒰𑒝 𑒋𑒞𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩- 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒯𑒢𑒰𑒩𑒼𑒛 𑒮𑓂𑒙𑒹𑒬𑒢 𑒪𑒑 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒬𑒱𑒫𑒡𑒰𑒧𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖 𑒧𑒰𑒡𑒫𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒏𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑓑[illegible] 𑒨𑒳𑒑𑒏 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐 𑒋𑒞𑓄 𑒁𑒕𑒱।

𑒥𑒮𑒻𑒙𑒲 (𑒥𑒰[illegible]𑒮𑒲-𑒥𑒮𑒻𑒙𑒲), 𑒁𑒩𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐 - 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒱𑒨𑒰𑒿𑒧𑒹 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒢𑒑𑒩 𑒪𑒑 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩𑒏 [illegible] 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒬𑒰𑒮𑒏 𑒩𑒰𑒢𑒲 [illegible]𑒠𑓂𑒩𑒰𑒫𑒞𑒲𑒏 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒏𑒰𑒪𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒩𑒰𑒢𑒲 [illegible]𑒠𑓂𑒩𑒰𑒫𑒞𑒲 (𑓑𑓑𑓘𑓔-𑓑𑓘𑓐𑓒) 𑒖 𑒁𑒏𑒰𑒪𑒏 𑒮𑒧𑒨 [illegible] 𑒂 𑒁𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒏𑒩 𑒩𑒯𑒟𑒱।

𑒖𑒨𑒢𑒑𑒩 𑒏𑒱𑒪𑒰- 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 [illegible] 𑒏𑒱𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒣𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒖𑒨𑒣𑒳𑒩 𑒂 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒨𑒢𑒑𑒩 𑒪𑒑। 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒪𑒑 𑒣𑓀𑒔𑒼𑒦 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒞𑒰𑒧𑓂𑒩 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐 𑒣𑒩 𑒖𑒨𑒣𑒳𑒩 𑒏𑒩 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒁𑒕𑒱।

𑒢𑒱𑒭𑓂𑒏𑒩𑓂𑒭

हुलासपट्टी- मधुबनी जिलाक फूलपरास थानाक जागेश्वर स्थान लग हुलासपट्टी गाम अछि। कारी पाथरक विष्णु भगवानक मूर्ति पैघ अछि।

पिपराही- लौकहा थानाक पिपराही गाममे विष्णुक मूर्तिक चारू हाथ भग्न भऽ गेल अछि।

मधुवन- पिपराहीसँ १० किलोमीटर उत्तर नेपालक मधुवन गाममे चतुर्भुज विष्णुक मूर्ति अछि।

कमलादित्य स्थान- अंधरा ठाढ़ी लगमे कमलादित्य स्थानक विष्णु मंदिर कर्णाट राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दास द्वारा स्थापित भेल।

संग्रामपुर अनुमण्डलक नरवारी गाममे वृक्षक नीचाँ राखल विष्णु मूर्ति, गांधानमेली स बनाओल गेल अछि।

मटिहानी- विष्णु मन्दिर

जनकपुर- वृहद् विष्णुपुराणक मिथिलामाहात्म्यमे जनकपुर उत्तर वर्णन अछि। सत्रहम शताब्दीमे संत सूर किशोरकेँ अयोध्यामे सरयू धारमे राम आ जानकीक दू टा भव्य मूर्ति भेटलन्हि, जकरा ओ जानकी मन्दिर, जनकपुरमे स्थापित कऽ देलन्हि। वर्तमान मन्दिरक स्थापना टीकमगढ़क महारानी द्वारा १९११ ई. मे भेल। नगरक चारूकात यमुनी, गेरूखा आ दुग्धवती धार अछि। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी),जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) आ विवाह पंचमी (अगहन शुक्ल पंचमी) पर पैघ मेला लगैछ।

अंधरा-ठाढ़ीक स्थानीय पुरातत्व संग्रहालय- गौड़ गामक यक्षिणीक भव्य मूर्ति एतऽ राखल अछि।

गौतम तीर्थ- कमतौल स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पश्चिम ब्रह्मपुर गाम लग एकटा गौतम कुण्ड पुष्करणी अछि।

मुंगेरक पूर्व 'सीता-कुण्ड'गर्म कुण्ड अछि, सीता जी एहि पृथ्वीमे समाहित भेल छली। ठंढा जलक कुण्ड 'रामकुण्ड', लक्ष्मण कुण्ड, भरत कुण्ड, आ शत्रुघ्न कुण्ड सेहो अछि, भैयारीमे बड़ मिलान। ई मिलान बाबू गढ़ रानिकलमे सेहो छै, बेसी पढ़ल लिखल गाममे ई आब कहाँ?

हलेश्वर- जनकपुरसँ ३५ किलोमीटर दक्षिण पश्चिममे सीतामढ़ी नगरमे हलेश्वर शिव मन्दिर आ जानकी मन्दिर अछि। एतसँ ३८ किलोमीटर पर पुण्डरीक आश्रम सीताकुण्ड अछि। हलेश्वरमे जनक द्वारा हर चलबा काल सीता भेटलि छली। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) आ जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) पर एतऽ मेला लगैत।

फुलहर-मधुबनी जिलाक हरलाखी थानामे फुलहर गाममे जनकक पुष्पवाटिका छल जतऽ सीता फूल लोढ़ै छली।

धनुषा- जनकपुरसँ १५ किलोमीटर उत्तर धनुषा स्थानमे पीपरक गाछक नीचाँ एकटा धनुषाकार खण्ड पड़ल अछि। रामक तोड़ल ई धनुष अछि। ऐसँ पूब नागरंगा धार बहैत जे लक्ष्मण द्वारा नागसँ उद्घाटित भेल छल।

सुग्गा- जनकपुर लग जलेश्वर शिवधामक समीप सुग्गा ग्राममे शुकदेवजीक आश्रम अछि। शुकदेवजी जनकसँ शिक्षा लेबाक हेतु मिथिला ऐल छला- ऐ ठाम हुनका ठहरबाक व्यवस्था भेल छल।

सिंहेश्वर- मधेपुरासँ ७ किलोमीटरपर गौरीपुर गाम लग सिंहेश्वर शिवधाम अछि।

कपिलेश्वर- कपिल मुनि द्वारा स्थापित महादेव मधुबनीसँ ६ किलोमीटर पश्चिममे अछि।

कुशेश्वर- समस्तीपुरसँ उत्तर-पूब, लहेरियासरायसँ ६० किलोमीटर दक्षिण-पूब आ सहरसासँ २७ किलोमीटर पश्चिम ई एकटा प्रसिद्ध शिवस्थान अछि। एतऽ चिड़ै-अभयारण्य सेहो अछि जतऽ उज्जर आ कारी गैवर, लालसर, दिघौंच, मैल, नकटा, गैरी, गगन, सिल्ली, अधानी, हरिअल, चाहा, करन, जाँघा चिड़ै सभ नवम्बरसँ मार्च धरि देखबामे अबैए।

सिमरदह- थलवारा स्टेशन लग शिवसिंह द्वारा बसाओल शिवसिंहपुर गाम लग ई शिवमन्दिर अछि।

सोमनाथ- मधुबनी जिलाक सौराठ गाममे सभागाछी लग सोमदेव महादेव छथि।

मदनेश्वर- मधुबनी जिलाक अंधरा ठाढ़ीसँ ४ किलोमीटर पूब मदनेश्वर शिव स्थान अछि।

बाणेश्वर- संग्रामपुरसँ [illegible] गाम लग बाणेश्वर राजा द्वारा स्थापित बाणेश्वर शिवस्थान अछि।

शिलानाथ- जयनगर लग कमला धारक कातमे शिलानाथ महादेव छथि।

उग्रनाथ- मधुबनीसँ दक्षिण पण्डौल स्टेशन लग भवानीपुर गाममे उगना महादेवक शिवलिंग अछि। विद्यापतिकेँ प्यास लगलन्हि तँ उगनारूपी महादेव जटासँ गंगाजल निकालि जल पियौलखिन्ह। विद्यापतिक हठ कयला पर ओ स्थान पर उगना हुनका अपन असल शिवरूपक दर्शन देलखिन्ह।

उच्चैठ छिन्नमस्तिका भगवती- कमतौल स्टेशनसँ १६ किलोमीटर पूर्वोत्तर उच्चैठमे कालिदास भगवतीक पूजा करैत छला। भगवतीक मौलिक मूर्त्ति मस्तक विहीन अछि।

उग्रतारा- मण्डन मिश्रक जन्मभूमि महिषीमे मण्डनक गोसाउनि उग्रतारा छथि।

भद्रकालिका- मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे भद्रकालिका मंदिर अछि।

चामुण्डा- मुजफ्फरपुर जिलामे कटरागढ़ लग लखनदेई धार लग दुर्गा द्वारा चण्ड-मुण्डक वध कएल गेल। ओहि स्थानपर ओहि मन्दिर अछि।

पनसा सूर्य मन्दिर- संग्रामपुरसँ पाँच किलोमीटर पूर्व पनसा गाममे साढ़े चारि फीटक भव्य सूर्य मूर्त्ति भेटल अछि।

बैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगम आदिकालीन रक्त काली-मन्दिर सेहो ऐ गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ बैनपुरमे होइत अछि।

धनहा, बनमनखी, पूर्णियाँमे नरसिंह भगवानक स्थान अछि, एकटा खाम्ह जकाँ पैघ पाथर अछि जाहिमे जँ किछु फेकबै तँ बड़ी काल धरि ठां-ठाँ अवाज होइत रहत। ऐ स्थान आब नरसिंह भगवानक मूर्ति आ मन्दिरक कानधसँ बस निकसित भऽ गेल अछि। एतै नरसिंह पाथर फाड़ि अवतरित भेल छला।

बिसफी- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे कमतौल रेलवे स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पूब आ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किलोमीटर पश्चिम बिसफी गाम अछि। भवानीश्वर पूर्व महाकवि विद्यापतिक जन्म-स्थान ऐ गाम अछि।

मिथिलाक बीस टा सिद्ध पीठ- १.गिरिजास्थान (फुलहर, मधुबनी), २.दुर्गास्थान (उचैठ, मधुबनी), ३.नहेश्वरी (दाखन, मधुबनी), ४.भुवनेश्वरीस्थान (भगवतीपुर, मधुबनी), ५. भद्रकालिका (कोइलख, मधुबनी), ६.चमुण्डा स्थान (पचाही, मधुबनी), ७.सोनामाइ (जनकपुर, नेपाल), ८.योगनिद्रा (जनकपुर, नेपाल), ९.कालिका स्थान (जनकपुर स्थान), १०.राजेश्वरी देवी (जनकपुर, नेपाल), ११.छिन्नमस्ता देवी (उजान, मधुबनी), १२.वनदुर्गा (खनगर, मधुबनी), १३.सिद्धेश्वरी देवी (सरिसब, मधुबनी), १४.देवी-स्थान (अंधरा ठाढ़ी, मधुबनी), १५.कंकाली देवी (भारत नेपाल सीमा आ रामबाग प्लेस, दरभंगा),

१६.उग्रनाथ (महिषी, सहरसा), १७.कात्यायनी देवी (बदलाघाट, सहरसा), १८.पूरन देवी(पूर्णियाँ), १९.काली स्थान (दरभंगा), २०.श्रीमंगलास्थान(मुंगेर), ५२. जनकपुर परिक्रमाक १५ स्थल आ ओकर मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी, २.कल्याणेश्वर- शिवलिंग, ३.गिरिजा-स्थान- शक्ति, ४.मटिहानी- विष्णु मन्दिर, ५.जलेश्वर- शिवलिंग, ६.मडई- माण्डव ऋषि, ७. ध्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर, ८.कंचन वन- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, ९.पर्वत- पाँच टा पर्वत, १०.धनुषा- शिव धनुषक टुकड़ी, ११.सतोखड़ी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड, १२.हनुमाहा- विमलागंगा, १३. करुणा- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, १४. विसौल- विश्वामित्र मन्दिर आ १५.जनकपुर।

दरभंगा कैथोलिक चर्च- १८९१मे स्थापित ई चर्च १८९७ केर भूकम्पमे क्षतिग्रस्त भऽ गेल। एकरा हाली नाजरी चर्च सेहो कहल जाइत। संट फ्रांसिस □सिसी चर्च मुजफ्फरपुरमे अछि।

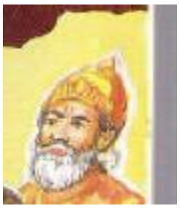
शिखा सलामी मजार- गंगासागर पोखरि दरभंगाक मदारपुर ई मजार अछि। मकदुम बाबाक मजार:ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय आ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगाक बीच स्थित ई मजार हिन्दू आ मुस्लिम मतावलम्बीक एकटा पावन स्थान अछि। दरभंगा टावर मस्जिद इस्लाम मतावलम्बीक एकटा रम्य मस्जिद आ धार्मिक स्थल अछि।

६.विदेह मिथिला चित्र

विदेह मिथिला चित्र

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

ज्ञान आ विज्ञानक माटिमे बसल मिथिलाक धरती प्राचीन कालसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि रहल अछि। प्रस्तुत अछि मिथिला चित्रक एकटा छोट संग्रह। ई संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रहकेँ editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आकस्मिक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित स्रोतधारक आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। स्रोत सभ पठएबा लेल धन्यवाद पाठकगण। साभार। पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू **VIDEHA_346, VIDEHA_347, VIDEHA_366, VIDEHA_374** *आ* **मिथिला चित्रआ मिथिलाक संगीत (कथा) मिथिलाक पावनि तिहार /मिथिला चित्रकला /**।



वैदिक जनक

'विदेह राजा' ऋग्वेदिक कालक नमी साप्यक नामसँ छलाह, यज्ञ करैत सदेह स्वर्ग गेलाह, ऋग्वेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग देलन्हि असुर नमुचीक विरुद्ध आ गारिमे इन्द्र हुनका बचओलन्हि। शतपथ



वाल्मीकि



सीतायणि राम

ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुनाइक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एक छथि आ एतएसँ विदेह नामक प्रारम्भ। माथवक पुरोहित गौतम मिथिलिहि यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि गौतमक आश्रमक लग **जयन्त** आ मिथि -जिनका मिथिला नामसँ सेहो ख्यात कएल जाइत छन्हि, **मिथिला** नगरक निर्माण कएलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नहि भए सकल अछि, अनुमानित अछि जनकपुरक लग। �सीरध्वज जनक� सीताक पिता छथि आ एतयसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ परम्परा देखबामे अबैत अछि। �कृति जनक� सीरध्वजक बादक 18म पुस्त भेल छलाह। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छलाह आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छलाह। याज्ञवल्क्य हिरण्यनाभक शिष्य छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छलाह। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भए गेल (संदर्भ अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र)।



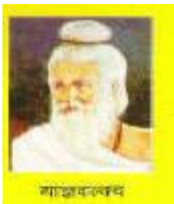
लव कुश



विदेघ माथव

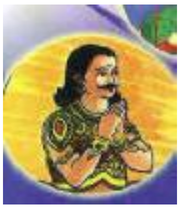
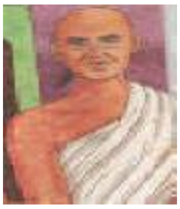
शतपथ ब्राह्मणक विदेघ माथवक विदेह आगमन, आगिक सदानीरासँ आगाँ नहि बढ़बाक चर्चा।

शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुनाइक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू



वाजसनेयी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मिथिलाक दार्शनिक राजा कृति जनकक दरबारमे छलाह। हुनकर माताक वा पिताक नाम सम्भवतः वाजसनी छलन्हि। ओना हुनकर पिता देवरातकेँ मानल जाइत छन्हि। याज्ञवल्क्य १. शुक्ल यजुर्वेद, २. शतपथ

	एक छथि आ एतएसँ विदेह नामक प्रसिद्ध।	ब्राह्मण, ३.बृहदारण्यक उपनिषद आ ४.याज्ञवल्क्य स्मृतिक द्रष्टा/लेखक छथि।
 **अंगराज कर्ण**	 **वैशेषिक दर्शन कणाद** वैशेषिक दर्शन कणाद	 **महावीर जैन 599-527** महावीर विदेहमे छल ओ वसावास विशलन्हि।
 **गौतम बुद्ध BC 563-483** जेना गेँ महावीर विदेहमे छल ओ वसावास विशलन्हि मुदा बुद्ध एकोटा बेर मुदा मिथिलामे बौद्ध धर्मक प्रचार पछाति बढ़ल। बुद्ध वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ सम्बोधन देने छलाह।	 **चाणक्य BC 350-283** धर्म आ विधिक उत्तम कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ याज्ञवल्क्य स्मृतिमे बड़ समानता अछि जे चाणक्यक मिथिलावासी हेबाक प्रमाण अछि। अर्थशास्त्रम(१.६ विनयाधिकारिक प्रथमाधिकरणे षष्ठोऽध्यायः इन्द्रियजय अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक पतनक सेहो चर्चा अछि। तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मणकन्यामभिमन्यमानः सबन्धुराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,...।	 **चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्यक शिष्य BC 340-293** चाणक्यक शिष्य



आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550

पञ्जीमे आर्यभट्टक विवरण- (२१) (३४/०६) महियापि: मंगरौनी माण्डैन सँ बीजाम्ब न सुता दामू दौ मातृ सँ वीजी त्रिनयनभट्ट: त सुता *आर्यभट्ट:* त सुता उदयभट्ट: त सुता विजयभट्ट त सुता सुलोचनभट्ट (सुनयनभट्ट) त सुता भट्ट त सुता धर्मजटीमिश्र त सुता धाराजटी मिश्र त सुताब्रह्मजटी मिश्र त सुता त्रिपुरजटी मिश्र त सुत विघ्नजटी मिश्र त सुता अजयसिंह: त सुता विजयसिंह: त सुता त सुता आदित्यनाथ: त सुता महादेवनाथ: त सुता दुर्योधन सिंह: त सुता साढन जयसिंहकर्णाचार्यास्मत महाराज विद्या पानडगा महामहोपाध्याय। प: नरसिंह:।।



सिद्ध सरहपाद 700-780

सरहपाद-�सिद्धिनक मध्य प्रथम पढिअउ, मध्य पिचमँ बिसरउ बमहुउ�। मिथिलामे अखनाख सिद्धिनक उकति पूर्णमे सिद्धिनक, गणेशजीक अंकुश आँजी, लिखल जाइत अछि। मिथिलामे ई धारणा जे माँउ पिलासँ स्मरण शक्ति तीव्र होइत अछि; ई सरहपादक मिथिलावासी होएबाक प्रमाण अछि।

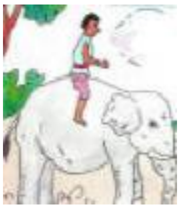


आदि शंकराचार्य 788-820 मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ



म.म.गोनू झा 1050-1150

करमहा सानकनियाम गोनू झाक वर्णन पञ्जीमे अछि- महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनू। पञ्जीक अनुसार पीढ़ीक गणना कएलासँ गोनूक जन्म (गोनूक सानकनियाम करमहा-वंशमे २४म पीढ़ी चलि रहल अछि) *आर्यभट्टक बाद (आर्यभट्टक माण्डन-काश्यप ३९ म पीढ़ी चलि रहल अछि) आ विद्यापतिक पहिने (विद्यापतिक बिसइवार विष्णु-काश्यप १४म पीढ़ी चलि*



कृष्णाराम आ हाथी सुवरन

मिथिलाक यादव (गुआर) जातिक लोकदेवता कृष्णाराम अपन हाथी सुवरनपर सवार।



वंशीधर ब्राह्मण

रहल अछि) लगभग १०७० ई.मे सिद्ध भेल अछि। कारण एहि गामक एक पीढ़ीकेँ ४० सँ गुणा कएला सँ आर्यभट्टक जन्म लगभग ४७६ ई. आ विद्यापतिक जन्म लगभग १३७० ई. अबैत अछि जे इतिहाससम्मत अछि।



छेछन महराज

मिथिलाक डोम जातिक लोकदेवता



दीना- भदरी

मिथिलाक मुसहर जातिक लोकदेवता



ज्योति पँजियार



राजा सलहेस

मिथिलाक दुवर्णी (दुसाध) जातिक लोकदेवता



दुलरा दयाल

गोनू साहुक गाम भरौताक राजकुमार, "बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल" लोककथाक मलाह कथानायक। भरौतामे एखनो हिनकर गहबर छन्हि।

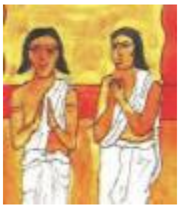


कालिदास



बाधि कायस्थ

विद्यापतिक पुरुष-परीक्षामे मृत्युकालमे गंगा नदीक आयब आ बाधि-कायस्थकेँ अपनाम समवाक किस्सा वर्णित अछि जे



राधाकृष्ण आ करणाराम मल्लिक

मिथिलाक अमता घरानाक प्रारम्भिक गवैया



महाराज नान्यदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक 1097 ई. मे स्थापना। 1147 ई. मे मृत्यु।

बादमे विद्यापतिकेँ लऽ कऽ सेहो प्रचलित रहल।



मल्लदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र। मिथिलाक गंधवरिया राजपूत मल्लदेवकेँ अपन बीजीपुरुष मानैत छथि।



महाराज हरिसिंहदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठक्कुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरिसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त रहलाह। हरिसिंहदेवक प्रशस्ति- आ ई हरिसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कर्णाट वंशक १००९ शाकमे स्थापना केने रहथि- नन्देद शून्यं शशि शाक वर्ष (१०१९ शाक)... मिथिलाक पञ्जीकार लोकनि शाक १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोड़ वृद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (करीब काल वर्णित १६०० शाक माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) *श्रोत्रिय*नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।



मंत्री गणेश्वर

मिथिलाक कर्णाट वंशक नरेश हरिसिंहदेवक मंत्री। *सुगतिसोपानमे* मिथिलाक सांवैधानिक इतिहासक वर्णन।



मीनां साहेव

मिथिलाक मुस्लिम लाकनिक वीच प्रसिद्ध लाकगाथाक नायक।



अमन वावा

मिथिलाक मलाह जातिक लाकदवता।



गनीवन वावा

मिथिलाक धावि जातिक लाकदवता।



लालवन वावा

मिथिलाक चर्मकान जातिक लाकदवता।



वं01 चमान



कानिख यजियान



लानिक



नाय नथयाल



अयाची मिश्र

यद्धदम शाद्विक दलनाथ मिश्र वड येघ नैयायिक छलाह आ कहिया ककनासँ कानो वस्तुक याचना नहि कएलहि, ताहि लल सए हुनका अयाची मिश्र कहए लगलहि।



शंकन मिश्र



यज्ञधन मिश्र



"बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती। अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥" क वक्ता। पन्द्रहम शताब्दीमे रविनाथ मिश्रक घरमे मधुबनी जिलाक सरिसब ग्राममे शंकर मिश्रक जन्म भेल। शंकर मिश्र महाराज भैरव सिंहक कनिष्ठ पुत्र राजा पुरुषोत्तमदेवक आश्रित छलाह। ओकर वर्णन रसार्णव ग्रंथमे भेटैत अछि। शंकर मिश्र कवि, नाटककार, धर्मशास्त्री आ न्याय-वैशेषिकक व्याख्याकार रहथि। शंकर मिश्र ग्रंथावली- १.गौरी दिगम्बर प्रहसन २.कृष्ण विनोद नाटक ३.मनोभवपराभव नाटक४.रसार्णव५.दुर्गा-टीका६.वादिविनोद७.वैशेषिक सूत्र पर उपस्कार८.कुसुमांजलि पर आमोद९.खण्डनखण्ड-खाद्य टीका १०.छन्दोगाह्निकोद्धार ११.श्राद्ध प्रदीप १२.प्रायश्चित प्रदीप।

विद्यापतिक समकालीन जयदेव मिश्र, जे अपन अकाट्य तर्कक कारण पक्षधर मिश्रक नामसँ जानल गेलाह।

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)

कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक वासिन्दा कायस्थ श्री महेश ठक्कुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक विदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि। ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ �ईश्वर प्रत्यभिज्ञा-विमर्शिनी� मे विद्यापतिक उल्लेख करैत छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरवरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत करैत छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी।

�जाव न मालति कर परगास

ताव न ताहि मधुकर बिलास।� आ

�मृदुला मुकुल काय मकरन्द�

ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) **षष्ठः कल्लोल**- ॥अथ विद्यापति वर्णना॥ **अष्टमः कल्लोलः**- ॥अथ नायक वर्णना॥ मे उल्लेख।



महाराज शिव सिंह

मिथिला नरेश विद्यापतिक आश्रयदाता ओइनवार वंशक महाराज शिव सिंह।



उगना महादेव

महादेव विद्यापतिक अद्भुत गीत सुनबा लेल उगना चाकर बनि रहैत छलाह।



महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435 (मैथिलीक आदि कवि ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक)

महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435

विद्यापति ठाकुरः 1350-1435 बिसइवार बिस्फी-वास्तव्य (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल

संग्राम कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)सँ भिन्न छथि।

(चित्रक आधार मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता द्वारा कतेक कलाकारसँ बनवाओल , कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अखबार कतरनसँ गुप्त राखल गेल अछि।)



शंकरदेव 1449-1569

पारिजातहरण।



जगज्ज्योतिर्मल्ल १६१३-३१

हरगौरी विवाह नाटक, कुंज बिहारी नाटक।



डॉ. सर आशुतोष मुखर्जी १८६४-१९२४

मैथिली प्रेमी। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे अपन कुलपतित्वमे मैथिली अध्ययन शुरूसँ स्नातकोत्तर धरि, प्रिन्सिपल आ सबसिडियरी दुनू विषयक रूपमे, सत्र-१९१७-१८ सँ प्रारम्भ कएलन्हि। मैथिलीक पहिल बेर विश्वविद्यालयमे अध्ययन शुरू भेल।



मदन मोहन मालवीय १८६१-१९४६

मैथिली प्रेमी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे अपन कुलपतित्वमे मैथिली अध्ययनक प्रारम्भ कएलन्हि। कलकत्ता विश्वविद्यालयक बाद ई दोसर विश्वविद्यालय भेल



खुद्दी झा १८६१-१९२१

गाम कोइलख। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक अध्ययनक १९१७-१८ सत्रमे प्रारम्भ भेलापर गङ्गापति सिंह पहिल अंग्रेजी निष्ठ मैथिली प्राध्यापक आ खुद्दी झा पहिल संस्कृत निष्ठ मैथिली प्राध्यापक नियुक्त भेला।



बबुआ मिश्र १८८१-१९७९

गाम कोइलख। बबुआजी मिश्र (श्रीकृष्ण मिश्र), ज्योतिष तीर्थ (कलकत्ता), ज्योतिषाचार्य (बनारस)। कलकत्ता वि.वि. मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति विभागमे हिन्दू गणित आ ज्योतिषक प्राध्यापक, संगे कलकत्ता विश्वविद्यालयमे सत्र १९१७-१८ सँ मैथिलीक अध्ययनक प्रारम्भक पश्चात मैथिली विभागमे सेहो १९४६ धरि अध्ययन। सुनीति कुमार चटर्जी

आऽ मैथिलीक अध्ययनक प्रारम्भ केलनि।

सँ ज्योतिरीश्वर कविशेखराचार्यक 'वर्ण रत्नाकर'क सम्पादन (१९४०)।



सुनीति कुमार चटर्जी १८९०-१९७७

मैथिली प्रेमी। बबुआ मिश्र (बबुआजी मिश्र) सँ ज्योतिरीश्वर कविशेखराचार्यक 'वर्ण रत्नाकर'क सम्पादन (१९४०)।



अरविन्द घोष १८७२-१९५०

मैथिली प्रेमी। विद्यापति गीतक अंग्रेजीमे अनुवाद।



सर जी. ए. ग्रियर्सन १८५१-१९४१

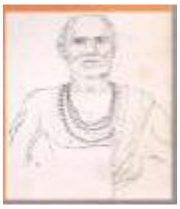
मैथिली प्रेमी। 'मैथिली ग्रामर' आ 'मैथिली क्रेस्टोमैथी एण्ड वोकाबुलरी'।



कवि चन्दा झा 1831-1907

मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रियर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता कयनिहार।

कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।



महाकवि लालदास 1856-1921

हिनक जन्म खड़ौआ ग्राममे १८५६ ई. मे तथा मृत्यु १९२१ ई. मे भेलन्हि। हिनक अनेक रचना उपलब्ध छन्हि अछि, यथा�रमेश्वर चरित रामायण,� स्त्री शिक्षा,� �सावित्री-सत्यवान,� �चण्डी चरित,� �विनयावली,� �दुर्गा सप्तशती,� गंगाक मिथिला माहात्म्य� आदि। मैथिलीक अतिरिक्त ई संस्कृत, हिन्दी तथा फारसीक ज्ञाता छलाह। कविताक अतिरिक्त गद्यमे सेहो ई रचना कएल। रमेश्वर चरित रामायण हिनक सभसँ विशिष्ट ग्रन्थ अछि। राम-कथाक उल्लेखमे सीताक महिमाक महत्व दए मिथिला तथा मैथिलीक प्रति ई



म.म. हरप्रसाद शास्त्री (१८५३-१९३१)

२३ कवि ५० टा बौद्ध चर्यापद संख्याक नेपाल सँ १९०७ मे निष्कासन। [लुइपाद १, २९; कुक्कुरीपाद २, २०, ४८; विरूपपाद ३; गुण्डरीपाद ४; चाटिलपाद ५; भुसुकुपाद ६, २१, २३, २७, ३०, ४१, ४३, ४९; कान्हपाद ७, ९, १०, ११, १२, १३, १८, १९, २४, ३६, ४०, ४२, ४५; कम्बलाम्बरपाद ८; डोम्बीपाद १४; शान्तिपाद १५, २६; महीधरपाद १६; वीणापाद १७; सरहपाद २२, ३२, ३८, ३९; शबरपाद २८,५०; आर्यदेवपाद ३१; ढेण्ढणपाद

अयन श्रद्धा गथा एकिकँ ब्यक कअल अछि ।

३३; दानिकायाद ३४; रादयाद ३७; गाउकायाद ३१; कनकनायाद ४४; जयनन्हीयाद ४६; धमयाद ४१; गंग्रीयाद २७]



नगेन्द्रनाथ गुप्त (१८६१-१९४०)

विद्यापति पदावलीक संकलन आ सम्पादन (१९१०)



म. म. यनमश्चन मा 1856-1924

जन्म 1856 ई. म गनौनी ग्राम (दनरंगा) जिलाम रल छलहि गथा निधन 1924 ई. म । संस्कृग ब्याकनधक ई दिग्गज विद्वान् छलाह गथा �वैयाकनध कशनी� क उयाधिसँ विभूषिग छलाह । मैथिली साहित्यम अयन कृगि �मिथिलागत्व निमर्श� गथा �सीमंगिनी आख्यायिका�क कानधे महत्त्वयूर्ध स्थान नखैग छथि । ई महानाज नमश्चन सिंहक दननानम नाज-यंतिगक यदयन अनका नर्ष धनि सुप्रगिष्ठिग छलाह ।



अवध विहानी प्रसाद शाही 1859-1929



सर्वगंग्र स्वगंग्र वच्चा मा 1860-1921

मधूवनी जिलांगर्ग लनाधी(ननानी) गामम हिनकन जन्म रलहि। हिनक कृगि सर अछि। 1. सुलाचन-माधन चम्पू काव्य, 2.न्यायनार्त्तिक गात्पर्य व्याख्यान, 3.गुढार्थ गत्त्वलाक(श्री मदभागनगीगा व्याख्यारूग मधूसूदनी टीका यन) 4.व्याप्तियंचक टीका 5.अनच्छदकत्व निनूक्ति निनचन 6.सद्यरिचान



म. म. शशिनाथ मा 1860-1930



मूंशी नघूनन्हन दास 1860-1945

गाम-सखवान, जिला-मधूवनी। "मिथिला नाटक" आ "दूगांगद व्यायाग"क लखक।

टिप्पणी 7.सप्तभंगीनय टिप्पणी 8.व्याप्तिपञ्चक विवरण 9.सिद्धान्त लक्षण विवेक 10.व्युत्पत्तिवाद गूढार्थ तत्त्वालोक 11.शक्तिवाद टिप्पणी 12.खण्डन-खण्ड खाद्य टिप्पणी 13. अद्वैत सिद्धि चन्द्रिका टिप्पणी 14.कुसुमाञ्जलि प्रकाश टिप्पणी।



मधुसूदन ओझा 1866-1939



म.म. मुरलीधर झा १८६८-१९२९

जन्म- गाम- हरिनाम (जिला मधुबनी), अपन मातृक श्यामसीधपुर बसि गेलाह। काशीसँ १९०६ ई. मे ई "मिथिलामोद" नामक मासिक मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन शुरू कएलन्हि। हितोपदेश (अनुवाद), मैथिली व्याकरण, "अर्जुन तपस्या" (उपन्यास) प्रकाशित।



मुकुन्द झा "बक्शी" 1869-1936

जन्म हरिपुर बक्शी टोल ग्राम (मधुबनी जिला) मे 1869 ई. मे भेल तथा हिनक निधन काशीमे 1937 ई. मे भेलन्हि । हिनक लिखल संस्कृत मे अनेक ग्रंथ अछि । मैथिलीमे हिनक महत्त्वपूर्ण कृति अछि �मिथिला भाषामय इतिहास�। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक स्फुट निबन्ध सेहो सभ प्रकाशित भेल । मिथिलाक ऐतिहासिक वर्णन सभसँ पहिने हिनक प्रकाशित भेल । एहि इतिहासमे मिथिलाक सर्वतोमुखी परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि ।



डॉ. सर गंगानाथ झा 1871-1941

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसब-पाही ग्राममे 1871 ई. मे भेल तथा निधन प्रयागमे 1941 ई. मे । ई अपना समयक संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान म. म. चित्रधर मिश्र, म. म. जयदेव



जनार्दन झा जनसीदन 1872-1951



रासबिहारी लालदास 1872-1940

"मिथिला दर्पण" क लेखक।

मिश्र तथा म. म. शिवकुमार शास्त्रीसँ मीमांसा एवं दर्शनक अध्ययन कएलन्हि तथा दर्शनक विशिष्ट दुरूह ग्रंथक अद्भुतीय अनुवाद कए याज्ञवल्क्य संस्थानक ध्यान आकृष्ट कएलन्हि। श्री गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज बनारसमे 1917 सँ 1923 धरि प्रिंसिपल रहलाह तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालयक 1923 सँ 1932 पर्यन्त कुलपति रहलाह। मैथिलीमे हिनक सम्पादित बहुत सारक �महेशवाणी संग्रह� तथा �चन्दनाथ-विश्वनाथ पदावली� प्रकाशित अछि। मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित हिनक �वेदान्त दीपक� (दर्शन) विषयक अपूर्व ग्रंथ अछि। एहिसँ भिन्न हिनक निबंध सभ सामयिक मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि।



नामवद्ध मिश्र "वद्ध" 1873-1937 मैथिल प्रसग



महावैयाकरणाचार्य पं दीनबन्धु झा 1878-1955



रघुनाथ मिश्र 1879-1933

मैथिली शब्दकोष "मिथिला शब्द प्रकाश"क लेखक।



कीर्त्यानन्द सिंह



टंकनाथ चौधरी 1884-1928



रत्नश्रीानन्द झा 1886-1970



कपिलेश्वर मिश्र 1887-1987

गाम सलमपुर, थाना-उजियारपुर, जिला समस्तीपुर। �सीताराम�पुस्तक रंगतानसँ प्रकाशित।



बालकृष्ण मिश्र 1888-1948



बलदेव मिश्र 1890-1975

हिनक जन्म सहरसा जिलाक बनगाँव ग्राममे 1890 ई. मे एवं निधन रहबनी, 1975मे भेलन्हि। प्रारम्भमे पं. छेदालाल चौधरीसँ ज्योतिष पढ़ि श्री काशीमे पं. सुधाकर द्विवेदीजीक शिष्य भेलाह। बहुत वर्ष धरि सरस्वती भवन (बनारसी) मे हस्तलिखित विभागमे कार्य कएल। पश्चात् पटनाक काशीप्रसाद जयसवाल रिसर्च संस्थानमे अनेक प्राचीन तिब्बती हस्तलिपिकेँ देवनागरीमे लिप्यन्तरित कएल। �मिथिलामोद� प्रकाशन एवं म.म. मुरलीधर झाक प्रोत्साहनसँ ज्योतिषीजी १९१० ई.सँ �मोद�मे लिखए लगलाह। हिनक प्रकाशित रचना अछि��रामायण शिक्षा�, �वृद्धा झा�, �संस्कृति�, �रानी शिक्षा�, �गद्य-पद्य निबन्ध�, �समाज� आदि। पण्डितजी यावत् धरि पटना रहलाह बराबरि �मिथिला�मे लिखैत रहलाह।



आचार्य रामलोचन शरण 1889-1971

सीतामढ़ीमे जन्म आ दरभंगामे मृत्यु। "मैथिली रामचरित मानस" सहित तुलसीदासक समस्त रचनाक मैथिलीमे लेखन।



सीताराम झा 1891-1975

जन्म चौगमा ग्राममे १८९१ ई.मे तथा निधन १९७५ ई. मे भेलन्हि। संस्कृतमे ज्योतिष शास्त्रक अनेक रचनाक



गंगानन्द झा 1892-1928

मिथिलाञ्चलमे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ कनिहार। प्रकाशन संस्था "पुस्तक भण्डार", लहेरियासराय, पटनाक संस्थापक।

.आधुनिक मैथिलीमे हिनक �अम्ब चरित� (महाकाव्य), �सूक्ति सुधा,� लोक लक्ष्य,� �पद्यावलि,� �यूरोपीय यात्रा,� उमता बसात,� �अलंकार दर्पण�, �रसकल्प वर्णन�, �काव्य षट्-रस�, �मैथिली काव्यायतन�, आदि ग्रन्थ उपलब्ध अछि । हिनक गीताक मैथिली अनुवाद सेहो उपलब्ध अछि । मिथिला मोदक सम्पादन १९२० ई.सँ १९२१ ई. धरि ई कएल ।



बद्रीनाथ झा 1893-1973

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे १८९३ ई. मे भेलन्हि तथा १९७४ ई. मे ई काशी लाभ कएलन्हि । बहुत दिन धरि ई मुजफ्फरपुरक धर्म समाज संस्कृत कॉलेजमे साहित्यक अध्यापक छलाह । मैथिलीक नियमित कवि लोकनि यथा सुमनजी, मधुपजी, मोहनजी आदि हिनक शिष्य छथिन्ह । संस्कृत साहित्यमे हिनक अनेक रचना अछि । जाहिमे राधा परिणय� (महाकाव्य) क स्थान विशिष्ट अछि । मैथिलीमे हिनक �एकावली परिणय� (महाकाव्य) एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कएलक। काव्य अलंकारक दृष्टान्त स्वरूपक हेतु �एकावली परिणय� पर्याप्त अछि ।



जीवनाथ राय 1893-1964



उमेश मिश्र 1895-1967

जन्म मधुबनी जिलाक गजहरा ग्राममे 1895 ई. मे भेल छलन्हि । ई एकहत्तरि वर्षक आयुमे १९६७ ई. मे प्रयागमे स्वर्गवासी भेलाह । ई अपन स्वनाम-धन्य पिता म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. डा. गंगानाथ झाक सान्निध्यमे विद्यार्जन कएल। १९२३ सँ १९५९ धरि मिश्रजी इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे संस्कृतक प्राध्यापक छलाह । दरभंगा �मिथिला शोध संस्थान�क निदेशक पदपर किछु समय कार्य कए १९६२ सँ ६७ धरि कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति रहलाह । म. म. मुरलीधर झासँ प्रभावित भए �मिथिलामोद�मे ई लिखब प्रारम्भ कएलन्हि तथा अपन विविध प्रकारक रचनासँ मैथिलीक गद्यकेँ समृद्ध कएलन्हि । मैथिलीमे हिनक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि��कमला� (शेक्सपीयरक �टेम्पेस्ट�क भावानुवाद), �नलोपाख्यान�, �मैथिली-संस्कृति� तथा अनेक वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक

निबन्ध; मनबोधक कृष्णजन्मक सम्पादन, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तिपताका, गोरक्ष विजय आदिक अनुवाद-सम्पादन सेहो कएल।



बाबू धनुषधारी दास 1895-1965

मैथिलीम विद्यापति कविक अनुवाद प्रकाशित।



अमरनाथ झा 1897-1955

सरिसब पाहीटोल ग्रामम १८९७ ई. म जन्म। हिनक निधन पटनाम जखन ई बिहार लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष छलाह, १९५५ म भेलन्हि। ई इलाहाबाद विश्वविद्यालयक नओ वर्ष धरि कुलपति रहि पश्चात् हिन्दू विश्वविद्यालयक सेहो कुलपतिक पदकेँ सुशोभित कएलन्हि। ई अंग्रेजीक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह, तहि संग हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बङ्गला एवं मैथिलीक सेहो अद्भुत विद्वान् छलाह। मैथिलीम हिनका द्वारा सम्पादित �हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली� तथा �गोविन्ददासक शृङ्गारभजन� महत्त्वपूर्ण अछि। एहिसँ भिन्न हिनक मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्षीय भाषण तथा अन्य लेख प्रकाशित अछि।



भोलालाल दास 1897-1977

हिनक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर म भेलन्हि। साहित्य सर्जनाक अतिरिक्त अपन संगठन क्षमता तथा मैथिली साहित्यक सर्वांगमुखी विकासक हेतु सतत तत्पर रहबाक कारणेँ भोला बाबू मैथिली संसारक एक स्तम्भक रूपम रहलाह। हिनक निधन 1977 ई. म भेल। मैथिलीक प्रचार-प्रसारम ई अपन जीवन समर्पित कएने छलाह। पाठ्यक्रमम मैथिलीकेँ स्थान हो ताहि हेतु ई बीड़ा उठओलन्हि। विद्यालय हेतुक अनेक पोथीक निर्माण कएल। मैथिली साहित्य परिषदक ई संस्थापक मण्डलक सदस्य छलाह। 1931 सँ 1940 ई. पर्यन्त ओकर प्रधान मन्त्री रहलाह। हिनक मन्त्रित्वकालम �भारती� नामक मासिक पत्रक प्रकाशन भेल। एहिसँ पूर्व (१९२९-३१) कुशेश्वर कुमरजीक संग संयुक्त सम्पादनम �मिथिला� नामक पत्र चलओल। ई नवीन एवं प्रगतिशील विचारक लोक छलाह। नव-नव लेखककेँ प्रोत्साहित करब, शैलीम एकरूपता आनब, नव प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य भंडारक पूर्ति करब हिनक कर्तव्य बनि गेल छल। हिनक लिखल �मैथिली व्याकरण� तथा हिनकहि द्वारा सम्पादित �गद्यकुसुमांजलि बहुत दिन धरि विद्यालयम पढाओल जाइत रहल। हिनक लिखल

अनेक निबन्ध समालोचना, कविता, संस्मरण, जीवनी-साहित्य मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल अछि।



कुमार गंगानन्द सिंह 1898-1971

जन्म�बनैली राजपरिवारमे 24-9-1898, मृत्यु:-श्रीनगर पूर्णिआ 17-1-1970। स्वतंत्र शिक्षामंत्री, बिहार एवं कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय।रचना�अगिलही (अपूर्ण उपन्यास) तथा अनेक कथा एवं एकांकी। युगक अनुरूप सामाजिक कुरीति आदिकेँ आधार बनाए सुधारवादी दृष्टिएँ कथा सबहिक रचना।



ब्रजमोहन ठाकुर 1899-1977



भुवनेश्वर प्रसाद 1902-

दरभंगा जिलाक बनैली गाम, निवास रायसाहेब पोखरि लहेरियासराय। सरस्वती स्कूल लहेरियासरायमे १९३०-१९६४ धरि अध्यापन। मैथिलीमे "बाल रामायण� प्रकाशित।



जयनारायण झा 'विनीत' 1902-1991



नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकार १९०४-१९९३



सुधाकर झा "शास्त्री" 1904-1974



दामोदर लाल दास विशारद 1904-1981



बबुआजी झा 'अज्ञात' 1904-1996



श्रीवल्लभ झा हाटी 1905-1940

२००१- बबूआजी मा �अस्रात� (प्रगितृा याध्रुत, महाकाव्य)लल साहित्य अकादमी युनस्रान।



नमानाथ मा 1906-1971

जन्म दनरंगा जिलाक उजान (धर्मपुन) ग्रामम 1906 ई. म अवं हिनक निधन दनरंगाम १९७१ ई. म रलहि । 1930 ई. म अठ्नजीम अम. अ. कअलाक बाद ई काक वर्ष धनि मधेपुन उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक छलाह, पकना बाद दनरंभा-नाज-लाइब्रेनीक युस्तकालयाध्यक्ष नूयम 1936 सँ अन्तिम समय धनि नहलाह । 1952 सँ 62 बखधनी मिथिला कॉलेजम प्रा. मा अठ्नजीक प्राध्यापक नूयँ काजka यश्चात् उही कॉलेजम मैथिली विभागाध्यक्ष बनाउल गेलाह । 1965 म नमानाथ बाबू साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित रलाह जाहि यद यन उ जीवनक अन्त समय पक नहलाह ।

हिनक नचनाक उप्र बहुत व्यायक छल । हिनक अनुसंधानात्मक निबंक दु गोट संग्रह �निबन्धमाला� पथा �प्रबंध संग्रह� प्रकाशित अछि । संकलित सम्पादित युस्तक सभम �मैथिली यद्य-संग्रह�, �मैथिली गद्य-संग्रह�, �प्राचीन गीत�, �कथा काव्य�, �नवीन गीत�, �कविता कुसुम�, �कथा संग्रह� आदि अछि । �कथासनित्सागन�क आधान यन प्राञ्जल गद्य शैलीम हिनक �उदयन-कथा� पथा �बननुचि-कथा� बश



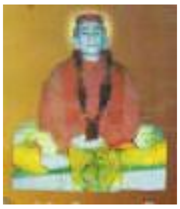
नाम इकबाल सिंह नाकेश (१९१२-१९९४)

जन्म १४ जुलाई १९१२, मृत्यु २१ नवम्बन १९९४,हिनकन मैथिली लोकगीत (संग्रह आ सम्पादन) अकटा लजअनी याथी बनि गेल अछि।



काशीकान्त मिश्र "मधुप" 1906-1987

१९७०- काशीकान्त मिश्र �मधुप� (नाधा विनह, महाकाव्य) यन साहित्य अकादमी युनस्रान प्राप्त मैथिलीक प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचान-प्रसानक समर्पित कार्यकर्ता �झंकान� कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कअलनि । प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि । �घसल अठन्नी कविताक लल कथ्य आ शिल्प-संवेदना�दुहू क्षेत्र यन बनम लोकप्रियता रलनि।

ख्यानि पाओलक। व्याकनणक �मिथिला राषा प्रकाश�, �अलङ्कानप्रनश� आदि अनक ग्रन्थ प्रकाशित अछि। �मैथिली साहित्य पत्र� त्रैमासिक पत्रिकाक संपादक।		
 लक्ष्मीनाथ गोसाईं 1793-1872	 मही दास धनहना काठी_वनमनखी_असली नाम_नामानुग्रहलाल दास_आश्रम_मायामाहल्ला, कृष्णाघाट, राग्लपुन	 वूवन राग, सं 1928-1991
 अहिनाम दास मिथिलाक प्रसिद्ध रागका वाचक।	 स्नहलना 1909-1993 गाम- तनाठी, समस्तीपुन। पूर्ण नाम- कपिलदन ठाकुन "स्नहलना"। नामाश्रयी नसिक सम्प्रदायक संत। हिनकन नचिन वैदही निवाह संकीर्तन, निनय पदानली, शिननाथी, चानननी, मूला-संकीर्तन, सीनानामनध प्रबन्धकाव्य आ स्नहशनक- दाहानली-कनित्त आदि मिथिलाक महिला नर्ग आ संकीर्तनकान लाकनिक कंठम पनिव्याप्त अछि आ लाकमंगलक अनुष्ठानम व्यापक नूपँ व्यनहन अछि। हिनक "वैदही निवाह" मिथिलाक कीर्तनिया नाट्य पनम्पनाकँ लाकनुचिक अनुकूल वनौन अछि।	 स्नांत्रा सनानी स्न. नामरुल मण्डल



सुन्दन झा "शास्त्री"

1930-1998

जनकपुर, नेपाल, पुर्वानस्थाक जलक दुर्लत रहल। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक मानद सदस्यता- स्व. सुन्दन झा शास्त्री।



काशीनाथ झा "किरण"

1906-1988

जन्म स्थान-धर्मपुर,लाहना गाउँ, दरभंगा बिहार। मैथिली भाषा आंदोलनमे महत्वपूर्ण भूमिका। �पराशर� महाकाव्य लेल साहित्य अकादमी आ �कथा किरण� लेल वैदेही पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: चंद्रग्रहण (उपन्यास), वीन-प्रसून (बालकथा), जय जन्मभूमि (एकांकी), विजेता विद्यापति (नाटक), कथा-किरण (कथा-संग्रह), किरण-कवितावली, काशक दिनक बाद (कविता-संग्रह), पराशर (महाकाव्य) आ किरण-निबंधावली (निबंध-संग्रह) आदि। १९८९- काशीनाथ झा �किरण� (पराशर, महाकाव्य)पर मैथिली मे साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



श्यामानन्द झा 1906-1949



रमाकांत झा, नेपाल 1907-1971



ब्रजेशनाथ झा 1907-1965

बहुमुखी प्रतिभाक कवि। प्राचीन आ नवीन पद्धतिक काव्य-रचनाक विलक्षण संयोग हिनकर कवितामे देखैत अछि। दलित वर्ग, शोषक समस्या, स्वदेश प्रेमक यथार्थवादी रचनाक संग संग व्यक्तिनिष्ठ



भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'

1907-1944

अपन समयक बहुमुखी प्रतिभाक कवि। प्राचीन आ नवीन नैतिक कविताक रचना विपुल संख्यामे कएलनि। �भुवन रत्नावली� कविता संकलन प्रकाशनसँ मैथिली भाषा आ नव चेतनाक शंख फूकलनि।

कल्पनाक अनेक विशिष्ट कविता मैथिलीमे लिखलनि।



हरिमोहन झा 1908-1984

हिनकर मैथिली कृति १९३३ मे �कन्यादान� (उपन्यास), १९४३ मे "द्विरागमन�(उपन्यास), १९४७ मे �प्रणम्य देवता� (कथा-संग्रह), १९४९ मे �रंगशाला�(कथा-संग्रह), १९६० मे �चर्चरी�(कथा-संग्रह) आऽ १९४८ ई. मे �खट्टर ककाक तरंग� (व्यंग्य) अछि। मृत्योपरांत १९८७मे (जीवन यात्रा, आत्मकथा)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



कालीकान्त झा 1909-

मूल गाम ढंगा (हरिपुर), मधुबनी। हुनि मातृक बनदेवडा,पो. उजलाहा, थाना-मदनपुर, जिला-पूर्णियामे बसि गेलाह। साधना (मधुबनी), मदनपुर आ काशीमे पाणिनी व्याकरणक अध्ययन। "हनूमान चरित"क लेखक।



तंत्रनाथ झा 1909-1984

जन्म १९०९ ई मे दरभंगा जिलाक धर्मपुर ग्राममे भेलन्हि मृत्यु ४-७-�८४,चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे अर्थशास्त्रक प्राध्यापक छलाह। अवकाश ग्रहण क काव्य साधनामे लागल रहलाह। महाकाव्य, मुक्तक, एकांकी सभ विधामे ई सिद्ध हस्त छलाह। हिनक �कीचक वध� महाकाव्य अठारहीक �ब्लैंक वर्स� (अमित्राक्षर छन्द) मे लिखल अछि। मैथिलीमे �सौनेट� एवं ब्लैंक वर्स�क ई प्रथम प्रयोक्ता थिकाह। संस्कृत पदावलीमे काव्य रचना करितहुँ पाश्चात्य शैलीक नवीनता हिनका रचनामे भेल। हिनक �कीचक वध� आ �कृष्ण चरित� महाकाव्य��मङ्गल-पत्राशिका� एवं �नमस्या� मैथिली साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान रखैछ। एकर अतिरिक्त मुक्तक काव्यमे विषय वस्तुक व्यापकता एवं शिल्प शैलिक प्रचुरता अपनो अछि। एक दिश यदि प्राचीन ढंगक ईश्वर वन्दनाक रचना कएलन्हि तँ दोसर दिस �सौनेट� (चतुर्दशपदी) �बैलेड� आदि लिखबामे पूर्ण सफलता प्राप्त कएलन्हि।�कृष्ण चरित� महाकाव्य पर हिनका 1979 ई क साहित्यिक अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि। 1980 ई. मे हिनका अभिनन्दन ग्रन्थसमर्पित कएल गेलन्हि।



जीवनाथ झा 1910-1977



सुरेन्द्र झा 'सुमन' 1910-2002

जन्म: ग्राम : बल्लीपुर, जिला-समस्तीपुर। प्रकाशित कृति: प्रतिपदा, अर्चना,साओन-भादव,अंकावली, अन्तर्नाद, पयस्विनी, उत्तरा आदि तीससँ अधिक मौलिक कविता-पुस्तक;पुरुष-परीक्षा, अनुगीतांजलि, मृगु शृंगार तथा वर्णरत्नाकर, पारिजात-हरण, कृष्णजन्म, आनन्द-विजय आदि कतिपय ग्रन्थक अनुवाद-संपादन; �मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव� नामक समीक्षा-ग्रंथ। �पयस्विनी� लेल १९७१ म साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा �उत्तरा� पर १९७८ म मैथिली अकादमीक विद्यापति पुरस्कार प्राप्त। मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र �स्वदेश�क लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक। १९९७- सुरेन्द्र झा �सुमन� (रवीन्द्र नाटकावली- रवीन्द्रनाथ टैगोर, बांग्ला)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। २००० ई.- पं.सुरेन्द्र झा �सुमन�, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार।



पं. रामचन्द्र झा 1910-

गाम तरौनी। काशी मिथिला ग्रन्थमालाक सम्पादक।



'नागार्जुन' वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' 1911-1998

जन्म अपन मामागाम सतलखाम भेलन्हि, ओ हुनकर गाम तरौनीक समीपहिमे अछि, जिला-दरभंगा। मूल नाम: वैद्यनाथ मिश्र। हिन्दीमे नागार्जुन नाम प्रख्यात। प्रकाशित कृति: चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविता-संग्रह); पारो, बलचनमा, नवतुरिया



आरसीप्रसाद सिंह 1911-1996

जन्म: ग्राम-एरौत, जिला-समस्तीपुर। प्रकाशित कृति: माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी (कविता-संग्रह), मेघदूत (अनुवाद), आरसी, नन्ददास, संजीवनी (हिन्दी काव्य संग्रह)। �सूर्यमुखी� लेल १९८४ म साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त।



गुरु जयदत्त मिश्र 1911-1991 शिष्य गंगानाथ झा

(मैथिली उपन्यास); युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, हजार हजार बाहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, तालाब की मछलियाँ, इस गुब्बारे की छाया में, ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या ! (हिन्दी कविता-संग्रह); रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नयी पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुम्भीपाक, अभिनन्दन, उग्रतारा, इमरतिया (हिन्दी उपन्यास); आसमान में चन्दा तैरे (कहानी संग्रह); भस्मांकुर (हिन्दी खण्ड काव्य); अन्नहीनम् क्रियाहीनम् (निबन्ध-संग्रह); गीत गोविन्द; मेघदूत; विद्यापति के गीत, विद्यापति की कहानियाँ (अनुवाद) । �पत्रहीन नग्न गाछ� लेल १९६८ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त । यात्रानी जीवन । मैथिली प्रतिनिधिक पुरुष भूल प्रमाद । नागार्जुन (स्व. श्री **वैद्यनाथ मिश्र �यात्री�**), हिन्दी आ मैथिली कवि, १९९४ ई.मे **साहित्य अकादमीक फेलो** (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार)।



यशोधर झा

मिथिला वैभव, दर्शन मैथिली पाठीयन 1966 मे पहिल साहित्य अकादमी पुरस्कार मैथिली लेल प्राप्त।



वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'

1912-1987

१९७६- वैद्यनाथ मल्लिक �विधु� (सीतायन, महाकाव्य) लेल मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कार।



हीम झा 1912-

पूर्णिया जिलाक मदनपुर गामक। जन्म ७ नवम्बर १९१२ ई.। बनैलीक श्री श्यामानन्द सिंहक आश्रयगाम �नारायण संकीर्तन महामण्डली�क स्थापना।







राधानाथ दास १९१२-

उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' 1913-1980

जन्म १९१३ ई. मे दरभंगा जिलाक वानिया ग्राममे भेलन्हि। मृत्यु २४-७-१९८०। संस्कृत शिक्षामे साहित्याचार्य आ बड़ौदा राजक विद्वत्-परीक्षासँ �साहित्य-रत्न�क उपाधिसँ विभूषित भेलाह। दैनिक आर्यावर्त्तमे आदिअहिसँ, पश्चात् १९६० सँ मिथिला मिहिरक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपेँ कार्य करैत १९७७ मे सेवा निवृत्त भेलाह। मोहनजी करीब पचास वर्ष साहित्य साधनामे लागल रहलाह। विजयानन्द, कुंजरंजन, सुदर्शन, पुण्डरीक, शास्त्री, वामन आदि छद्म नामसँ पत्र-पत्रिकामे विविध विषयपर हिनक लेख सभ प्रकाशित भेल अछि। मोहनजीक �बाजि उठल मुरली�मे १०१ गोट कविताक संकलन अछि जाहिमे हिनक सुदीर्घ काव्य-आराधनाक विभिन्न विचारधाराक आ विभिन्न अनुभूतिक सामग्री उपलब्ध अछि। एहि पुस्तकपर मोहन�जीकेँ १९७८ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि। एहिसँ बहुत पूर्व हिनक �फूलडाली� नामक कविता संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छल।

जयनाथ मिश्र 1913-1985



श्रीकांत ठाकुर "विद्यालंकार"



पञ्जीकार मोदानन्द झा 1914-1998

लब्ध प्रतिष्ठ पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया। पिता-स्व. श्री भिखिया झा। गुरु- पञ्जीकार भिखिया झा। पूर्णिया जिलाक बनैली लगक शिवनगर गामक। जन्म २२ सितम्बर १९१४ ई.। सौराठमे अपन मौसा स्व. लूटन झा सँ पंजीशास्त्रक अध्ययन। १९४८-१९७१ ई. धरि दरभंगामे रहि आचार्य रमानाथ झाकेँ पाँजि पढ़ौलनि। शास्त्रार्थ परीक्षा- दरभंगा महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक यज्ञोपवीत संस्कारक अवसर पर महाराजाधिराज(दरभंगा) कामेश्वर सिंह द्वारा आयोजित परीक्षा-1937 ई. जाहिमे मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक म.म. डॉ. सर गंगानाथ झा छलाह।



आनन्द झा 1914-1988



टोक्यो हासेगावा, निदेशक मिथिला म्यूजियम, निगाटा



माँगनि खवास 1908-1943 संगीतज्ञ

पचगछियामे जन्म आ अल्प वयसमे मृत्यु। पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक शिष्य।



रामाश्रय झा 'रामरंग' अभिनव भातखण्डे 1928-2009

जन्म ११ अगस्त १९२८ ई. तदनुसार भाद्र कृष्णपक्ष एकादशी तिथिकेँ मधुबनी जिलान्तर्गत खजुरा नामक गाममे भेलन्हि। अभिनव गीतांजलि, हिनकर उत्कृष्ट शास्त्र रचना अछि। मिथिलावासी श्री रामरंग राग तीरभुक्ति, राग वैदेही भैरव, आऽ राग विद्यापति कल्याण केर रचना सेहो कएने छथि आऽ मैथिली भाषामे हिनकर खयाल �तरंगिणि ईति राग॥� केर अनुरूप अछि।



रामचतुर मल्लिक ध्रुपद संगीत 1905-1990



अभयनारायण मल्लिक



कुमार श्यामानन्द सिंह, संगीतज्ञ



संगीताचार्य रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंह



पंडित परमानन्द चौधरी, संगीतज्ञ

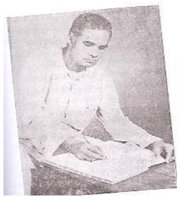


हृदयनारायण झा







संगीत रत्नाकर राजकुमार श्यामानन्द सिंह १९१६-१९९४	गुरुदत्त कामत शास्त्रीय संगीत	मिथिलेश कुमार झा, तबला वादक
		
नागेश्वर लाल कर्ण, तबला वादक	बाबू साहेब चौधरी 1916-1998 दरभंगा जिलाक दुलारपुर गामक। १९४३ ई. मे जीविकार्थ कलकत्ता अएलाह। नरम कडाम स्नाय आन्दोलनमे वामि कत शिआक ईशिश्री। कलकत्तामे स्थानीय मैथिल संघमे प्रवेश। कलककामे मैथिली आर्ट प्रेस. ९/१, खिलात घाष लेन, कलकत्ता-१००००६ सँ मैथिली-मिथिला आन्दोलनमे सक्रिय। �कुहेस� आ �वाधक्क� दुटा नाटक। १९७१-७९ धरि �मिथिला दर्शन� आ �मैथिली दर्शन� मैथिली मासिकक सम्पादन।	लक्ष्मण (लखन) झा 1916-2000 मिथिला नाद्य अरियानी।
		
शुभ्रदत्त झा 'उत्पल' 1916- गोड्डा जिलाक अलखदप-मडनपुरक निवासी। जन्म १६ अक्तूबर १९१६ ई.।	रामचरित्र पाण्डेय "अश्रु" १९१७-२०१०	लक्ष्मीनाथ झा मिथिला चित्रकला 1917-1990
		

उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' 1917-2002

जन्म स्थान-हरिपुर बक्सीटोल, मधुबनी, बिहार। १९६६- उपेन्द्रनाथ झा �व्यास� (दू पत्र, उपन्यास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। साहित्य अकादमीक अनुवाद पुरस्कार प्राप्त। प्रकाशित कृति: कुमार, दू पत्र (उपन्यास), विडंबना, रजना रजल (कथा-संग्रह), पतन संन्यासी, प्रतीक (काव्य), महाराणा (पहिल दू पर्व) आदि।

मनमोहन झा 1918-2009

जन्म सरिसवमे, अधुकधा, वीरराघा, मिथिलाक निशापुरमा। २००९- स्व.मनमोहन झा (गंगापुत्र, कथासंग्रह)पर मृत्योपरांत साहित्य अकादमी पुरस्कार।

ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' 1918-1986

जन्म स्थान-बेहटा, दरभंगा बिहार। १९७३- ब्रजकिशोर वर्मा �मणिपद्म� (नैका बनिजारा, उपन्यास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। उपन्यासकार, कथाकार आ कवि। प्रकाशित कृति: काव्रागर्ल, कनकी, अर्द्धनारीश्वर, लोरिक विजय, नैका-बनिजारा, लवहरि-कुशहरि, राय रणपाल, आदिम गुलाम आदि उपन्यास आ कंठहार (नाटक) आदि।







पं. सहदेव झा १९१९-

"मिथिला की धरोहर" पोथी प्रकाशित।

बुद्धिधारी सिंह रमाकर 1919-1991

जन्म मधुबनीमे 1919 ई. मे भेल। अपन पिता स्व. उमधारी सिंहसँ विधिवत विषयक शिक्षा ग्रहण कएलन्हि। ई रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीक मैथिली विभागाध्यक्ष छलाह। जतएसँ अवकाश प्राप्त कएलन्हि। बाल्यावस्थहिसँ ई कविकार्यमे लागल रहलाह अछि। संस्कृत तथा मैथिली दुनू भाषामे हिनक रचना प्रकाशित अछि। यथा�मैथिलीमे �प्रयास� (कथा-संग्रह), �मधुमती�, �अमरवाणी� (कविता-संग्रह), �शरशय्या� (खंड-काव्य) �स्मृति साहस्री� (महाकाव्य) आदि।

आद्याचरण झा 1920-







चन्द्र भानु सिंह 1922-

२००४- चन्द्रभानु सिंह (शकुन्तला, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।

सुधांशु शेखर चौधरी 1922-1990

जन्म दरभंगाक पिण्डारुछ गाममे 1922 ई. मे भेलन्हि तथा मृत्यु 1990 ई. मे भेलन्हि। किछु दिन विभिन्न जीविकामे रहि पश्चात् साहित्यकारक जीवन प्रारम्भ कएल। किछु दिन �वैदेही�क सम्पादन श्री सुमनजी एवं श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक संग कएल तत्पश्चात् 1960 ई. सँ 1982 ई. धरि पटनामे �मिथिला मिहिर��क सफल सम्पादन कएल। हिनक दू गोट नाट्यकृति-�भफाइत चाहक जिनगी�, लेटाइत आँचर�, तथा �पहिल साँझ� हिनक नाटकक नीक व्यावहारिक अनुभवक परिचायक अछि। छद्मनामसँ हिनक दू गोट उपन्यास मिहिर� मे प्रकाशित भेल अछि। हिनक उपन्यास ई बताह संसार� ज मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल आ जाहि पर 1980 क साहित्य अकादमीक पुरस्कार देल गेल।

जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९)

मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र सन् १९८२ मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पद सँ सेवानिवृत्त भेल छलाह। एकरा बाद ओ चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे भाषा आ समाज विज्ञानक डीन रूपमे कार्य कएलन्हि। स्व. मिश्र अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबादक अध्यक्ष, गंगानाथ रिसर्च इंस्टीच्यूट, इलाहाबादक अवैतनिक सचिव आ सम्पादक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागक प्रबन्ध विभागक संयोजक

आ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक मैथिली प्रतिनिधि आ रावा सम्पादक नहल छलाह। मैथिली साहित्यक इतिहास, हाक लिटरेचर □फ मिथिला, कीर्तनिया ड्रामा सरक क्रिटिकल एडीशन,लक्चर्स □न थॉमस हार्डी, लक्चर्स □न हान याश्न आ द कॉम्प्लेक्स स्टाइल इन इंगलिश यादी हिनक लिखित किछु ग्रंथ अछि। हिनकर वृहत मैथिली शब्द काष मात्र दु खण्ड प्रकाशित भए सकल, जाहिम देवनागरीक संग मिथिलाक्षर आ रोमनटिक अंग्रेजीम सहा मैथिली शब्दक नाम नहुआ। ३ फरवरी २००९ कँ सात वजे साँझम हिनकर निधन भऽ गेलहि।



उपेन्द्र ठाकुर १९२९-१९९१

History of Mithila, Madhubani Painting, Studies in Jainism and Buddhism in Mithila आदि पोथी प्रकाशित।



गोविन्द झा 1923-

जन्मस्थान- इसहपुर, सरिसब पाही, मधुबनी, बिहार। सिद्ध कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, भाषा वैज्ञानिक ओ अनुवादक। साहित्य अकादमी पुरस्कार, साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित। बिहार सरकारसँ कामिल बुल्के पुरस्कार, ग्रियर्सन पुरस्कार आदिसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: उपन्यास, नाटक, कथा, कविता, भाषा विज्ञान आदि विभिन्न विधाम अठतीस टा पोथी प्रकाशित। प्रकाशन: सामाक पौती, नेपाली साहित्यक इतिहास (अनु) आदि। १९९३- गोविन्द झा (सामाक पौती, कथा)पुस्तक लेल सहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।१९९३- गोविन्द झा (नेपाली साहित्यक इतिहास- कुमार प्रधान, अंग्रेजी) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2006 सँ सम्मानित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी फेलो पुरस्कार २०१० (समग्र योगदान लेल)



योगानन्द झा 1923-1986

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक कोइलख ग्राममे 1923 ई. मे भेलन्हि। मृत्यु 1986 मे भेलनि। अंग्रेजीमे एम. ए. कएलाक पश्चात् ई किछु दिन चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे प्राध्यापक रहलाह। बिहार प्रशासनिक सेवामे 1981 धरि विभिन्न पदपर कार्य कएल। तत्पश्चात् मैथिली अकादमीक निदेशक �84 धरि। योगानन्द झाजी मैथिली साहित्यमे अपन उपन्यास �भलमानुस� एवं �पतिव्रता�क हेतु ख्यात छथि। हिनक नाटक �मुनिक मतिभ्रम� एवं कथा संग्रह �उठैत वंशी� पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त कएने अछि। एकर अतिरिक्त ई महात्मा गान्धीक आत्मकथाक अनुवाद एवं �आमक जलखरी� नामक एक कथा संग्रहक सम्पादन सेहो कएने छथि।



रामकृष्ण झा 'किसुन' 1923-1970

आधुनिक धाराक विशिष्ट कवि, कथाकार, चिन्तक। प्रकाशित कृति: आत्मनेपद (कविता संग्रह), मैथिली नवकविता (सम्पादन)।

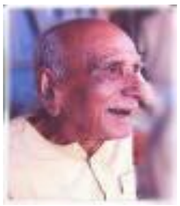


उमानाथ झा 1923-2009

जन्म:-01-01-1923, मृत्यु 07-12-2009 महरैल, मधुबनी। भूतपूर्व अंग्रेजी विभागाध्यक्ष एवं प्रति-कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा। रचना:-रेखाचित्र, अतीत (कथा संग्रह); मैथिली नवीन साहित्य, इन्द्र धनुष, विद्यापति गीतशती



जटाशंकर दास 1923-2006

	(सम्पादन)। १९८१- उमानाथ झा (अतीत, कथा) पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।	
 **प्रबोध नारायण सिंह 1924-2005** हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, पाली एवं दर्शनशास्त्रक विद्वान्। मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक ओ अनन्य सेवक छथि। कलकत्ता सँ मिथिला दर्शन�, मैथिली कविता�, मैथिली रंगमंच� आदि पत्रिकाक प्रकाशनक माध्यमसँ श्री प्रबोधजी मैथिलीक जे सेवा कएल अछि तकर वर्णन शब्दमे सम्भव नहि। अनेक बङला कृतिक ओ अनुवाद सेहो कएल अछि। हिन्दीमे सेहो हिनक �कविता संग्रह� प्रकाशित अछि। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे हिन्दीक पूर्व अध्यक्ष। २००२- डॉ. प्रबोध नारायण सिंह (पतझड़क स्वर- कुर्तुल ऐन हैदर, उर्दू) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।	 **मदनमोहन मिश्र 1924-2004** "एक छलीह महारानी" प्रकाशित।	 **अमोघ नारायण झा "अमोघ" 1924-**
 **मुरलीधर सिंह, ब्रजमोहन ठाकुर, शुभंकर झा, मदनमोहन मिश्र 1924-2004, ललित नारायण मिश्र, रत्ननाथ राय**	 **मणिनाथ मिश्र मणि 1924-**	 **आनन्द मिश्र 1924-2007**



डॉ. जयमन्त मिश्र १९२७-२०१०

जन्म १७-१०-१९२७ मृत्यु ०१-०९-२०१०, गाम-ढंगा-हरिपुर-मजरही।

१९९७- जयमन्त मिश्र (कविता कुसुमांजलि, पद्य) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार- मैथिली।



चन्द्रनाथ मिश्र अमर 1925-

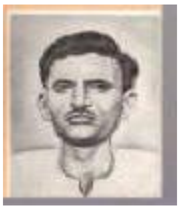
जन्म: खजौली, मधुबनी। वरिष्ठ कवि, कथाकार-उपन्यासकार। हास्य-व्यंग्यक कविताम बेजोड़। मैथिलीक लेल समर्पित व्यक्तित्व। पाँच दर्जनसँ बेसी कथा आ बिदागरी, बीनकन्या (उपन्यास) जल समाधि (कथा संग्रह) प्रकाशित।१९८३- चन्द्रनाथ मिश्र �अमर� (मैथिली पत्रकारिताक इतिहास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। एम. एल. एकेडमी, लहेरियासरायसँ शिक्षकक पदसँ अवकाश प्राप्त। आशा दिशा, गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल आदि कविता संग्रह प्रकाशित। १९९८- चन्द्रनाथ मिश्र �अमर� (परशुरामक बीछल बेरायल कथा- राजशेखर बसु, बांग्ला) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। चन्द्रनाथ मिश्र अमर २०१० मे मैथिली साहित्य लेल **साहित्य अकादमीक फेलो** (देशक सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार)।



मुक्तिनाथ झा (1926-2009)



शुभंकर झा 1926-



दीनानाथ पाठक 'बन्धु' 1928-1962



अनंत बिहारी लाल दास "इन्दु" 1928-2010

२००१- अनन्त बिहारी लाल दास �इन्दु� (युद्ध आ योद्धा-आगम सिंह गिरि, नेपाली)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



कृष्णकान्त मिश्र १९२८-२०००



जगदानन्द झा 1928-



दुर्गानाथ झा "श्रीश"

हिनकर जन्म मधुबनी जिलाक नेहरा ग्राममे १९२९ ई. मे भेलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीमे एम.ए. आ बी.एड. कलाक बाद किछु दिन स्कूलमे अध्यापन, फेर मिल्लत कॉलेज, लहेरियासरायमे मैथिली आ हिन्दी विभागक अध्यक्ष। मैथिली रामायण पर पी.एच.डी.। "श्रीश" जीक मैथिलीमे प्रकाशित रचना अछि- "मैथिली साहित्यक इतिहास", "गुनन रानी" (सम्पादन), "महामात्य ओ मनु" (कविता), "नाट्य कथा सार"(सम्पादन), "पुरुषार्थ"(पद्य नाटक) आ अनेक कविता, एकांकी आ आलोचनात्मक निबन्ध।



राजकमल चौधरी 1929 -1967

महिषी, सहरसा। रचना:- आदि कथा, आन्दोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)। हिन्दीमे अनेक उपन्यास, कविताक रचना, चौरंगी (बङला उपन्यासक हिन्दी रूपान्तर) अत्यन्त प्रसिद्ध।



विश्वनाथ झा "विषपायी" 1929-2005

"राम सुयश सागर" (मैथिली रामायण) १९८० ई. मे प्रकाशित। २१ जनवरी २००१ कँ मृत्यु।



जयधारी सिंह 1929-2007

समीक्षक, कवि। प्रकाशन: बौद्धगानमे तांत्रिक सिद्धांत, समीक्षा शास्त्र आदि। रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीमे मैथिली विभागक पूर्व अध्यक्ष।



शैलेन्द्र मोहन झा 1929-1994

१९९२- शैलेन्द्र मोहन झा (शरतचन्द्र व्यक्ति आ कलाकार-सुबोधचन्द्र सेन, अंग्रेजी)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



विजयनाथ ठाकुर 1929-2008



रमेशचन्द्र वर्मा 1930-



गोपालजी झा 'गोपेश' 1931-2008

जन्म मधुबनी जिलाक मेंहथ गाममे १९३१ ई.मे भेलन्हि। हिनकर कविता �सोन दासक चिठी�, �गुम भेल ठाढ़ छी�, �छलकल� �आब कहू मन केहन लगैछ�, "मखानक पात" प्रकाशित भेल अछि सोनदासक चिठी बेश लोकप्रिय भेल। २००६ ई.-श्री गोपालजी झा गोपेश, मेंहथ, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार।



विवेकानन्द ठाकुर 1931-

२००७- विवेकानन्द ठाकुर (चानन घन गछिया, पद्य)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



गंगाकांत मिश्र 1931-



ललित 1932-1983

जन्म स्थान बसैठ चानपुरा मधुबनी, बिहार। प्रसिद्ध कथाकार ओ उपन्यासकार।



सुनीति मधुसूदन ठाकुर 1932-

ताराशंकर बंद्योपाध्यायक बंगला उपन्यास "आरोग्य निकेतन"क मैथिली अनुवाद



विद्यानारायण ठाकुर 1933-

प्रकाशित कृति: प्रतिनिधि, (कथा संग्रह), पृथ्वी-पुत्र (उपन्यास) आदि।

लेल साहित्य अकादमीक अनुवाद पुरस्कार 1999 भेटल छन्हि।



धूमकेतु 1932-2000

जन्म स्थान कोइलख, मधुबनी, बिहार। प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार ओ कवि। प्रकाशित कृति : दू टा कथा संग्रह ओ एक टा उपन्यास।



राजमोहन झा 1934-

जन्म स्थान कुमरबाजितपुर, वैशाली, बिहार। प्रख्यात कथाकार ओ संपादक। आइ काल्हि परसू (कथा-संग्रह) लेल १९९६ मे साहित्य अकादमीसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति : एक आदि एकांत, झूठ साँच, एकटा गसन, अनुलग्नक, आइ काल्हि परसू (कथा संग्रह), गलतीनामा, भनहि विद्यापति, टीकाटीप्पणी आदि (आलोचना)। �आरम्भ� पत्रिकाक संपादन। प्रबोध सम्मान 2009 सँ सम्मानित।



डॉ. धीरेन्द्र 1934-2004

जन्म स्थान लहना, मधुबनी, बिहार। प्रसिद्ध कथाकार,उपन्यासकार ओ कवि। प्रकाशित कृति: कुहेस आ किरण, पसाहैत घूनक आगि, भगनुआ ओ मनु अपन मन्दिर (कथासंग्रह) ईंगनस टाँगल कार, काल्हि ओ आइ (कविता संग्रह) सहित कैक विधाम लिखने छथि।



रमेश नारायण १९३४-२०११

नाम- रमेश नारायण दास, जन्म ११ मार्च १९३४ केँ मधुबनीक बहेरा गाममे। पिता-श्री हरिवल्लभ लाल दास। शिक्षा मधेपुर, मधुबनी आ पटनामे। १९६१ ई.सँ १९९४ ई. धरि ए.एन. कॉलेज, पटनाम हिन्दी विभागमे अध्यापन। पाथरक नाव (मैथिली कथा संग्रह, १९७२) प्रकाशित। मृत्यु १२ जनवरी २०११ केँ पटनामे।



बाबू श्री सत्यनारायण सिंह आ राघवाचार्य



मायानन्द मिश्र 1934-

हिनक जन्म १७ अगस्त १९३४ ई. केँ सुपौल जिलाक बनैनियाँ गाममे भेलनि। हिनक लोटा, आगि माम आ� पाथर आओर चन्द्र-बिन्दु- हिनकर कथा संग्रह सभ छन्हि। बिहाड़ि पात पाथर, मंत्र-पुत्र, खोता आ� चिड़ै आ� सूर्यास्त हिनकर उपन्यास सभ अछि॥ दिशांतर हिनकर कविता संग्रह अछि। एकर अतिरिक्त स्वर की नैया माटी के लाग, प्रथमं शैल पुत्री च,मंत्रपुत्र, पुरोहित आ� स्त्री-धन हिनकर हिन्दीक कृति अछि। १९८८- मायानन्द मिश्र (मंत्रपुत्र, उपन्यास)पर

मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

प्रबोध सम्मान 2007सँ सम्मानित।



तारानन्द तरुण १९३७-२०११



सोमदेव 1934-

उपन्यासकार आ कवि। साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: चानोदाइ, होटल अनारकली (उपन्यास), काल ध्वनि (कविता संग्रह), चरैवेति (गीति नाट्य) सोम सतसइ (दोहा)। २००२- सोमदेव (सहस्रमुखी चौक पर, पद्य) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। २००१ ई. - श्री सोमदेव, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार, प्रबोध साहित्य सम्मान २०११।



राजनन्दन लाल दास 1934-

"कर्णामृत"क सम्पादन। "चित्रा-विचित्रा" प्रकाशित।



रमानन्द रेणु 1934-2011

जन्म स्थान उसमाम0, दरभंगा, बिहार। वरिष्ठ कवि, कथाकार आ उपन्यासकार। साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: कचोट, त्रिकोण, अंतहीन आकाश (कथा-संग्रह), दुधफूल (उपन्यास), अंततः, डाकर नाम (कविता-संग्रह)। २०००- रमानन्द रेणु (कतेक रास बात, पद्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य



कालीकांत झा "बुच" 1934-2009

हिनक जन्म, महान दार्शनिक उदयनाचार्यक कर्मभूमि समस्तीपुर जिलाक करियन ग्राममे 1934 ई. मे भेलनि। पिता स्व. पंडित राजकिशोर झा गामक मध्य विद्यालयक प्रथम प्रधानाध्यापक छलाह। माता स्व. कला देवी गृहिणी छलीह। अंतरस्नातक समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुरसँ कयलाक पश्चात् बिहार सरकारक प्रखंड कर्मचारीक रूपमे सेवा प्रारंभ कयलनि। बालहिं कालसँ



श्याम चन्द्र 1934-

उपन्यास "रुआ दीदी" प्रकाशित। गाम मलंगिया, जिला- मधुबनी।

अकादमी स्ला पूनस्कान २०११ (समग्र यागदान लल)

कनिना लखनम निषश नूचि छल । मैथिली यत्रिका - मिथिला मिह्निन, माटि - यानि, राखा नथा मैथिली अकादमी यरना द्वाना प्रकाशिन यत्रिकाम समय - समय यन हिनक नचना प्रकाशिन हाइन नहलनि । जीननक निनिध निधाकँ अयन कनिना एनं गीन प्रस्तुन कयलनि । साहित्य अकादमी दिल्ली द्वाना प्रकाशिन मैथिली कथाक निकास (संयादक ताॅ वासूकीनाथ मा) म हास्य कथा कानक सूची म ताॅ निद्यायनि मा हिनक नचना ��धर्म शास्त्राचार्यक उल्लख कयलनि । मैथिली अकादमी यरना एनं मिथिला मिह्निन द्वाना प्रशंसा यत्र रेजल जाइन छल । शृंगाननस एनं हास्य नसक संग-संग निचान मूलक कनिनाक नचना सहा कयलनि । ताॅ दूर्गानाथ मा श्रीश संकलिन मैथिली साहित्यक इनिहासम कनिक नूयम हिनक उल्लख कएल गेल अछि । **प्रकाशिन कृनि (मृत्यायनांन)** : कलानिधि- कनिना-संग्रह।



तनीलाल शर्मा "श्रोत्रिय " १९३७-

"मिथिला की साहित्य यनम्यना" याथी प्रकाशिन।



नामरेन्द्र, धनूषा, नयाल १९३७-२०२०

साहित्य नथा अन्यान्य उत्रक कनाक सरल व्यक्तिसर अयन प्रनघासान आ यथ-प्रदर्शक माननै छथि । मैथिली साहित्य-उत्रम हिनक यनिचयक माद एनाए कहन यर्याप्त हाएन ज मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकान ता. धीन्द्र हिनका मैथिली साहित्यक सर्नश्रेष्ठ कथाकान माननै छथि । हिनक कथाम प्रनीकात्मकनाक अद्भुन प्रयागहिटा नहि, अयिनु एकटा आदर्श कथाक समस्त नैशिष्ट्यसनिद्यमान नहैन अछि । कथाकानक अनिनिक इ उत्कृष्ट समालाचक, नाटककान आ कनि सहा छथि । नयालम मैथिलीक यहिल मानाङ्गामा लिखवाक श्रय सहा हिनका जाइन छनि । सामाजिक



कदाननाथ चौधनी (१९३६-)

मैथिलीक यहिल हिल्म 'ममना गावय गीन' कन निर्माना द्वयमसँ एकटा निर्माना छथि कदाननाथ चौधनी आ दासन मदनमाहन दास। वादम आर्थिक मजवूनीनश नसन सहनिर्माना रलखिन उदयरान् सिंह। माना-स्न. कूसूमयनी दनी, यिना- स्न. किशानी चौधनी, जन्म: ०३/०१/१९३६

ग्रा.+यत्रा. नहुना (दनरंगा), अन्य यानिनानिक सदस्य-यन्नी- श्रीमनी कूमूद चौधनी, संनान-

कुमारिसरकेँ कुशलतासँ निबाह करबाक, चिन्तनीय बनएबाक आ मन-मस्तिष्कपर अमिट छाप छोड़बाक नामरूप सिद्धहस्त छथि। धनुषा जिलाक कुर्था गाममे जनमल नामरूपक पूर्ण नाम नामरूप कर्ण छनि। अंग्रेजी विषयक अवकाशप्राप्त शिक्षक नामरूप व्याकरण, पाठ्यपुस्तक आ सहायक पुस्तकसभ लिखबाक काजमे निरन्तर सक्रिय छथि।

प्रथम पुत्री-श्रीमती किरण झा, द्वितीय पुत्री-श्रीमती अर्चना चौधरी, शिक्षा- १९७८ ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, १९७९ ई.मे लॉ। १९६९ ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, १९७७ ई.मे मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन विषयमे गोल्डन गेट यूनिवर्सिटी, सानफ्रांसिस्को, USAसँ एम.बी.ए., १९७८ मे देश आगमन। १९८१-८५ क बीच नेपाल आ थाइलैण्डमे। पुन बम्बई, पुणे होइत निरायनमेंटक बाद २००० सँ लहेरियासराय, दरभंगामे निवास। ६ टा उपन्यास- चमेलीरानी २००४, करार २००६, माहुर २००८, अबारा नहितन २०१२, हीना २०१३, अयना २०१८. सम्मान- १) विदेह साहित्य सम्मान, वर्ष-२०१३ (मानखंड मैथिली मंच, राँची द्वारा), २) प्रबोध साहित्य सम्मान, वर्ष-२०१६ आ ३) कदान सम्मान, वर्ष-२०१६,'अबारा नहितन' लेल।



जीवकांत 1936-

नाम- जीवकान्त झा,पिता-शुभानन्द झा, माता-महेश्वरी देवी, जन्म- २७.०७.१९३६ मधुआर, जिला- सुपौल। नौकरी-विज्ञान शिक्षक (उ.वि.खजौली १९७१-८१), हिन्दी शिक्षक (उ.वि.डेओढ एवं उ.वि.पाखनाम १९८१-९८)। पहिल रचना-खंजनिया आ टिटही (कविता, जनवरी १९६७ मिथिला मिहिर)। पहिल छपल पोथी- दू कुहेसक बाट (उपन्यास १९६८)। नूतन पोथी-खिखिरक बीअरि (२००१ बाल पद्य कथा), अठन्नी खसलैए बनमे (पद्य-कथा संग्रह) आ पंजरि प्रेम



हरिदास १९३६-२०१६

पत्नी महालक्ष्मी संग छायाचित्र। "जनम अआ मति हानह" प्रकाशित।



देवकांत झा 1936-

प्रकाशित (जीवन-वृत्तक अंश)। पुरस्कार-साहित्य अकादमी 1998 'तकैत अछि चिड़ै, पद्य', किरण सम्मान (१९९८), वैदेही सम्मान (१९८७)। प्रकाशित पोथी-

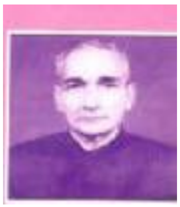
कविता संग्रह:नाचू हे पृथ्वी (७१), धार नहि होइछ मूक (९१), तकैत अछि चिड़ै (९७), खाँड़ो (१९९६), पानिमे जागल अछि चम्पी (९८), रूनगी नीलाकाशम (२०००), गाछ झूल-झूल (२००४), छाह सोहाओन (२००६), खिखिरिक बीअरि (२००७)

कथा-संग्रह: एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे (७२), सूर्य गलि रहल अछि (७७), वस्तु (८३), कनमी मील (९८)

उपन्यास: दू कुहेसक बाट(६८), पनिपत(७७), नहि, कतहु नहि (७६), पीयर गुलाब छल (७७), अगिनबान (८१)

हिन्दी अनुवाद- निशान्त की चिड़िया (तकैत अछि चिड़ै, साहित्य अकादमी, दिल्ली २००३)।

प्रबोध सम्मान 2010 सँ सम्मानित।



डॉ अमरेश पाठक 1936-

हिनक जन्म सीतामढ़ी जिलाक अन्तर्गत सामानि ग्राममे १९३६ मे हलन्हि। १९५७ मे पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीक एम. ए. परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथमस्थान पाओल। १९५७ सँ १९६० धरि रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीमे व्याख्याता रूपेँ रहला बाद पटना विश्वविद्यालयमे व्याख्याता रूपमे कार्य करए लगलाह। पटना



बलराम 1936-2008

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार। विशिष्ट कथाकार। प्रकाशित कृति : दकचल देवाल (कथा-संग्रह)।



मैथिलीपुत्र प्रदीप 1936-

ग्राम- कथवार, दरभंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य रत्न, नवीन शास्त्री, पंचाग्नि साधक। हिनकर रचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर" आ "सरल सुधि अहाँ लए छी हे अम्ब, हमरा किए बिसरै छी ये" मिथिलामे लोकप्रिय भए गेल अछि।

विश्वविद्यालयम मैथिली विभागाध्यक्ष नूयँ। मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन� शोध प्रबन्धपर हिनका बिहार विश्व-विद्यालय द्वारा पि. लिट्ठ उपाधि भेटलछि। ई शोध प्रबन्ध पुस्तकाकार नूयँ सेहो प्रकाशित भेल अछि बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक विद्यापति ग्रन्थावलीक सम्पादक मण्डलक सदस्य। हिनक अन्य प्रकाशित रचना अछि �निबन्ध संकलन�। एकर अति विभिन्न पत्र-पत्रिकाम हिनक कतेको निबन्ध प्रकाशित छहि। मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहक ईहो एक सम्पादक छथि। ई अधिकतर उच्च स्तरीय आलोचनात्मक निबन्ध लिखैत छथि।
२०००- डॉ. अमरेश पाठक, (तमस- भीष्म साहनी, हिन्दी)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



रामदेव झा 1936-

कथाकार, समीक्षक, अनुवादक, ग्रंथ सम्पादक। साहित्य अकादमीक मूल एवं अनुवाद पुरस्कार प्राप्त कर्ता ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगाक मैथिली विभागक पूर्व प्राचार्य।
प्रकाशन: पसिझैत पाथर, (अनु.) आदि।
१९९१- रामदेव झा (पसिझैत पाथर, एकांकी)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।१९९४- रामदेव झा (सगाई- राजिन्दर सिंह बेदी, उर्दू) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



रवीन्द्र नाथ ठाकुर 1936-

जन्म पूर्णिया जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई. मे भेलछि। नेन अवस्थासँ गीत गएबाम एवं कविता लिखबाम विशेष रुचि। कतेक मंच पर ठाढ़ भेला पर ई सहजहि श्रोताकेँ आह्लादित करैत छथि। हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मिनी महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी काव्य, एक उपन्यास, एक नाटक �एक नाटि� एवं एक हिन्दी नाटक, प्रकाशित भेल छहि।



विनोद बिहारी वर्मा 1937-2003

मैथिल कर्ण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण, बलानक बाणिहार डा पछबी तथा अन्य कथा (कथा संग्रह)



वीनन्द्र मल्लिक 1937-

जन्म-
3 जनवनी 1937 ई. यनसौनी, मधुवनी मा कवि, सम्यादक, समीक्षक ।
आखन, अगनियत्रक सम्यादन । अग्नि-शिखा (कविता संग्रह)।



कीर्तिनानायण मिश्र 1937-

जन्म ११ जुलाई १९३१ ई. कँ ग्राम शोकहाना (वनौनी), जिला वगुसनायम हलछि। हुनकन प्रकाशित कृति अछि सीमान्त,महानगन (दीर्घ कविता), हम स्वनन नहि लिखव, ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप (अहि यार्थीयन साहित्य अकादमी 1997 यूनस्कान), आदमीकँ जाहैत (कविता संग्रह)। संस्मनण-अयन अकांतम, स्मृति यात्रा, यत्रक दर्यणमा। सम्यादन- आखन मासिक यत्रिका, आधुनिक मैथिली साहित्य, '63, नाजकमल जीवन आ साहित्य, '68, कथा-संकलन- काल काOनी। आलावना- अर्थांतन-2004



गौनीकांत चौधनीकांत 1937-2001



यूगल किशोन मिश्र १९३८-२००१

मैथिली शब्दकाष।



प्रफुल्ल कुमान सिंह 'मौन' 1938-

ग्राम+यास्ट- हसनयून, जिला-समस्तीयून। मैथिलीम १.नयालक मैथिली साहित्यक इतिहास(विनाटनगन,१९१२ई.), २.ब्रह्मग्राम(नियार्तीज दनरंगा १९१२ ई.), ३.�मैथिली� त्रैमासिकक सम्यादन (विनाटनगन,नयाल १९१०-१३ई.), ४.मैथिलीक ननागीत (यटना, १९८८ ई.), ५.नयालक आधुनिक मैथिली साहित्य (यटना, १९९८ ई.), ६. प्रेमचन्द्र चयनित कथा, हाग- १ आऽ २ (अनुवाद), ७. वाल्मीकिक दशम (महनान, २००७ ई.)। २००४- डॉ. प्रफुल्ल कुमान सिंह �मौन� (प्रेमचन्द्र की कहानी-प्रेमचन्द्र, हिन्दी) लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद यूनस्कान।



महेश्वननाथ मल्लिक 1938-



यनशुनाम मा १९३८-

गाम- मंरुथ (मधुवनी), कृति- ताल्ल्मन्नस □रु यीस ल्ल्न ल्ल्न्नलिश त्रामा,क्रिश्चियन याञटिक त्रामा।



कुलानह्द मिश्र 1940-2000

जन्म यकाठी
काठी, सीतामढी, विहान।
सुविख्यात
कवि,, संयादक, समालाचक।
प्रकाशित कृति- गाछ
ञगव, रातक प्रतीक्षाम (कविता संग्रह), रातुक राखा
सर्वश्रेष्ठ, यात्रा, राजकमल चौधनी
की श्रानह
कहानियाँ (अनुवाद)।



विलट यासवान 'विरंगम' 1940-

जन्म मधुवनी जिलाक ञकरुठा ग्राममे १९४० ल्ल्ी. म रुलह्नि।



रुजलुन नरुमान हासमी 1940-2011

जन्म-यटना जिलाक वनाह गाममे। वृत्ति अध्यापक। हिन्दी कविता संग्रह "नश्मि नाशि" आ मैथिली कविता संग्रह "निर्मोही" प्रकाशित। १९९६म अबुलकलाम आजाद- अबुलकवी दसनवी, उर्दूसँ मैथिली अनुवादयन साहित्य अकादमीक मैथिली अनुवाद युनस्कान।



गुणनाथ मा

गुणनाथ मा "लाक मञ्च" मैथिली नाट्य यत्रिकाक संचालन- सम्यादन कन छथि। मैथिलीम आधुनिक नाटकक प्रणयन। हुनकन नाटक सब अछि:

मधुयामिनी: ञकाङ्क नाट्य शैलीम दुटा यात्र, यूनुष संयुक्त यनिवानक यत्र लनिहान आ स्त्री गकन विनाधी।

याथेय: ञकाङ्क नाट्य शैलीम नचित, मुदा यूर्णाङ्कक सब विशेषता ञम रुटत। मुख्य अरिनता मिथिलाक अधोगतिसँ दुखी रुs गामकँ कर्मस्थली वनवैत छथि, स्रजन विनाध कनै छथि।

लाल-वुमक्कान: ञकाङ्क नाट्य शैलीम नचित। दाही नौदीसँ ममानल निम्न आ मध्य-निम्न वर्ग स्नातंत्राक यहिनहिया आ वाद्य जीविकायार्जन लल प्रवास कनवा लल अरिशप्त छथि।

सागन चनित्र: ञकाङ्क नाट्य शैलीम नचित। मैथिली नंगमंचयन महिला अरिनत्रीक अराव, सागन चनित्रक प्रतीक्षाम यूर्णायास खाम रुs जाल्ल्त अछि।

शेष नञि: आधुनिक सामाजिक यूर्णाङ्क नाटक। यिता-माताक मृत्युक वाद अग्रजक अनुजक प्रति यितृवत व्यवहान।



प्ररास कुमान चौधनी 1941-1998

गाम- यिंतानूछ, जिला- दनरंगा । प्रख्यात कथाकान आ उयन्यासकान । प्ररासक प्रकाशित कृति : कथा-प्ररास, प्ररासक कथा, नव घन उठय यूनान घन खसय, दिदवल (कथासंग्रह), अरिशप्त, युगयुनुष, हमना लग नहव, नवानह्न, नाजा याखनिम कागक मछनी (उयन्यास) । विरिन्न महत्वयूर्ण यत्रिकाक सम्यादन । त्रैमासिक कथा गोष्ठी 'सगन नाति दीय जनय' कन प्रानह्न। १९९०- प्ररास कुमान चौधनी (प्ररासक कथा, कथा) लल साहित्य अकादमी युनस्कानसँ सम्मानित ।

आज़क लाक: यूर्णाङ्क नाटक। निषय निम्नमध्यनर्गीय वनाजगानी आ वियाल्क दायिन्नक वाम।

जय मैथिली: यूर्णाङ्क नाटक। मिथिलाक नाषिक-सांस्कृगिक समस्या ओकन कथानस्तु अछि।

मल्लाकनि निद्यायगि: निद्यायगिक नन निश्लेषध।



साकगानन्द 1940-

वनिष्ठ कथाकान, गधनायक (कथा-संग्रह) लल साहित्य अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानिग। प्रकाशिग कृगि: मैथिली कथा।
साहित्यम 1962 स� सक्रिय । गोटक चालिस_यचास टा कथा, नियार्गाज. संस्मनध, याग्रा_निननध मैथिलीम प्रकाशिग अधिकांश यत्र_यत्रिकाम छयल । यहिल मैथिली कथा �(श्लेसियन� 1962म �मिथिलामिहिन�म प्रकाशिग । हिहियाम दु दर्जन कथा आदि प्रकाशिग । सन 99म छयल यहिल कथा_संग्रह �गधनायक� क उाही नर्ष �साहित्य अकादमी यूनस्कान। येघ वाग्न� स� अवैवला नियफिक नखांकिग कनैग, यर्यानिनध क कथा नस्तु वना क� नाजकमल प्रकाशन स� प्रकाशिग ओनं अप्रांग चर्चिग उयन्यास (�ठौकुमंद्री हिल्लन�)
�सर्वस्नांग� । आकाशनाधीक नाष्ट्रीय कार्यक्रमम प्रसानिग दु टा उल्लखनीय नृफ नूयक_ �मल्लानद्या अल्यानध� यन आधानिग �ञंगल वालगा है� ओनं मानखंउ क ग्रामीध उाग्रक ज्वलंग उाङ्कनक समस्या यन आधानिग नृफनूयक � नैना जागन � चर्चिग ओनं प्रसिद्ध ।



गंगेश गुंजन 1942-

जन्म
स्थान- यिलखवाउ, मधूवनी। श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौवटिया नाटक वूधिवधियाक लखक छथि आ हिनका उचिगनका (कथा संग्रह) क लल साहित्य अकादमी यूनस्कान स्टल छन्हि। ओकन अगिनिक्त मैथिलीम हम ओकटा मिथ्या यनिचय, लाक सनू (कनिगा संग्रह), अन्हान- ऊजाग (कथा संग्रह), यहिल लाक (उयन्यास), आ हान (नाटक)प्रकाशिग। हिन्दीम मिथिलांचल की लाक कथाउँ, मधियम्लक नैका- वनिजानाक मैथिलीसँ हिन्दी अनूनाद आ शन्द गैयान है (कनिगा संग्रह)। १९९४- गंगेश गुंजन (उचिगनका, कथा)यूस्तक लल सहित्य अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानिग ।



प्रमशंकन सिंह 1942-

ग्राम+यास्ट- जागियाना, थाना- जाल, जिला- दनरंगा। मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक उा नंगमंच,मैथिली अकादमी, यटना, १९७८ २.मैथिली नाटक यनिचय, मैथिली अकादमी, यटना, १९८१ ३.यूनूषार्थ उा निद्यायगि, मृचा प्रकाशन, रागलयून, १९८६ ४.मिथिलाक निरूगि जीनन मा, मैथिली अकादमी, यटना, १९८१७.नाट्यान्नाचय, शखन प्रकाशन, यटना २००२ ६.आधूनिक मैथिली साहित्यम हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, यटना, २००४ ७.प्रयाधिका, कर्णगोष्ठी, कालकागा २००७, ८.ञ्जीउाध, मृचा प्रकाशन रागलयून २००८ ९.यूगसंधिक प्रगिमान, मृचा प्रकाशन, रागलयून २००८ १०.चानना समिगि उा नाट्यमंच, चानना समिगि, यटना २००८। २००९ ञ्जी.-श्री प्रमशंकन सिंह, जागियाना, दनरंगा। यात्री-चानना यूनस्कान।



मार्कण्डेय प्रवासी 1942 -2010

जन्म ग्राम: गढ़आन, जिला: समस्तीपुर। प्रकाशित कृति: अगस्त्यायिनी (महाकाव्य); शान्दर्थ (कविता संग्रह), अजान बाना (काव्य संग्रह)। अरिप्यान, हम कालिदास (उपन्यास)। �अगस्त्यायिनी� लेल १९८१ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त।



देवेन्द्र झा १९४३-

गाम- बाढ़पुरा (मधुबनी), कृति- निद्यापतिक शृंगारिक पदक काव्यशास्त्रीय अध्ययन, लालदास, सुधाकर झा "शास्त्री", अनुरूप, बदलि जाइछ घर टा।



डॉ. भीमनाथ झा 1945-

जन्म:कोइलख, मधुबनी, बिहार। प्रखर कवि, समालोचक, प्राध्यापक। �विविधा�निबन्ध पुस्तक लेल सन् १९९२ मे साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: त्रिधारा, वीथी, की रहैत की नहि, नाम गाँ थिक डाहर (कविता संकलन), पतिव्रायिका, सीतानाम झा, कवि चूडामणिक काव्य साधना, विविधा (निबंध, आलोचना),टाटन चौकसँ आदि।



महेन्द्र मलंगिया 1946-

गाम- मलंगिया, जिला- मधुबनी। मैथिलीक सुपरिचित नाटककार, रंग निर्देशक एवं मैलारंगक संस्थापक अध्यक्ष। लोक साहित्य पर गंभीर शोध आलेख। मैथिलीमे 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा रेडियो नाटक प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ प्रसारित। सीनियर फेलोशिप (भारत सरकार), इंटरनेशनल थियेटर इंस्टिच्यूट (नेपाल), प्रबोध साहित्य सम्मान आदि सँ सम्मानित। संप्रति ज्योतिरीश्वर लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक वर्णरत्नाकर पर शोध कार्य। श्री महेन्द्र मलंगियाक जन्म २० जनवरी १९४६ मे मधुबनी जिलाक मलंगिया गाममे भेलन्हि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषाक जानकार आ थियेटर शिक्षा, पटकथा लेखन



डॉ राम दयाल राकेश, सर्लाही, नेपाल 1942-

मैथिली मातृभाषा, हिन्दीक प्राध्यापक आ नेपालीक लेखक श्री रीनू भाषा �राकेश�क व्यक्तित्व एना नै मिझराएल छैक जे कोनहुसँ हुनका भिन्न नहि कएल जा सकैत अछि। श्री विशेषत: नेपालीमे लिखैत छथि, मुदा लेखनक विषय मूलत: मैथिलीए संस्कृति रहैत छनि। ओना मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे सेहो श्री अनेक रचना कएने छथि।नेपालक राजकीय-प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक सदस्य �राकेश� दिल्ली विश्वविद्यालयसँ पीएचडी आ अमेरिकास्थित इण्डियाना युनिवर्सिटीसँ पोस्ट डाक्टरल रिसर्च कएने छथि। डा. �राकेश�क जन्म २७ जुलाइ १९४२ ई. कऽ सर्लाही जिलाक सिसौटियामे भेल छनि। नेपाली, मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे मौलिक, सम्पादित आ अनूदित कऽ करीब दु दर्जन पोथी प्रकाशित, दर्जनभरि देशक भ्रमण सेहो कएने छथि। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री राम दयाल राकेश (1999)।



उपेन्द्र दोषी 1943- 2001

जन्म स्थान रामपुर- कानिगामा, दरभंगा। कवि-कथाकार, गीत-गजलकार। प्रकाशित कृति: पंजाबाक उत्तम (कविता संग्रह)। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित। उड़ियासँ मैथिली अनुवाद हेतु मृत्युपरान्त साहित्य अकादमीसँ पुरस्कृत। २००३- उपेन्द्र दोषी (कथा कहिनी- मनोज दास, उड़िया) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

आ तत्सम्बन्धी शोधक क्रीलास शिक्षक छथि। २००२ ई.- श्री महेन्द्र मलंगिया, मलंगिया; यात्री-चेतना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2005 सँ सम्मानित।



उदयचन्द्र झा "विनोद" 1943-

जन्म 5 अप्रैल 1943 ई.। गाम- रहिका, मधुबनी । जन्म-ग्राम- दुलहा, मधुबनी । प्रकाशित कृति: संक्रान्ति, मौसम अयला पर, अरुणा शिखिर, रवि दह गोला, ओहि जनपदमे, दाहा गीत सपनहु, कहलनि पत्नी, सहरनजमीन, अपरूप, प्रश्नवाचक (कविता-संग्रह), धुनी (सहयोगी कविता संग्रह); जाँत (कथा संग्रह), उदास गामक वसंत (नाटक)। �मातृ पत्रि�क त्रैमासिक सम्पादक। २००१ ई.-श्री उदय चन्द्र झा �विनोद�, रहिका, मधुबनी; यात्री-चेतना पुरस्कार।



हरी नरायण लाल, जनकपुर 1943-



मंत्रेश्वर झा 1944-

जन्म ६ जनवरी १९४४ ई.ग्राम-लालगंज, जिला-मधुबनीमे। प्रकाशित कृति: खाधि, अभिनन्दन गाम, बहुरल नायिका इजोत (कविता संग्रह); एक बटा दु (कथा संग्रह), हमरा लग गाम बताह (ललित निबन्ध)। मैथिली कथा संग्रहक हिन्दी अनुवाद �कुंतली� नामसँ प्रकाशित। दि ड्रम बीट्स (अंग्रेजीमे ललित निबन्ध)। २००८ ई.-श्री मंत्रेश्वर झा, लालगंज,मधुबनी यात्री-चेतना पुरस्कार। २००८- मंत्रेश्वर झा (कतेक रास बात, आत्मकथा) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।



रत्नेश्वर मिश्र 1945-

अनुवादक, निबंधकार । प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास,स्वस्ति (दुनू अनुवाद)।

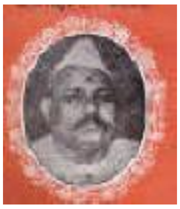


जगदीश प्रसाद मंडल

गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.। कथाकार (गामक जिनगी-कथा संग्रह आ तरेगन- बाल-प्रेरक लघुकथा संग्रह), नाटककार(मिथिलाक बेटी-नाटक), उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-पतन, जिनगीक जीत- उपन्यास)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ मूल पुरस्कार- श्री



राज

	जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)। मैथिली उपन्यास 'पंगु' लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार २०२१	
		
महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह 1858-1898	महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह 1860-1929	महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह 1907-1962
		
सर हरगोविन्द मिश्र, अलीगढ आ कामेश्वर सिंह	विनोदानन्द झा 1895-1971	ललित नारायण मिश्र 1922-1975
		
डॉ. रामवरन यादव, नेपाल राष्ट्रपति	स्वर्गीय बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल, राजनेता 1919-1982	सूर्य नारायण मण्डल
		
कर्पूरी ठाकुर 1921-1988	रामविलास पासवान १९४६- जन्म ५ जुलाई १९४६, गाम- शहरबन्नी, जिला खगड़िया। राजनीतिज्ञ।	राम लखन राम "रमण"



रागेन्द्र झा



वगुनानन मिश्र



नमाकांग मिश्र



नमानाथ मिश्र "मिहिन"

"मैथिली मूल्तावना ओनम् लाकाकि ग्रकाग" प्रकाशिग।

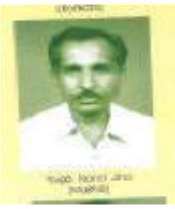


गजन्द्र नानायण चौधनी, यत्रकान 1929-2008



मारुन रानद्वाज 1943-

गाम- नवानी, जिला- मधुवनी । मैथिलीक प्रखन समालाचक। २००१ ई.-श्री आनन्द मारुन झा, रानद्वाज, नवानी, मधुवनी;यात्री-चाना युनस्काना प्रवाध सम्मान 2008 सँ सम्मानित।

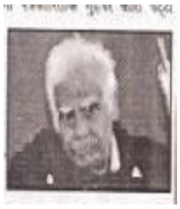


यागानन्द झा 1955-

२००१- डॉ. यागानन्द झा (विद्दानक लाककथा- यी.सी.नाय चौधनी, अंग्रेजी)लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद युनस्काना **प्रकाशित कृति:** लाकजीवन डा लाक साहित्य (निवन्ध) 1986, यनिधीना (कथाकव्यांश) 1987, हकीन मारुन सनायगि (अनुवाद) 2000, आलख सञ्चयन (निवन्ध) 2002, विद्दानक लाककथा (अनुवाद) 2003, सुनहुला (विनिवन्ध)



दीनानन्द झा "शास्त्री" ,यत्रकान



दीनानाथ झा, यत्रकान

2006, मैथिली यत्रकानिनाकँ सौ वर्ष (निवन्ध)
2006, गरुवनगीन (निवन्ध)
2007, लाक-साहित्य अ शव्द-सम्यदा (निवन्ध)
2007, मैथिलीक यान्मयनिक जानीय व्यवसायक शव्दावली (शाध-ग्रन्थ) 2009



नन्द्र झा, अर्थशास्त्र-यत्रकान

"विकास अ अर्थतंत्र" प्रकाशित।



प्रमशंकन झा, यत्रकान



शनदिन्दु चौधनी, यत्रकान



नाजश्वन झा (१९२३-१९११)

जन्म- सहनसा जिलाक नसूआन गाम (आव सुपौल जिला)।

कृति- मिथिलाअनक उद्भव अ विकास, अवहट्ट: उद्भव अ विकास, मैथिली साहित्यक आदिकाल, विद्यायनिक संगीतम वर्णित नायक-नायिका रुद एवं नाग-नागिनी वर्गीकरण।

महाकवि विद्यायनि नाटक, शास्त्रार्थ नाटक, कन्हैयीघाट नाटक, एकादशी, विद्याधन-कथा, उर्वशी, धर्मधाव- कथा, मनका।



एस. एन. सत्यार्थी

मिथिलाक कला आ शिल्पकलायन लखन।



नाधाकृष्ण चौधनी, इनिहासकान 1921-1985

मिथिलाक इनिहास, A Survey of Maithili Literature, THE POLITICAL AND CULTURALHERITAGE OF MITHILA प्रकाशित।



प्रा. नामशनण शर्मा १९२०-२०११



निजयकान्त मिश्र इतिहासकान 1927-1994

डॉ. निजयकांत मिश्रक जन्म १० अगस्त १९२१ मंगनौनी गाम - जे नव्य न्याय आ तांत्रिक साधनाक जन्म-स्थली अछि- (जिला मधूवनी) म स्लह्नि। ओ 1948 म प्राचीन सानतीय इतिहास आ संस्कृति निषयम इलाहावाद निश्वनिद्यालयसँ सनातकात्तन उपाधि कएलाक वाद काक वनख धनि विहान सनकान आ यटना निश्वद्यालयसँ सम्बद्ध नहलाह आ 1957 ई. सँ सानतीय यूनातत्त्व निसागम काज कएलन्हि आ ओकन शिशुयालगढ़, कौशाम्बी, नैशाली, हस्तिनायून, कूम्हनान, याटलियुत्र, कनियन, सानयून, विलानली, नालन्दा, नाजगीन, चम्पनल्ली, आ हम्पी खूदाइम निसिन्ना सूमिकाम साग ललन्हि। हिनकन लिखल-सम्यादित याथी सस्म अछि: 1.नैशाली,1950 2.कूम्हनान एक्कवलशंस: 1950-1957 3.यूनात्तत्न की दृष्टिम नैशाली 4.नागेश स्तूाज यानितोषव्य(शखन 5.मिथिला आर्ट एण्ड आर्किटेक्चन (सम्यादित) 6.कल्चनल हेनिटेज □ऑ मिथिला 7.शृंगान स्तजनानली- एक अध्ययन 8.ऊत्र यूनात्तत्त्वनिज्ञान- 9.यूनात्तत्न शब्दानली।



द्विजेन्द्र नानायण झा, इतिहासकान



सूनेश्वन झा, नाजनीति निज्ञान

२००१- सूनेश्वन झा (अन्तनिक्षम निस्फाट- जयन्त निष्णू नार्लीकन, मनाठी)लल साहित्य अकादमी मैथिली अनूवाद यूनस्कान।



सागीनथ लाल दास

सानतक कएक स्थम नाजदूत नहल छथि आ जी.ए.टी.टी. म सानतक प्रतिनिधि सेहो छलाह।



लक्ष्मीकान्त झा निजर्व वैंक गवर्नन 1913-1988







एन. एन. झा तिरहुतिया

कामेश्वरनाथ झा "अमल" 1938-

जन्म- 4 जनवरी 1938, गाम कोइलख (मधुबनी)। निशांस (कथासंग्रह) प्रकाशित।

रघुनाथप्रसाद झा 1941-



रमाकांत राय "रमा" 1947

जन्म- रास पूर्णिमा सम्वत् 2003, प्रथम रचना- बटुक, बाल मासिक प्रयाग, कथा विशेषांक द्वितीय भाग 1964ई., प्रकाशित कृति(क) गीतटा बाबाजी-(रूसीसँ मैथिलीमे मैथिलीमे टाल्सटायक कथाक अनुवाद-1967ई.म, (ख) फूलपात, कविता संग्रह 1978, (ग) रंगक खेला (2004 ई.म), (घ) कटैत पाँखि: हँसैत आँखि , कथा संग्रह- 2005, शीघ्र प्रकाश्य- कृष्णकान्त मिश्र (विनिबन्ध) साहित्य अकादमी नई दिल्ली। प्राय: ३५ सए रचना (कथा-निबन्ध कविता) मैथिली हिन्दीक पत्र-पत्रिका, आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ प्रकाशित/ प्रसारित। साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित कवि सम्मेलनक आयोजनक क्रमम रेलक चपेटम पड़िदहिना पएर छोड़ा धनिगमा विकलांग। सेवा निवृत्त अध्यापक (उच्च विद्यालय) सम्पर्क- श्री रमानिवास, मानाराय टोल पो. नरहन (समस्तीपुर)।



प्रभासन महेन्द्र 1947-

जन्म: हलाही, सुपौल, बिहार। प्रसिद्ध कवि, कथाकार, आलोचक। वृत्ति: ल.ना. विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर केन्द्र, सहरसामे मैथिली विभागाध्यक्ष। प्रकाशित कृति साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित मोनोग्राफ शैलेन्द्र मोहन झा। सहयोगी संकलन-संकल्प। �राजकमल जयन्ती प्रसंगक संपादन।



महेन्द्र 1944-2009

जन्म मधुबनी जिलाक जमसम गाममे। प्रसिद्ध मैथिली गीतकार आ गायक।



सुभाषचन्द्र यादव 1948 -

जन्म ०१ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलबा-मेनाही, सुपौल। घरदेखिया (मैथिली कथा-संग्रह), मैथिली अकादमी, पटना, १९८३, हाली (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९८८, बीछल कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९९९, बिहाड़ि आउ (बंगला सँ मैथिली अनुवाद), किसुन संकल्प लोक, सुपौल, १९९५, भारत-विभाजन और हिन्दी उपन्यास (हिन्दी आलोचना), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, २००१, राजकमल चौधरी का सफर (हिन्दी जीवनी) सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, २००१, बनैत-बिगड़ैत (कथा-संग्रह) २००८। मैथिलीमे करीब सत्तरि टा कथा, तीस टा समीक्षा आ हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजी मे अनेक अनुवाद प्रकाशित।



सुरेन्द्र झा 1909-2000

"ग्रामैटिकल फीचर्स ऑफ मैथिली लैंगुएज"क लेखक। १९८६- सुरेन्द्र झा (नाटिका पत्रक उत्पन्न, निबन्ध)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



रामावतार यादव, मैथिली भाषिकी, नेपाल 1942-

देश-विदेशक भाषाविज्ञान जर्नलमे प्रकाशित आलेखक द्वारा मैथिलीक विशिष्टताकेँ उजागर कएलन्हि। *मैथिली ध्वनिशास्त्र* 1984 ई. मे जर्मनीसँ आ *मैथिलीक सन्दर्भ व्याकरण* 1996 ई. मे बर्लिन आ न्यूयार्कसँ प्रकाशित। 2000 ई..मे लंदनसँ प्रकाशित *भारतीय आर्यभाषा* पुस्तक मे संकलित हिनकर मैथिली भाषा संबंधी आलेख विशेष उल्लेखनीय। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ पासाङ ल्हामु प्रज्ञा-पुरस्कारसँ सम्मानित।



योगेन्द्र प्रसाद यादव, भाषिकी, सिनहा, नेपाल 1946-

1998 ई. मे जर्मनीसँ प्रकाशित *स्टडीज इन मैथिली सिंटैक्स आ टॉपिक्स इन नेपालीज लिंग्विस्टिक्स, रीडिंग्स इन मैथिली लंगुएज- लिटरेचर एण्ड कल्चर*



रमानन्द झा 'रमण' 1949-

जन्म: 02 जनवरी 1949, शिक्षा- एम.ए., पीएच.डी., आजीविका- भारतीय रिजर्व बैंक, पटना (सेवा निवृत्त)। **प्रकाशन:** 1. नवीन मैथिली कविता,1982, 2. मैथिली नव कविता,1993, 3. मैथिली साहित्य उ



रामलोचन ठाकुर 1949-

श्री रामलोचन ठाकुर, जन्म १८ मार्च १९४९ ई.पलिमोहन, मधुबनीमे। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। भाषाई आन्दोलनमे सक्रिय भागीदारी। **प्रकाशित कृति**- इतिहासहन्ता, माटियानिक गीत, देशक नाम छल सोन चिड़ैया, अपूर्वा (कविता संग्रह), बेताल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनूदित कविता), *जा*

आ लक्ष्मीप्रसाद द्रून नेपाल (सम्पादित) प्रकाशित। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमे शाखा-निदेशक पदसँ रहि कतेक महत्वपूर्ण कार्यक सम्पादन। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्य श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव (1994)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आजीवन सदस्य श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव।

राजनीति, 1994, 4. अखियासल, 1995, 5. वसात्ल,2003, 6. रुजानल, 2005., 7. निर्यात कोस पुनु करै? हिन्दी- निर्जन वैंक, पटनाक प्रकाशन सम्पादित 8. मैथिलीक आनन्दिक कथा, 1978 समीक्षा, 9. श्यामानन्द रचनावली, 1981, 10. जनार्दन झा जनसीदन कृत निर्दयीसासु (1914) आ पुनर्विवाह (1926), 1984, 11. रघुनाथझाकृत श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा (1910), 1994, 12. गजनाथ झाकृत सुन्दराजविजय नाटक (1919), 1994, 13. रासविहारीलाल दासकृत सुमति (1918), 1996, 14. जीवछ मिश्रकृत रामेश्वर (1916), 1996, 15. रुदघाँट (रुदनार्ता), 1998, 16. नूतन गाँ सत्य न गाँ झूसि, 1998, 17. पुण्यानन्द झाकृत मिथिला दर्पण (1925), 2003, 18. यदुनन्दन रचनावली (1888-1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति विनन्ध, 2005, 20. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, 2003। अनुवाद लेल **साबा-रानी सम्मान** 2004-05 (सी.आई.आई.एल., मैसूर) छठा बिगहा आठ कट्ठा- फकीर मोहन सेनापतिक उड़िया उपन्यासक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त।

सर्के छौ, किन्नू किए आउ (अनूदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादुगर (अनुवाद), स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आँखि मूनने: आँखि खोलने (निबन्ध)। अनुवाद लेल **साबा-रानी सम्मान** 2003-04 (सी.आई.आई.एल., मैसूर) *आ सर्के छौ, किन्नू किए आउ*- शक्ति चट्टोपाध्यायक बांग्ला कविता-संग्रहक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्लासँ मैथिली अनुवाद, बांग्ला-उपन्यास - मानिक वंद्योपाध्याय)



गंगा प्रसाद मंडल "अकेला", नेपाल 1944-

पं. सूर्यन झा शास्त्री राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कारसँ सम्मानित। मिथिलांचलक किछु लोक कथा (संकलन आ सम्पादन) आ शिरीषक फूल (अनुवाद) प्रकाशित।



महेन्द्रनारायण निधि, धनुषा, नेपाल



रामभरोस कापडि, धनुषा, नेपाल



जयनारायण झा "जिज्ञासु", नेपाल



सुरेश झा, नेपाल 1920-1995



नाहिणी रमण झा 1950-



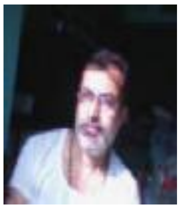
डॉ. कमलाकान्त भण्डारी 1952-

कबीर (मैथिली) पर शोध।



विनोद बिहारी लाल 1953-

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार। वरिष्ठ कथाकार। सयसँ ऊपर कथा प्रकाशित।



अनिरुद्ध ठाकुर 1954-

पानी टूटि रहल अछि (कविता संग्रह), अज्ञानक निनाधम (कथा संग्रह), बहुरुपिया प्रदेश मे (गजल संग्रह)।



श्याम दरिहरे 1954-

जन्म स्थान बरहा, बेनीपट्टी मधुबनी, बिहार। कवि, कथाकार। प्रकाशित कृति : सरिसोम फूल (कथा संग्रह) अनूदित कृति : कनुप्रिया (धर्मवीर भारती)



दिनेश कुमार झा

मैथिलीक इतिहासपर लेखन।



अशोक कुमार ठाकुर

जन्म 2 जनवरी 1944 ई.। ग्राम बड़गाँव (पंडौल)। नागमंडल (नाटक-अनुवाद), निशांत, वसुधाक संसार (उपन्यास)



प्रायनारायण झा, नेपाल



शीतल झा, नेपाल



उग्रनारायण मिश्र "कनक"



डॉ. शम्भुनाथ चौधरी 1920-2008



इन्द्रकांत झा



पंचानन मिश्र



प्रहसन गुनमौता

कामिनीभूषण लिखल।



महेन्द्र नारायण सिंह "मगन"



सूर्यकांत झा, जनकपुर



रमण झा (1957-)

रचना: पश्चात्ताप (कथा-संग्रह)- 1995, काव्य-वाटिका (कविता-संग्रह)- 1999, अलंकार-दर्पण (पूर्व-खण्ड) - 2002, अलंकार-दर्पण (अलंकार शास्त्र)- 2003, भिन्न-अभिन्न (समीक्षा)- 2008, संग
सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका) - 1996, सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका)- 2007,2008



विजयनाथ झा

"अहीँक लेल" (गीत-गजल संग्रह प्रकाशित)।



योगानन्द हीरा



बाबा वैद्यनाथ

पहुना इन्सानियत (गजल संग्रह)



जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" १९५०-

मूल नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950, मंगुआन, मधुबनी । सेवा निवृत्त बैंक अधिकारी। मैथिलीमे प्रकाशित पोथी-1. गाम अतनाम -गीत संग्रह-1978; 2. धारक ओहि पार-दीर्घ कविता-1999, गीत गंगा (गीत संग्रह), गजल गंगा (गजल संग्रह)।



विश्वानन्द झा 1965-

बुद्धपूर्णिमा, १९६५केँ कोठिया, संसारपुर मधुबनीमे जन्म। पहाड़ी जकाँ, विडम्बना बाला पिनीत जकाँ, दर्दक फूल जकाँ (कविता संग्रह) प्रकाशित । मूलतः कवि, थोड़ कथा लिखलनि, जे अपन मार्मिक अभिव्यक्तिक कारण बेस चर्चित रहल । विडम्बनापूर्ण परिस्थितिक पात्रक जिजीविषा समाजार्थिक कारणक खोज हिनकर मूल सृजन प्रेरणा थिक ।



हरेकृष्ण झा 1950-

जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- काकुलखमा। अर्थशास्त्रक अध्ययन छात्र मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिय। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक तादात्म्य बोधक अग्रणी कवि। "एना त� नहि जे" (कविता संग्रह)। २००८ ई. -श्री हरेकृष्ण झाकेँ कविता संग्रह �एना त नहि जे�लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



उदय नारायण सिंह नचिकेता 1951-

जन्म-१९५१ ई. कलकत्तामे। पहिल काव्य संग्रह �कवयो वदन्ति�। १९७१ �अमृतस्य पुत्राः� (कविता संकलन) आऽ �नायकक नाम जीवन� (नाटक)| १९७४ मे �एक छल राजा�/ �नाटकक लेल� (नाटक)। १९७६-७७ �प्रत्यावर्त्तन�/ �रामलीला�(नाटक)। १९७८मे जनक आऽ अन्य एकांकी। १९८१ �अनुत्तरण�(कविता-संकलन)। १९८८ �प्रियंवदा� (नाटिका)। १९९७-�रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य�(अनुवाद)। १९९८ �अनुकृति�- आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे अनुवाद, संगहि बंगलामे दूटा कविता संकलन। १९९९ �अश्रु ओ परिहास�। २००२ �खाम खयाली�। २००६मे �मध्यमपुरुष एकवचन�(कविता संग्रह। २००८ ई. मे नाटक "ना एखनो: ना प्रविश" सम्पूर्ण नूतन "विदेह" ई- पत्रिकामे धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भए एकटा कीर्तिमान बनलक। २००९ ई.-श्री उदय नारायण सिंह �नचिकेता�केँ नाटक ना एखनो: ना प्रविश लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



आशीष अनचिन्हार

मूल लेखन: कुमारि इच्छा (गजल संग्रह), जंघाजाठी (गजल संग्रह), अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह), मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास, मैथिली बाल पत्रकारिताक इतिहास, मैथिली गजलक सती सकानन, शब्द-अर्थ-शक्ति।

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन): मैथिलीक प्रतिनिधि गजल, मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)



कुमार पवन 1958

ग्राम मुरैठा। कथा संग्रह, कविता संग्रह आ ग्रंथ संग्रह शीघ्र प्रकाश्य। मैथिलीमे १९९० ई सँ नियमित लेखन। २००८ ई. सँ दस सालक मौन रंगक बाद पुनः लेखनक दोसर पालीक प्रारम्भ।



कीर्तिनाथ झा 1955-

कृति: मैथिली रावानुवाद



महेन्द्र हजारी



स्व. चन्द्रकान्त मिश्र, आसी, दरभंगा।



स्व. महेन्द्र नारायण झा, बलौंजा, मधुबनी



स्व. राजकुमार मल्लिक, साहराय (पाख निरोअ), मधुबनी



लक्ष्मीपति सिंह



फूलचन्द्र मिश्र रमण



किशोरनाथ झा

ग्राम- बिहट, पो. सरिसवपाही, मधुबनी। "लाकवद" पोथी प्रकाशित।







सूर्यनानायण्ड झा "सनस "

याथी "मैथिली श्री सीतानामवनिगमानस" प्रकाशित।

कलानह् रह्

काह् यन लहास रुमन मैथिली गजल संग्रह

दयानाथ झा

गाम नागदह, मधुबनी। मैथिली नंगमंडल मिथि- यात्रिक, कालकाता।



डॉ. सुधाकन चौधनी १९ ४६-

जन्म १७ मार्च १९४६ ई.। प्रकाशित याथी: काजन, गीन नंग गनह विद्य (कथा संग्रह), यंठी जी झण्डा (प्रहसन), विझ्नी सुराष (नाटक)।



किशोनीकान्त मिश्र

कालकाताक मिथिला सांस्कृतिक यनिषदक सक्रिय सदस्य। गाम- गाधीयट्टी ढढिया (कमतौल)



धनाकन ठाकुन

अंतर्नाष्ट्रीय मैथिली यनिषद आ मिथिला अरियानसँ जुड़ल।



स्व. चूनचून मिश्र, नहिका , मधुबनी।

मिथिला नायक आन्दोलन कर्मी।



सयनानायण लाल कर्ण

मिथिला चित्रकला



ल. कर्नल मायानाथ झा 1945-

जन्म 1 अप्रैल 1945 ई.। गाम- रुनाम (मधुबनी)। जकन नानि चानु हाल्ह् (मैथिली लाक कथा संग्रह) प्रकाशित। विदह सम्पादकक समानान्तन साहित्य अकादमी पुनस्कान २०११ वाल साहित्य पुनस्कान- ल.क. मायानाथ झा (जकन नानी चानु हाल्ह्, कथा संग्रह)



श्याम किशोन सिंह



सचिन्द्रनाथ झा



कालीनाथ ठाकुन

	मिथिला लोक चित्रकला	ग्राम सर्वसीमा



राजेन्द्र विमल, जनकपुर, नेपाल 1949-

मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिक्षाक रूपमे विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि। कथा लिखिकऽ यथेष्ट यश अरजनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक संगसंग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाल छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणेँ सेहो डा.धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-धनुषाक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि।



नरेश कुमार विकल 1950-

जन्म २१ जुलाई १९५० भगवानपुर देसुआ (समस्तीपुर)। काव्य- अरिपन, मनुआ मदन रस टपकय, बिन बाती दीप जरय। कथा-संग्रह- भरि गेल दर्दक जुआन। उपन्यास- टहकैत टीस। नाटक- बाबुजन खोंच।



जनक किशोर लाल दास



कृष्णचन्द्र झा "मयंक"



लक्ष्मण झा "सागर" 1953-

"उचरि बैसू कौआ" मैथिली कविता संग्रह प्रकाशित।



रघुवीर मोची



शानदानन्द दास "यनिमल"



शशिनाथ मिश्र "शशि"
1946-



सुरेन्द्रनाथ



अमरनाथ

१९७७ ई. म "उड़िका" लघुकथा संग्रह प्रकाशित। हास्य कथाकार।



वन्द्रा ठाकुर



वृद्धिनाथ मिश्र



नाजानाम सिंह नाठौन, धनुषा



वैद्यनाथ विमल 1955-



डॉ नासकीनाथ झा 1940-



जितेन्द्र मिश्र "जीवन"



वीरेन्द्र नानायण झा



वीरेन्द्र झा 1956-

(गानु झा यन लखन।



बैकुण्ठ झा 1954-

पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म- २४ - ०१ - १९५४ (ग्राम- भरवाड़, जिला-दरभंगा), शिक्षा- स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र), पेशा- शिक्षक। मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीतक रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक "हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी" क लेखन। एकर अलावा हिन्दीमे लगभग १३ उपन्यास तथा कथाक लेखन।



बैकुण्ठ झा



विद्यानन्द झा 'पञ्जीकार' 1957-

जन्म- 09.04.1957,पण्डुआ, ततैल, ककरौड़(मधुबनी), रशाढ़य(पूर्णियाँ), शिवनगर (अररिया) आ सम्प्रति पूर्णियाँ। पिता लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णियाँ। पितामह-स्व. श्री भिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष धरि 1970 ई.सँ 1979 ई. धरि अध्ययन, 22 वर्षक वयससँ पञ्जी-प्रबंधक संवर्द्धन आ संरक्षणमे संलग्न। कृति- पञ्जी शाखा पुस्तकक लिप्यंतरण आ संवर्द्धन।



महेन्द्र नारायण कर्ण



डॉ. विश्वम्भर मिश्र



अर्जुन नारायण चौधरी



नरेन्द्र

गजलकार।



महेन्द्र मिश्र, नेपाल



कमल कांत झा 1943-







महाप्रकाश 1946-

जन्म: बनगाँव, सहरसा, बिहार। वरिष्ठ कवि आ कथाकार। प्रकाशित कृति: कविता संख्या, संग समय के (कविता संग्रह)। कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान २०१० ई.- श्री महाप्रकाश (कविता संग्रह �संग समय के�)।



छत्रानन्द सिंह झा 1946-



अयोध्यानाथ चौधरी, धनुषा, नेपाल 1947-

मूलतः कविक रूपमे परिचित छथि। नेपालक आधुनिक कविताक अग्रम हिनक नाम उल्लेखनीय अछि। श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि। कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि। हँसिछाओल लेखन हिनक विशेषता थिकनि। धनुषा जिलाक दुहबी गामक रहनिहार श्री चौधरीक जन्म ६ अक्टूबर १९४७ क' भेल छनि। हिनक ठिगिजक उडियान नामसँ एक कविता-सङ्ग्रह प्रकाशित छनि।



विद्यानाथ झा 'विदित'



सियाराम झा "सरस" 1948-

जन्म स्थान मंहथ, मधुबनी बिहार। प्रसिद्ध गीतकार, बादमे कथा लेखन प्रारम्भ कयलनि। प्रकाशित कृति आंजुर भरि सिंगरहार, शोणिताएल उगैत सूर्यक धमक (कथा संग्रह)।



अग्निपुष्प 1948-

जन्म: गनौली, दरभंगा। मूलनाम : महेन्द्र झा। मैथिलीमे सहस्रबाढ़ि कविता संग्रह प्रकाशित। मुक्ति प्रसंगक अनुवाद प्रकाशित। वामपंथी आन्दोलनमे सक्रिय। शिखा, सम्वाद आदि पत्रिकाक सम्पादन। वामपंथी विचारधाराक सशक्त कवि।



मधुकांत झा 1949-



बीनू भाइ



सच्चिदानन्द पाठक



योगीनाथ

कुशाल 1951-

रामभरोस कापड़ि भ्रमर, धनुषा, नेपाल 1951-

जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)। कृतिसभ: ढोलाएल धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), तोरी बड़कावी (नाटक), एकटा आओर वसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्तः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सरहक संग्रह), विसन्त-विसन्त सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्स), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्य- श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (2010)।



धीरेन्द्रनाथ मिश्र



शिवेन्द्रलाल कर्ण, धनुषा, नेपाल 1951-

लेखकसँ अधिक शिक्षकक रूपमे परिचित आ प्रतिष्ठित छथि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा. ब. कैम्पस, जनकपुर-धामक सह-प्राध्यापक श्री कर्णक ऐतिहासिक विषय-वस्तुपर लिखल कतोक लेख मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजी भाषामे प्रकाशित अछि। स्वान्त-सुखाय ई कहियो कालकऽ कविता-कथा सेहो लिखि लैत छथि। हिनक लेखन ज्ञानवर्द्धक, जानकारीमूलक एवं सामान्यतः रहैत अछि। देखलापर बूझना जाइत अछि जे ई हिनक गम्भीर अध्ययनक परिणति थिक। सामाजिक तथा साहित्यिक सभ-संस्थासभसँ सेहो सक्रिय प्राध्यापक कर्णक जन्म धनुषा जिलाक दतौली गाममे २ जनवरी १९५१ ई. कऽ भेल छनि।



ब्रह्मदेव लाल दास



चन्द्रशेखर खान

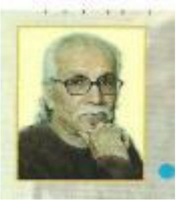


दयाकान्त झा



राजेन्द्र नारायण सिंह, नेपाल

ग्राम- बड़ीटोल, जिला मधुबनी। लघुकथा लेल चर्चित प्रशंसित।



पद्मश्री श्री गजेन्द्र नारायण सिंह



रतिकान्त झा



इन्द्रनारायण झा



प्रवासी साहित्यालंकार



सीताराम सिंह



गुलानन्द मिश्र



शैलेन्द्र कुमार झा 1952-

जन्म स्थान हरिपुर, बकसी टोल, मधुबनी बिहार। प्रकाशित कृति: आगाँ अन्हार, दसम खुट्टी (कथा संग्रह), इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ मिथिला (अंग्रेजी)।



शिवशंकर श्रीनिवास 1953-

जन्म स्थान लोहना मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार ओ आलोचक। गीत ओ कविता सेहो कहियो काल लिखैत छथि। प्रकाशित कृति : त्रिकोण, अदहन, गाछ-पात, गामक लोक (कथा संग्रह)।



अशोक 1953-

जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, कवि ओ सम्पादक। प्रकाशित कृति : चक्रव्यूह (कविता संग्रह) त्रिकोण (सहयोगी कथा संग्रह), ओहि नागिक राग (कथा-संग्रह), मातवर (कथा संग्रह)।







विभूति आनन्द 1953-

जन्म: शिवनगर, मधुबनी, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार, संपादक । प्रकाशित कृति दूटा उपन्यास दूटा समीक्षा, तीन टा कथ संग्रह, दूटा गीत-गजल संग्रह आ चारिटा कथा-संग्रह प्रकाशित। २००६- विभूति आनन्द (का०, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार ।

केदार कानन 1959-

जन्म स्थान सुपौल, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार आ संपादक। प्रकाशित कृति : आकाश लोक शब्द (कविता संग्रह), अनूदित कृति राजा राम मोहन राय, प्रायश्चित। सम्पादन संकल्प, रानी मंडन (पत्रिका)।

डॉ. शशिनाथ झा 1954-

ग्राम-दीप, जिला- मधुबनी। मैथिली, बांग्ला, नेवारी आ देवनागरी पांडुलिपिक विशेषज्ञ। साहित्य अकादमीक भाषा सम्मान 2007 क्लासिकल आ मध्यकालीन साहित्य लेल।



धनुर्धर झा

ग्राम- बिरौल। "वाक्यार्थविवेचनम्" लेल श्रीवाणीपुरालंकरण पुरस्कार 2010 प्राप्त।



शिवकान्त पाठक



हरिनाथ झा

"काहुँलख ग्रामकथा" प्रकाशित। कवि सह कथाकार। मैथिली साहित्यक रेखांकन (सम्पादन)



डॉ. योगेन्द्र पाठक "वियोगी" , वैज्ञानिक

"विज्ञानक बतकही" प्रकाशित।



राजनन्द झा

२००६- राजनन्द झा (कालबेला- समरेश मजुमदार, बांग्ला)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



आद्यानाथ झा "नवीन"



अमलतास 1956-



यंत्रनाथ मिश्र



दिगम्बर ठाकुर



गणेश झा 1950-



कन्हैयानायक लाल कर्ण



शैलेन्द्र आनन्द 1955-



कमलाकांत झा

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना



ललन प्रसाद ठाकुर 1951-1995

जन्म ५ फरवरी १९५१ मुंगेर मे श्रीमती सुरेखा देवी आ श्री दीनानंद ठाकुरक द्वितीय बालक। हिनक ग्राम-समौल,जिला-मधुबनी। सिविल इंजीनियर, टाटा स्टील मे नोकरी। प्रकाश झाक फिल्म "कथा माधोपुर की" मे मुख्य भूमिका। नाटककार आ मंच अभिनेता। हुनक लिखल किछु प्रसिद्ध मैथिली नाटक छथि :बड़का साहेब,मिस्टर निला काका, लौंगिया मिरचाई,बकलेल आदि ना अंत।



ललित कुमार

हरिमोहन झा केर उपन्यास कन्यादानक अंग्रेजी मे अनुवाद 'The Bride' नामसँ प्रकाशित।



मिथिलेश कुमार झा

'Language Politics and Public Sphere in North India: Making of the Maithili Movement' प्रकाशित।



डॉ. कमलानन्द झा



लोकनाथ मिश्र



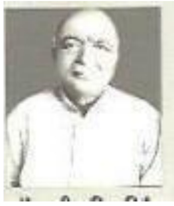
डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी 1966-

जन्म: 5 मार्च 1966 ई. गणपतगंज, सुपौल। मैथिलीक प्राध्यापक। राज्यमंत्रीक पदक आ बिहार आ झारखण्ड सरकार द्वारा पुरस्कृत। झारखण्डक मैथिली आन्दोलनमे अग्रणी।



अशोक अविचल

जन्म- ७ जनवरी १९६७, गाम- नरुआर संग्राम, जिला मधुबनी। मैथिली प्राध्यापक। रचना: एक बनू लाख बनू (लघु नाटक), मैथिली भाषा: सर्वेक्षण आ विश्लेषण, हमरा देशक रागम (मैथिलीक प्रथम असंगत नाटक), सम्पादन: झारखण्डक स्वर, कपाट (नौ अंक), झारखण्ड वाणी (हिन्दी साप्ताहिक), सम्मान: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक सम्मान (२०००), परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति सम्मान (२००८)



डॉ. श्रीपति सिंह १९४४-

"उमंग-तरंग" कविता-संग्रह प्रकाशित।



डॉ. उमाकान्त

मैथिली ग्रंथ-आलेखक पोथी "अपन बात" प्रकाशित।



सुशील 1942-

अस्मिता (लघुकथा संग्रह), रामरी (नाटक) प्रकाशित।



श्रीधर

मूल नाम- नागेश्वर झा। कथा-सँग्रह "हिलकोर", नाटक "लाल्हक कढ़ना", गीत-प्रबन्ध "पुलामा" प्रकाशित।



सुकांत सोम 1950-

जन्म दरभंगा जिलाक रनौनी गाममे 1950 ई. मे भेलन्हि। बी. ए. पास कए ई पटनाक



डॉ. देवकांत मिश्र 1952-



डॉ. नित्यानन्द लाल दास

पिता स्वर्गीय सूर्यनारायण दास। फारबिसगंज कॉलेज, फारबिसगंज सँ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पदसँ १९९८ मे

दैनिक �जनशकि�क सहायक सम्पादक छलाह। रुन नव राना टाल्हम, यटनामा वाल्यनस्थासँ अयन यैगृक (यिता याम्रीजी) गुध कविता कनवाक गथा कथा लिखवाम सहा यश अर्जन कएलहि अछि। वर्धमान नाजनीगि सामाजिक विषयसँ सम्बद्ध व्यंग्यात्मक, सनल रावाम लिखल नव कविता हिनक विशेषता छहि। गामघनक यनिवश गदनुकुल शब्द एवं बिम्ब नवनाम क्रमहि सिद्ध छथि।

यिगा कविवृन्दामधि यं. काशीकांग मिश्र "मधुय", "वनीयुन अनुमण्डलम मैथिली" याथी प्रकाशिग।

अवकाशप्राप्त। डॉ. सुन्दन्द्र मा "सुमन"क संयोजकत्वक कार्यकालम "मैथिली यनामर्शदागृ समिगि" (साहित्य अकादमी, दिल्ली)क सदस्य। मैथिली यत्रिका सरर जना वटृक, प्रयाग; मिथिला मिहिन, यटना; स्वदश, दनरंगा; यहुँव, यटना आ यनगी यलान, अनिनियाम नवना प्रकाशिग। १९६१ ई. सँ नाष्ट्रीय स्वयंसवक संघ म सक्रिय। प्रांगीय यगिनिधि २००४ धनि जिला सनसंघवालक। ज.यी.आष्ठालनम लाकांग्र सनानी। डॉ. ए.यी.ज. अब्दुल कलामक अंग्रेजी याथी "ॐइग्नाइटड माइंड्स"क मैथिलीम "प्रज्वलिग प्रज्ञा" नामसँ अनुवाद। साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद युनस्कान २०१०- डॉ. निग्यानन्द लाल दास- (ॐइग्नाइटड माइंड्स- डॉ.ए.यी.ज. कलाम, अंग्रेजी) लल।



नाजनाथ मिश्र 1950-

"अ वर्ग आई व्यु □न मिथिला" प्रकाशिग।



यशुयगिनाथ मा, महात्तनी, नयाल 1954-

हिनक लखन चिन्तनधात्मक हाइगा अछि आ सम्बद्ध विषयम नीकजकाँ जानकानी दैग अछि। विभिन्न यत्र-यत्रिकाम हिनक लख-नवना वनावनि दखवाम अवैग नहैछ।ना.ना.व. कैम्पस, जनकयुनधामम मैथिली विषयक प्राध्यायनम संलग्न श्री मा मैथिलीसम्बन्धी सङ्गठनात्मक गगिविधिसँ सहा जुडल छथि। मैथिली रावाक लायान्मुख अवस्थाम नहल अयन लियि गिनहुगाम विशेषज्ञगा नखनिहान श्री मा एकान संनक्षण-सम्बर्द्धनक दिशाम सहा क्रियाशील छथि।प्राध्यायक मा मैथिली महाकाव्यम नस निनुयण विषययन विद्यावानिधि कएन छथि आ शिक्षा गथा कानून विषयम सहा स्नागक छथि। महात्तनी जिलाक एकनहिया नहनिहान श्री माक जन्म ४ दिसम्बन १९७४ कS रलछनि।वर्त्तम मिथिला नत्नसँ सम्मानिग।



अनिलवन्द्र ठाकुन 1954-2009

जन्म 13 सिगम्बन 1954 ई.कँ कटिहान जिलाक समली गामम रलहि। 1982 ई.म हिन्दी साहित्यम स्नागकात्तन कलाक वाद नवम्बन '93 सँ नवम्बन '94 धनि "सुवह" हस्तलिखिग यत्रिकाक सम्यादन-प्रकाशन कएलहि आ काशी जीव्रीय ग्रामीण बैंकम अधिकानी नहथि। मैथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेजीम समानन्यूँ लखन। मृत्युक यूर्व ब्रन ट्यूमनसँ बीमान चलि नहल छलाह। **प्रकाशिग कृगि**: आव मानि जाउ(मैथिली उयन्यास)- यहिन रानगी-मंडन यत्रिकाम प्रकाशिग रल, हुन मैलानंग द्वाना युस्गकाकान प्रकाशिग रल। ; कव(अंगिकाक यहिल खण्ड काव्य,1975); एक डौन नाम (हिन्दी नाटक,1981); एक घन सडक यन (हिन्दी उयन्यास, 1982); द ययन्न (अंग्रेजी उयन्यास, 1990); अनग कहाँ सुख यावै (हिन्दी कहानी संग्रह,2007)। आव मानि जाउ (मैथिली उयन्यास) - एहि

उयन्यासम एक तरुन युनीक संघर्ष-गाथा अंकित अछि जे अयन लगनसँ जीनन वदलौत अछि। असंख्य गामक ऽऽी कथा कुलीनताक अधःयतनक कथा, संस्कानविहीनताक उद्घाटन आ रनिष्यक यीढीकँ ववतवाक चौनी छी।



वृषण चन्द्र लाल

जन्म 29 मार्च 1955 ऽऽी. कँ रलछि। यिताः स्न. उदितनानायध लाल,माताः श्रीमती गुननश्वनी दना। हिनकन छाहिलानक नाम निश्वेश्वन छछि। मूलतः नाजनीतिककर्मी। नयालम लाकतन्त्रलल निनन्तन संघर्षक क्रमम ११ वन गिनक्तान। लगरग ८ नर्ष जल।सम्प्रति तनाऽऽी�मधेश लाकतान्त्रिक यार्टीक नाष्ट�ीय उयाध्यऊ। मैथिलीम किछु कथा निरिन्न यत्रयत्रिकाम प्रकाशित। आन्दालन कनिता संग्रह आ वी.यीं काऽऽनालाक प्रसिद्ध लघु उयन्यास मादिआऽऽनक मैथिली नुयान्तनध तथा नयालीम संघीय शासनतिन नामक यूस्तक प्रकाशित। डा निश्वेश्वन प्रसाद काऽऽनालाक प्रतिवद्ध नाजनीति अनुयायी आ नयालक प्रजातांत्रिक आन्दालनक सक्रिय याद्धा छथि। नयाली नाजनीतियन वनावनि लिखैत नहैत छथि।



नानायधजी 1956-

जन्म: घाघनतीहा (मधुवनी)। मैथिली राषा-साहित्यम एम. ए., यी-एच. डी. कामश्वन ला संस्कृत निश्वालय, घाघनतीहाम अध्यायन। प्रकाशित कृति: �घनि घुनि नहल छी� (काव्य-संग्रह)।



डॉ. श्री श्रीशंकन मा 1952-





नाजदव मंडल



शिवप्रसाद यादव

जगदीशनारायण "दीपक"	शिक्षा- एम.ए.द्वय, एल एल बी.,पता- ग्राम- मुसहरनियाँ, रतनसारा (निर्मली, मधुबनी)। प्रकाशित कृति- अन्हार- कविता- संग्रह, स्मन टाल (उपन्यास), वसुंधरा(कविता संग्रह), जाल (पटकथा), लाज (एकांकी), जल रंजन (उपन्यास), प्रियतमाक नेग (विहनि आ लघु कथा संग्रह), पंकेंी (लघु पटकथा), वायसी।	



दीनेश्वर कुमार झा 1958-

जन्म 30 अगस्त 1958,ग्राम- काठ्ठलख (मधुबनी), पिता श्री कामेश्वर नाथ झा। ट्रांसफर्मेशन (मैथिली कथा संग्रह) प्रकाशित।



मानेश्वर मनुज 1958-

जन्म गढ़निया (मानपौन, मधुबनी)मे, 1978सँ 1992 धरि नौसनाम विभिन्न जलाजयन कार्यक्रम, रून यात्री नलमा। सम्बन्ध (कथा संग्रह) प्रकाशित।



नवानाथ झा



महेन्द्र नारायण राम 1958-



तारानन्द वियोगी 1966-

महिषी, सहरसामे जन्म। पहिल पोथी अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह) १९९१ मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक हस्तक्षेप, प्रलय रहस्य(कविता- संग्रह), अतिक्रमण (कथा- संग्रह), शिलालेख (लघुकथा संग्रह), कर्मधारय। नागार्जुनक जीवनीक कथाकृति एकटा बंगाकली एकटा विवेचन संकलन-सम्पादन। साहित्य अकादमी मैथिली बाल साहित्य पुरस्कार २०१०-तारानन्द वियोगीकेँ पोथी "ई ढेल पं की ढेल" लेल। यात्री-चेतना पुरस्कार २०१० ई.- डॉ. तारानन्द वियोगी।



रामवृक्ष झा

ए.टी.जी., बी.ए., (अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर कलाक डिप्लोमा। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजरातीक विज्ञ। १९७४ ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरक निर्देशक। महाराष्ट्र राज्य उपाधि १९८६ आ १९९९ मे आइ.एन.टी. कर लेल नाटक �सीता� क निर्देशन। �वासुदेव संगीत� आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोध आ प्रदर्शनसँ जुड़ल छथि आ नाट्यशालासँ जुड़ल छथि विकलांग बाल लेल थिएटरसँ। निम्न टी.बी. मीडियामे नवनाटक निर्देशक रूपेँ कार्य। लेखन-वीडियो बनायल मराठी एकांकी(अनुवाद), सिंहावलोकन

(मराठी साहित्यक १७० वर्ष), आकाश (डी.टी.वी.क धारावाहिक ३० एपीसोड), जीवन सन्ध्या(मराठी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), धनाजी नाना चौधरी (मराठी), स्वयम्वर (मराठी), हिन नहीं करी नहीं(हिन्दी), आहट (हिन्दी), यात्रा (मराठी सीरयल), मयूरपंख (मराठी बाल-धारावाहिक), हलुकअप ङ्ङन २०० ए.डी.) (डी.डी.)। २००६ म- हालचन्द्र झा (वीठल वनायल मराठी एकाँकी- सम्पादक सुधा जोशी आ रत्नाकर मतकरी, मराठी)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



मनमोहन झा



कुमार शैलेन्द्र



नमश 1961-

जन्म स्थान मंरथ, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार आ कवि। प्रकाशित कृति: समांग, समानांतर, दखल (कथा संग्रह), नागफनी (गजल संग्रह), संगान, समतल स्वनक आगु, कारी धानक सपना, याथन यन दूरि (काव्य संग्रह), प्रतिक्रिया (आलोचनात्मक निबंध)।



मघन प्रसाद 1961-



प्रदीप बिहारी 1963-

जन्म स्थान कझौली मलिक टोल, खजौली, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, उपन्यासकार आ



चन्द्रमोहन झा पर्वा

नंगकर्मी । प्रकाशित कृति: गुमकी आ विहाड़ि, विसूवियस (उपन्यास), औंठीमे कमला जयतीमे कमला, खण्ड-खण्ड जिनगी, सनाकान (कथा संग्रह)। २००७- प्रदीप विहानी (सनाकान, कथा)मैथिली लल साहित्य अकादमी पुनस्कान ।



तॉ. सुनद्ध लाए, नयाल



नाभन जनकपुनी, नयाल



तॉ. अनविन्द अक्कू 1957-



फूलचन्द्र मा "प्रवीण" 1961-

गाम गुमौल दनरंगा, आयल नवल प्रयाग, यांगल गाछक छाहनि, रुमना मानक खजन चिउँया, वसंतक वजनिआ (कविता संग्रह), रूप छल्लूप र्विष्य (कथा संग्रह)।



नामानुग्रह मा

जन्म: सुपौल, विहाना मैथिली कवि आ आलोचक।



ललितेश मिश्र

"वीच वीनानीम" (कथा संग्रह), Pied Poesy (Anthology of Maithili Poems translated into Englesh), यनख, प्रस्तावना, नचना नसायन (आलोचना) प्रकाशित।



दवशंकन नवीन 1962-

आ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रानम्भिक सर्जना), चानन-काजन (मैथिली कविता



कुमान मनीष अनविन्द 1964-



वदनी नानायण वर्मा

संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पहचान (हिन्दी कहानी), अभिज्ञा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।



राजेन्द्र किशोर, नेपाल



श्याम सुन्दर शशि, नेपाल

श्याम सुन्दर शशि, जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा- पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ, एम.ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आऽ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आऽ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रकाशनक अनव थुनाम कार्यरत।



हिमांशु चौधरी, नेपाल

पिता : स्वर्गीय रामभूषण चौधरी, माता: श्रीमती चन्द्रावती चौधरी, जन्म: वि स २०२०/६/७ लहान, सिरहा, शिक्षा: स्नातकोत्तर(नेपाली), पेशा: पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति), कृति : की हम सांच ? (मैथिली कविता संग्रह), विगत दु दशकसं नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध ।



सत्यनारायण महतो



भुवनेश्वर पाथेय



राजेन्द्र झा, धनुषा



अशोक कुमान मह्ता



धर्मेन्द्र विह्वल, सिनहा, नयाल 1967-

नम्हा गके जिनगी, एक सृष्टि एक कनिता, एक समयक बात, धूमिलाएल आकृति सभ (मैथिली कनिता संग्रह), आमनका उत्कृष्ट नाटकसभ, गोनुझाका कथासभ (मैथिलीसँ नयाली अनुवाद), मैथिलीक कक्षा 1 सँ 5 धनि बाल-साहित्य संदर्भक सीनिज याथीक सह-लखक। यत्रकानिताक मूल सिद्धांत (मैथिली, प्रसम), दलित नियार्टिंग मेनुअल (नयाली, प्रसम)।



धीनेन्द्र कुमान झा



निमिष झा, नयाल



गोनीनाथ (अनलकान्त)

"अन्तिका"क सम्यादन।



श्रीधनम

कथाकान, समालाचक



नमण कुमान सिंह

१९६९-

"हन सँ हनियन", "दुःस्वप्नक वाद" (कनिता संग्रह), "हमन यसान संसान सान" (ललित निवन्ध), "निनयन्तन" (आलाचना), "उठ जा न सुइा" (नाजस्थानीसँ मैथिली अनुवाद) प्रकाशित।



मुस्कान आलम

"यनिचय वनेत शब्द" (कनिता संग्रह) प्रकाशित।



डॉ विजयेन्द्र झा

१९६४-

"मैथिली व्याकनण ओ नचना","मैथिली भाषा विज्ञान" प्रकाशित।



अजित आजाद

"पेन ड्राइव मे पृथ्वी" लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



बद्री नाथ राय 'अमात्य'

'मैथिल रैया कतु निदान' प्रकाशित।



किशन कारीगर

"किछु हुना गेल हमरा" प्रकाशित।



कुमार मनोज कश्यप

बदलैत समय (मैथिली लघु कथा संग्रह)



विनोद मिश्र

डॉ. विनोद मिश्र सम्प्रति आइ.आइ.टी रुड़की, उत्तराखंडमे अंग्रेजी पढ़बैत छथि आ हिनक रचना अंग्रेजी आ हिंदीमे प्रकाशित भेल छन्हि। अहि वर्ष हिनक कविता संग्रह Silent Steps and Other Poems प्रकाशित भेल छन्हि। एकर अतिरिक्त ई अंग्रेजीमे आलोचनाक उपर आठ टा पोथी संपादित केने छथि। हिनक पोथी Communication Skills for Engineers and Scientists बहुत इंजीनियरिंग संस्थानमे पाठ्य पुस्तक रूपमे पढ़ाओल जाइत अछि।



आनन्द कुमार झा 1977-

जन्म स्थान: मंहथ, मधुबनी; पिता स्व. सत्यकांत झा, माता श्रीमती इन्दुकाली देवी, प्रकाशन- "धधाइत नवकी कनियाँक लहास", "हठात् परिवर्तन", "बदलैत समाज", "टाकाक मोल", "कलह" (पाँचु मैथिली नाटक) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ मूल पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)







ननदनीयूप्र रनलनाथ, नाट ककान	वह्नुश	नाम सनक सिंह
		
शहीद दुर्गानह झा, नया ल	उदयनाथ झा "अशोक"	कयिलश्चन नाउग उलहन (विदनि - लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।
		
कयिलश्चन साहु	डॉ. शम्भु कुमान सिंह जन्म: 18 अप्रील 1965 सहनसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआन गाममे। आनंरिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णयदक प्राप्त) तिलका माँझी रागलयून विश्वविद्यालय, रागलयून, विहान सँ। BET [विहान यात्रा यनीजा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] �मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन� विषय यन यी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका माँ. रा.विश्वविद्यालय, रागलयून, विहान सँ। मैथिलीक कताक प्रतिष्ठित यत्र-यत्रिका सरम कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय यन प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकान (मैथिली) नाष्ट्रीय अनुवाद मिशन, कद्रीय रानतीय राषा संस्थान, मैसून-6 मे कार्यनत।	कृष्णवह्न यादव, नयाल



शिवकान्त ठाकुर



गोराकान्त झा



उमाकान्त झा आ प्रियंका, मैथिली रंग मंच



श्यामानन्द ठाकुर



रविकांत लाल दास, नेपाल



शशिनाथ ठाकुर, नेपाल



दुर्गानन्द मंडल

संचयिका, कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह), बड़ प्रकाशित।



शिव कुमार झा 1973-

शिव कुमार
झा ��टिल्लू��,पिताक नामः
स्व. काली कान्त
झा ��बूच��, माताक नामः
स्व. चन्द्रकला देवी,जन्म तिथिः 11-12-1973,शिक्षाः स्नातक
(प्रतिष्ठा),जन्म स्थानः
मातृक- मालीपुर मोड़तर, जि.
- बेगूसराय, मूलग्रामः ग्राम-
पंचालय - करियन, जिला -
समस्तीपुर, पिन: 848101,संप्रतिः
प्रबंधक, संग्रहण,जे. एम. ए. स्टोर्स
लि.,मेन रोड, बिस्टुपुर जमशेदपुर
- 831 001, अन्य गतिविधिः
वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धरि
विद्यापति परिषद समस्तीपुरक
सांस्कृतिक ,गतिविधि एवं मैथिलीक
प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश
कुमार विकल आ श्री उदय
नारायण चौधरी (राज्यपति
पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्व



राम विलास साहु

मनक

मैल, अंकुर- लघुकथा संग्रह, रथक चक्का उलटि चलै बाट (कविता/ टनका संग्रह), कर्म दिनु जग सुन्ना (हाइकु कविता/ टनका संग्रह), गुलक खिचड़ी (विहनि/ लघु कथा संग्रह), दुख बदली (लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।

संलग्न। **प्रकाशित कृति:** ऊष्मप्रेत-कविता-संग्रह, अंशु-समालोचना।



महाकान्त ठाकुर



बचेश्वर झा, निर्मली

"निबन्ध-निकुञ्ज" प्रकाशित।



धीरेन्द्र कुमार, निर्मली



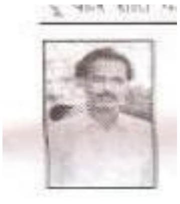
चन्द्रशेखर कामति 1959 -

मैथिली कवि। शिक्षा- एम.ए. (राजनीतिशास्त्र), पिता- स्व. योगेन्द्र कामति , ग्राम-पोस्ट- करियन, भाया- ढूलमास नगर, थाना- रोसड़ा, जिला- समस्तीपुर, बिहार। संप्रति प्रखण्ड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी (वरीयट्ठी)।



नन्द विलास राय

"रनदुलिया", "ठाठिक ताला", "हमर वानुधाम" प्रकाशित।



विनय दूषण

उजरा धरतीक खोज (कविता संग्रह)



सुधाकर झा, महान्दनी , नेपाल

सएसँ बेसी सएक नाटकमे मंचन।



सदरे आलम "गौहर"

ग्राम-खुरसौलिया, भाया- जयनगर, जिला मधुबनी।



डॉ. गुनन किशोर मिश्र "गुननश"

मैथिली कथा संग्रह- गोवरछत्ता।



दिनकर कुमार

"पूर्वोत्तर मैथिल"क सम्पादन।



डॉ. विनय विश्वबन्धु



रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार

मैथिलीक सिखाड़ी 0क्रूरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल �झारूदार�।

"रचना बिनु जगत सूना छै" आ "गीताञ्जलि झारू" प्रकाशित।



उमेश पासवान

"वर्णित रस" प्रकाशित।



ओम प्रकाश झा

घाघरटोला (मधुबनी)।

"किया बुझि नै सकल रचना" (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह) प्रकाशित।



जगदानन्द झा मनु

नढिया पुरैत रचन घनाटीयन (गजल संग्रह), गाछ्न कागक रंग (विहनि कथा संग्रह), बानरा- (बाल उपन्यास), ब्यथा- (कविता-गीत संग्रह)।



अम्बुलाल शास्त्री



डॉ अमल राय



नन्द कुमार मिश्र नन्द



डॉ. नन्द कुमार मिश्र



शिव कुमार प्रसाद



अर्द्धनारीश्वर (१९७३-)

मूल नाम- शिवानन्द झा, साहित्यिक नाम- अर्धनारीश्वर। गाम-बाथ (मधेपुर), मधुबनी। कलंकिनी, नीलकंठ, अद्भुत गलियारी (कथा संग्रह); माटिक नाम चिट्ठी, काव्यलोक (कविता संग्रह); हाल्लुकमाण्ड (निबंध संग्रह)।



दिलीप कुमार झा



डॉ ताराकान्त झा



अमरकान्त, नेपाल



मुरलीधर झा

कविपुत्र, दरभंगा। बाल कथा संग्रह "पिलपिलहा गाछ" (2010) प्रकाशित।



कमलधर दास

"मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध" पोथी प्रकाशित।



श्रीकान्त मण्डल, मैथिली रंगमंच



बचन ठाकुर

गाम: बनौनागंज, मधुबनी। प्रकाशित कृति: बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक), बाप रल पिपही आ अधिकार (नाटक), विसवासघात (नाटक), ऊँच-नीच (नाटक), साँट (नाटक); एक दर्जनसँ बेसी नाटक प्रकाशनक प्रतीक्षा।



गंगा झा

मैथिली रंगमंडल कोकिल मंच, कोलकाता। कोलकाता आ गाम पड़आनिठीह टोलम मैथिली रंगमंच निर्देशन।



नवानानायण मिश्र 1955-

पिता-श्री गोविन्द मिश्र, माता- श्रीमति अतुला देवी। गाम- कुशमौल, पो. नागदह- बलाइन, थाना-अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी। मैथिली रंगमंचसँ सम्बद्ध "कोकिल मंच" संस्थाक माध्यमसँ।



कमलेश कुमान दास, नंग मंच कलाकान



किशोन कशन, मैथिली नंगमंच



कुमान गगन, मैथिली नंगमंच



अशोक दत्त, जनकपुन



मदन ठाकुन

वनिष्ठ नंगकर्मी, जनकपुनक वनिष्ठ संस्था मिथिला नाट्यकला यनिषदक संस्थायक। तीन दशकसँ वसी समयसँ नंगकर्मम सक्रिय। कनीव ३०�४० गोट मंचीय नाटकक सया प्रस्तुति, २०�२५ गोट सउक नाटकक हजानसँ वसी प्रदर्शनम अभिनय।२० गोट टली-सीनियल आ आधा दर्जन मैथिली फीचन फिल्मम अभिनय। युनस्कान: सयुक्त अन्तनाष्ट्रिय महोत्सवम सर्वश्रेष्ठ अभिनेता २०४९ वि.स., ञ्ञ्रीय प्रतिभा युनस्कान (नेयाल सनकान) २०६३ वि.स.।



अरुण कुमान यादव, मैथिली नंगमंच



आशुतोष यादव अभिषेक



कृष्ण कुमान कश्यय 1949-

जन्म १७ सितम्बन १९४९ ई.।
यिता- कवि-उयन्यासकान स्व. ह्ह्रनानायण लाल "सँवलिया"।



ललित कुमुद

जनवरी १९६७ ई. मे नवा सर लेल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला आधारित जीवन आ शिक्षा पद्धति"क प्रवर्तन आ ओकर कार्यान्वयन लेल शिला कथय आ शशिबालाक सहयोगसँ "ग्रामीण विकास संस्था"क स्थापना। रचना: शशिबालाक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, मास्क-भाग, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र-कथा, भाग-३।



बटोही झा, मिथिला चित्रकला



प्रवीण कुमार ठाकुर

जन्म तिथि -31 दिसम्बर 1977; जन्म स्थान - कछोली , सकरी , मधुबनी ; शिक्षा- सूर्य नारायण हाई स्कूल - ननयगिनगन , बी . एस . सी - ममानिअल कॉलेज - दरभंगा , डिप्लोमा इन फैशन डिजाइन (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन डिजाइन - नयी दिल्ली) , चित्रकला �आ डिजाइन फैशन पूर्वानुमानमे विशेष योग्यता, निवास स्थान- दिल्ली , इंडिया; पिता- श्री सत्य नारायण ठाकुर , सकरी - कछोली� ; माता- श्रीमती मालती ठाकुर , सकरी - कछोली । वर्तमानमे अयन एक्सपोर्ट बिजनेस एक्सटर) �क नामसँ शुरुआत , पूर्वमे प्रोडक्ट डेवलपमेंट आ डिजाइन मर्चेंटक रूपमे कार्यरत।



लाला पंडित, मिथिला मूर्तिकला



राजेन्द्र पंडित, मिथिला मूर्तिकला



गिरीश चन्द्र लाल



नवेन्दु कुमार झा, पत्रकार



चन्द्र किशोर लाल, यप्रका न, नेपाल



उपेन्द्र भगत नागवंशी, नेपाल

सभक नाटक।



नमेश नंजन, यननाहा, नेपाल 1966-

यननाहा, नेपालम जन्म । नेपालीय कथा-जगतक नवीन मुदा सम्मानित नाम । जनयजथन कथा-दृष्टि आ मास्क शिल्प । थोड लिखलनि, मुदा वन-वन चर्चित नहलाह ।



विनीत ठाकुर

"वाँकी अछि हमान दुधक कर्ज" प्रकाशित।



सुजीत कुमान मा, नेपाल

जिन्दगी (लघुकथा संग्रह), बिउ (लघुकथा-संग्रह), नियर्टन डायरी (नियार्जा), गन्ह (लघु कथा संग्रह), खजनीवाली (लघु कथा संग्रह), काल्ली घुनि आउ (वाल लघु-विहनि कथा संग्रह), दुश्मनी- (सम्पादन- नेपाली आ मैथिलीम)।



सनोज खिलाडी

नेपालक पहिल मैथिली नतिया नाटक संचालक



दवांशु वस

जन्म- गुलायट्टी, सुपौल। मास कम्युनिकेशनम एम.ए., हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकाम कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-प्रहेलिका इत्यादिक प्रकाशन। विशेष: गुजनात नाज्य शाला पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा आठम कक्षाक लेल विज्ञान कथा �जंग� प्रकाशित (2004 ई.), नताशा: मैथिलीक पहिल-चित्र-शृंखला (कॉमिक्स) प्रकाशित।



संतोष मिश्र, नेपाल

पासपुत (लघुकथा-संग्रह), उदास मान (लघुकथा-संग्रह), एना-किए (कविता-संग्रह), अपना (संपादन- कविता-संग्रह)।



सुनील कुमान मल्लिक, गायक, जनकपुन, नेपाल 1968-

मैथिलीक गायक-सङ्गीतकानक नूपम प्रसिद्ध छथि । मैथिली गावाक गीतसभम मौलिक तथा सार्थक सङ्गीतक सृजनम हिनक सक्रियता प्रशंसनीय छनि । सुनीलक गायन तथा सङ्गीतम कैसेट एलबमसभ सेहो वाहन भेल अछि । लखनदेइ हिनक सक्रियता यनिमाणात्मक नूपम कम नहितहुँ गुणात्मक दृष्टिएँ हृदयस्पर्शी मानल जाइत अछि । पेशासँ विज्ञान-शिक्षक छथि ।



धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सिरहा, नेपाल 1967-

वि.सं.२०२४ साल भादव १८ गते सिरहा जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे जन्म लेनिहार प्रेमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र झा छियनि। कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता छथि नुया-धीरेन्द्रक धीरेन्द्रक अवाज गामक बच्चा-बच्चा चिन्हैत अछि। �पल्लव� मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ �समाज� मैथिली सामाजिक पत्रिकाक सम्पादन।



नवीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम:स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम:स्वर्गीया दयाकाशी देवी, पैतृक ग्राम:अतन डीह, मातृक:सिद्धिआ घाट। वृत्ति:योजना आयोगक उप सचिव, दिल्लीम स्थगल मद्रायालिटन मजिस्ट्रेट। आब सेवा निवृत्त। शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी. एस-सी. भौतिकी विज्ञानमे प्रतिष्ठा; दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक। प्रकाशित कृति : मैथिली:-

१. �रानसँ साँस धनि� (आत्म कथा), २. �प्रसंगवश� (निबंध), ३. �स्वर्ग एतहि अछि� (यात्रा प्रसंग), ४. �हुसाद� (कथा संग्रह) ५. ` नमस्कार्थे� (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महनाज (मैथिली उपन्यास) ,८.लजकाटन (मैथिली उपन्यास) ,९.सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास) १०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १३.शंखनाद(उपन्यास)।



कुमार रामन



अमरेन्द्र यादव, नेपाल



आमोद कुमार झा

१९६८-२०२१

विम्बक पथान (कविता संग्रह) प्रकाशित



मनोज कुमार मण्डल

प्रसिद्ध कवि। गद्य रचना सेहो।



रवि भूषण पाठक



संदीप कुमार साफी



डॉ शियाउल रहमान जाफरी

रिहर्सल (नाटक), विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ), विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)

"वैशाखक दलानपर" प्रकाशित, ओ पहिल मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा संकलित हएत।

सम्प्रति स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मिर्जा गालिब कॉलेज, गया।



रघुनाथ मुखिया



प्रदीप पुष्प



मुन्ना जी

मानक दिस (विहनि कथा संग्रह), प्रतीक (विहनि कथा संग्रह), माँझ आँगनमे कतिआएल छी (मैथिली गजल संग्रह), हम पुछैत छी (साक्षात्कार), तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य), खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल

साहित्य), घाट (हाइकू-टंका संग्रह)



राम चन्द्र राय

सपना साकार (कथा संग्रह) प्रकाशित।



विनीत उत्पल

हम पुछैत छी (कविता संग्रह), रेहन पर रग्घू - काशीनाथ सिंह हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद, मन्त्रद्रष्टाऋष्यशृङ्ग- लेखक हरिशंकरश्रीवास्तव "शलभ" (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद), मोहनदास- उदय प्रकाश हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद



आचार्य रामानन्द मण्डल

सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजेश्वर मंडल, पत्नी- प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रूचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह हासा क न वाटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - सम्मिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गान। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम- पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी राज्य-बिहार पिन-843302



पं बाल गोविन्द 'आर्य'

घरक नाम- गोविन्द यादव। वर्ण-प्रकरण-रत्न (आधुनिक मैथिली व्याकरण) प्रकाशित।



लालदेव कामत

दिव्य दृष्टि (निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना) प्रकाशित।



पं कैलाश कुमार मिश्र

समाजशास्त्री- मानव विज्ञानी। कथा कविता आ मानव वैज्ञानिक आलेख सभ प्रकाशित।



रामकृष्ण परार्थी

"दू पटरीक बीच", "प्रतिकार एखन बाँकी अछि" कविता संग्रह प्रकाशित। दलित लेखन लेल प्रसिद्ध।



नारायण यादव

सङैता-गुनैता (अमृत पर्वक अवसर पर स्वतंत्रता सेनानी लोकनिक स्मरण) प्रकाशित।



उमेश मंडल

निश्तुकी- कविता संग्रह, मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन), "मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो, मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो, मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो", सगर राति दीप जरय- इतिहास, दृष्टि-यानि रत्नाकर-रत्नाकर (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल), हिन्दुस्तानी मुसलमान औ न हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गौतम शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल।



चन्द्रमणि



स्व. रमाकान्त झा, गायक



मुरलीधर, मैथिली फिल्म निर्देशक



कुंज बिहारी, मैथिली गायक



रामबाबू झा, गायक



बि.पि.उदासी



जितेन्द्र सहयोगी



उदितनारायण फिल्म गायक



प्रकाश झा, फिल्म निर्देशक



कीर्ति आजाद क्रिकेट



श्रीराम झा शतरंज



अभिषेक झा गोल्फ



अशोक कुमार 1981-

साधारण कामकाजी परिवारक समस्तीपुर जिलाक माखियारपुर सखवारी गाममे जनमल अशोक कुमार कहियो स्कूल नहि गेलाह। दिनमे पचास टाका कमेनिहार दिल्लीक एकटा गोल्फ क्लबक एहि कैडीकेँ 1994 ई. मे धनिक सिखबाय लगा कऽ गोल्फ कोर्ससँ बाहर कऽ देल गेल। वैह कैडी दस सालक भीतर



राजेश रंजन, मैथिली रचना प्रोजेक्ट



संजय झा

सुल्तानगंज, भागलपुर। मोटोरोलाक सी.ई.ओ.।

रानाक नम्बर एक गोलर बनि गेल।



विश्वम्भर पाठक



राजकमल झा, अंग्रेजी लेखक, पत्रकार

हिनकर अंग्रेजी उपन्यास "द ब्लू बेडस्प्रेड" , "इफ यू आर अफ्रेड ऑफ हाइट्स" आ "फायरप्रूफ" प्रकाशित छन्हि। "द ब्लू बेडस्प्रेड" (१९९९)पर हुनका "कॉमनवेल्थ राइटर्स प्राइज फॉर बेस्ट फर्स्ट बुक- यूरेशिया" भेटल छन्हि। राजकमल झा श्री मुनीश्वर झा आ श्रीमती रंजना झाक पुत्र छथि, "आइ.आइ.टी.खड़गपुर"सँ बी.टेक.छथि, आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि, आर ओ "इण्डियन एक्सप्रेस" मे एडिटर छथि।



मानस बिहारी वर्मा, वैज्ञानिक



फणीश्वर नाथ 'रेणु' मिथिला रत्न 1921-1977



रामधारी सिंह 'दिनकर' मिथिला रत्न 1908-1974



रामवृक्ष बेनीपुरी 1899-1967



डॉ. हरिवंश तरुण 1927-2009

जन्म 21 जून 1927 ई.।
ग्राम- चकसलेम, पो.- पटोरी, जिला- समस्तीपुर। तीन दर्जन सँ बेसी हिन्दी पोथी जाहिमे काव्य-कथा-प्रबन्ध सम्मिलित अछि।



हरिशंकर श्रीवास्तव "शलभ" 1934-



स्व. जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'

हिन्दीक साहित्यकार।



रामश्रण ग्रम

दिल्लीक नाटककार।



डॉ. नवल किशोर दास "नवल"



मारुनानन्द झा 1955-



रामाज्ञा शशिधर



गणेश चंचल १९३०-२०११



डॉ. अमरेन्द्र



गोरलाल मनीषी



कुन्दन अभिसार



शंभु अगेही

जन्म ८ जनवरी १९४१, प्रकाशित कृति:उमनाओल तीर (कथा-काव्य) १९९८, सांझ (कथा संग्रह)१९९९, गसनी वनिता (कथा काव्य)२००३, वज्जिका छंद विरास २००१







याज्ञान नामानगान अनूध १९२३-१९९९	मजरून ᳲमाम १९३०- २०१२	अनूध प्रकाश १९४८- २०१२
		
अंशुमन याण्डेय गिनहृा यूनीकातक आवदनकर्ता।	**दिनश कुमान मिश्र** मिथिलाक वाढिक अक्यर्ट। मिथिलाक माटा-माटी सर धानयन किताव प्रकाशित। उफन विहान की व्यथा कथा (१९९०), कासी- उम्र कैद स सजा-ए-मौत तक (१९९२) वंदिनी महानंदा (१९९४), वाया य७ ववूल का- वाढ़ नियंत्रण का नहस्य (२०००), वगानन यन मजवून मिथिला की कमला नदी (२००४), गुनही नदी अौन तकनीकी मा७- स्कूक (२००७), , दुष्टी याटन क वीच मं- कासी नदी की कहानी (२००६) तथा वागमती की सद्गति (२०१०)।	**डामप्रकाश रानगी १९६८-** कासी नदीक लाक सांस्कृतिक अध्ययन - नदियाँ गाती हैं, विहान क यानम्यनिक नाट्य आ मैथिलीक लाक नाट्य प्रकाशित
		
वैदही सीता	**याज्ञवल्क्य यत्नी मैत्रेयी** याज्ञवल्क्यक दु टा यत्नी छलथिह यहिल कात्यायनी आ दासन मैत्रेयी। मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी छलीह। कात्यायनीसँ हुनका तीनटा यूत्र छलहि- चन्द्रकान्ता, महामघ आ विजय।	**मातीदास** मिथिलाक नजक (धावि) जातिक लाकदेवता



विहुला

चम्पानगरक विहुला।



गांगो देवी

मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता। गांगोदेवीक देवता अखनो मिथिलाक मलाह लोकनिमे प्रचलित अछि।



रेशमा, कुसुमा, दुल्ला



मानेगक मालीसायन



विन्ध्यवासिनी देवी मैथिली लोकगीत 1920-2006



कामेश्वरी देवी 1922-

मधुबनी जिलाक नवानी गामक। जन्म १९२२ ई. मे अपन मातृक नाहरमे भेलनि। पति पं. मदनमोहन झा। बनौनीवासी प्रसिद्ध तान्त्रिक पण्डित केशव मिश्र हिनक पिता छलथिन। "मिथिला संस्कार गीत" पोथी।



कुसुमलता कर्ण



अणिमा सिंह 1924-

समीक्षिका, अनुवादिका, सम्पादिका। प्रकाशन: मैथिली लोकगीत, वसवेश्वर (अनु.), शिशु खेल गीत आदि। लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज, कलकत्तामे पूर्व प्राध्यापिका।



लिली रे 1933-

जन्म:२६ जनवरी, १९३३, पिता:भीमनाथ मिश्र, पति:डॉ. एच.एन.रे, दुर्गागंज, मैथिलीक विशिष्ट कथाकार एवं उपन्यासकार। मरीचिका उपन्यासपर साहित्य अकादेमीक १९८२ ई. मे पुरस्कार। मैथिलीमे लगभग दू सए कथा आ पाँच टा उपन्यास प्रकाशित। विपुल बाल साहित्यक सृजन। अनेक राष्ट्रीय भाषामे कथाक अनुवाद-प्रकाशित। पहिल प्रबोध सम्मान 2004 सँ सम्मानित।



चित्रलेखा देवी 1935-



मोहिनी झा 1937-



डॉ. सावित्री झा



कविता देवी 1942-



प्रमिला झा



शान्ति सुमन 1942-

जन्म 15 सितम्बर 1942, कासिमपुर, सहरसा, बिहार, प्रकाशित कृति, ओ प्रतीक्षा, परछाईं टूटती, सुलगते पसीने, पसीने के निशान, मौसम हुआ कबीर, समय चेतावनी नहीं देता, तप रहे कचनार, भीतर-भीतर आग, मेघ इन्द्रनील (मैथिली गीत संग्रह), शोध प्रबंध: मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य, उपन्यास: जल झुका हिरना। सम्मान: साहित्य सेवा सम्मान, कवि रत्न सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान। अध्यापन कार्य।



प्रभावती झा 1945-1999



स्व. इलारानी सिंह 1945-1993

इलारानी सिंह: जन्म 1 जुलाई, 1945, निधन : 13 जून, 1993, पिता : प्रो. प्रबोध नारायण सिंह सम्पादिका : मिथिला दर्शन, विशेष अध्ययन : मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, भाषा विज्ञान एवं लोक साहित्य। प्रकाशित कृति : सलोमा (आस्कर वाइल्डक अंग्रेजी नाटकक अनुवाद 1965), प्रेम एक कविता (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विषवृक्ष (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, बिहंगी



उषाकिरण खान 1945-

जन्म:२४ अक्टूबर १९४५,कथा एवं उपन्यास लेखनमे प्रख्यात। मैथिली तथा हिन्दी दुनू भाषाक चर्चित लेखिका। प्रकाशित कृति:अनुत्तरित प्रश्न, दूर्वाक्षत, हसीना मंजिल, भामती (उपन्यास)। २०१०-श्रीमति उषाकिरण खान (भामती, उपन्यास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार- मैथिली।

(1972), स्नविता: मैथिली कविता संग्रह (1973), हिन्दी संग्रह।



नीरजा रेणु 1945-

जन्म: ११ अक्टूबर १९४७,नाम: कामाख्या देवी,उपनाम:नीरजा रेणु,जन्म स्थान:नवटोल,सरिसवपाही। शिक्षा: बी.ए. (आनर्स) एम.ए., पी-एच.डी.,गृहिणी। प्रकाशित रचना : ऋतम्भरा (कविता मि.मि., १९८०) लेखन पर पारिवारिक, सांस्कृतिक परिवेशक प्रभाव। मैथिली कथा धारा साहित्य अकादमी नई दिल्लीसँ प्रकाशित मैथिली कथाक पच्चीस टा प्रतिनिधि कथाक सम्पादन। सृजन धार पियासल कथा संग्रह,आगत ऋण ल कविता संग्रह,मृगतृष्णा कथा संग्रह,प्रतिध्वनि हिन्दी कथा संग्रह,१९८० सँ आकाशवाणि पटनासँ अधिक कथा, कविता, शोधनिबन्ध, ललितनिबन्ध, आदि अनेक पत्र-पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थमे प्रकाशित। मैथिलीक अतिरिक्त किछु रचना हिन्दी तथा अंग्रेजीमे सेहो। २००३- नीरजा रेणु (मृगतृष्णा, कथा)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



वीणा ठाकुर 1954-

जन्म- रतनीपुर, पण्डौल (मधुबनी)। पिता श्री श्रीमोहन ठाकुर। प्रकाशित कृति: मैथिली नाटकक परम्परा, इतिहास-दर्पण (समीक्षा), विद्यापतिक उत्स (समालोचना), रानी (उपन्यास)



ज्ञानसुधा मिश्र

पटनाक उच्च न्यायालयक पहिल महिला न्यायाधीश आ पहिल मैथिलानी।



जस्टिस मृदुला मिश्र



वीणा कर्ण 1946-

जन्म 3 नवम्बर 1946, ग्राम- पटोरी, पो.पंचगछिया, जिला- सहरसा। सदस्य, मैथिली साहित्य अकादमी परामर्शदात्री समिति 1987-1993, सदस्य, भाषा परामर्शदात्री समिति (मैथिली), राष्ट्रीय स्नायपीठ। अवकाशप्राप्त विश्वविद्यालय आचार्य आ



शेफालिका वर्मा 1943-

जन्म:९ अगस्त, १९४३,जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर। शिक्षा:एम.ए., पी-एच.डी. (पटना विश्वविद्यालय), ए. एन. कालेज, पटना मे हिन्दीक प्राध्यापिका पदसँ सेवानिवृत्त। नारी मनक ग्रन्थिकेँ

अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय। **प्रकाशित कृति**- अर्गला, रावणाक अस्थिपंजर (मैथिली काव्य संग्रह), शंखनाद, पुरुषार्थ समर्पण, अनुबन्ध (हिन्दी काव्य संग्रह)। प्रकाश्य: सप्तपदी (मैथिली निबन्ध संग्रह), चारित्रिक पृष्ठभूमिमे मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यास, मैथिली-उपन्यासक कथा किछु कहैत अछि (मैथिली आलोचना); जिन्दगीनामा (हिन्दी काव्य संग्रह), क्रमशः (हिन्दी आलोचना)।

खालि:कतेक बरससँ रेडियो अधिकारीक रचना। प्रकाशित रचना:मधुमास बान, विश्वासघात; निष्फला (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकाश (लघुकथा संग्रह), यायावरी (यात्रा-वृत्तान्त), भावाञ्जलि (काव्य-प्रगीत) , किछु-किछु जीवन (आत्मकथायन साहित्य अकादमी पुरस्कार)। अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)आखर-आखर प्रीत, नागफांस (उपन्यास)। २००४ ई.- डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा, पटना;यात्री-चेतना पुरस्कार।



नीता झा 1953-

जन्म : २१-०१-१९५३,व्यवसाय:प्राध्यापिका । लेखन पर समाजक परम्परा तथा आधुनिकताक संस्कार सँ उत्पन्न विसंगतिक प्रभाव। प्रकाशित कृति : हविष्ठ, कथा संग्रह १९८४, कथानवनीत १९९०,सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य शोध समीक्षा । बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)।



आशा मिश्र 1950-

जन्म:६-१-१९५० ई.,प्रकाशित कथा मे मैथिलीक संग हिन्दी मे सेहो । सरसँ पैघ विजय मैथिली कथा संग्रह ।



डॉ. सुनीति झा



प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' 1948-

जन्मस्थान:नहिका,माता:श्रीमती वृद्धा देवी,पिता:पं. दीनानाथ झा,शिक्षा:एम.ए., बी.एड.,प्रसिद्ध अभिनेत्री द्वारा सयसँ बेशी नाटकमे भाग लेलनि । रंगिमा (नाट्यमंच) क भूतपूर्व उपाध्यक्षा, पत्रिकाक सम्पादन, कथालेखन आदिमे



डॉ. इन्दिरा झा 1957



मेनका मल्लिक 1966-

कुशल। �अनियन� आदि अनेक संस्था द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित।		
 शारदा सिन्हा मैथिली लोक गीत 1953-	 लालपरी देवी	 शकुंतला चौधरी
 गोदावरी दत्ता, मिथिला चित्रकला	 उषा वर्मा 1948-	 कमला चौधरी 1953- कृति- मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, प्रकाशनाधीन: बाट बिलायल यानि (कथा संग्रह), पिया मधुमास (कविता संग्रह), आशापूर्णा देवीक बंगला लघु उपन्यास **मन मंजूषाक** मैथिली अनुवाद। मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यिक पत्रिका **स्वातीक** सम्पादन (१९८४-८७)।
 सीता देवी, मिथिला चित्र कला	 गंगा देवी १९२८-१९९१ मिथिला चित्रकला	 सनमनी चौधरी, जनकपुर



डॉ नन्दना झा

काशी हिन्दु निश्वनिद्यालयमे मदन मोहन मालनीय द्वारा मैथिली अध्यायन शुरु हेल मुदा ओ बादमे बन्द हेऽ गेल। पुनः एकन अध्यायन लेल उप-कुलपति नाकेश हटनागनक कार्यकालमे मैथिली अध्ययन केन्द्रक स्थायनाक २०२० मे घोषणा हेल, कला संकाय प्रमुख प्रो. निजय बहादुन समन्वयक आ नसंत महिला महानिद्यालय नाजघाटक प्राध्यापक डॉ. नंदना झा केँ सह-समन्वयक बनाओल गेल।



डॉ. अनुपमा चौधनी



निरा नानी 1959-

मैथिली के 3 साहित्य अकादमी पुनस्कान निजेता लेखकक 4 गोट किताब "कन्यादान" (हनिमोहन झा), "नाजा पोखने में कितनी मछलियां" (प्रहास कुमान चाउधनी), "बिल टेलन की डायनी" व "पटाक्षेप" (लिली ने) हिन्दीमे अनूदित छथि। 2 गोट लोककथाक पुस्तक "मिथिला की लोक कथाएं" व "गोनू झा के किस्से"। मैथिली कथा संग्रह "खोहसँ निकसैत"।



श्यामना बच्चम 1963-

जन्मतिथि: १७ दिसम्बन, १९६३,जन्मस्थान : मनुआना, सिंधिया खुर्द, समस्तीपुन,पिता : श्री मार्कण्डेय प्रनासी,माता: श्रीमती सुशीला झा,अध्यायन ।सुपनिचित कनयित्री, कथाकान । प्रकाशित कृति: बानसाङ्गी (कनिता संग्रह), मिमिनकाना (कथासंग्रह)।



सुस्मिता पाठक 1962-

जन्म: सुपौल, बिहान । पनिचित कनिता संग्रह प्रकाशित । कथानाचक, कथासंग्रह प्रकाशनाधीन । नाजनीति शास्त्रमे एम.ए.। संगीत, पेंटिंगमे रुचि । मैथिलीक पोथी पत्रिका पन अनेक नेखाचित्र प्रकाशित । समकालीन जीनन, समय, आ लोकन स्पंदनक कनयित्री । अनेक होषामे नचनाक अनुनाद प्रकाशित।



उर्मिला देवी, मिथिला चित्रकला







यमुना देवी, मिथिला चित्रकला	यशोदा देवी, मिथिला चित्रकला	रमा झा, सम्पादक मिथिला दर्पण
 पन्ना झा अनुभूति (लघुकथा संग्रह)।	 सुधा कर्ण	 नूतन दास सम्पादिका, मिथिलांगन
 **राधिका झा, अंग्रेजी लेखिका** हिनकर अंग्रेजी उपन्यास "स्मेल" आ "लैम्प्स इन ड्रयन ड्रॉप्स" आ अंग्रेजी लघु कथा संग्रह "द एलीफेन्ट एण्ड द मारुति" प्रकाशित अछि। उपन्यास "स्मेल" लेल हिनका "प्रिक्स गुएनलेन" पुरस्कार भेटल छन्हि आ ई पाँच भाषामे अनूदित भेल अछि। राधिका "एमहर्स्ट कॉलेज"सँ "एन्थ्रोपोलोजी" पढ़ने छथि आ "शिकागो विश्वविद्यालय"सँ राजनीति विज्ञानमे मास्टर्स डिग्री लेने छथि। ओ "हिन्दुस्तान टाइम्स" आ "बिजनेस वर्ल्ड"मे काज केने छथि आ संगम "राजीव गांधी फाउन्डेशन, दिल्ली"मे सेहो, जतए ओ आतंकवादसँ पीड़ित बच्चा सभ लेल सम्पर्क कार्यक्रम प्रारम्भ केने रहथि। आइ काल्हि ओ अपन पति आ बच्चाक संग टोक्योमे रहैत छथि।	 **स्वयंप्रभा झा 1970-**	 **रूपा धीरू 1973-** रूपा धीरू- जन्मस्थान- मयनाकटनी, सप्तरी, श्रीमती पूनम झा आ श्री अनुपकुमार झाक पुत्री। स्थायी पता- अञ्चल- सगरमाथा, जिल्ला- सिरहा। प्रथम प्रकाशित रचना-काठ्ठली कानत, माटिसँ सिनेह (कविता), रंगता बढ़ैत देश-प्रदेश (कनक दीक्षितक पुस्तकक धीरेन्द्र प्रेमर्षिसँग मैथिलीमे सह-अनुवाद, संगीतसम्बन्धी कृति- राष्ट्रियगान, रान, नर्तक नर्तन, बाना, प्रियतम हमर कमौआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम रंग रतघुस्कीम, सुरजित मातृ गीतमाला, सुखक सनस। सम्पादन-पल्लव, मैथिली साहित्यिक मासिक पत्रिका, सम्पादन-सहयोग, हमर मैथिली पोथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ ७ आ कक्षा 9-10क ऐच्छिक मैथिली विषय पाठ्यपुस्तकक भाषा सम्पादन)।



रंजना झा, विद्यापति संगीत गायिका



रश्मि दत्त, गायिका, जनकपुर



कामिनी कामायनी



मुन्नी झा युवा रचनाकार



कामिनी 1978- युवा कवियित्री



रुक्साना सिद्दीकी



कल्पना मिश्र, मैथिली रंगमंच



ख्याति झा,
, मैथिली रंगमंच



किरण झा, मैथिली रंगमंच



प्रियंका झा, मैथिली रंगमंच



मृदु कर्ण, मैथिली रंगमंच



ख्याति वत्स, रंगमंच







नहा वर्मा, नंगमंच	सविता	अनुप्रिया
		
मृदुला प्रधान	अनूपा मिश्र, महिला वॉक्सिंग	नाखी दास, मिथिला विप्रकला
		
वनानसी यादव,मिथिला विप्रकला, धनुषा, नयाल	दवकला दवी कर्ण,मिथिला विप्रकला, नयाल	मदनकला कर्ण,मिथिला विप्रकला, नयाल
		
महासुन्दरी दवी,मिथिला विप्रकला	निर्जला मा, मिथिला विप्रकला, नयाल	रूला साह, मिथिला विप्रकला, महात्तरी, नयाल
		
नजनी पल्लवी	संगीता कुमारी, मैथिली रूतना प्राजक्त	निशुश्नी दास



गौरी सेन



सीमा झा



नाक्षी मिश्र, कवियित्री १९७३-१९९६

कोइलख, मधुबनी। जन्मस्थान गिलाठी, नेपाल।



मौसमी बनर्जी, कवियित्री



शैल झा



शान्ति देवी



शशिबाला

पिता श्री उग्र नारायण लाल, पति श्री उमेश कुमार कण्ठ (विसरुथ)। शिवा कश्यप आ कृष्ण कुमार कश्यपक सहयोगसँ "रानी विकास संस्था"क स्थापना। रचना: कृष्ण कुमार कश्यपक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-राग, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र-ज्ञान, भाग-३।



मुन्नी कामत

सूखल मन नमसल आँखि, अंगना (कविता संग्रह), चुक्का (बाल कथा संग्रह) प्रकाशित।



प्रेरणा झा

मिथिला लोक कला



अंशुमाला

मैथिली लोकगीत।



श्वेता झा चौधरी, चित्रकार

गाम सरिसब-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स। कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीबीशन आ वर्कशॉप)। कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि बसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), रूमन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटल बुलेवार्ड लेल वाल-पेंटिंग। प्रतिष्ठित स्पॉन्सर: कॉरपोरेट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक।

हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ डांसिंग।



श्वेता झा

मिथिला चित्रकला, सम्प्रति सिंगापुरमे निवास।



रानी झा



मनी कर्ण

मिथिला चित्रकला



निक्की प्रियदर्शिनी



प्रज्ञा झा



डॉ. नलिनी चौधरी



नीलम चौधरी, कथक नृत्यांगना



रूना मल्लिक

पिता स्व. शिवनन्दन मल्लिक, गाम- महिसानि, दरभंगा। पति श्री कमलेश कुमार, रहिकी, दरभंगा।



गुंजन कर्ण

राँटी मधुबनी, सम्प्रति यू.के.मे रहै छथि। www.madhubaniarts.co.uk पर हुनकर कलाकृति देखि सकै छी।



पूनम मंडल

प्रियंका झाक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन ।



प्रियंका झा

पूनम मंडलक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन ।



स्मृति नानायक्क



डॉ. ललिता झा १९७१

जन्म शनिवार, दरभंगामे। "मैथिलीक राजन सम्बन्धी शब्दावली" प्रकाशित"।



आरती कुमारी १९६७-

"मैथिली मूकक कारयम नारी" प्रकाशित।



मीना झा

ब्रह्म कौसनक समस्यापूर्ण विदेह मे मीना झा कर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ओ मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रह्म कौसन पर लिखल गेल। हि ट्रीम सदृश गार्धनि एहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल।



अनुपमा प्रियदर्शिनी

पति डॉ. नरेश कर्ण, गाम- उजान (बड़कागाम), पो. लोहना रोड, जिला दरभंगा। सम्प्रति लाजियाना (संयुक्त राज्य अमेरिका), शिक्षा- एम.एस.सी. (जंतु विज्ञान), ल.ना. मिथिला वि.वि., दरभंगा; बी.एस.सी. बी.आर. अम्बेडकर वि.वि. मुजफ्फरपुर, हॉबी, मिथिला चित्रकला, कमप्यूटराइज्ड चित्रकला, ललित कला। उपलब्धि: अखिल राष्ट्रीय कला आ दस्तकारी प्रतियोगिताक

पुरस्कार 1995 मे; संस्कार भारती भाव नृत्य प्रतियोगिता 1989 मे सहभागी।



मैथिली ठाकुर

मैथिली लोकगीत आ शास्त्रीय संगीत गायिका।



रानी नीलू झा

मैथिली रंगमंच। "डौनी-पथनी" कविता संग्रह प्रकाशित।



शिखा

मैथिली रंगमंच।



प्रीति ठाकुर

गाम- जगेली, भाया गोनानगर, पूर्णियाँ। मैथिली बाल साहित्यमे "गोनू झा आ आन चित्र कथा २००८", "मैथिली चित्रकथा २००९" आ "मिथिलाक लोकदेवता २०१०", विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य) २०१४ प्रकाशित।



अनुपमा झा

ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल, भारत।



विनीता मल्लिक



रवती मिश्र



अनामिका राज



शान्ति लक्ष्मी चौधरी

ग्राम गोविन्दपुर, जिला सुपौल निवासी आ राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा मे कार्यरत पुस्तकालयाध्यक्ष श्री श्यामानन्द झाक ज्येष्ठ सुपुत्री, आउन ग्राम महिषी (पुनर्वास आरापट्टी), जिला

सहरसा निवासी आ दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स सँ डॉक्टरल अन्वेषक आ समाजशास्त्री श्री अजय कुमार चौधरीक अर्धांगिनी छथि। प्राणीशास्त्र सँ स्नातकोत्तर रहितो शिक्षाशास्त्रक स्नातक शिक्षार्थी आ एकटा समाजशास्त्री सँ सान्निध्यक चलते आम जीवनक सामाजिक विषय-वस्तु आ खास कऽ महिलाजन्य सामाजिक समस्या आ घटनाक्रम हिनक विशेष अभिरुचि स्वाभाविक।



डॉ कल्पना मणिकान्त मिश्र

पिता डॉ शिव कुमार झा, गाम नारी, सासुर- गजहारा। मेडिकल शिक्षा ज. ज. हॉस्पीटल/ ग्रान्ट हॉस्पीटलसँ सम्पन्न कय स्त्री-रोग विशेषज्ञ। मुम्बइसँ १९८०-८२ मे प्रकाशित होइवला मैथिली पत्रिका "विदेह"क पति डॉ मणिकान्त मिश्र (निर्माता- मैथिली फिल्म- आउ पिया हमर नगरी) संग सम्पादन।



कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन

(आत्मकथा)



नन्दिनी पाठक

१९६१-

पाथरक शहर

(कविता संग्रह)



कल्पना झा १९६७-

शैक्षणिक गीत, नशामुक्ति हित गावी गीत, निनियाँ (बाल साहित्य) आ यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा) प्रकाशित।



स्वाति शाकम्भरी

कविता संग्रह पुनरागमन प्रकाशित



नामिशा झा

आँजुर भरि इजोत (कविता संग्रह) प्रकाशित।



सविता झा "सोनी"

"स्रीक अकाश"- कविता संग्रह आ "मिथिलाम सियानाम" प्रकाशित।



आभा झा

कत रुमना सून, विनवान (कविता संग्रह), प्रतीक्षा (कथा संग्रह), सिनहक दाम (बीहनि कथा संग्रह), आलोचनाक वातायन (आलोचना), सीताक स्वप्न (शृंखलाबद्ध काव्य) प्रकाशित।



दीपा मिश्र

सम्पादिका- वाणी।



पल्लवी मण्डल

कवि।



निर्मला कर्ण (१९६०-)

शिक्षा - एम् ए, नैहर - खनाजयून,दनरङ्गा, सासुर - गोढियारी (बलहा), वर्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।



सविता झा

Centre for Studies of Tradition and Systems (CSTS) आ MLF (मधुबनी लिटरेचर फेस्टिवल) क माध्यमसँ मैथिली लेल अग्रियान।



विभा चौधरी

कविता संग्रह-"धानक निन्न" आ कथा संग्रह "कर्चु" प्रकाशित।



अभिलाषा १९८६-

मूल नाम- अभिलाषा कुमारी। "पद", "डा झोंझ" (कथा संग्रह) आ पाथी-पाठ (आलोचना) प्रकाशित।



विभा विमर्श १९७८-

मूल नाम- विभा झा। पिता: श्री सुखचंद्र झा; पति:श्री शम्भूनाथ झा, शिक्षा/ बी.ए., वृत्ति-

छायाम, स्थायी पता- पैत्रिक- जिला महोत्तरी /ग्राम महोत्तरी जलेश्वर (नेपाल), वर्तमान- लाम्पाटी मार्ग ७९७, काठमांडू (नेपाल)। साहित्यिक उपलब्धि- गोरखापत्र, आँगन, आङन, समय नाग, यात्री लोकासन स्मारिका- उत्सर्ग कविता प्रकाशित। मैथिलीमे प्रकाशित पहिल रचना- विषक रूजा (कविता) २०१८ मे। कविता संग्रह "नहि सीता नहि" प्रकाशित।

http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.htm लिंकपर, आर wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै।इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब 'भालसरिक गाछ' जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

